



श्री  
हिन्दुस्थानी संगीत पद्धति  
क्रामक पुस्तक मालिका

पाँचवीं पुस्तक  
( हिन्दी )

प्रन्वकार  
कै० पं० विष्णुनारायण भातखण्डे

लाशिक  
संगीत कार्यालय, हाथरस  
SANGEET KARYALAY  
HATHRAS, U. P.  
( INDIA )

GOVERNMENT OF INDIA  
DEPARTMENT OF ARCHAEOLOGY  
CENTRAL ARCHAEOLOGICAL  
LIBRARY

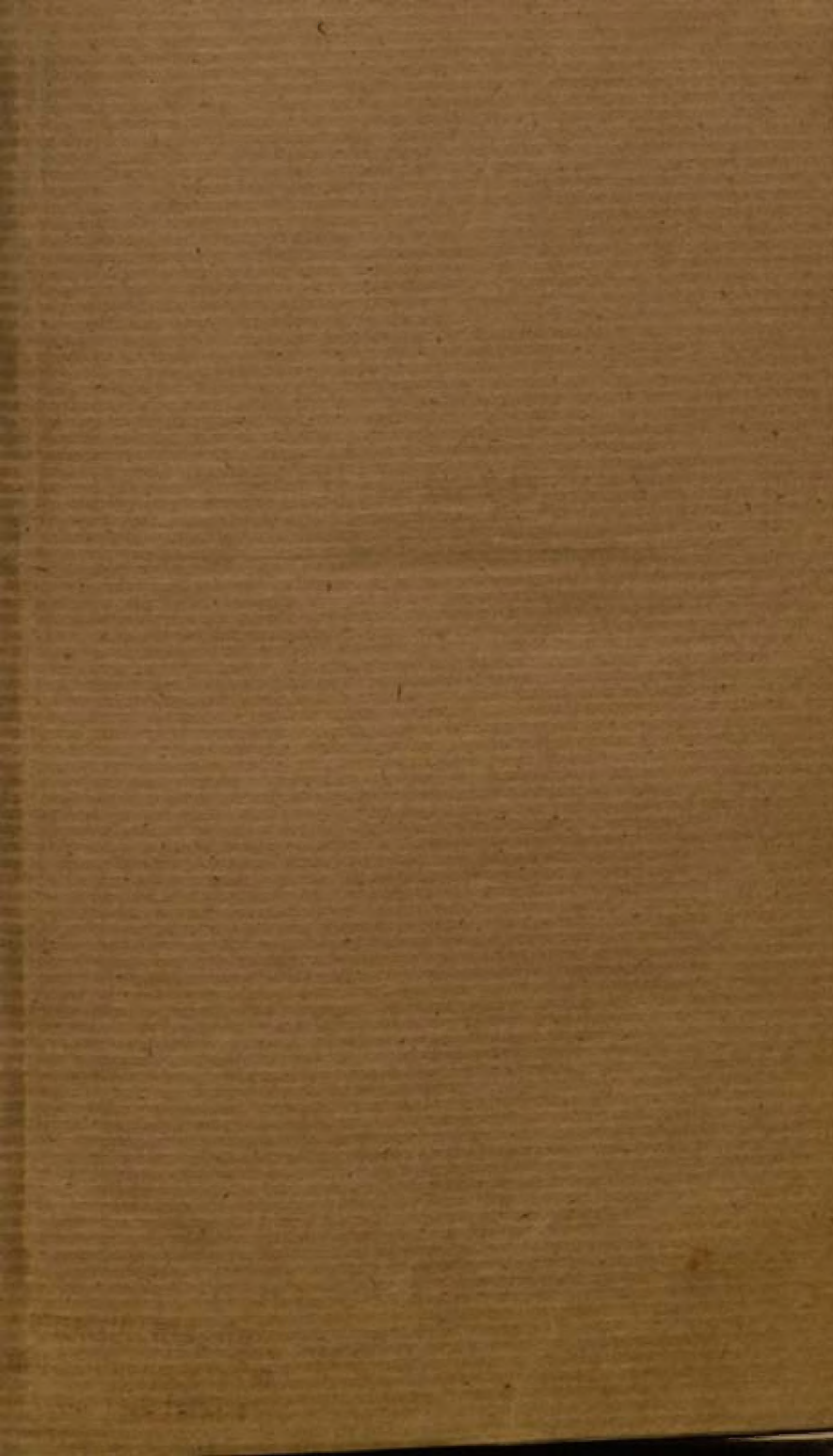
---

CLASS \_\_\_\_\_

CALL No. **784.71954** *Bha*

D.G.A. 79.



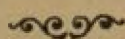




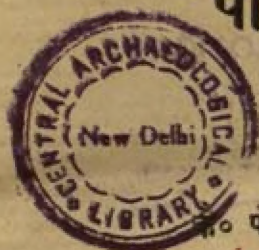


• श्री •

हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति  
क्रमिक पुस्तक मालिका



पाँचवीं पुस्तक



मूल ग्रंथकार

पं० विष्णुनारायण भातखण्डे

(बी. ए.; एल-एल. बी.)

28767 ★

सम्पादक व प्रकाशक

लक्ष्मीनारायण गर्ग ने

मराठी से हिन्दी भाषा में अनुवाद कराकर

संगीत कार्यालय, हाथरस

से प्रकाशित की।

784.71954

Bha



प्रथम आवृत्ति, हिन्दी.



जुलाई १९५४

□

मू० ८) रुपये

CENTRAL ARCHAEOLOGICAL  
LIBRARY, NEW DELHI.

Acc. No. 28767

Date 13/11/60

Call No. 784-71954/Bha.

Published by L. N. Garg  
and  
Printed by Th. Bharat Singh  
AT THE  
SANGEET PRESS, HATHRAS.



## प्रस्तावना

आचार्य भातखण्डे जी द्वारा अत्यन्त परिश्रम से संगृहीत की हुई बहुमूल्य धरानेदार चीजों का यह विशाल संग्रह सन् १९३७ ई० में मराठी भाषा में प्रकाशित हुआ था, अब इसका हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करते हुए हमें परम आनन्द प्राप्त हो रहा है।

हिन्दुस्तानी सङ्गीत पद्धति में गाये जाने वाले रागों की धरानेदार खान्दानी चीजों की सङ्गीत प्रेमियों को बड़ी आवश्यकता थी। अतः भातखण्डेजी ने अपने जीवन काल में लगभग १३२५ ख्याल, ध्रुपद, धमार, होरी, तराने आदि का संग्रह क्रमिक पुस्तक मालिका के पहिले चार भागों में प्रकाशित किया। जिनसे सङ्गीत के विद्यार्थी और पाठकों ने यथोचित लाभ उठाया।

अब इस पांचवें भाग में हिन्दुस्तानी सङ्गीत पद्धति के १० थाटों में से प्रथम पांच थाट (१) कल्याण (२) विलावल (३) खमाज (४) भैरव (५) पूर्वी के ६८ प्रसिद्ध रागों की २५१ खान्दानी चीजों की स्वरलिपियां दी गई हैं। शेष पांच थाट—मारवा, काफी, आसावरी, तोड़ी और भैरवी के ६८ रागों की २३७ चीजों की स्वरलिपियां छटवें भाग में दी गई हैं।

दिनों दिन सङ्गीत कला की उन्नति और प्रचार को देखते हुए हमें पूर्ण आशा है कि इस ग्रंथ के हिन्दी अनुवाद से सङ्गीत के विद्यार्थी और पाठक यथोचित लाभ उठाकर परिश्रम को सफल बनायेंगे।

इसके हिन्दी अनुवाद में सङ्गीताचार्य श्री सुदामाप्रसाद दुवे से जो सहायता प्राप्त हुई है, उसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं।

“गंगा सप्तमी”

सन् २०११

*Prasanna*

## अनुक्रमणिका.

	पृष्ठ
मुख्य पृष्ठ ... ..	१
प्रस्तावना ... ..	३
अनुक्रमणिका ... ..	४
शिक्षकों को सूचना ... ..	६
स्वरलिपियों का चिन्ह परिचय ... ..	७
रागों की अनुक्रमणिका ... ..	८
पुस्तक में आये हुए तालों के मात्रा व योल ... ..	१०
शुद्धिपत्र ... ..	१३
मंगलाचरण ... ..	१७
<b>शास्त्रीय-विवरण</b>	
विषय प्रवेश ... ..	१७
<b>प्राचीन संगीत</b>	
भरत व शाङ्गदेव की श्रुतियां ... ..	१८
शिक्षा ग्रन्थ ... ..	२१
स्वरमेल कलानिधि ... ..	२१
राग विबोध ... ..	२२
संगीत समयसार और सद्वागचन्द्रोदय ... ..	२२
संस्कृत ग्रंथकारों की तुलनात्मक श्रुति स्वर रचना ... ..	२३
संगीत पारिजात ... ..	२५
राग तरंगिणी ... ..	२६
अहोबल और लोचन के शुद्ध विकृत स्वरों का नक्शा ... ..	२७
ग्रन्थोक्त श्रुति स्वर प्रकरण का सारांश ... ..	२७
वादी सम्वादी स्वरों का श्रुति अन्तर कैसे नापा जावे ... ..	२६
शुद्ध और विकृत जाति ... ..	३०
मूर्च्छना के अर्थ और प्रयोग में परिवर्तन ... ..	३१



## आधुनिक अथवा लक्ष्यसंगीत

युरोपियन सप्तक	...	...	...	...	३३
हिन्दोस्थानी सङ्गीत पद्धति के सर्व साधारण नियम	...	...	...	...	३४
राग सम्बन्धी ध्यान में रखने योग्य महत्वपूर्ण बातें	...	...	...	...	३६
हिन्दोस्थानी सङ्गीत पद्धति की थाट संख्या	...	...	...	...	४०
रागों का सायं प्रातर्गेयत्व	...	...	...	...	४१
सन्धिप्रकाश राग	...	...	...	...	४३
सायंगेय और प्रातर्गेय रागों का सम्बन्ध	...	...	...	...	४४
कल्पद्रुम रचयिता की हिन्दुस्थानी रागों की समय रचना	...	...	...	...	४५
रागों की रंजकता कैसे बढ़ाई जावे	...	...	...	...	४६
राग विस्तार कैसे किया जावे	...	...	...	...	४७
समप्राकृतिक रागों में उच्चार का महत्व	...	...	...	...	४६
मन्द्र गायन	...	...	...	...	५०
स्वरलिपि और उसके प्रयोग की मर्यादा	...	...	...	...	५०
अन्तर मार्ग	...	...	...	...	५२
आदत, जिगर, हिसाब	...	...	...	...	५३
गीत रचना	...	...	...	...	५३
कल्याण थाट के रागों की अप्रसिद्ध चीजें	...	...	...	६१ से १०४	
बिलावल "	"	...	...	१०७ से २६६	
खमाज "	"	...	...	२६६ से ३३८	
भैरव "	"	...	...	३४१ से ४२३	
पूर्वी "	"	...	...	४२७ से ४७६	
पुस्तक में आये हुए रागों के स्वर विस्तार	...	...	...	४८१ से ५३०	
राग अनुक्रमणिकानुसार चीजों की सूची	...	...	...	५३१ से ५३६	
अकारादि क्रम से चीजों की सूची	...	...	...	५३७ से ५४२	

## शिक्षकों के लिये सूचना

- १—सर्व प्रथम इच्छित ध्वनि को पड़ज मानकर विद्यार्थियों को उस स्वर में मिलना सिखाया जावे। प्रत्येक बार शिक्षक द्वारा 'सा' स्वर विलम्बित एवं गंभीर ध्वनि से बोला जाना चाहिये। इस प्रकार प्रतिदिन बार-बार किया जावे।
- २—विद्यार्थियों को अपने साथ स्वरोच्चारण मत करने दो। उन्हें सुन लेने के बाद ही गाने दो।
- ३—विद्यार्थियों को दधी हुई ध्वनि से मत गाने दो।
- ४—एक साथ तीन से अधिक विद्यार्थियों को स्वरोच्चारण मत करने दो।
- ५—स्वर सिखाते समय आरंभ से ही श्यामपट (ब्लैक बोर्ड) का उपयोग करते रहो। विद्यार्थियों में स्वर पढ़ने की आदत डाली जावे।
- ६—विद्यार्थियों का लक्ष्य स्वर स्थान, श्वासोच्छ्वास और उसमें होने वाले श्रम की ओर होने दो।
- ७—सरगम सिखाने के पूर्व, बार-बार किये हुए अभ्यास में विद्यार्थियों को स्वरों की अच्छी पहिचान होनी चाहिये। मुख्य रूप से सरगम से ही राग ज्ञान होता है, अतः उन्हें अच्छी तरह कहलवा लेने की सावधानी रखी जावे।
- ८—स्वर शिक्षण में संलग्न होने के पूर्व ताल और उसकी मात्रायें विद्यार्थियों को सिखा देना उत्तम है। 'सरगम सिखाने के पूर्व विद्यार्थियों में ताल मात्रा का उत्तम ज्ञान होना चाहिये।
- ९—धीजों के बोल सिखाने के पूर्व प्रत्येक स्वर-पंक्ति को उसके अलंकारों के साथ गाते आना चाहिये।
- १०—शुद्ध स्वरों के पाठ उत्तम रीति से सीख जाने पर विकृत स्वरों के अभ्यास की ओर बढ़ना चाहिये। प्रायः विकृत स्वर अर्धान्तर होते हैं अतः इन्हें सिखाते समय विद्यार्थियों द्वारा तैयार हुए अर्धान्तर 'गम' और 'निसां' का उपयोग करना चाहिये। जैसे 'मप' स्वरों के उच्चारण के समय बीच-बीच में 'निसां' कहलवाना चाहिये। यह शिक्षक की दूरदर्शिता और बुद्धिमता पर ही अवलंबित रहेगा कि विद्यार्थियों को विकृत स्वर अब और किस प्रकार सिखाना चाहिये।



## इस पुस्तक में प्रयुक्त किये चिन्हों का विवरण

रे, ग, ध, नि, इन स्वरों के नीचे आड़ी रेखा हो तो ये कोमल समझे जावें। यदि रेखा न हो तो तीव्र समझे जावें।

म इस प्रकार लिखा हुआ शुद्ध या कोमल समझा जावे,

म इस प्रकार लिखा हुआ तीव्र समझा जावे।

जिस स्वर के नीचे बिन्दु हो वह मंद्र स्थान का और जिसके ऊपर बिन्दु हो वह तार स्थानका स्वर समझा जावे बिन्दु रहित सम्पूर्ण स्वर मध्य सप्रक के समझे जावें।

— इस प्रकार के चिन्ह में लिखे हुए स्वर एक मात्रा के समय मान में गाये जाने वाले हैं।

( ) यह चिन्ह किस स्वर से किस स्वर तक मीढ़ ( एक स्वर दूसरे स्वर पर घर्षण किया से जाना ) है, इसका दिग्दर्शक है।

— स्वर के आगे यह चिन्ह जहां हो वहां पिछला स्वर एक मात्रा लम्बा करना है। यदि चिन्ह न हो तो उतने काल की विभांति है, यह समझना चाहिये।

5 - गीत के शब्दों में जहां यह अवग्रह चिन्ह हो वहां पिछले अक्षर का अन्य स्वर ( अकार उकार आदि ) एक मात्रा लंबा किया जावे।

( ) स्वर को इस प्रकार कोष्ठक में बंद किया गया हो, तो क्रमशः उसका अगला स्वर, वही स्वर, पिछला स्वर और वही स्वर, इस प्रकार चार स्वर एक मात्रा में कहे जावें। जैसे—(प) धपमप, (म) पमगम, (सा) रेंसानिसा। कहीं-कहीं पर स्वरों के ऊपर बाईं ओर छोटे टाइप में छपे हुए स्वर दिये गये हैं उन्हें ( प्रेस नोट ) अलंकारिक स्वर कहा जाता है। ये सूक्ष्म 'करण' स्वर नवीन विद्यार्थियों के गले से उच्चारित न किये जा सकें, तो इनके अभाव से रागहानि नहीं होगी।

इन स्वरों का लगाना आने से गायन में अधिक रंजकता हो जावेगी।

× यह चिन्ह गीत में प्रयुक्त ताल का 'सम' बताता है। 'सम' को सदैव 'प्रथम ताली' मानकर आगे की तालियों का क्रम इसी से समझना चाहिये।

० यह चिन्ह तालों की 'खाली' अर्थात् ताली रहित स्थान दिखाता है।

# रागों की अनुक्रमणिका

राग ( ७० ) चीज ( २५५ )

कल्याण थाट.			राग	चीज	पृ.
राग	चीज	पृ.	जलधर	१	२२१
चन्द्रकांत	२	६१	जलधर केदार	१	२२३
सावनी कल्याण	२	६४	दुर्गा	५	२२५
जैतकल्याण	७	६७	छाया	१	२३२
श्यामकल्याण	१०	७४	छाया-तिलक	१	२३५
मालश्री	१५	८६	गुणकली	२	२३७
बिलावल थाट.			पहाड़ी	२	२४३
हेमकल्याण	३	१०७	मांड	१	२४७
यमनी बिलावल	८	११२	मेवाड़ा	१	२५१
देवगिरी बिलावल	८	१२४	पटमंजरी	७	२५४
औडव देवगिरी	२	१३४	हंसध्वनि	१	२६३
सरपरदा	८	१३६	दीपक	१	२६५
लच्छासाख	६	१४६	खंमाज थाट.		
शुक्ल-बिलावल	८	१६०	किमोटी	६	२६६
कुकुभ	१०	१७३	खंभावती	५	२८२
नट	२	१८७	तिलंग	६	२६०
नटनारायण	१	१६१	दुर्गा	२	२६८
नटबिलावल	३	१६३	रागेश्वरी	२	३०३
नटविहाग	१	२००	गारा	६	३०६
कामोदनाट	२	२०१	सोरट	१०	३१६
केदारनाट	१	२०३	नारायणी	१	३३५
विहागड़ा	२	२०५	सावन (देसअङ्ग)	१	३३८
पटविहाग	१	२०८	भैरव थाट.		
सावनी (विहागअङ्ग)	१	२१०	वंगलभैरव	१	३४१
मलुहा केदार	१	२१२	आनन्दभैरव	२	३४४
मलुहा	६	२१४	सौराष्ट्रक	२	३४६

राग	चीज	पृ.	राग	चीज	पृ.
अहीरभैरव	५	३५४	गौरी	८	४२७
शिवभैरव	१	३६०	त्रिवेणी	३	४३८
शिवमतभैरव	२	३६३	टंकी	१	४४४
प्रभात	१	३६६	श्रीटंक	२	४४७
ललितपंचम	६	३६६	मालवी	२	४५०
मेघरंजनी	१	३७०	विभास	१	४५४
गुणक्री या गुणकरी	२	३८१	रेवा	१	४५७
जोगिया	६	३८५	जेताश्री	३	४६०
देवरंजनी	१	३६४	जेतश्री	६	४६५
विभास	१०	३६७	दीपक	१	४७१
भीलफ	२	४११	हंसनारायणी	१	४७६
गौरी	३	४१६	मनोहर	१	४७८
जंगूला	१	४२२			



## क्रमिक पुस्तक में आई हुई तालों के मात्रानियम व बोल.

### ताल दादरा.

मात्रा-	१	२	३	४	५	६	
ठेका-	धी	धी	धा	धा	ती	ना	तबला
"	धी	ती	धा	"	"	"	"
	X			०			

### ताल तीव्रा.

मात्रा-	१	२	३	४	५	६	७	
धपिया-	धा	दी	ता	तिट	कत	गदि	गन	पखावज
	X			२		३		

### भूपताल.

मात्रा-	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	
धपिया-	धा	५	धा	गी	की	ट	कड	धा	की	ट	पखावज
ठेका-	धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना	तबला
	X		२			०		३			

### ध्रुवताल.

मात्रा-	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	
धपिया-	धा	धा	दी	ता	किट	धा	तिट	कत	गदि	गन	पखावज
	X		०		२		३		०		

### चौताल.

मात्रा-	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	
धपिया-	धा	धा	दी	ता	किट	धा	दी	ता	तिट	कत	गदि	गन	पखावज
	X		०		२		०		३		४		

## एकताल.

मात्रा-	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	
ठेका-	धी	धी	धागि	तुक	तू	ना	क	ता	धी	तुक	धी	ना	त०
	X		.	.	.	.	.	.	३	.	४	.	

## आडाचौताल.

मात्रा-	१	२	३	४	५	६	१०	११	१२	१३	१४				
ठेका-	धी	तिरकिड	धी	ना	तू	ना	क	ता	तिरकिड	धी	ना	धी	धी	ना	त०
	X	.	२	.	.	.	३	.	.	४	.	.	.	.	

## ताल भूमरा.

मात्रा-	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	
ठेका-	धी	५	धा,तुक	धी	धी	धागि	तुक	ती	५	ता,तुक	धी	धी	धागि	तुक	त०
	धी	धी	नत	११	११	११	११	ती	ती	नत	११	११	११	११	११
	X	.	.	२	.	.	.	.	.	.	३	.	.	.	.

## ताल धमार.

मात्रा-	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	
थपिया-	क	स्थि	ट	धि	ट	धा	५	क	त्ति	ट	ति	ट	ता	५	पन्थावज
	X	.	.	.	.	२	.	.	.	.	३	.	.	.	

## ताल दीपचन्दी.

मात्रा-	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
ठेका-	धी	धी	५	धा	ग	ती	५	ता	ती	५	धा	ग	धी	५
	X	.	.	२	.	.	.	.	.	.	३	.	.	.

तयला.

## तिलवाड़ा.

मात्रा-	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
ठेका-	धा	तुक	धी	धी	धा	धा	ती	ती	ता	तुक	धी	धी	धा	धा	धी	धी
	X	(			२					(			३			

त्रिताल ( पंजाबी )—यह विलम्बित त्रिताल है.

मात्रा-	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	
ठेका-	ता	धी	धी	धा	धा	धी	धी	धा	धा	ती	ती	ता	ता	धी	धी	धा	त०
	X	.	.	.	२	.	.	.	.	.	.	.	३	.	.	.	





## शुद्धि पत्र

नोट—स्वरलिपि वाले पृष्ठों में लाइन गिनते समय हैडिंग, कण्ठ स्वर व ताल चिन्ह छोड़ देने चाहिये।

पृष्ठ	लाइन	कालम या खाना	अशुद्ध	शुद्ध
७१	७	६	प ग नि	प प नि
६५	५	४	प — गा सा, सा	प — गा सा, सा
६५	६	४	ढी ऽनि गा, आ	ढि ऽनि गा, आ
१२२	८	१	छो ऽ	जो ऽ
१२७	६	२	रे ग - -	रे ग - -
१३१	३	६	रे पप ग, गग प	रे पप ग, गग प
१३१	४	६	ऽ, बन ऽ	ऽ, बन ऽ
१४७	६	६	दा नि	दा नि
१६१	३	—	सा, सा, रे ।	सा, सा, रे म,
१६४	३	४	घ नि प	घ नि प
१७३	४	—	गमौ रिसाविति प्रौचुः	गमौ रिसाविति प्रोचुः
१७८	१४	१	खो ऽ	खो ऽ
१८०	८	४	ऽ न्द ऽ	ऽ न्हा ऽ
१६६	१४	५	ऽह सौंऽ	ऽह सौंऽ
२०१	६	४	सा ऽ ये सा	सा ऽ ये, सा
२०२	५	५	म रे	म रे
२०६	१३	२	नि सा ग म	नि सा ग ग
२१५	२	२	ह त स ख	ह त स खि
२२७	१	२	(म) - रे म	(म) - रे, म

२२६	७	२	रे रे ।स सा	रे रे सा सा
२३६	६	४	ऽ व	ऽ बि
२६०	३	४	म रे	ग रे
२६४	११	३	सां नि प म	सां नि प, म
३०८	४	२	दे ऽ। प्र	दे ऽ। प्र
३१४	७	१	सा सा नि सा सा(सा) ध नि	सा सा नि सा सा(सा), ध नि
३२४	७	३	सां	सां
३२७	१	४	रे- मप,	रे-, मप
३३६	३	—	नि ध प	निधप,
३३६	४	—	सारें,	सारें,
३४६	३	—	भरवके	भैरवके
३५२	१	६	रे - सा	रे - सा
३५८	३	४	ग (म)रे रे सा	ग (म)रे रे सा
३६२	२	३	ल ऽ ऽ ऽ जि	ली ऽ ऽ ऽ जि
३६४	११	४	म ग	म ग
३७१	२	४	ऽ ये	ये ऽ
३८३	११	२	घ प	घ -
३८५	४	३	ध पम	ध पम
३८७	४	—	हरित	हरति
४०८	५	४	रे सां	रे सां
४१०	६	४	म रे	ग रे
४२३	८	५	ऽऽ, ऽ	ऽ, ऽऽ
४२८	६	५	स ऽ	सां ऽ

४६६	७	१	म ग प	म ग प
४७२	२	—	गयो	भयो
४८१	११	—	गप,	गप
४८३	१	—	सा सा ग ग प प, पधग	सा सा ग ग प, प, पधग,
४८४	३	—	मम, रेनिसा, रेनि, म, रेनि,	मम, रेनिसा, रेनि, म, रेनि,
४८४	१२	—	साग,	साग
४९१	१२	—	धनिप पपसा	धनिप, पपसा,
४९८	७	—	धपम	धपम,
५०१	१८	—	सारेंगमंपमं-रेंसां	सारेंगमंपमंगरेंसां
५२१	१६	—	ग सा;	गरेसा;
५२३	४	—	रेगरेसा,	रेगरेसा,
५२५	४	—	सारेनिसा	सारेनिसा
५२५	७	—	रेम,	रेम,
५२५	११	—	गपगरे गरेसा ।	गपगरेगरेसा ।
५२८	७	—	म मंधु मंग, निधुप, मंग, म मंधु मंग	म मं धु मं ग, निधुप, मंग, मं मंधुमंग
५३०	२२	—	गप,	गप-
५३१	२	—	(६७ रागों की २५१ चीजें)	(७० रागों की २५१ चीजें)







प्रबंधकार : पंडित विष्णु नारायण भातखंडे, बी. ए., एलएल. बी.

( "चतुर पंडित" )

जन्म : गोकुलाष्टमी शाके १७८२  
१० अगस्त १८६०

मृत्यु : गणेशचतुर्थी शाके १८५८  
१६ सितम्बर १९३६

"मद्भक्त्या यत्र गायन्ते तत्र तिष्ठामि नारद"





\* श्री \*

# पांचवीं पुस्तक

—  
मंगलाचरण

प्रणम्य शिरसा देवं दत्तात्रेयं दिगम्बरं ।  
सर्वविघ्नोपशान्त्यर्थं कर्तव्यं कर्तुं भारभे ॥

## शास्त्रीय-विवरण

### विषय-प्रवेश

सङ्गीत प्रेमियों द्वारा अपनाई हुई इस क्रमिक पुस्तक मालिका के प्रारम्भिक चार भागों में, प्रसिद्ध दस थाटों से उत्पन्न होने वाले कुल ४५ रागों की लगभग साढ़े तेरहसौ चीजें अबतक प्रकाशित हो चुकी हैं। इसके अतिरिक्त द्वितीय भाग में नाद, स्वर, सप्तक, थाट आदि पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या; तीसरे भाग में सप्तक से थाट कैसे उत्पन्न होते हैं, एक सप्तक से इस प्रकार कितने थाट उत्पन्न हो सकते हैं, थाटों से रागों की उत्पत्ति कैसे होती है? आदि प्रश्नों की व्याख्या तथा चतुर्थ भाग में श्रुति और स्वर स्थान, मार्गी और देशी सङ्गीत, अलाप राग लक्षण, जाति, स्थाय, मुख चालन, निबद्धगान, तानें गीतों के ख्याल, टप्पा आदि भेद और दक्षिणात्य ताल पद्धति आदि विषयों का विवेचन किया जा चुका है।

अब इस पुस्तक और इसके अगले भाग अर्थात् क्रमिक पुस्तक मालिका के छठे (अन्तिम) भाग में शेष शास्त्रीय और ऐतिहासिक जानकारी देकर अपनी पद्धति से सम्बन्धित शास्त्रीय भाग पूरा करूँगा। इसमें से (पांचवें) भाग में प्राचीन (ग्रन्थोक्त) सङ्गीत, आधुनिक (लक्ष्य) सङ्गीत, राग और रस, रागों के देवमय स्वरूप, स्वरों के रंग

आदि विषयों का विचार करूँगा और अगले भाग में हिन्दुस्थानी सङ्गीत का मध्यकालीन इतिहास लिखकर भावी सङ्गीत के विषय में विचार करूँगा ।

## प्राचीन सङ्गीत

### भरत व शाङ्गदेव की श्रुतियाँ

आजकल कुछ आधुनिक विद्वान अपने लेखों में जिन २२ श्रुतियों का उल्लेख 'रत्नाकर' के नाम से करते हैं, वे उस ग्रंथ की नहीं हैं ।

'सङ्गीत रत्नाकर' में परिचित शाङ्गदेव अपनी श्रुति-रचना के सम्बन्ध में निम्न दो श्लोकों में इस प्रकार खुलासा करते हैं:—

व्यक्तहे कुर्महे तासां वीणाद्वन्द्वे निदर्शनम् ।

द्वे वीणे सदृशे कार्ये यथा नादः समो भवेत् ॥

तयोर्द्वाविंशतिस्तंज्यः प्रत्येकं तासु चादिमा ।

कार्या मन्द्रतमध्वाना द्वितीयोच्चध्वनिर्मनाक् ॥

स्यान्निरंतरता श्रुत्योर्मध्ये ध्वन्यन्तरा श्रुतेः ॥

परिचित शाङ्गदेव ने श्रुति का एक नियत प्रमाण स्वीकार किया है और अपनी २२ श्रुतियाँ समान मानी हैं ।

तथा—

चतुश्चतुश्चतुश्चैव षड्ज मध्यम पंचमाः ।

द्वे द्वे निषाद गांधारी त्रिस्त्रो ऋषभधैवतौ ॥

इस प्रकार सप्त स्वरों में २२ श्रुतियों का विभाजन कर प्रत्येक शुद्धस्वर, अपनी प्रत्योक्त अन्तिम श्रुति पर स्थापित किया है । इस प्रकार से उत्पन्न होने वाली श्रुति स्वर व्यवस्था, क्रमिक पुस्तक मालिका के ४ थे भाग में दी जा चुकी है, अतः पुनः यहां नहीं दी जा रही है । इन्होंने बताया है कि कानों द्वारा स्पष्टतापूर्वक भिन्न रूप से पहिचाने जाने वाला नाद ही 'श्रुति' है, और इस प्रकार की श्रुतियाँ एक सप्तक में २२ से अधिक होना सम्भव नहीं है । प्रत्येक सप्तक में इस प्रकार के २२ नाद

आते हैं। इन्होंने कहा है कि “एवं कंठे तथा शीर्षे श्रुतिर्द्वाविंशतिर्मता”  
इन श्रुतियों की स्थापना किस प्रकार की जावे, इस का उत्तर इन्होंने इस  
श्लोक में दिया है:—

कार्यामंद्रतमध्वाना द्वितीयोच्चध्वनिर्मनाक् ।

स्यान्निरंतरता श्रुत्योर्मध्ये ध्वन्यन्तराश्रुते ॥

अर्थात् इस हिसाब से श्रुति का प्रमाण (अन्तर) नियत किया है।  
अति मन्द्र नाद पर एक तार मिलाने के पश्चात् उससे थोड़ा सा ऊँचा  
अर्थात् कानों द्वारा स्पष्ट भिन्न समझ सकने योग्य ऊँचा-दूसरा नाद  
प्रहरण किया जावे, और पहिले और दूसरे नाद का जो परस्पर प्रमाण  
( Ratio ) हो वही प्रमाण ( अन्तर ) दूसरे और तीसरे, तीसरे और  
चौथे तथा चौथे और पाँचवें, आदि नादों का रखा जावे। इस प्रकार  
नाद स्थापना करने पर एक सप्तक में, एक से दूसरे “चौथे ऊँचे” और  
साधारण मनुष्य की कर्णेंद्रिय द्वारा अलग-अलग पहिचाने जाने वाले  
कुलनाद २२ ही उत्पन्न होते हैं; और नाद-प्रमाण-दृष्टि से सभी श्रुतियां  
समान होती हैं।

भरत ने अपने ‘नाट्य शास्त्र’ में लगभग इसी प्रकार की श्रुति  
व्यवस्था दी है; परन्तु उसका वर्णन भिन्न दृष्टांत एवं भिन्न शब्दों द्वारा  
किया है। उनके द्वारा दिया हुआ विवरण निम्न श्लोकों में है:—

षड्जश्रुतुःश्रुतिर्ज्ञेय ऋषभस्त्रिश्रुतिस्तथा ।

द्विश्रुतिश्चैव गांधारो मध्यमश्च चतुःश्रुतिः ॥

चतुःश्रुतिः पंचमा स्याद्द्वैवतस्त्रिश्रुतिस्तथा ।

निषादो द्विश्रुतिश्चैव षड्जग्रामे भवन्ति हि ॥

मध्यम ग्राम के विषय में भरत ने इस प्रकार का नियम बताया है:—

षड्जग्रामे पंचने स्वचतुर्थश्रुतिसंस्थिते ।

स्वोपान्त्यश्रुति संस्थेऽस्मिन् मध्यमग्राम ईष्यते ॥

अर्थात्—जिस नाद रचना में ‘पंचम’ सत्रहवीं श्रुति पर स्थापित हो,  
वह ‘षड्ज ग्राम’ और जहां वह सोलहवीं श्रुति पर स्थापित किया  
जावे, वह ‘मध्यम ग्राम’ होता है। मध्यम ग्राम के पञ्चम बनाने में



योजित किया जाने वाला प्रमाण ( अन्तर ) ही उसने श्रुति का प्रमाण माना है। भरत का कथन है कि किन्हीं दो श्रुतियों में यही एक निश्चित ध्वनि प्रमाण होना चाहिये। इस विवरण से यह कहना आपत्तिजनक नहीं है कि १३ वीं शताब्दी में की गई शाङ्गदेव की श्रुति-स्वर रचना का आधार ५ वीं शताब्दी में भरत द्वारा की हुई रचना ही रही थी।

भरत और शाङ्गदेव ने श्रुति स्थान निश्चित करने के लिये जो प्रयोग बताये हैं, उनसे सिद्ध होता है कि श्रुति Geometrical progression के अनुसार एक पर एक चढ़ती जाती हैं। भरत ने दो वीणाओं द्वारा श्रुति प्रमाण निश्चित करने के लिये कहा है।

इनमें से एक वीणा 'ध्रुव' अथवा 'अचल' वीणा हो और यह "चतुश्चतुश्चतुश्चैव" के प्रमाण से पड़ज प्राम ( अर्थात् सत्रहवीं श्रुति पर 'पञ्चम' स्थापित होने वाले प्राम ) में मिली हुई हो। दूसरी वीणा आरम्भ में ठीक वैसी ही मिलाई जाकर प्रत्येक बार एक श्रुति उतारते हुए चार बार उतरी हुई हो। ऐसा करने पर आरम्भिक पड़ज स्वर, निपाद तक उतरा हुआ हो जावेगा। प्रत्येक फेरे को 'सारणा' नाम दिया जाकर इस सम्पूर्ण प्रयोग को 'सारणा चतुष्टय' का पारिभाषिक नाम उस समय प्रयुक्त हुआ। इस प्रयोग द्वारा उसने सिद्ध किया है कि पड़ज स्वर चार श्रुति का है और सभी श्रुतियां नियत प्रमाण की और समान होती हैं। भरत और शाङ्गदेव में केवल इतना अन्तर है कि भरत ने वीणा पर ७ तार बांधे हैं और शाङ्गदेव ने २२ तार बांधे हैं, परन्तु दोनों का कथन यही है कि श्रुति नियत प्रमाण की और समान है, और एक सप्तक में ऐसी श्रुतियां २२ ही होना शक्य हैं। इस विषय पर श्रीयुत फड़के का एक लेख मैरिज कॉलेज ऑफ हिन्दुस्थानी म्यूजिक के 'सङ्गीत' ( त्रैमासिक ) में प्रकाशित हुआ है, उसे देखा जावे। सारांश यह है कि कुछ आधुनिक विद्वान पाश्चात्य आन्दोलन शास्त्र से उत्पन्न होने वाले असमान श्रुत्यन्तर को स्वीकार कर उनका आधार भरत और शाङ्गदेव को बताते हैं, यह भ्रान्ति पूर्ण है।

( इस विषय में अधिक विस्तृत विवरण के लिये हिन्दुस्थानी सङ्गीत पद्धति भाग १ पृष्ठ २६-४३ और हि० सं० पद्धति भाग ४ पृ० १८-४७ ( मराठी ) देखिये ) \*

\* इन पुस्तकों के हिन्दी अनुवाद "भातखण्डे सङ्गीत शास्त्र" के नाम से सङ्गीत कार्यालय द्वारा प्रकाशित हो चुके हैं।

## शिक्षा ग्रन्थ

भरत और शाङ्गदेव के पीछे जाने पर 'नारदी शिक्षा' और 'मांडूकी शिक्षा' ये दो उपलब्ध होते हैं। इनमें स्वरों का वर्णन भिन्न-भिन्न जीवधारियों की ध्वनि से तुलना करके दिया हुआ है तथा स्वरों को भिन्न-भिन्न रङ्ग भी बांट दिये गये हैं। परन्तु इनमें श्रुति स्वर स्थान के विषय में किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त नहीं होती, अतः इस दृष्टि से ये ग्रंथ निरुपयोगी हैं।

## 'स्वरमेलकलानिधि'

अब हम दक्षिण के पण्डित रामामात्य द्वारा वर्णित श्रुति स्वर प्रकरण की ओर बढ़ें। यह विद्वान भी शाङ्गदेव के समान ही श्रुतियाँ बाईस मानकर और उनके प्राचीन नाम देकर प्रत्येक स्वर का अपनी अन्तिम श्रुति पर ही शुद्ध होना मानता है। इस गणना के अनुसार इन सभी का शुद्ध या अच्युत पङ्कज ४ श्री श्रुति पर, शुद्ध रिपम ७ वीं पर, शुद्ध गांधार ६ वीं पर, शुद्ध अथवा अच्युत मध्यम १३ वीं पर, शुद्ध पञ्चम १७ वीं पर, शुद्ध धैवत २० वीं पर और शुद्ध निषाद २२ वीं श्रुति पर पड़ता है। इनके ग्रंथ में शुद्ध गांधार को 'पञ्च श्रुतिकरिपम' और शुद्ध निषाद को 'पञ्चश्रुतिकधैवत' नाम अतिरिक्त दिये हैं, इसके अलावा शेष विकृत स्वरों के नाम 'रत्नाकर' जैसे ही हैं। रत्नाकर में शुद्ध और विकृत मिलाकर १२ स्वर ही बताये हैं। इन सबके तुलनात्मक नाम आगे पृष्ठ २४ पर दिए हुए नकशे से स्पष्ट ज्ञात होंगे। स्वरमेलकलानिधि में शुद्ध और विकृत प्रत्येक सात-सात मिलाकर कुल चौदह स्वर बताये हैं। शाङ्गदेव के समय जो पद्धति प्रचलित थी, वह रामामात्य के समय नहीं थी। प्रचार में मध्यम ग्राम भिन्न नहीं माना जाता था। समस्त राग एक सप्तक से ही उत्पन्न होते थे। पञ्चम अपने स्थान से नहीं हटाया जाता था। पङ्कज, मध्यम और पञ्चम की 'च्युत' अवस्था नहीं मानी जाती थी। रत्नाकर के समय निषाद स्वर की दो प्रसिद्ध विकृति कैशिक-निषाद और काकली-निषाद थी। निषाद ने पङ्कज की तीसरी श्रुति ग्रहण की, इस हेतु से रामामात्य ने इसे 'च्युतपङ्कज निषाद' का नाम दिया है। इसके समय में मध्यम की तीसरी श्रुति ग्रहण करने वाला गांधार "च्युतमध्यमगांधार" और पञ्चम की तीसरी श्रुति ग्रहण करने वाला मध्यम "च्युतपञ्चम मध्यम" हुआ। ऐतिहासिक दृष्टि से

यह क्रमिक परिवर्तन ध्यान रखने योग्य है। साधारण गांधार और कैशिक निषाद को रामामात्य ने 'षट्श्रुतिक रे' और 'षट्श्रुतिक ध' कहा है। रामामात्य के शुद्ध रे और ध स्वर, अपने कोमल रे, ध हुए और उसके शुद्ध ग और नि स्वर अपने कोमल ग नि हो जाते हैं तथा उसके अन्तर गांधार और काकली निषाद अपने शुद्ध ग और नी स्वर होते हैं। रामामात्य के ग्रंथ में दिए हुए शुद्ध, विकृत स्वर आज दक्षिण में उन्हीं नामों से प्रचलित हैं।

### राग विबोध

राग-विबोध-कर्ता पण्डित सोमनाथ ने शाङ्गदेव की वीणा पर बाईस तार बांधने की पद्धति में परिवर्तन कर वीणा के डण्डे पर बाईस परदे बांधने की युक्ति निकाली। इसने वीणा पर चार तार बांधकर प्रथम तीन तार षड्ज का। तीन श्रुतियों में मिलाना, और चौथा तार शुद्ध अथवा अच्युत षड्ज का रखने का उल्लेख किया है। प्रथम तीन तारों को 'मनाक उच्च ध्वनि' के प्रमाण से एक से दूसरा ऊँचा तार लगाकर, चतुर्थ तार को षड्ज माना है। सोमनाथ ने रत्नाकर के विकृत स्वरों के नादों को बढ़ाकर विकृत स्वरों के पन्द्रह नाम दिये हैं। उनका स्थान अगले चार्ट में देखा जाये।

### 'सङ्गीतसमयसार और 'सद्भागचन्द्रोदय'

'समयसार' ग्रंथ की रचना पं० पार्श्वदेव ने की है। इसने अपने ग्रंथ में रत्नाकर का विधान ही उद्धृत कर लिया है। श्रुति और स्वर भेद, मतङ्ग आदि के बताये हुए उद्धृत किए हैं। 'सद्भागचन्द्रोदय' के रचयिता 'पुण्डरीक विठ्ठल' ने सभी प्राचीन कल्पनाओं को अपने ग्रन्थ में स्थान दिया है, परन्तु यह किस प्रत्यक्ष स्वर ध्वनि का प्रयोग करता था, यह इसकी वीणा से समझा जा सकता है। इसकी वीणा के तार रामामात्य की वीणा के तारों के समान मिलाये जाते थे। इसने स्वर-स्थानों का वर्णन निम्नरूप से किया है:—

आद्यानुमद्राव्हय षड्जतञ्ज्या । शुद्धो यथा स्याद्वपमस्तथाद्या ॥  
सारी निवेशयेत तथा द्वितीया । तञ्ज्या तथा शुद्धगसिद्धि हेतोः ॥



सारी तृतीयाऽपि तथैव तंत्र्या । ऽधीयेत साधारण गस्य सिद्धयै ॥  
 सारी चतुर्थी लघुमध्यमस्य । सिद्धयै तया तंत्रिकया तथैव ॥  
 तंत्र्या तया पंचम सारिका च । निधीयते शुद्धमसाधनाय ॥  
 सारी निवेश्या च तथैव षष्ठी । तंत्र्या तयैवं लघुपाच्छयाय ॥

परन्तु यही कहा जावेगा कि चन्द्रोदय में दो स्वरों के मध्यान्तर में श्रुति किस नाप से रखी जावे, इस प्रश्न का कोई उत्तर प्राप्त नहीं होता । यह भी दिखाई देता है कि यह शाङ्गदेव के वाद्याध्याय में बताये हुए विवरण के अनुसार अपनी 'स्वर वीणा' पर चौदह परदे बांधता था । इसकी श्रुति वीणा भिन्न थी ।

### संस्कृत ग्रन्थकारों की तुलनात्मक श्रुति-स्वर-रचना

संस्कृत ग्रन्थकारों की श्रुति और स्वर, उनके नाम और स्थान इस तुलनात्मक चार्ट द्वारा स्पष्ट रूप से दिखाई देंगे ।

---



चार्ट में बताये हुए पंच व्यंकटमखी ने “चतुर्दंडप्रकाशिका” नामक ग्रन्थ लिखा है, और भाव भट्ट ने ‘अनूपरत्नाकर’ ‘अनूप-विलास’ और ‘अनूपांकुश’ नामक तीन ग्रंथ लिखे हैं। चार्ट में दिये हुए सभी ग्रंथकार दक्षिण पद्धति के हुए हैं।

### संगीत पारिजात

अब हम पंडित अहोबल के ‘सङ्गीत पारिजात’ की ओर चलें। अहोबल ने अपने स्वर-स्थान निश्चित करने की एक नवीन और अत्यन्त महत्वपूर्ण योजना की। इसने अपने स्वर वीणा के तार की लम्बाई पर से बताये हैं। यदि यह सुबुद्धि पण्डित शाङ्गदेव को सूझ गई होती, तो जो गड़बड़ आज उसके ग्रंथ के सम्बन्ध में फैली हुई है, वह पैदा नहीं होती। अहोबल की परिभाषायें, दक्षिण के पण्डितों जैसी नहीं हैं, फिर भी उसने वीणा पर बारह परदे ही लगाये थे और उनके लगाने का ढंग भी दक्षिण के पण्डितों जैसा था। इतना ही नहीं, उसके स्वर स्थान भी अधिकांशतः अपने ही थे। इन स्वर-स्थानों का उल्लेख इस पुस्तक-मालिका के चौथे भाग में किया जा चुका है। ‘रागतत्व विबोध’ का रचयिता पंच श्री निवास अहोबल का ही अनुयायी था। इसने अहोबल के ग्रंथ में बताये हुए स्वर-स्थान ही सिद्ध किये हैं। पूर्वाङ्ग और उत्तरांग के स्वरों का परस्पर सम्बन्ध दिखाने के लिये अहोबल इस प्रकार कहता है—

पङ्जपंचमभावेन पङ्जे ज्ञेयाः स्वरा बुधैः ।

गनिभावेन गांधारे मसभावेन मध्यमे ॥

“यह पङ्ज-पंचम भाव” यूरोपियन सङ्गीत में ‘Harmony of the fifth’ नाम से सम्बोधित किया जाता है और इसी नियम से प्राचीन ग्रीक “पिथागोरियन सप्तक” ( पिथागोरस नामक व्यक्ति द्वारा आविष्कृत ) तैयार किया गया था। अहोबल का शुद्ध थाट वर्तमान



प्रचलित काफी थाट जैसा था । दक्षिण का शुद्ध स्वर सप्तक और अपने यहां प्रचलित स्वरों का वर्णन तुलनात्मक रूप से इस तरह किया जा सकेगा ।

### दक्षिण के शुद्ध स्वर

### हिन्दुस्तानी शुद्ध स्वर

१—सा	सा
२—रे	कोमल रे
३—ग	शुद्ध रे
४—म	म
५—प	प
६—ध	कोमल ध
७—नि	शुद्ध ध

इस शुद्ध सप्तक को दक्षिण में “मुखारी” नाम दिया गया है । कदाचित् यही सप्तक रत्नाकर आदि संस्कृत ग्रंथों का शुद्ध स्वर सप्तक रहा हो । इस सप्तक में अपने यहां प्रचलित गांधार और निषाद स्वर हैं ही नहीं । उत्तर भारत में इस समय प्रचलित शुद्ध सप्तक, अपने प्रचलित काफी सप्तक जैसा था । आजकल उत्तर में बिलावल का शुद्ध स्वर सप्तक प्रचलित है । अहोबल के मत से श्रुति और स्वर में बिल्कुल भेद नहीं है । इसका मत है कि कुल बाईस गीतोपयोगी नादों में से जितने हम एक राग में उपयोग करें, उतने स्वर हैं और शेष श्रुतियां हैं ।

### रागतरंगिणी

यह ग्रंथ पण्डित लोचन का लिखा हुआ है । इसका स्वर-सप्तक अहोबल के शुद्ध स्वर सप्तक जैसा ही है । यह ग्रंथ भी उत्तर पद्धति का है । पारिजात और तरंगिणी के स्वर श्रुति का तुलनात्मक कोष्टक आगे दिया जा रहा है:—

## अहोबल और लोचन के शुद्ध विकृत स्वरों का नक्शा

नं०	श्रुतिनाम	शुद्ध स्वर	विकृत स्वर		प्रयोग के स्वर
			अहोबल	लोचन कवि	
४	छंदोवती	सा	... ..	... ..	... ..
५	दयावती	...	पूर्व रे	... ..	... ..
६	रंजनी	...	कोमल रे	... ..	कोमल रे
७	रक्तिका	रे	पूर्व ग	तीव्र रे	... ..
८	रौद्री	...	कोमल ग	तीव्रतर रे	... ..
९	क्रोधा	ग	... ..	... ..	... ..
१०	वज्रिका	...	... ..	तीव्र ग	तीव्र ग
११	प्रसारिणी	...	... ..	तीव्रतर ग	... ..
१२	प्रीति	...	... ..	तीव्रतम ग	... ..
१३	मार्जनी	म	... ..	अतितीव्रतम ग	... ..
१४	क्षिती	...	... ..	तीव्र म	... ..
१५	रक्ता	...	... ..	तीव्रतर म	तीव्रतर म
१६	संदीपिनी	...	... ..	तीव्रतम म	... ..
१७	आलापिनी	प	... ..	... ..	... ..
१८	मदंती	...	पूर्व ध	... ..	... ..
१९	रोहिणी	...	कोमल ध	... ..	कोमल ध
२०	रम्या	ध	पूर्व नि	... ..	... ..
२१	उषा	...	कोमल नि	तीव्र ध	... ..
२२	क्षोभिणी	नि	... ..	तीव्रतर ध	... ..
१	तीव्रा	...	... ..	तीव्र नि	तीव्र नि
२	कुमुद्वती	...	... ..	तीव्रतर नि	... ..
३	मंदा	...	... ..	तीव्रतम नि	... ..
४	छंदोवती	...	... ..	... ..	... ..

## ग्रन्थोक्त श्रुति स्वर प्रकरण का सारांश

१—श्रुति को एक शून्य स्वरांतर समझा जावे। उसमें गीतोपयोगिता और अभिज्ञेयता होनी ही चाहिये। अपने सप्तक के इस प्रकार के

२२ सूक्ष्म भाग करने की प्रथा है। भरत और शाङ्गदेव नियत प्रमाण की श्रुतियाँ मानते थे। परन्तु श्रुति का प्रत्यक्ष प्रमाण उस समय प्रचलित दो ग्रामों के पंचमों का परस्पर प्रमाण ही था। उन ग्रामों के लुप्त हो जाने के कारण अब उस प्रमाण का प्राप्त होना कठिन है, और गणित से लाये गये प्रमाण का उपयोग उस प्रकार नहीं हो सकता, क्योंकि उस प्रमाण से सिद्ध होने वाले स्वर अब प्रचलित होने अशक्य हैं। सम्भव होने पर भी उनकी निरूपयोगिता स्पष्ट है। इन ग्रन्थकारों के परचात् श्रुति का नियत प्रमाण नहीं रहा। आधुनिक सङ्गीत में हमें भी यही स्वीकार करना होगा। इस मत में यह व्याख्या नहीं है कि श्रुति तार की अमुक लम्बाई की आवाज, या अमुक आंदोलन का नाद, मानी जाती हो। यह भी नहीं है कि एक मध्यांतर की श्रुतियों का प्रमाण दूसरे मध्यांतर की श्रुतियों से मिलता ही हो। अपने मध्यकालीन परिचित श्रुति के विवाद में पड़ते ही नहीं थे। वे शास्त्रोक्त श्रुति संख्या और स्वरों में उनका विभागीकरण भ्रष्टापूर्वक स्वीकार कर राग प्रकरण की ओर बढ़ जाते थे। वे दो स्वरों के मध्यांतर को शास्त्रोक्त संख्या से समान विभाजित कर उन्हें ही श्रुति मानते थे, परन्तु प्रत्यक्ष व्यवहार और राग वर्णन में परम्परा से आये हुये बारह (अथवा चौदह) स्वरों का ही उपयोग करते थे।

२—श्रुति और स्वर में वास्तव में भेद नहीं होता। किसी भी राग के लिये प्रयुक्त होने वाले बाईस में से सात नादों का नाम 'स्वर' और शेष का नाम 'श्रुति' है।

सर्वाच्च श्रुतयस्तत्तद्रागेषु स्वरतां गताः।

रागहेतुत्वं एतासां श्रुति संज्ञैव संमता ॥

३—अति कोमल, तीव्रतर, आदि अलंकारिक स्वर होते हैं। आजकल सभी तरफ एक सप्तक में शुद्ध और विकृत स्वरों की स्थापना कर सङ्गीत का कार्य होता है। अब भरत और शाङ्गदेव के समय की ग्राम मूर्च्छना और जाति की पद्धति प्रचलित नहीं है। अब अपने राग वर्णन, वर्ग्य वर्ग्य स्वर वादी, सम्वादी याद और अन्य राग आदि की पद्धति से ही किये जाने चाहिये। राग गाते समय अति कोमल, तीव्रतम, तीव्रतर, स्वर, स्वरसंगति और कण्ठेन्द्रिय की



रचना के कारण अपने आप गले से लग जाया करते हैं। यह अनुभव सिद्ध है कि स्वरों का यथा योग्य 'उच्चार' सध जाने पर जो स्वर जिस जगह जितना ऊँचा या नीचा लगाना चाहिये अपने आप लग जाता है।

- ४—अहोबल ने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है कि अति कोमल रे और ध अर्थात् ५ वीं और १८ वीं श्रुति दक्षिण के किसी भी प्रत्यकार द्वारा प्रयुक्त नहीं की गईं। रामामात्य, सोमनाथ, व्यंकटमखी आदि तो दो श्रुति के रे और ध को भी प्रयुक्त नहीं करते। पुण्डरीक विठ्ठल कहते हैं:—

पंचम्यष्टादशी पृष्ठी तथा चैकोनविंशतिः ।

चतस्रः श्रुतयश्चैता रागाद्यैरप्रयोजकाः ॥

- ५—दक्षिण के शुद्ध स्वरों का स्थान बिलकुल निम्नतम स्थिति का होता है। उत्तर की ओर उनको मध्य स्थिति का माना है, अर्थात् उनकी दो विकृतियाँ, कोमल (उतरा हुआ रूप) होती हैं।

- ६—प्रत्येक स्वर अपने शुद्ध स्थान से तनिक आगे पीछे हटने पर विकृत हो जाता है। विकृत हो जाने पर उसका अगले और पिछले स्वरों से बना हुआ मूल सम्बन्ध बदल जाता है।

- ७—भरत और शाङ्गदेव के शुद्ध स्वर सप्तक कैसे थे, इसे समझ लेने का मार्ग अब नहीं रहा। रागतरंगिणी और पारिजाति का शुद्ध स्वर सप्तक काफी का था। प्रचलित हिन्दुस्थानी पद्धति का शुद्ध स्वर सप्तक विलावल का है। यदि स्वरों की आन्दोलन संख्या को गणित दृष्टि से बताना हो तो तरंगिणी और पारिजात के शुद्ध सप्तक के स्वरों की कम्पन संख्या २४०, २७०, २८८, ३२०, ३६०, ४०५, ४३२ और ४८० होगी। अपने शुद्ध सप्तक ( विलावल ) के स्वरों की आन्दोलन संख्या २४०, २७०, ३०१४३, ३२०, ३६०, ४०५, ४५२४३ और ४८० होगी।

वादी संवादी स्वरों का श्रुत्यंतर कैसे नापा जावे ?

साधारणतः वादी सम्वादी स्वर पड़ज पञ्चम भाव से ठहराये जाते हैं। बहुधा वादी स्वर से सम्वादी स्वर पाँचवाँ होता है। यद्यपि इसमें कुछ अपवाद भी होता है, परन्तु नियम यही है। यदि इस तरह आने वाला सम्वादी स्वर उस राग में वर्ज्य होता हो, जैसे 'सा रे ग म

प ध सां' आरोह के औड़व राग में बादी गांधार हो और उसका साधारण सन्वादी निपाद उस राग में वर्ज्य होता हो तो उसके निकट का स्वर सन्वादी अर्थात् चौथा ( उदाहरण में धैवत ) अथवा छठा ( उदाहरण में पड़ज ) हो सकता है । परन्तु यथा सम्भव सन्वादी स्वर बादी स्वर के निकट का अधिक अच्छा माना जाकर चौथा स्वर ही पसन्द किया जाता है ।

### शुद्ध और विकृत जाति

प्रचार में राग गायन आने के पूर्व जाति गायन प्रचलित था । जाति का लक्षण क्रमिक पुस्तक के चौथे भाग के पृष्ठ ३५ पर बताया गया है । शाङ्गदेव ने जाति के दो भेद शुद्ध और विकृत जाति नामक किये थे । यह विवरण रत्नाकर के स्वराध्याय नामक सातवें प्रकरण में है । अभी तक यह स्पष्टता नहीं हुई कि 'जाति' अमुक स्वरान्तर को कहते हैं । अभी तक रत्नाकर का शुद्ध-स्वर-थाट सिद्ध नहीं हो सका, परन्तु अनुमान है कि वह 'मुखारी' होना चाहिये । रत्नाकर के उपांग शीर्षक के अन्तर्गत अपने अनेक राग वर्णन किये हुए प्राप्त होते हैं । शाङ्गदेव अपनी शुद्ध जाति को संख्या सात मानता था । उसने इनका नाम प्रसिद्ध सात स्वरों पर 'पाड़जी' 'आर्षभी' 'गांधारी' 'मध्यमा' आदि बताया है । वह शुद्ध जाति के लक्षण इस प्रकार बताता है—“जिस जाति में न्यास, अपन्यास, अंश और ग्रह स्वर, जाति का नाम स्वर ही होता हो, जो सदा सम्पूर्ण हो और जिसमें तार स्थान में कभी भी न्यास न हो, वह शुद्ध जाति होती है । न्यास का नियम सुस्थिर रखते हुए अन्य बातों में परिवर्तन करने पर जाति विकृत हो जावेगी । इसे 'शुद्ध विकृत' की संज्ञा प्राप्त होगी । इस प्रकार एक-एक शुद्ध जाति के अनेक विकृत भेद हो सकते हैं । शाङ्गदेव कहता है:—

संपूर्णत्वग्रहांशापन्यासेष्वेकैक वर्जनात् ।

भवंति भेदाश्चत्वारो द्वयोस्त्यागे तु पमरताः ॥

त्यागे त्रयाणां चत्वार एकस्त्यक्ते चतुष्टये ।

भेदाः पंचदर्शवैते पाड्ज्याः सद्भिर्निरूपिताः ॥

तत्राष्टौ पूर्णताहीनाः पाड्बौडुवभेदतः ।

अतोऽष्टावधिका आर्षभ्यादिष्वौडुवजातिषु ॥

अतस्त्रयोविंशतिधा षट्सु प्रत्येकमीरिताः ॥

इस प्रकार 'पाङ्जी' जाति की पन्द्रह विकृत 'संसर्गज' जातियां हो जाती हैं और आर्षभी, गांधारी आदि शेष छः जाति की प्रत्येक की तेईस हो जाती हैं। कुल १५३ विकृत जातियां होती हैं। ये शुद्ध विकृत जातियां हुईं। संसर्गज विकृत जातियां ग्यारह होती हैं: परन्तु आज की स्थिति में यह जाति प्रकरण प्रत्यक्ष उपयोग का नहीं है क्योंकि रत्नाकर से यह व्यक्त नहीं होता कि उसका शुद्ध स्वर थाट कौनसा है, वह अपनी वीणा पर कितने तार लगाता था और उन्हें किन स्वरों में मिलाता था।

### मूर्छना के अर्थ और प्रयोग में परिवर्तन

मध्यकालीन परिष्ठितों के समय में एक ही ग्राम माना जाता था। इसी प्रकार प्राचीन ग्राम, मूर्छना और जाति का प्रपञ्च भी प्रचलित न था। 'जाति' का प्रयोग गायन में नहीं किया गया। 'ग्राम' और 'मूर्छना' शब्द प्रचलित अवश्य थे, परन्तु उनका उपयोग नवीन परिस्थिति के अनुसार पूर्ववत् नहीं हुआ। श्रीनिवास कहता है:—

आदाबुद्गृह्यते येन स तानोद्ग्राहसंज्ञकः ।

आद्यंतयोश्चानियमस्ताने यत्र प्रजायते ॥

स्थायी तानः सविज्ञेयो लक्ष्यलक्षण कोविदैः ।

संचारी स तु विज्ञेयः स्याद्यारोहविमिश्रितः ।

यत्र रागस्य विश्रांतिः समाप्तिद्योतको हि सः ॥

इसने सैंधव राग का सर्व प्रथम उदाहरण इस प्रकार दिया है:—

शुद्धमेलोद्भवः पूर्णो धैवतादिक मूर्छना ।

आरोहे गनिवर्ज्यः स्याद्रागः सैंधवनामकः ॥

आगे सरगम से उदाहरण देकर अमुक 'उद्ग्राह' अमुक 'स्थायी' अमुक 'संचारी' अमुक 'मुकायी' भी बताता है। इस लक्षण में 'धैवतादिक मूर्छना' प्रथम उद्ग्राह खण्ड है, यानी धैवत से आरम्भ की गई 'मूर्छना' ध सा रे म प म। गुरे सा नि ध ध सा, इस प्रकार बताई है। अहोबल भी हूवहू यही व्याख्या और यही मूर्छना बताता है। 'आदाबुद्गृह्यते येन स तानोद्ग्राहकारकः' अहोबल के इस वाक्य को श्री निवास ने ग्रहण कर लिया है। 'मेल' मूर्छना की अगली स्थिति है। अर्थात् मूर्छना का आधार मेल, मेल का आधार ग्राम, ग्राम का आधार



शुद्ध स्वर और स्वरों का आधार श्रुति इस प्रकार की श्रृंखला है। राग सम्पूर्ण, पाड़व और औड़व होने के कारण मेल भी वैसे ही होने आवश्यक थे, परन्तु उनका विस्तार पड़ज से पड़ज तक होकर रंजकत्व की शर्त न रखते हुए मध्य में मूर्छना की योजना भी होनी थी। अब मूर्छना की व्याख्या “आरोहश्चावरोहश्च स्वराणां जायते यदा । तां मूर्छनां तथा लोके आहृर्ग्रामाश्रयां बुधाः ।” हो गई थी, और पूर्वकालीन व्याख्या “क्रमात्स्वराणां सप्तानामारोहश्चावरोहणम्” में अन्तर हो गया था। मेल का स्वर स्वरूप निश्चित होने पर, “मूर्छना” से आरम्भ का स्वर नियत कर तथा वर्ज्यावर्ज्य स्वर नियमों से आरोह अवरोह कायम कर, राग निश्चित किया गया। ‘उद्ग्राह’ तान कानों में पड़ी कि यह ध्यान आ जाता था कि कौन सा राग है। इस व्यवस्था को ध्यान में रखकर, इस मालिका में साधारणतः प्रथम राग का ‘उठाव’ ( उद्ग्राह ) अर्थात् मूर्छना बताई गई, और बाद में ‘चलन’ यानी “अन्तर्मार्ग” दिखाया गया है। उद्ग्राह की पूर्ति अंशादि-स्वरों से होती थी। आगे चलकर यह ध्वनन भी नहीं रहा। और “मूर्छना” “मध्यपङ्क्तिं समाश्रय तदूर्ध्व स्वरमा व्रजेत् । पूर्वैकस्वरं त्यक्त्व त्वारोहादिकं मुह्यताम्” के नियम से होने लगी।

इस विचार धारा से यह दिखाई पड़ेगा कि मेल अथवा स्वरांतर निश्चित हो जाने पर, उसी पंक्ति में सिर्फ मूर्छना बदल कर अर्थात् भिन्न-भिन्न ग्रह स्वरों की कल्पना कर, उन्हें वर्ज्यावर्ज्य नियम से गाने से राग बदल जाता था। इसके पश्चात् मेल के पाड़व औड़व स्वरूप, उनके तीव्र कोमल स्वर और वर्ज्यावर्ज्य स्वर नियम पर ही रागत्व अवलम्बित रह गया, और उद्ग्राह तान का महत्व समाप्त हो गया। और फिर रागों के आरोहावरोह पङ्क्ति से वर्ज्यावर्ज्य स्वर नियमों के अनुरूप ठहराये जाने लगे। धीरे-धीरे ‘मूर्छना’ का पर्यायवाची ‘मेल’ होने लगा। प्राचीन काल में जबकि जाति गायन था, तब भी ग्राम की स्वर पंक्ति, फिर मूर्छना, फिर जाति इस प्रकार का क्रम था। उस समय मूर्छना की स्वर पंक्ति में से ग्रह अंश, आदि पसन्द करने पर जाति का गायन प्राप्त होता था। यह सम्पूर्ण व्यवस्था बाद में पिछड़ने लगी और सभी राग पड़ज से उत्पन्न करने का निश्चय हुआ। प्राचीन शब्दों के नवीन अर्थ उत्पन्न हुए, और उनमें नवीन कौशल उपलब्ध होने लगा।

## आधुनिक अथवा 'लक्ष्य' सङ्गीत

### यूरोपियन सप्तक

वीणा के एक मुक्ततार को छेड़ने पर यदि प्रति सैकंड २४० आन्दोलन उत्पन्न हों, तो इस प्रकार उत्पन्न स्वर को मध्य सप्तक के आरम्भ का ( जिसे मध्य षड्ज कहते हैं ) षड्ज माना जाता है। यदि इस तार की लम्बाई कम करते जावें तो स्वर क्रमशः ऊँचा होता जावेगा। तार की लम्बाई आधी करने पर आंदोलन संख्या, मुक्त तार के आंदोलन से दुगुनी हो जाती है, अर्थात् इस तार की लम्बाई के ठीक बीच में यदि एक परदा बांधा जावे तो इस परदे तक के तार, और परदे से घोड़ी तक के तार, इन दोनों टुकड़ों से षड्ज निकलेगा, और उसकी आंदोलन संख्या प्रति सैकंड ४८० होगी। अमुक स्वर की प्रति सैकंड कितनी आंदोलन संख्या है, यह यन्त्र से नापी जा सकती है। इस प्रमाण से यूरोपियन सप्तक में प्रथम ( अर्थात् मध्यम ) षड्ज, जिसे वे 'C' नाम देते हैं—, के तार की आंदोलन संख्या प्रति सैकंड २४०, ऋषभ (D) की २७०, गांधार (E) की ३००, मध्यम, (F) की ३२०, पंचम (G) की ३६०, धैवत (A) की ४००, निषाद (B) की ४४० और तार षड्ज (C) की ४८०, होती है। इसे यूरोपियन-‘टेम्पर्ड’ सप्तक कहते हैं। सप्तक रचना में, किसी भी स्वर से पांचवें स्वर की कंपन संख्या डेढ़गुनी होती है, और ऐसे दोनों स्वरों में संवाद अथवा ‘हॉरमनी’ होती है। यह नियम और ऊपर बताया हुआ ‘तार, सप्तक में दुगुनी कंपन संख्या होने का नियम’, इन दो नियमों से एक सप्तक के स्वरों के आंदोलन, बिना यंत्र की सहायता के केवल गणित से निकाले जा सकते हैं। उदाहरणार्थः—षड्ज के आंदोलन २४० हैं तो पंचम के आंदोलन इससे डेढ़ गुने ३६० हुए। पंचम से पांचवाँ स्वर तार ऋषभ है। इसके आंदोलन ३६० के डेढ़ गुने ४४० हुए। तार ऋषभ के आंदोलन ४४० हैं अतः मध्यम ऋषभ के इससे आधे २७० हुए। मध्यम ऋषभ से पांचवाँ स्वर मध्य धैवत है, इसके आंदोलन २७० के डेढ़ गुने ४०५ हुए। इस धैवत से पांचवें स्वर तार गांधार के आंदोलन ४०५ के १½ गुने ६०७½ हुए और मध्यम गांधार के ३०३½ हुए। इस स्वर से पांचवे स्वर मध्य निषाद के आंदोलन इससे १½ गुने ४५५½ हुए, और मध्य मध्यम के आंदोलन तार षड्ज के ३ यानी ३२० हुए। इस प्रकार सम्पूर्ण सप्तक के आंदोलन २४०,

२७०, ३०३३, ३२०, ३६०, ४०४, ४२२३, और ४८० होते हैं। इनमें गांधार, धैवत और निषाद की आंदोलन संख्या में दस का पूर्ण भाग नहीं जाता, अतः ये स्वर यन्त्र की सहायता से निश्चित नहीं किये जा सकते। इसलिये ये “टेम्पर” से “टेम्पर्ड” सप्तक में गांधार के ३००, धैवत के ४०० और निषाद के ४२० आंदोलन माने जाते हैं। दूसरी तरह से कहा जावे तो यूरोपियन पद्धति के अनुसार दो निकटस्थ स्वरों के बीच में का अन्तर तीन प्रकार का होता है—१ मेजर टोन, २ मायनर टोन, ३ सेमी टोन। यदि दो स्वरों का मध्यान्तर ‘मेजर टोन’ हुआ तो उनका प्रमाण  $\frac{9}{8}$  और सेमी टोन हुआ तो  $\frac{16}{15}$  होता है। पड़ज, ऋषभ, मध्यम, पंचम, और पंचम, धैवत, का मध्यान्तर ‘मेजर-टोन’, ऋषभ गांधार और धैवत निषाद का मध्यान्तर ‘मायनर टोन’ तथा गांधार मध्यम और निषाद तार पड़ज, का मध्यान्तर ‘सेमिटोन’ माना जाता है।

### हिन्दुस्थानी सङ्गीत पद्धति के सर्वसाधारण नियम

( १ ) प्रत्येक राग में कम से कम पाँच स्वर होने चाहिए। रागों के तीन वर्ग माने गये हैं (१) औड़व (अर्थात् पाँच स्वरों का) (२) पाड़व (अर्थात् छः स्वरों का) और (३) सम्पूर्ण (अर्थात् सातों स्वरों का) जिसमें प्रयोग हो।

( २ ) किसी राग के आरोह में पाँच या छः स्वर और अवरोह में सातों स्वरों का प्रयोग होता हो अथवा उसके विपरीत रूप से स्वर ग्रहण किये गये हों, तो कुछ ग्रंथकार ऐसे रागों की शकलें ‘सम्पूर्ण’ शब्द से सम्बोधित करते हैं।

( ३ ) दो, तीन अथवा चार स्वरों के समुदाय को ‘तान’ कहा जा सकता है, राग नहीं।

( ४ ) औड़व, पाड़व और सम्पूर्ण, वास्तव में राग के आरोह, अवरोह दोनों पर लागू होने वाले गुण हैं, इसलिये प्रत्येक थाट या मेल के गणित दृष्टि से निम्न ६ भेद हो सकते हैं। औड़व-औड़व (यानी आरोह भी औड़व और अवरोह भी औड़व) औड़व-पाड़व, औड़व-सम्पूर्ण, पाड़व-औड़व, पाड़व-पाड़व, पाड़व-सम्पूर्ण, सम्पूर्ण-औड़व, सम्पूर्ण-पाड़व और सम्पूर्ण-सम्पूर्ण।

( ५ ) अधिकतर किसी भी राग में एक साथ मध्यम और पञ्चम दोनों स्वर वर्ज्य नहीं होते।



( ६ ) सप्तक के 'पूर्वाङ्ग' और 'उत्तराङ्ग' नामक दो भाग होते हैं। पूर्वाङ्ग सा से प तक और उत्तराङ्ग म से सां तक होता है।

( ७ ) हिन्दुस्थानी-पद्धति के सभी रागों के उनके स्वरों के अनुसार तीन वर्ग होते हैं। १-कोमल रे और ध स्वर वाले सन्धिप्रकाश राग, २-तीव्र रे, ध और ग वाले राग, ३-कोमल ग, नी वाले राग। इस वर्गीकरण का रागों के गान समय से निकट सम्बन्ध है।

( ८ ) सन्धिप्रकाश रागों को सूर्योदय और सूर्यास्त के समय गाने का प्रचार है, इस कारण ये सन्धिप्रकाश राग कहलाते हैं। इन्हें गाकर तीव्र रे, ग और ध वाले राग और उनके बाद कोमल ग नि वाले राग गाये जाते हैं। संधिप्रकाश काल प्रतिदिन दो बार आता है, अतः यह कम दिन और रात्रि में एक सा ही दिखाई पड़ता है।

( ९ ) हिन्दुस्थानी सङ्गीत में मध्यम स्वर बहुत ही विचित्रता दर्शक माना जाता है। इसकी सहायता राग-समय निश्चित करने में तो होती ही है, परन्तु इसके प्रयोग से राग की प्रकृति तक बदली जा सकती है। इस गुण के कारण इसे कहीं-कहीं 'अध्वदर्शक' कहा जाता है।

( १० ) हमारे सङ्गीत में तीव्र म के प्रयोग वाले राग अधिकतर रात्रिगेय हैं। दिन में इस स्वर से संयुक्त राग बहुत ही कम दिखाई देते हैं।

( ११ ) जो राग दोपहर बारह बजे से रात्रि के बारह बजे तक गाये जाते हैं, उन्हें 'पूर्वराग' कहा जाता है। रात्रि के बारह बजे से दिन के बारह बजे तक गाये जाने वाले रागों को 'उत्तर राग' कहा जाता है।

( १२ ) राग अपने नियत समय पर गाया जाने पर ही अधिक शोभनीय होता है।

यथाकाले समारब्धं गीतं भवति रंजकम् ।

अतः स्वरस्य नियमात् रागेऽपि नियमः कृतः ॥

तात्पर्य यह है कि जब यह मान लिया गया है कि अमुक समय में अमुक प्रकार के स्वर अधिक रंजक होते हैं, तब उन स्वरों के अनुसार रागों का समय नियत करना अपने आप सिद्ध हो जाता है।

( १३ ) पूर्व रागों में अधिकतर वादी स्वर पूर्वाङ्ग में से ही ( सा से प तक ) कोई एक होता है। उत्तर रागों में उत्तराङ्ग ( म से सां तक )

का कोई एक स्वर वादी होता है, इसलिये पूर्व रागों को 'पूर्वाङ्ग वादी' और उत्तर रागों को 'उत्तराङ्ग वादी' कहा जाता है।

( १४ ) सा. म और प, दोनों अङ्गों में होने के कारण जिन रागों में ये स्वर वादी होते हैं, वे सर्वकालिक माने जाते हैं।

( १५ ) राग के लिये निम्नलिखित पाँच तत्व होने आवश्यक हैं:—

( १ ) थाट, ( २ ) आरोहावरोह, ( ३ ) वादी सम्वादी, ( ४ ) समय ( ५ ) रंजकता।

( १६ ) प्रत्येक राग में एक ही स्वर वादी और एक ही स्वर सम्वादी होता है। यदि वादी स्वर पूर्वाङ्ग का है तो पड़ज पञ्चम भाव से संवादी स्वर उत्तराङ्ग का होता है। इसी तरह वादी स्वर उत्तराङ्ग में हो तो सम्वादी पूर्वाङ्ग में होता है। वादी और सम्वादी स्वर में कम से कम चार स्वरों का अन्तर होता है। साधारणतः समश्रुतिक स्वर सम्वादी होते हैं। शेष स्वरों को 'अनुवादी' समझा जाता है और प्रयुक्त न होने वाले स्वरों को वर्ज्य स्वर अथवा 'विवादी' माना जाता है। कहीं-कहीं उचित स्थल पर विवादी स्वर का प्रयोग भी राग की रंजकता बढ़ाने के लिये उचित मात्रा में किया जाता है। गायक लोग इसलिये भी विवादी स्वर का प्रयोग करते हैं कि तान लेने में टेढ़े तिरछे दुकड़े उत्पन्न न हो जावें। प्रायः अनेक स्थलों पर अर्धान्तर वाले स्वर ही अवरोह में विवादी के रूप में ग्रहण किए हुए प्राप्त होते हैं। रे के आगे गु, ग के आगे म, म के आगे प, ध के आगे नि, इस प्रकार विवादी स्वर प्राप्त होते हैं। एकान्तर वाले स्वर भी कहीं-कहीं इस प्रकार के हो सकते हैं। वर्ज्य माने हुए स्वरों का 'कण' नियत स्वर के साथ स्पर्श रूप से लिया जाने से राग हानि नहीं होती और उच्चार सरल हो जाता है। इसे ही 'ईपत्स्पर्श' कहा जाता है।

( १७ ) जहां तक सम्भव हो, एक ही स्वर के दोनों रूप ( तीव्र और कोमल ) एक के बाद एक नहीं लिये जाते। यदि कहीं ऐसा प्रयोग दिखाई दे तो उसे अपवाद समझना चाहिए। उदाहरणार्थ 'ललित' राग के दोनों मध्यम।

( १८ ) जिस राग में तीव्र मध्यम का प्रयोग होता है, उसमें अकेला कोमल निषाद प्रयुक्त नहीं होता। दोनों मध्यम और दोनों निषाद वाले राग हो सकते हैं।

( १६ ) सन्धिप्रकाश रागों का उपयोग करण और शान्तरस तथा इनके अन्तर्भूत रसों का परिपोषक होता है। तीव्र रे ध, और ग वाले राग शृङ्गार, हास्य और इनके अन्तर्गत रसों के पोषक होते हैं और कोमल ग और नि वाले राग वीर, रौद्र और भयानक रसों के पोषक होते हैं।

( २० ) सा, म और प वादी स्वर वाले राग अधिक गंभीर प्रकृति के होते हैं।

( २१ ) अगले प्रहर के रागों में जाते हुए पिछले प्रहर के अन्तिम भाग में आने वाले रागों में धीरे-धीरे द्विस्वरूपी स्वर आगे लगते हैं; जैसे—मध्यरात्रि के कोमल ग और नि वाले राग शुरू करने के पूर्व खमाज थाट के अन्तिम रागों में दोनों गांधार और दोनों निषाद ग्रहण करने वाले रागों की योजना की जाती है। ऐसे मध्यवर्ती रागों को 'परमेल प्रवेशक' कहा जाता है।

( २२ ) साधारणतया पूर्व राग और उत्तर राग परस्पर 'जवाब' होते हैं। उदाहरणार्थ 'विलावल' का सायंकालीन जवाब 'कल्याण' 'सारङ्ग' का 'कानड़ा' 'भैरव' का 'पूर्वी' आदि।

( २३ ) प्रत्येक थाटों से पूर्व राग और उत्तर राग उत्पन्न होते हैं। एक अङ्ग के राग वादी सम्वादी बदल कर दूसरे अङ्ग में बनाये जाना शक्य है।

( २४ ) प्रातःकालीन रागों में कोमल रे और ध की प्रबलता दिखाई देती है और सायंकालीन रागों में तीव्र ग और तीव्र नि की प्रबलता दीख पड़ती है।

( २५ ) सायंकालीन सन्धिप्रकाश रागों में कोमल म का प्रमाण विलकुल कम होता है। प्रातःकालीन सन्धिप्रकाश रागों में तीव्र म का प्रमाण कम होता है।

( २६ ) राग में स्वर कम अधिक लगाने की मात्रा के अनुसार प्रबल दुर्बल अथवा सम हो जाते हैं।

( २७ ) राग विस्तार में तिरोभाव साधकर रंजकता बढ़ाने के लिये वादी स्वर के अलावा अन्य स्वरों को 'अंशत्व' ( आगे लाना ) दिया जाता है। 'कण' का बहुत महत्व होता है, कहीं-कहीं 'कण' से ही राग भेद हो सकता है।



( २८ ) रात्रि के प्रथम प्रहर में गाये जाने वाले रागों में जहां दोनों मध्यम का प्रयोग होता है, वहां शुद्ध मध्यम आरोह और अवरोह में प्रयुक्त होता है ।

( २९ ) रात्रि के प्रथम प्रहर में गाये जाने वाले दोनों मध्यम वाले रागों में “आरोहे तु निबक्रं स्यादवरोहे गवक्रितम्” का सामान्य नियम दिखाई पड़ता है । ऐसे रागों में आरोह में निषाद स्वर दुर्बल रहता है ।

( ३० ) दोनों मध्यम वाले रागों के अंतरों में बड़ा ही साम्य होता है । परस्पर की भिन्नता आरोह में स्पष्ट दिखाई जा सकती है ।

( ३१ ) उत्तर रागों का राग स्वरूप अवरोह में और पूर्व रागों का राग स्वरूप आरोह में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है ।

( ३२ ) ‘नि सा रे ग’ स्वर समुदाय तत्काल संधिप्रकाशत्व दिखाता है ।

( ३३ ) सायंगेय रागों में तार पड़न की प्रबलता दुःसह होती है । प्रातर्गेय रागों में इसी स्वर की प्रबलता अतिशय रंजक होती है ।

( ३४ ) दोपहर बारह बजे के उपरांत क्रमशः सा, म, और प स्वरों की प्रबलता बढ़ती जाती है । यही बात मध्य रात्रि बीत जाने पर फिर से दिखाई पड़ती है । अपराह्न काल के रागों के आरोह में रे और घ स्वर दुर्बल अथवा वर्ज्य हो जाते हैं । ठीक दोपहर को ऋषभ और निषाद स्वर बहुत जोरदार हो जाते हैं ।

( ३५ ) पूर्व रागों में जो महत्व सा और प का होता है वही उत्तर रागों में प और सा का होता है । पूर्व रागों की पूर्व चतुःस्वरी का कार्य उत्तर रागों में उत्तर चतुःस्वरी की ओर जा पहुंचता है ।

( ३६ ) जिस राग का विस्तार मन्द्र सप्तक में अच्छा विस्तृत दिखाई देता है उसकी प्रकृति गंभीर होती है । छुद्र गीतों के रागों में मन्द्र स्थान का बहुत कार्य नहीं होता ।

( ३७ ) रागों में ‘ध’ और ‘प’ स्वर प्रबल होने पर प्रातःकाल की छाया पड़ने लगती है । ये स्वर उत्तरांग प्रधान रागों में अतिशय विचित्रता उत्पादक होते हैं । इनका महत्व कम करने के लिये पूर्वाङ्ग के गांधार से उनका योग अथवा संगति की जाती है ।

(३८) कोमल धैर्य और तीव्र गांधार वाले रागों में पंचम क्वचित ही वर्ज्य किया जाता है। जहां यह वर्ज्य किया जाता है, वहां इसकी पूर्ति दोनों मध्यम लेकर की जाती है।

(३९) कोमल निषाद राग वाले रागों के आरोह में अनेक बार तीव्र निषाद का प्रयोग किया जाता है। प्रायः यह प्रयोग काफी और खमाज थाट के रागों में दिखाई पड़ता है।

(४०) तीव्र मध्यम वाले रागों के अन्तरे अनेक समय गांधार से शुरु किये हुए प्राप्त होते हैं।

(४१) अपने सङ्गीत में अनेक बार रागों की परस्पर स्वर संगति पर से होती है। स्वर संगति से सूक्ष्म प्रमाण से स्वर स्थान अपने आप आगे पीछे हो जाते हैं।

इस पुस्तक में आगे दिये हुए गीतों के आरम्भ में जो राग वर्णन दिये गये हैं, उनमें स्वर, सङ्गीत स्थान, सायंगेयत्व या प्रातर्गेयत्व, संधि-प्रकाशत्व, अंश, परमेल प्रवेशत्व, मन्द्र गायन, गांभीर्य, आदि सभी बातों का उल्लेख यथा स्थान किया गया है। वह भाग विद्यार्थियों के लिये महत्वपूर्ण है, और उन्हें ध्यान में रखना ही चाहिये।

### राग सम्बन्धी ध्यान में रखने योग्य महत्वपूर्ण बातें

प्रत्येक राग सम्बन्धी निम्न लिखित बीस बातें यदि विद्यार्थियों के ध्यान में जम जावें तो उन्हें वह राग अच्छी तरह अवगत हो जायेगा। वे बातें इस प्रकार हैं:—(१) थाट (२) जाति-औड़व पाड़व सम्पूर्ण अथवा मिश्र, जैसे औड़व-पाड़व, औड़व सम्पूर्ण आदि (३) गायन समय (४) अङ्ग प्राधान्य, पूर्वाङ्ग अथवा उत्तरांग (५) वादी स्वर (६) संवादी स्वर (७) सङ्गीत (८) मिश्रण, अर्थात् राग शुद्ध है अथवा एक या अधिक रागों का मिश्रण हुआ है। (९) वर्ज्य स्वर (१०) दुर्बल स्वर (११) वक्रता, है या नहीं (१२) आरोहावरोह (१३) पकड़ (१४) विभ्रांति-स्थान (१५) स्थाई का उठाव (१६) साधारण चलन (१७) अन्तरे का उठाव (१८) समानता या भिन्नता अर्थात् उसी थाट से उत्पन्न होने वाले

रागों से वह कितना समान अथवा कितना भिन्न है (१६) ग्रन्थोक्त आधार और (२०) प्रचलित रूप तथा आधार। इस सभी संग्रह का एक कोष्ठक तैयार कर प्रत्येक राग सम्बन्धी जानकारी विद्यार्थियों को भरकर रख लेना चाहिये।

## हिन्दुस्थानी सङ्गीत पद्धति की थाट संख्या

हिन्दुस्तानी सङ्गीत पद्धति में प्रचलित सवा सौ ठेढ़ सौ रागों को दस-जनक मेलों में विभाजित किया है। इस मेल वर्गीकरण में आने वाले प्रत्येक रागों का अत्यन्त सूक्ष्म निरीक्षण 'हिन्दुस्तानी सङ्गीत पद्धति' ग्रंथ में किया गया है; और संक्षिप्त वर्णन क्रमिक पुस्तक मालिका में चीजों के पहिले दिया गया है। इस पद्धति के नियमों की दृष्टि से थाटों की संख्या दस, पूर्ण और पर्याप्त होती है। यदि कोई चाहे तो वह इससे अधिक कम संख्या मान सकता है। इस पद्धति में दस थाटों के तीन समुदाय उनके स्वरों पर से किये हैं। पहिले समुदाय में रे ध और ग स्वर शुद्ध प्रयुक्त होने वाले थाटों का समावेश किया है, ये थाट कल्याण विलावल और खमाज हैं। दूसरे समुदाय में रे कोमल और शुद्ध ग, नि वाले राग आते हैं, ये भैरव पूर्वी और मारवा थाट हैं। तीसरे समुदाय में ग और नि कोमल वाले थाट, अर्थात् काफी, आसावरी, भैरवी, और तोड़ी थाट आते हैं। इस वर्गीकरण में रागों का समय भी स्थूल रूप से एक दस ध्यान में आ जाता है। दक्षिण की ओर पं० व्यंकटमखी ने बारह स्वरों से ७२ थाट गणित से सिद्ध किये हैं, यह विषय इस मालिका के तीसरे भाग में विस्तार पूर्वक दिया ही जा चुका है। एक समय, मुख्य छः राग उनकी छत्तीस रागिनी और उनके पुत्र आदि व्यवस्था प्रचलित थी। वे छः राग ये थे (१) भैरव (२) मालकौंस (३) हिंडोल (४) दीपक (५) श्री और (६) मेघ। मतांतर में ये छः नाम भी भिन्न मिलते हैं, परन्तु आजकल रागरागिनी के रूपों में बहुत अधिक परिवर्तन हो जाने से यह व्यवस्था नष्ट सी हो गई है। उस समय के राग नाम और जन्य-



जनक व्यवस्था आज के सङ्गीत से नहीं मिल सकती और ज्ञान जिस मुलम रीति से प्राप्त हो, समाज को वही रीति अधिक पसन्द आती है, अतः इस रागिनीकी व्यवस्था की अपेक्षा थोड़ा रचना अधिक श्रेष्ठ है।

### रागों का सायंप्रातर्गेयत्व

अपने रागों में पड़ज स्वर कहीं भी वर्ज्य नहीं होता। राग के मुख्य अंग को बदलने वाले स्वर, अथवा अपनी राग पद्धति के मार्ग दर्शक स्वर रे, ग, ध, और नि हैं। शुद्ध म और पंचम स्वर को वादी बनाने पर भी राग स्वरूप में स्पष्ट भेद हो सकता है, तो भी प्रमुख वैचित्र्य रे, ग, ध और नि स्वरों को ही प्राप्त होता है। प्रत्येक राग में मध्य पड़ज बड़ी मात्रा में रहता है। तार पड़ज इस प्रकार नहीं आता। यदि किसी राग में जहाँ-तहाँ तार पड़ज चमकने लगे तो उसमें प्रातर्गेयत्व की छाया आने लगती है। सायंगेय रागों में तार पड़ज की प्रबलता दुःसह होती है। सायंकाल के समय राग वैचित्र्य रे, ग, और प स्वरों पर निर्भर होता है। इन प्रत्येक स्वरों पर समाप्त होने वाली तानें बहुत ही रंजक होती हैं। 'ग-प' और प-ग स्वरों के उच्चार द्वारा भी प्रातर्गेयत्व और सायंगेयत्व दिखाया जा सकता है। आरोह में यथा स्थान ऋषभ लेते रहने पर प्रातःकाल का रंग दूर होता जावेगा।

धैवत और पंचम बढ़ जाने पर राग गंभीर होकर प्रातःकालीन दिखाई देने लगता है। ऋषभ, गांधार प्रबल होने पर इसका उलटा परिणाम हो जाता है। मध्यम, निषाद, कम होने पर गांभीर्य आ जाता है और सायंगेयत्व कम होता जाता है। सायंगेय रागों में पूर्वाङ्ग प्रबल होता है, और प्रातर्गेय रागों में उत्तरांग प्रबल होता है।

जो अंग प्रबल होता है, अधिकतर राग का वादी स्वर उसमें ही होता है। एक से आरोह अवरोह होने पर भी अंग की प्रबलता से राग भिन्न हो जाता है। उदाहरणार्थ देशाकार और भूप को लो। दोनों में 'सा, रे, ग, प, ध, सां'—स्वर लगते हैं, परन्तु देशाकार में उत्तरांग प्रबल है और इसका वादी स्वर धैवत है। भूप में पूर्वाङ्ग प्रबल है और इसका वादी स्वर गांधार है। इस कारण दोनों की प्रकृति में बहुत कुछ अन्तर

हो जाता है। इसी तरह तीव्र मध्यम भी सायंगेयत्व प्रगट करता है। शाम के अन्तिम प्रहर में तार पड़ज समस्त गायन का प्राण स्वर हो जाता है। गायक की आवाज अच्छी चमकती है तथा पड़ज मध्यम और पंचम स्वरों को अद्भुत महत्व मिल जाता है। गायक आते-जाते तार पड़ज पर मुकाम करता है। फिर जैसे-जैसे प्रातःकाल निकट आता है वैसे-वैसे उत्तरांग के अन्य स्वर भी अपना वैचित्र्य प्रदर्शित करने लगते हैं, और फिर विभ्रान्ति स्थान पंचम स्वर हो जाता। हमारे गायक तीव्र निषाद और तीव्र मध्यम को स्वतन्त्र स्वर नहीं मानते। क्वचित् गीत इन स्वरों के खुले प्रयोग पर आधारित पाये जा सकते हैं। ये दोनों स्वर सदैव गायक को आगे अथवा पीछे थकाने का प्रयत्न करते हैं। उत्तर रागों में उत्तरांग की प्रधानता होने के कारण श्रोताओं का लक्ष्य अपने आप 'सां, नि, ध, प, म,' स्वरों की ओर चला जाता है। इन रागों की सारी खूबी आरोह में होती है। उत्तर रागों में उत्तरांग का ही कोई स्वर वादी होता है। प्रातःकालीन रागों में 'सां, म, प, और ध,' में से कोई एक स्वर वादी होता है। प्रातःकाल पंचम एक आत्मीयता पूर्ण विभ्रान्ति-स्थान होता है। पूर्वाङ्ग रागों में पड़ज विभ्रान्ति स्थान होता है, प्रातर्गेय रागों में क्वचित् ही पंचम वर्ज्य होता है। 'ध-प' अथवा 'धु-प' स्वर लम्बे रूप से उच्चारण करने पर तत्काल प्रातःकाल का संकेत हो जाता है। रात्रि के अन्तिम प्रहर में दोनों मध्यम वाले राग भी गाये जाते हैं, परन्तु उनमें तीव्र मध्यम अधिक नहीं होता।

सायंकाल गाये जाने वाले रागों में तीव्र मध्यम पर ही सम्पूर्ण राग वैचित्र्य निर्भर रहता है। एक ही धाट से सायंगेय और प्रातर्गेय दोनों प्रकार के राग स्वरूप निकल सकते हैं। प्रातर्गेय राग अवरोह में अधिक स्पष्ट और शोभनीय हो जाते हैं। केवल मध्यम बदल जाने से अन्य स्वर वे ही रहने पर भी गायन काल बदल जाता है। प्रातःकालीन भैरव का केवल मध्यम तीव्र करने से सायंकालीन जवाय पूर्वी तैयार हो जाता है। इसी प्रकार बिलावल और कल्याण में होता है। सा, म और प स्वर चाहे जिस काल के रागों के वादी हो सकते हैं। जिस राग में गांधार और निषाद कोमल होते हैं—प्रायः उसमें तीव्र मध्यम का प्रयोग नहीं किया जाता।

### सन्धिप्रकाश राग

सन्धिप्रकाश रागों में अधिकांशतः कोमल रे और ध तथा तीव्र ग और नि दिखाई देते हैं। तीव्र मध्यम वाले सायंगेय और कोमल मध्यम वाले प्रातर्गेय सन्धिप्रकाश राग करुण और शान्तरस के योग्य हैं और इस कारण इनमें गांभीर्य भी अधिक होता है। सन्धिप्रकाश रागों की प्रकृति लुट्र नहीं होती। ग्रंथों में इस सम्बन्ध में इस प्रकार का कथन मिलता है:—

संधिप्रकाशरागाणां मृदुता रिधयोस्ततः ।

मेलमेनं समारभ्य तीव्रत्वे परिवर्तिता ॥

परिवर्तनमप्येतन्नूनं संतोषकारणम् ।

भिन्नरससमास्मादान्मनोद्वेपं प्रपद्यते ॥

तृतीय प्रहर के रागों का एक चिन्ह रे और ध स्वरों का दुर्बल होना है। सन्धिप्रकाश शुरू होने के पूर्व के रागों में रे और ध स्वर दुर्बल अथवा वर्ज्य होते हैं, इस नियम का उदाहरण 'धानी' 'धनाश्री' भीमपलासी, मुलतानी, मालवश्री आदि हैं। दोपहर के ढल जाने पर जैसे दिन भर से चलते रहने वाले रे और ध स्वर धीरे-धीरे स्वाभाविक रूप से थकने ( दुर्बल होने ) लगते हैं। ऐसे रागों को 'सन्धि-प्रकाश-मेल-प्रवेशक' राग कहा जाता है।

उदाहरण के लिये 'मुलतानी' को लें। इस राग के पश्चात् पूर्वी थाट के राग आते हैं, परन्तु उनकी अधिकांश तैयारी मुलतानी में पहिले ही हो जाती है। इसमें गांधार को छोड़कर शेष सभी स्वर पूर्वी के आ ही जाते हैं। केवल एक गांधार कोमल का तीव्र किया कि पूर्वी थाट सिद्ध हुआ। अपनी राग पद्धति का सम्पूर्ण रहस्य रे ध, रे ध और ग नि के तीन जोड़ों में निहित है। प्रभात से संध्या तक और संध्या से प्रभात तक जो बारह-बारह घंटों के दो विभाग होते हैं, उन प्रत्येक के तीन उप विभाग करने पर पूर्व तृतीयांश में कोमल रे ध के राग, मध्य तृतीयांश में शुद्ध रे ध ( और शुद्ध ग नि ) के राग, और अंत्य तृतीयांश में कोमल ग नि के रागों का समावेश होता है। यह बड़ी कौतूहलप्रद और सकारण व्यवस्था है। कोमल रे, ध की प्रकृति गांभीर्य उत्पादक है। प्रातःकालीन सन्धिप्रकाश में कोमल रे, ध स्वरों के रागों का आरम्भ कर धीरे-धीरे रे ध स्वर में तीव्रत्व लगाकर दो प्रहर के बाद कोमल ग, नि



के राग आरम्भ होते हैं और फिर सायंकालीन सन्धिप्रकाश से आगे प्रभातकाल तक वही क्रम रखा जाता है। यह अलग कहने की आवश्यकता नहीं है कि यह व्यवस्था तत्तत् समय की सहज मनोवृत्ति और उससे उत्पन्न रसों की पोषक है। सभी सन्धिप्रकाश राग सूर्यास्त काल अथवा सूर्योदय के प्रहर में गाये जाते हैं। इन रागों के गाने के उपरान्त दिन और रात्रि के प्रथम प्रहर में रिषभ, गांधार और धैवत तीव्र लगने वाले राग गाये जाते हैं; और इनके बाद फिर तृतीय वर्ग के राग—कोमल गांधार निषाद वाले मध्य रात्रि और मध्याह्नकाल में आ जाते हैं। मध्यम स्वर दिन और रात्रि के निश्चय के लिये उपयोगी होता है। यदि हम एक काल्पनिक रेखा बनावे और उसके ऊपरी ओर निचली बाजू में राग समुदाय लिखना चाहें तो एक सिरे पर प्रथम सायंगेय—संधिप्रकाश राग, फिर रेखा की ऊपरी बाजू में क्रमशः प्रथम रात्रिगेय रे, ग, ध स्वर तीव्र वाले राग, फिर कोमल निषाद गांधार वाले राग लिखे जायेंगे। इसके बाद दूसरे सिरे पर प्रातर्गेय—सन्धिप्रकाश राग लिखे जायेंगे। वहां से विपरीत क्रम से रेखा की दूसरी बाजू में प्रथम प्रातर्गेय रे, ग, ध स्वर तीव्र वाले राग और फिर ग और नि स्वर कोमल प्रहण करने वाले राग, लिखना पड़ेगा। इसके बाद फिर सायंगेय सन्धिप्रकाश राग लिखा हुआ आ ही जायेगा। इस प्रकार एक मजेदार राग—मण्डल बन जाता है।

### सायंगेय और प्रातर्गेय रागों का सम्बन्ध

ऊपर के वर्णन से राग रचना पर विचार करने से ज्ञात होगा कि अनेक सायंगेय रागों का जबाब प्रातर्गेय रागों में मिलता है। उदाहरणार्थ प्रातर्गेय वसन्त का जबाब सायंगेय 'मालीगौरा' है। इसी तरह सोहनी और पूरिया, मारवा और पञ्चम, बिलावल और कल्याण, भैरव और पूर्वी, कालिंगड़ा और परज आदि जोड़ियां हैं। इसी प्रकार रात्रि कालीन तीव्र रे, ध वाले धाटों से उत्पन्न होने वाले अनेक रागों का सम्बन्ध भिन्न-भिन्न बिलावलों से मार्मिक लोग सहज में ही लगा सकते हैं। सायंकाल के लगभग पन्नीस रागों को अङ्ग भेद और वादी भेद से उपाकालीन और प्रातःकालीन बनाया जा सकता है। इस कार्य में अनेक पुराने रूप काम में आयेंगे, किन्हीं के नियम बिलकुल बदल जायेंगे और कुछ बिलकुल नवीन प्रकार भी प्रचार में प्राप्त होंगे। यह विभाग भावी-सङ्गीत का है।

## कल्पद्रुम-रचयिता की हिन्दुस्थानी रागों की समय-रचना

हिन्दुस्थानी सङ्गीत पद्धति के रागों के समय की एक रचना करने का प्रयत्न 'कल्पद्रुम' में किया गया है। प्रन्थकार ने अपने मत का नाम 'इन्द्रप्रस्थ' बताया है। उसका वर्गीकरण निम्न रूप का है:—\*

प्रातःसमेमें गाइये भैरव प्रथम सुराग ।  
 ललित भैरवी रामकली खट गुणकली अनुराग ॥  
 देशकार बीभास पुनी भटियारी भंखार ।  
 वमन्त बाहार पंचम हिंदोल हीलार ॥  
 वेलावली अलायिका सरपरदा कुडूम ।  
 देवगिरी शुक्ला शुभा प्रहर चढे दिन धूप ॥  
 लच्छाशाख भुशाख पुनी रामशाख देशाख ।  
 सुहा सुघरई सुही शुभा देवगंधारी भाख ॥  
 देह प्रहर दिन चढतही टोडी गुर्जर गान ।  
 देशी आसावरी जौनपुरि टोडि वरारी जान ॥  
 सारङ्ग सुध बिंद्रावनी बडहंसी सामन्त ।  
 लंकदहन लुम लूहरी दो पेहेरे मेवन्त ॥  
 मेघमल्लारी गौड पुनी गौडगिरी जलधार ।  
 नटमल्लारी सूरपुनी रामदासि मल्लार ॥  
 मुलतानी अरु धनामिरी भीमपालासी जान ।  
 बरवा धानि अहीरिका तृतीय प्रहरका गान ॥  
 जंग्ला मंगल पीलु पुनी सिंधु तिलंग प्रदीप ।  
 दीपक दीपकी काकि पुनी चौथे प्रहर प्रलीप ॥  
 जैतथ्री श्री मालसिरी मालथ्री गौराह ।  
 गौडसारङ्ग अरु मारुवा पूर्वी और पुर्न्याह ॥

---

\* यद्यपि इन दोहों में अनेक स्थानों पर मात्रा दोष आदिक अशुद्धियाँ हैं, फिर भी उद्धरण के रूप में हम उन्हें ज्यों का त्यों दे रहे हैं।

त्रिवली श्री गौरी बहुरी चेती टंकी मान ।  
 चौथे प्रहर दिन अन्तमें श्रीटंकी कर गान ॥  
 प्रथम जाम रजनी समे कल्याणी सुधगान ।  
 हेम खेम एमन पुनी शाम हमीरिह जान ॥  
 जेत भूपाली पूरिया कामोदी कर मान ।  
 प्रहरि रजनि जातें गुनी छायानाट बखान ॥  
 देठ प्रहर निसके समे नायकि बख्त प्रमान ।  
 अष्टादश हैं कानरा कौशिक कान्हर जान ॥  
 अडाना शहाना शोभना सोहन सोहनी मान ।  
 केदारा मलुहा पुनी नाटकेदार बखान ॥  
 बिहंग बिहारी बिहागरा बिहाग पुनी बिनोद ।  
 भरन अरन संकीर्ण अरु शंकरा आमोद ॥  
 सोरठ देस सौराष्ट्रिका सिंदूरा सावेरि ।  
 परज खंवावति सुखावति कलिंगरा आभेरी ॥  
 मालकोश और कौशिकी कुसुमकारा कर्णाटि ।  
 ललित कलिंग लिलावती अरुणोदयमें बांठि ॥  
 सोले सहस्र और आठशो रागरागनी जान ।  
 वन्दावन हरि रासमें गोपिन किये है गान ॥  
 देश देश के भेद में भिन्न भिन्न है नाम ।  
 मारग ब्रह्मादिक कहे देशी दस हैं धाम ॥

इसमें अधिकांश राग अपनी हिन्दुस्तानी पद्धति के ही हैं, इतना ही नहीं, परन्तु उनका गान-समय भी, अपने गायकों के लिये स्वीकारात्मक है ।

रागों की रंजकता कैसे बढ़ाई जावे

गायक का महत्व, नियमों की शुद्धता के साथ रागों की रंजकता संभालने से बढ़ जाता है । कुछ लोगों की ऐसी कुछ मूर्खता पूर्ण समझ



है कि रागों के नियम बन्धन से गायन की रंजकता बिगड़ जातो है। प्रथम यह देखना चाहिये कि अपने राग के नियम कहां आते हैं और उतना ही ठुकरा प्रथम हाथ में लेना चाहिये। इस स्वर भाग को सैकड़ों बार गाया जावे। प्रथम विलम्बित लय से गाकर फिर बाद में बिलकुल द्रुतलय में गाते जाना चाहिये। इस तरह करने पर देखना चाहिये कि गला कहां रुकता है, वह कौनसे 'कण' अपने आप शोधकर ले लेता है, यह नोट कर लेना चाहिये। यह भी देखते जाना चाहिये कि किस जगह कौनसा राग निकट आ जाता है और उसे अलग करने के लिये क्या करना पड़ता है। यदि राग के समस्त भाग इस तरह देख लिये जावें तो रियाज से तैयार करना बिलकुल सरल हो जाता है और आवश्यकता होने पर यथा स्थान अपने आप सूझ होने लगती है। गायक को अपने हृदय में यह बात सदैव अंकित करते जाना चाहिये कि अपने राग का ओताओं पर सदैव कैसा परिणाम होता है। इसके अनुसार राग-विस्तार करने से राग की रंजकता अधिक हो जाती है।

### राग विस्तार कैसा किया जावे

जिस राग का वादी स्वर पूर्वाङ्ग में हो, उसका प्रारम्भ उसी स्वर से करना अच्छा है। यदि वादी स्वर पड़ज से काफी दूर हो तो कुछ भिन्न योजना करनी पड़ती है। ऐसी जगह सम्वादी स्वर से प्रारम्भ करना सम्भव हो, तो देखना चाहिये। आरम्भ में बड़ी लम्बी तानें लेने की उलभन में न पड़ा जावे। आरम्भ में बिलकुल छोटी-छोटी तानें लेकर पड़ज में मिलना चाहिये। ऐसा करने पर जहां निषाद वर्ज्य न हो वहां इसे भी लेकर तान पूरी करना चाहिये। इसके बाद एक नवीन स्वर जोड़ा जावे और तान पूरी की जावे। आरम्भ में वादी से आगे न जाना चाहिये। फिर धीरे-धीरे मन्द्र स्थान की ओर बढ़कर छोटे-छोटे ठुकरे बनाये जावें और बार-बार पड़ज से जाकर मिला जावे। ऐसा करते हुए वर्ज्यावर्ज्य नियम, राग की प्रकृति मंद्र गति या मध्य गति आदि बातों का विचार कर बढ़त की जावे। प्रत्येक राग में ठहराये हुए विश्रान्ति स्थान होते हैं। यदि ये ज्ञात हों तो राग-विस्तार करने में बड़ी मदद मिलती है। प्रत्येक तान में कुछ न कुछ स्वरों की उलट-पलट करते रहना चाहिये। मध्य-सप्तक की तानों का जोड़ मन्द्र सप्तक की तानों से कर देने पर विस्तार क्षेत्र पर्याप्त रूप से बढ़ जावेगा। राग का शुद्ध

स्वरूप और उसकी बकताएँ सृष्टि के सम्मुख रखकर तदनुसार राग विस्तार करना चाहिये। गायक लोगों की प्रत्येक 'तान' ताल में बैठाई हुई नहीं होती। तानबाजी करते समय ताल की ओर विशेष लक्ष्य रखने की आवश्यकता नहीं होती, सिर्फ तानों से फिर स्थाई में मिलते समय गूबी से दोनों को उचित स्थान पर मिला देना पर्याप्त है। जहां स्थाई का आरम्भ पूर्वाङ्ग में हो वहां अन्तरा उसी अङ्ग में जाकर मिला देना अच्छा होता है और जहां उत्तराङ्ग में हो, वहां पञ्चम पर न्यास करना अच्छा होता है। अन्तरे के कभी तीन और कभी चार टुकड़े होते हैं। अन्तरे के तीसरे टुकड़े में कुछ गीतों में तार स्थान की ओर जाना पड़ता है और कुछ गीतों में मध्य पङ्क्ति की ओर आना पड़ता है। तीसरे टुकड़े की व्यवस्था कुछ अंशों में चौथे टुकड़े पर निर्भर रहती है। यदि तीसरा टुकड़ा अवरोहात्मक रूप से नीचे आने वाला हो तो चौथा टुकड़ा ऊपर जाने का होता है और यदि तीसरा ऊपर जाने का हो तो चौथे में नीचे आना पड़ता है। राग विस्तार करते समय पूर्वाङ्ग और उत्तराङ्ग की तानें आरम्भ में अलग-अलग मशक करली जावें और तैयार होने पर उन्हें परस्पर जोड़ने का अभ्यास किया जावे। उत्तराङ्ग में पूर्वाङ्ग का क्रम ही चलता है। रागों के आलाप में ग्रह, अंश, न्यास, अपन्यास, तार स्थान-सीमा, मन्द्र स्थान-सीमा, स्वरों की अल्पता और प्रबलता आदि बातें दिखाई जानी चाहिये। आलाप करने में प्रथम स्थायी का भाग हाथ में लिया जावे। इसमें जहां तक सम्भव हो तार सप्तक के स्वर नहीं लगाये जावें। स्थायी के आलाप का वास्तविक आनन्द मुख्यतः मन्द्र और मध्यम स्थानों से ही रहता है। तार-स्थान का महत्व मध्य रात्रि के बाद गाये जाने वाले रागों में होता है। यथेच्छ रूप से स्थाई का भाग गाने के बाद तार सप्तक की ओर बढ़ा जावे। तार सप्तक में जाने पर यह नियम नहीं है कि मध्य सप्तक में आया ही नहीं जा सकता। तार स्थान में पञ्चम से आगे न बढ़ा जावे। गायन का आरम्भ करने पर प्रथम मध्य स्थान के पङ्क्ति को अच्छा और देर तक गाना चाहिये। कुशल गायक एक दम अपना गीत गाना आरम्भ नहीं करते। अच्छी तरह पङ्क्ति को साथ लेने पर जिस राग को गाना हो, उसके वादी स्वर को दीर्घ रूप से उच्चारित किया जावे और फिर वहां से पङ्क्ति पर जाकर मिला जावे। यह सावधानी रखी जावे कि उकता देने वाली पुनरुक्ति उत्पन्न न हो। हर बार नवीन स्वर रचना अथवा



तान उत्पन्न की जावे, अर्थात् प्रत्येक तान में कुछ न कुछ नवीन स्वरों का प्रयोग कर अथवा प्रथम स्वरों को उलट-पलट कर गाया जावे। ऐसी तानों को 'कूट तान' कहा जाता है। 'कूट तान' उस तान को कहते हैं, जिससे स्वरों का क्रम वक्र होता है। प्रत्येक राग गाते हुए उसके मुख्य अङ्ग अर्थात् मुख्य पकड़ यानी पहचानने के स्वर, सदैव ध्यान में रखने चाहिये। एक थाट से अनेक राग निकलते हैं। गाते समय वे एक दूसरे से मिल न जावें, इसलिये बीच-बीच में प्रस्तुत राग का मुख्य भाग श्रोताओं के सम्मुख रखते जाना चाहिये। इस तरह राग विस्तार करने का अभ्यास करना चाहिये। कभी तीन स्वरों के, कभी चार स्वरों के, कभी उससे कम या अधिक स्वरों के टुकड़े करने का अभ्यास कर लेना चाहिये। राग का प्रभाव श्रोताओं के हृदय पर से मिटने न देना चाहिये। तानें धीरे-धीरे बड़ी होती जावे। भिन्न स्वर समुदाय से किये जाने वाले राग विस्तार को ही 'तान' कहा जाता है। आरम्भ में विलम्बित-लय से गाकर फिर गति बढ़ाई जावे। विलकुल द्रुत-लय ( अति द्रुतलय ) का गायन, यह तृतीय विभाग है। गाने की गति को 'लय' कहा जाता है। शीघ्र-गति को 'द्रुतलय' मध्यम गति को 'मध्यलय' और धीमी गति को 'विलम्बित-लय' कहा जाता है। आलाप के सम्बन्ध में एक जगह ग्रंथ में निम्न सूचना दी गई है, इसे बताकर अगले विषय की ओर बढ़ूंगा:—

मध्य षड्जं समारभ्य मंद्रषड्जावधिक्रमात् ।

सम्यगालापनं कृत्वा मध्यषड्जे समापयेत् ॥

मंद्र मध्यषड्जमध्ये रागवर्धनमारभेत् ।

गत्वातानं तारकान्तं मध्यषड्जे समापयेत् ॥

## सम प्राकृतिक रागों में उच्चार का महत्व

किस स्वर पर कितनी देर थमना चाहिये, वहां कौनसी स्वर संगति को सँभालना चाहिये, किस स्वर को किस तरह वक्र करना चाहिये, किन सम प्राकृतिक रागों को कैसे भिन्न रखा जावे, ये सब बातें नि म नि सा म म सा— महत्वपूर्ण हैं। धु, प, गु, रेसा; ध, प, मपग, रेसा, प, गु, रे सा;



ये टुकड़े कानों में पड़ते ही मार्मिक श्रोताओं के ध्यान में तत्काल आ जाता है कि गायक ने ये टुकड़े भिन्न-भिन्न क्यों लिये हैं। केवल स्वर बोलने से राग भिन्नता होना आवश्यक नहीं है, खूबी उनको योग्य रीति से गाने की है। इस पुस्तक के अन्त में इस भाग में आये हुए रागों के स्वर-विस्तार खास तौर से दिये गये हैं। इनमें स्वल्प विराम चिन्ह से दिखाये हुए विश्रान्ति स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। ऊपर दिये हुए तीनों स्वर समुदाय आसावरी थाट के हैं, परन्तु उनमें एक आसावरी राग का, एक जौनपुरी का और एक गांधारी का है। यह भेद उनमें बताये हुए विराम स्थान से, आगे या पीछे लगने वाले कणों से, स्वर-वक्रता एवं सरलता से मार्मिक रसिकों के ध्यान में सहज ही आ जाता है। इस प्रकार से गाना कठिन होता है और इन खूबियों को पहचान लेना ही सच्ची गुण प्रादकता है।

### मन्द्र गायन

मन्द्र स्थान में राग विस्तार करते समय मुख्य रूप से एक बात ध्यान में रखनी चाहिये कि जहां तक अपना मूला स्पष्ट और मधुर ध्वनि में नीचे जा सकता हो, वहीं तक उतरना चाहिये। अच्छी तरह रियाज कर, मन्द्र स्वर प्रथम स्पष्ट सुनाई दिया सके, ऐसी तैयारी करनी चाहिये। जो राग मन्द्र सप्तक में अच्छे शोभित होते हैं, प्रायः वे राग तार सप्तक में अधिक ऊपर नहीं जाते। इसलिये आरम्भ में तंबूरा ऊँचे स्वर में मिला लेने से मन्द्र-स्थान में काफी नीचे उतरना सम्भव हो सकेगा। दरबारी कानड़ा, मियाँ की मल्हार, पूरिया आदि ऐसे ही राग हैं।

### स्वरलिपि और उसके उपयोग की मर्यादा

‘नोटेशन’ (स्वरलिपि) यदि स्वर, ताल और मात्रा के साथ चीजें या सरगम उनके कण स्वरों के साथ लिखा हुआ हो तो अवश्य ही उपयोगी सिद्ध हो सकता है। अमुक राग अमुक काल में किस तरह गाया जाता था इसका बोध अगली पीढ़ी को कराने के लिये नोटेशन जैसा अन्य साधन नहीं है। सर्वाङ्ग पूर्ण (जैसा मूल गायक गाता है वैसा हूबहू लिखने योग्य) स्वरलिपि अभी तक कहीं भी उत्पन्न नहीं हुई, और वैसी पद्धति उत्पन्न होना शक्य भी नहीं है। मूल गायकी के स्वर

लगाने की शैली, बोल उच्चार की सफाई, प्रत्येक दो स्वरों में एक प्रकार का गुप्त बन्धन, भिन्न-भिन्न जगह गीत के धर्मानुरूप अथवा सङ्गीत की वाक्य पूर्ति के लिये की जाने वाली छोटी बड़ी विभ्रान्ति, अर्थ के अनुरूप ध्वनि को मृदु और प्रचण्ड करने की शैली आदि-आदि सभी बातें निर्जीव स्वरलिपि में उतार सकना अशक्य है। भाषा में भी वक्ता की भाषण पद्धति का हूबहू लेखन लिपि द्वारा नहीं हो सकता, तो भी वक्ता के आंतरिक लेखन द्वारा पाठक को पूर्ण रूप से बोध हो जाता है; इसी प्रकार सङ्गीत की स्वरलिपि है। तो भी इसमें सन्देह नहीं है कि नोटेशन के प्रयोग से व्याकरण दृष्टि से यथा शक्ति और यथामति प्रत्येक व्यक्ति गा सकता है। स्वरलिपि पद्धति का मजाक उड़ाने वाले लोग केवल अपनी हठवादिता का प्रदर्शन करते हैं। वे लोग भाषा की लिपि का मजाक नहीं उड़ाते। बड़ी कक्षाओं को शिक्षा देने के लिये गायन की पुस्तकों के सिवाय अन्य मार्ग ही नहीं है। स्वरलिपि का मजाक उड़ाने वाले अधिकांश ऐसे ही लोग हैं, जिन्हें पढ़ना नहीं आता। कोई भी समझदार मनुष्य यह नहीं कहेगा कि यदि स्वरलिपि द्वारा बिना दोष के गायन का चित्र नहीं उठ सके, तो यह लिपि सम्पूर्ण नहीं है और यह बिलकुल नहीं होना चाहिए। सङ्गीत के लिये भी लेखन पद्धति की आवश्यकता है। समस्त देश में एक ही लिपि होने पर कार्य अच्छी तरह हो सकता है, इस सिद्धान्त को जानकर पाश्चात्य विद्वानों ने स्वर लेखन पद्धति स्वीकार की है। देश में प्रचलित लिपियों में से एक भी लिपि विशुद्ध 'स्वदेशी' नहीं है! चाहे जो चार पाँच पद्धतियों का मिश्रण कर अपनी नवीन पद्धति बताकर स्थापना करने लगता है! कोई यूरोपियन 'स्टाफ' के चिन्ह नाद स्थान दिखाने के लिये ग्रहण करता है। कोई यूरोपियन 'बार' चिन्ह ग्रहण करता है, कोई पाश्चात्यों के पुनरावर्तन चिन्ह स्वीकार करता है। यूरोपियन लिपि में मुरकी, गिटकरी, जमजमा, घसीट, मीढ़ आदि बातें नहीं हैं। स्वरलिपि का क्षेत्र बिलकुल मर्यादित होता है। चीज की रूपरेखा स्पष्ट और शुद्ध रूप से व्यक्त कर देने पर स्वरलिपि का कार्य समाप्त हो जाता है। स्वरलिपि ध्येय नहीं, परन्तु उसकी प्राप्ति का एक सरल साधन है। यह सदैव ध्यान में रखना चाहिए कि इस साधन का क्लिष्ट होना निरुपयोगी होगा। यह तो जितना सरल, स्वाभाविक और सहज हो, उतना ही अधिक सर्वमान्य होगा। यदि नोटेशन क्लिष्ट हो तो



प्रयोक्तृ की दशा किसी ऐसे व्यक्ति जैसी होगी, जो उस राज-भवन में राजा के दर्शन के लिये जारहा है, जिसमें जगह-जगह सशस्त्र सैनिकों का पहरा है। ऐसी स्वरलिपि के गुहा गर्तों और शिखरों को प्राण रक्षा करते हुए पार कर लेने पर ध्येय तक पहुँचना सम्भव है। अनेक तो मार्ग में ही वापिस लौट आने वाले दिखाई देने लगेंगे। वक्रताएँ, उच्चार, चलन आदि बातें प्रत्यक्ष गान सुनकर परम्परा से ही प्राप्त करनी चाहिये। जिस प्रकार शरीर को आभूषणों से सुसज्जित किया जाता है, वैसे ही इन बातों को समझना चाहिये। स्वरलिपि से चीज का साधारण स्वरूप और स्वभाव स्पष्ट रूप से निश्चित कर दिया जाता है, इसे सजाने के लिये अलंकार आदि गुरु परम्परा से कानों से सुनकर ही सीखना चाहिये। हिन्दुस्थानी-सङ्गीत-पद्धति की क्रमिक पुस्तक मालिका में प्रयुक्त किया हुआ नोटेशन प्रायः प्राचीन ग्रन्थों की स्वर-लेखन-पद्धति के अनुसार ही है। रत्नाकर के स्वर-लिपि चिन्ह वीणा वादन के अनुरूप हैं, क्योंकि मन्द्र स्वर निकालने के लिये वीणा पर मेरु की ओर ऊपर हाथ ले जाना पड़ता है और तार स्वर के लिये घोड़ी की ओर नीचे हाथ ले जाना पड़ता है। इसलिये रत्नाकर में मन्द्र स्थानों को ऊपर बिन्दु देकर दिखाया गया है। इस पद्धति को वेदों के उदात्त, अनुदात्त स्वर चिन्हों का भ. आधार प्राप्त है। अपनी पद्धति में मन्द्र स्थान स्वरों के नीचे बिन्दु लगाकर दिखाये जाते हैं, क्योंकि मन्द्र स्थान में आवाज नीचे उतरती है और तार स्थान में ऊपर चढ़ती है।

### अन्तर मार्ग

अपनी पद्धति का एक नियम “वादि भेदेराग भेदः” है। इस भेद के साधन के हेतु दो समान थाटों के रागों के अन्तर मार्ग भिन्न रखे जाना आवश्यक हो जाता है। ‘अन्तर मार्ग’ नाम प्राचीन है। इसका अर्थ “राग का चलन” होता है। राग के चलन में हम छोटे-छोटे स्वर विन्यासों की रचना करते हैं। वैचित्र्य के लिये हमें ऐसा करना पड़ता है। प्राचीनकाल में ग्रह, न्यास का नियम बहुत कड़ा था। ये (ग्रह, न्यास स्वर) अपनी-अपनी जगह प्रबन्ध में आना आवश्यक थे। परन्तु प्राकृत-सङ्गीत में इन नियमों की शिथिलता हो जाने से अन्तर मार्ग के लिये अब न्यास अन्यास का बन्धन नियत नहीं है। राग विस्तार करने के समय रागों के विशेष लक्षणों और वादी संवाद



स्वरों के अनुरूप भिन्न-भिन्न स्वर-संगति, भिन्न-भिन्न स्वरों के जोड़ने की क्रिया को ही अब 'अन्तर मार्ग' कहा जायेगा।

अपने गायक 'स्थाय' को 'विभ्रान्ति स्थान' अथवा 'मुकाम' कहते हैं। भिन्न-भिन्न तानें इस स्वर पर आकर समाप्त होने से यह स्वर विभ्रान्ति लेने योग्य हो जाता है। गाते समय गायक एक ही राग में भिन्न-भिन्न स्वरों को अपनी तानों के अन्त में लेकर श्रोता को वादी स्वर जैसा आभास करा देते हैं और फिर नियत काल में नियत वादी स्वर को आगे लाकर राग हानि नहीं होने देते। इस प्रकार आगे लाये हुए स्वर को कुछ देर के लिये वादी मानकर उसके अगले पिछले चार-चार स्वर लेकर, फिर मन्द्र स्थान में कुछ तानें लेकर पुनः अपनी तानें मध्य पड़ज पर लाकर पूर्ण करने लगते हैं। इस रीति से अनेक तानें उपन्न हो जाती हैं और श्रोताओं को उकताहट उत्पन्न नहीं होती।

### आदत, जिगर, हिसाब

मुसलिम गायकों के मुँह से उपरोक्त शब्द कहीं-कहीं सुनाई पड़ जाते हैं। उन्हें सुनकर यह कौतूहल होना स्वाभाविक है कि इनका क्या अर्थ है? 'आदत' का अर्थ है अच्छी तरह रियाज कर अच्छी-अच्छी तानें लेने की सामर्थ्य। 'जिगर' का अर्थ गीत और गाने का अङ्ग, स्वभाव, और 'हिसाब' का अर्थ राग और ताल के शास्त्रीय-नियम होता है।

### गीत रचना

कोई भी चीज (गीत) हो, उसमें सङ्गीत के अनेक तत्व सुव्यवस्थित रीति से गुंथे होते हैं। चाहे जिस तरह के राग में आने वाले स्वरों को चाहे जहां जोड़ देना सङ्गीत नहीं होता। प्रत्येक राग में गीत रचना करते समय निम्न बातों की ओर ध्यान देना चाहिये—(१) राग का स्थूल स्वरूप, (२) कौन-कौन से अङ्ग कहां-कहां रखे जावें, (३) कौन सी स्वर-सङ्गति, (४) मुक्त स्वर कौन से और कहां रखे जावें, (५) अमुक स्वर से गीत शुरू होने पर एक कल्पना पूरी होने के लिये कितने स्वर वाक्य आवश्यक होंगे, (६) कौनसा विभ्रान्ति स्थान, (७) किस वाक्य में कौन से स्वर आने चाहिये, (८) कौनसा वाक्य कितना दीर्घ रखना होगा

( ६ ) चीज के शब्दों का उस वाक्य से कैसा सम्बन्ध रखा जावे, ( १० ) तालके किस ठेके पर कौनसा भाग लाया जावे, ( ११ ) इत्यादि । कक्षाओं में इस विषय की शिक्षा देते समय विद्यार्थियों को वाक्यों का प्रयत्न कर समझना चाहिये । गीत के मध्य भाग में जहाँ बड़ज पर कुछ वाक्य आकर समाविष्ट होते हैं, वह स्थान दिखाना चाहिए; और नवीन वाक्य आरम्भ होकर गीत के अन्तिम भाग का सम्बन्ध पुनः आरंभिक भाग से कैसा मिलाया गया है, यह भी दिखाना चाहिये । यह भी समझ देना चाहिये कि अन्तरा कैसे शुरू होता है और उसके इस प्रकार शुरू करने का क्या कारण है ।

---







कल्याण थाट.





## कल्याण थाट के राग ( ५ )

चंद्रकास्त

सावनी कल्याण

जैतकल्याण

श्वामकल्याण

मालश्री

---



## राग चंद्रकान्त.

गरी सनी धनी धपौ सगौ रिगौ धमौ गपौ ।

रिसौ रात्र्यां भवेत् चन्द्रकान्तो गांशोऽग्रयामके ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ।

जब ईमन् के मेलमें चढ़त न मध्यम होइ ।

गनि वादी संवादितें चंद्रकांत है सोइ ॥

रागचन्द्रिकासार ।

राग चन्द्रकान्त कल्याण धाट से उत्पन्न होता है । इसके आरोह में मध्यम स्वर वर्ज्य होता है । जाति पाङ्गु-सम्पूर्ण है । वादी स्वर गांधार और सम्वादी निषाद माना जाता है । गायन का समय, रात्रि का प्रथम प्रहर है । पूर्वाङ्ग वादी राग होने के कारण राग का वैचित्र्य पूर्वाङ्ग में होता है । इसका विस्तार प्रायः मन्द्र और मध्य सप्तको में ही होता है । किंचित् रूप से यह राग शुद्ध कल्याण जैसा दिखाई पड़ता है, किन्तु शुद्ध कल्याण के आरोह में म, और नि, दोनों स्वर वर्ज्य होने से भेद स्पष्ट हो जाता है । इस राग के निकट आ पहुँचने वाले अन्य राग भूप, और जैतकल्याण हैं; परन्तु इन दोनों रागों में म और नि स्वर बिल्कुल वर्ज्य होते हैं, इसके सिवाय जैतकल्याण राग का वादी स्वर पंचम है । सारांश में, यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि ऊपर बताये हुए तीनों रागों से 'चन्द्रकान्त' स्वतन्त्र राग है ।

उठाव.

ग, रे, सा, निध, निधप, सा, ग, रेग, धमग, प, रे, सा.

चलन.

गरेसा, निधप, धप, सा, सारेगरेसा; ररेसा; निरेग, रेग, ररे,

गपरेग, मंग, पमंग, रेगरेसा; निरेग, रेसा, ररेसा,

निधनिधप, पधनिरे, गरे, धमगप, रे, नि, रेगरेसा ।



## चन्द्रकांत-त्रिताल

स्थायी.

सा - नि॒ध नि॒	- ध॒ प॒ प॒	नि॒ रे॒ ग॒ रे॒	सा - सा -
चं ऽ द्र॒ कां	ऽ त॒ स॒ खि	अ॒ ति॒ म॒ न	भा ऽ यो ऽ
३	२	२	०
सा - ग -	ग - म॒ ग	नि॒ नि॒ म॒ ग॒प	रे - नि॒ रे॒ग
क ऽ ल्या ऽ	खी ऽ अं॒ ग	वि॒ म॒ ल॒ र	चा ऽ यो ऽऽ।
३	२	२	०

अन्तरा.

ग - प॒ ध॒प	सां - सां॒ सां	नि॒ रें॒ गं॒ रें	सां नि॒ ध॒ प
वा ऽ दि॒ गं	धा ऽ र॒ व	र॒ ज॒ सु॒ र	म ऽ ध्य॒ म
३	२	२	०
प - प -	म॒ म॒ ग॒ रे॒	नि॒ नि॒ म॒ ग॒प	रे - नि॒ रे॒ग
आ ऽ रो ऽ	ह॒ न॒ में॒ ऽ	च॒ तु॒ र॒ दि॒	खा ऽ यो ऽऽ।
३	२	२	०

## चंद्रकांत-त्रिताल ( विलम्बित )

स्थायी.

सारे	ध॒ ध॒ म॒	म॒	ग॒ रे॒ सा -
ग॒ग॒ सा(सा) - नि॒ध	नि॒ नि॒ ध॒ प॒ध॒प	प॒ नि॒ध॒ सा॒ रे॒	ग॒ रे॒ सा -
प्या ऽ रे॒ ऽ तोरी	छ॒ वि॒ ऽ मो॒अ	हि॒ या॒ ऽ में॒ ऽय	स॒ त॒ है॒ ऽ
३	२	२	०
नि॒	ध॒	ग॒ ध॒	ग॒ रे॒
सा - ग॒ रे॒	ग - म॒ ग	ध - म॒ ग॒प	रे॒ नि॒ रे॒ सा
३	२	२	०
रे॒ ऽ न॒ दि॒	ना ऽ वा॒ को	मो ऽ हे॒ ल॒ ऽ	गो॒ ध्या॒ ऽ न॒।
३	२	२	०

## अन्तरा.

प	ग	—	प	सांघ	सां	—	सां	सां	नि	सां	रें	गं	रें	सां	निष	निष	प
	वे	ऽ	मि	मिऽ	लो	ऽ	अ	व	र	होऽ	ऽ	न	जा	ऽऽ	वऽ	त	
३					×				२					०			
प	ग	ग	प	प	ध	नि	पध	प	प	ध	प	गप	रे	नि	रे	सा	
	त	र	फ	त	ज	ल	बिऽ	न	मी	ऽ	न	सऽ	मा	ऽ	ऽ	न।	
३					×				२				०				

## राग सावनीकल्याण.

---

यह राग कहीं-कहीं पर सुनने को मिलता है। इसके सम्पूर्ण नियम उपलब्ध नहीं हैं। इसके गीतों पर से ही नियम निश्चित करना पड़ेगा। यह कल्याण थाट से उत्पन्न होता है। इसमें शुद्धकल्याण का अङ्ग आता है। प्रायः इसका विस्तार मन्द्र और मध्य सप्तक में ही होता है। इस राग में वादी स्वर 'पङ्कज' माना जा सकता है। इसके गायन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। आरोह में मध्यम और निषाद स्वर दुर्बल रहते हैं। मन्द्र धैवत पर न्यास होता है।

इसका साधारण चलन इस प्रकार है।

गरेसा, निधनिधप, पसा, रेगरेसा, सासामग, पपध,  
पधपग, रेसाध, गरेसा।

---



सावनीकल्याण-तिलवाड़ा  
स्थायी.

ग

जा

रे सा - सा, निध	नि ध प -	मं प सा - ध	नि सा रे सा -
५ ह ५ त, न ५	ला ५ मे ५	वा ह ५ ५	जा ५ ने ५
नि सा	ग	ग	ध
सा मग प -	प - ग रे	रे ग - रे	सा (सा) - ध
औ रक ह ५	जा ५ ५ ५	५ ५ ५ ५	ने ५ ५ ५ ।
३	३	३	३
	(अथवा)		
	ग		
	प ग - रे		
	जा ५ ५ ५		
	३		

## अन्तरा.

ग प	मं प ध प -	ग प - प	ग रे सा -
प ग प -	प ध प -	प ग - गप	ग रे सा -
ह म रे ५	म न की ५	का ५ ५ हुन	जा ५ ने ५
३	३	३	३
नि सा	ग प	ग प	ग रे सा ध
सा मग प प	प ध प -	प ग - प	ग रे सा ध
वा ५ ५ ह न	जा ५ ने ५	म न ५ ५	जा ५ ने ५
३	३	३	३
ध			
ग रे सा सा, निध			
जा ५ ह त, न ५			
३			

## सावनीकन्याण-त्रिताल

स्थायी.

सा रे ग सा नि ध	नि ध प प	प सा सा सा	सा रे सा -
स व स खि	यां ऽ मिल	मं ऽ ग ल	गा ऽ वो ऽ
३	×	२	०
सा - ग ग	प प ध प	प ध प ध	प गरेसा सा ध
सा ऽ व न	मो रे म न	सु ख उ प	जा ऽ यो ऽ।
३	×	२	०

अन्तरा.

प - सां सां	सां - सां -	सां - नि निध	नि ध प प
मे ऽ च क	न्या ऽ गी ऽ	मे ऽ ल म	नो ऽ ह र
३	×	२	०
प प प प	ध ध प प	प ग ग प	ग रेसा सा ध
म नि दु र	ब ल अ नु	लो ऽ म दि	खा ऽ वो ऽ
३	×	२	०
सारे गग सा - निध	नि ध प ध प	प सा - सासा	सा रे सा -
म व ऽ सखि	यां ऽ मिल	मं ऽ ऽ गल	गा ऽ वो ऽ।
३	×	२	०

## राग जैतकल्याण.

सगौ पगौ पधपगा रिसौ पगौ पधौ च गः ।

जयत्कल्याणकः पांशो गेयो रात्रिमुखे बुधैः ॥

अभिनवरागमंजयाम् ।

जैतकल्याण, कल्याण थाट से उत्पन्न होने वाला कल्याण का एक भेद है । इसमें मध्यम और निषाद स्वर वर्ज्य होते हैं, अर्थात् इसकी जाति औड़व-औड़व है । बादी स्वर पंचम है । इसके आरोह में 'गङ्ग' और अवरोह में 'धग' स्वरों की स्वर सङ्गति—रंजकता-उत्पादक और रागवाचक होती है । जानकारों का यह भी मत है कि आरोह में रिषभ और धैवत स्वर इस राग में स्वल्प-प्रमाण में लिए जायें । बादी स्वर के भेद से, यह राग भूपाली से अलग रखा जा सकता है । प्रचार में 'जत' नामक एक राग और है, वह इस राग से भिन्न है ।

उठाव.

सा, ग, पग, पधपग, रेसा, पग, पधग ।

चलन.

सा, गपरे, सा, सा, रेसा, सासागगप, प, पधग, पधपरे,

सासारेसा, प, सा, रेसा, गप, प, पधग,

पपसां, सां, रेंसां, सांधसां, रेंसां, प,

गपधसां, प, पधग ।





## अन्तरा.

ग	प - सां - सां	सां - रें सां	ध सां रें	नि (सां) - (प) ग
ए ऽ क ऽ क	हे ऽ वा को	ए ऽ क हु	दी ऽ स त	
३	३	३	३	३
ध प प	ग प सां	सां - प पग	प - ध ग	
सा - ग ग	प - सां रें	सां - प पग	प - ध ग	
ने ऽ क क	हे ऽ वा को	ने ऽ क दिऽ	खा ऽ व त ।	
३	३	३	३	३

जैतकल्याण-तिलवाड़ा (विलम्बित).

## स्थायी.

प प ग	प प	नि प प	म म
गप धप रें, सारे	सा - ग पग	सा ग ग प	प - प - धग
अति हिंस रस, रस	मा ऽ ता ऽऽ	व न रा ऽ	आ ऽ या ऽ, ऽऽ
३	३	३	३
		(अथवा)	
		नि प प	म म
		सा ग ग प	प - प प धग
		व न रा ऽ	आ या ऽऽ
		३	३

## अन्तरा.

प	ग प सां सां	सां - सां सां	नि सां रें सां -	नि सां सां (प) पग
ध न ध न	भा ऽ ग व	नी ऽ के ऽ	म न रं गऽ	
३	३	३	३	३
रे प प	ध गप	ग - - ग	म म	
सा ग ग प	सां ध सां - पध	प - - ग	प - प धग	
त्रि न ऐ ऽ	सौऽ ऽ ऽ वर	पा ऽ ऽ ऽ	या ऽ ऽ ऽऽ	
३	३	३	३	३





ग	प	ध	प	ग	रे	सा	-	सा	प	ग	प	प	प	ग
अ	त	त	न	दे	रे	ना	५	दी	५	५	म	दि	या	
३		०		४		०		५		२		०		
प	-	ग	रे	सा	सा	प	सा	सा	ग	प	ग	प	ध	
ना	५	रे	५	दा	नी	उ	दा	नि	दा	नि	त	दा	नी	
३		०		४		०		५		२		०		

अन्तरा.

ग	प	प	सां	-	प	प	ध	ग	प	ध	प	ग	रे	
ना	दि	दि	दीं	५	म	न	न	न	न	दे	रे	ना	५	
३		०		४		०		५		२		०		
सा	सा	प	-	सा	-	प	सा	सा	ग	प	ग	प	ध	
ता	रे	दा	५	नी	५	ता	ना	दे	रे	ना	त	दा	नी	
३		०		४		०		५		२		०		

जैतकल्याण-चीताल ( बिलम्बित )

स्थायी.

सा

गा

-	ग	प	प	प	-	ग	प	प	प	ग	प		
५	ग	५	रि	या	५	५	छू	ब	न	५	५		
३		४		५		०		२		०			
ग	रे	सा	-	सा	ध	सा	ग	प	रे	सा	सा		
तो	५	हे	५	कै	५	से	दे	५	५	उं	गा		
३		४		५		०		२		०			

## अन्तरा.

ग		सां	सां	—	रे	सां	सां	ध	सां	रे
प	—									
वा	५	ट	घा	५	ट	प	र	रो	५	क त
×		०		२		०		३	४	
सां	—	ग	ग	सा	—	ग	प	प	ध	प —
टो	५	क	त	छीं	५	क	त	प	नि	यां ५
×		०		२		०		३	४	
ग										
प	—	ग	प	ग	रे	सा,	सा			
ना	५	५	५	ले	५	हूँ,	गा			
×		०		२		०				

जैतकन्याण—धमार ( विलम्बित).

## स्थायी.

ग	—	ग
प	—	ग
फा	५	५
०		

प	गप							सा	
ग	प	पध	प	ग	रे	—	सा	—	रे सा —
५	५	गु	५	न	आ	५	५	यो	५ ५ ए री ५
३				×			२		
सा	ध	प	—	प	सा	ध	सा	—	नि सा ग ग
मा	५	ई	५	पि	या	५	सों	५	५ ५ र ह स
३				×			२		०

प ग प धग प	प सां - - प ग	प ग प	ग रे सा
र ह सऽ	खेऽऽ लूऽ	गी ध	माऽ र
३ मं गप	३ ३	३	३
प ग पध प			
फाऽ गुऽ न			
३			

अन्तरा.

प  
गप  
लेष्टु

सां - ध सां -	सां सां	सां सां -	सां - - -
लाऽऽ लऽ	मु ख	रु चिऽ	सौंऽऽऽ
३ नि सां	३	३ नि सां	३ मं
सां ध - सां -	सां सां	सां रें सां	प - ध ग
मो हूँऽ गीऽ	वा को	चोऽ वा	चंऽ द न
३ ३	३	३	३
प सां	मं	ग	ग
ग प सां ध -	सां सां	प ग प	रे - सा -
अं ग ल गाऽ	ये	चंऽऽ	दऽ नऽ
३	३	३	३
नि सा	ध	मं	गप
सा रें - सां -	प प	प ध ग	प ग पध प
ग रेऽ डाऽ	रुं गी	हाऽ र	फाऽ गुऽ न
३	३	३	३



## राग श्यामकल्याण.

श्यामो रागो भवतिविलसन्मद्वयश्चान्यतीव्रः ।  
 प्रारोहे धैवत विरहितः षड्जवादी तथास्मिन् ॥  
 संवादी च प्रकृतिरुचिरो मध्यमः संप्रदिष्टः ।  
 पूर्वे यामे सरस मतिभिर्गीयतेऽसौ निशायाम् ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ।

मरी निसौ रिमौ पश्च धपौ मरी निसौ तथा ।  
 पूर्वयामे भवेद्रात्र्यां श्यामाख्यो रिपशोभनः ॥

अभिनवरागमंजरीम् ।

मध्यम दो तीवर सवहि धैवत चढ़त न लीन्ह ।  
 सम वादी संवादि तें शाम राग कहि दीन्ह ॥

रागचन्द्रिकासार ।

राग श्यामकल्याण-कल्याण थाट से उत्पन्न होता है । इसे कोई-कोई केवल 'श्याम' नाम से सम्बोधित करते हैं । यह भी कल्याण का एक प्रकार माना जाता है । इसमें दोनों मध्यमों का प्रयोग होता है । आरोह में धैवत वर्ज्य होता है । इसका वादी स्वर षड्ज और सम्वादी मध्यम है । कुछ लोगों के मत से वादी ऋषभ है । कहीं-कहीं पर इसके अनुरूप प्रचार भी है । इस राग के उठाव में कामोद का अङ्ग स्पष्ट दिखाई देता है, परन्तु इस राग में कामोद जैसा नि और ग स्वरों का अलम्बन नहीं होता । इस राग में निषाद स्वर स्पष्ट रूप से, जोरदार ढङ्ग से लगता है । इस कारण यह कामोद से भिन्न हो जाता है । इस राग में 'रेम' संगति रागवाचक है । कामोद में इस प्रकार 'रेप'

संगति है। 'मरे' स्वर संगति से इस राग में मल्लार का आभास हो जाता है, परन्तु निषाद स्वर स्पष्ट रूप से प्रयुक्त होने से यह मल्लार से भिन्न किया जा सकता है। कई लोगों का मत है कि इस राग की उत्पत्ति इमीर, गौड़सारङ्ग और केदार रागों के मिश्रण से होती है।

उठाव.

मरे, नि॒सा, रे, म॑प, धप, मरे, नि॒सा ।

चलन.

सा, रे, म॑प, प॒धप, म॑पधप, मरे, नि॒सा, रेम॑प, गमरे, नि, सा ।

श्यामकन्याश्र-त्रिताल ( द्रुत ).

स्थायी.

गम पध मप गम	पग म रे सा	रे - सा सा	रे - नि सा
श्याऽऽऽऽऽ	ऽऽ ऽ म क	न्याऽऽ ऽ ण	गाऽ व त
०	३	×	२
म म प प	म प ध प	ध - - म	प - म ग
नि स दि न	च तु र गु	नीऽऽऽ	ऽऽऽऽ
०	३	×	२

अन्तरा.

प - सां सां	सां - सां -	प नि सां रें	सां नि ध प
मेऽ ल क	न्याऽ णीऽ	अंऽ श ख	र ज क र
०	३	×	२
म - प प	म प ध प	ध - - म	प - म ग
मऽ ध्य म	जु गु ल गु	नीऽऽऽ	ऽऽऽऽ
०	३	×	२

श्यामकन्याश्र-भूपताल ( मध्यलय )

स्थायी.

ग		मग म रे	सा रे	रे नि सा सा
प	-	नोऽऽ अ	होऽ	श्याऽ म
सु	ऽ	२	०	३
×				ध
प	प	प - ध	प ध	म प मग
म	म	नीऽ मो	री वि	नंऽ तीऽ
इ	त	२	०	३
×				



## अन्तरा.

म						नि	सां	
प	-	सां	-	सां	सां	-	सां	रें
क	S	न्या	S	ण	के	S	मं	S
x		०		०	०		३	ग
नि							सां	
सां	ध	सां	-	रें	सां	सां	ध	नि
का	S	मो	S	द	को	मि	ला	S
x		२		०	०		३	य
प		प		प	प	नि	ध	
म	-	म	प	प	प	नि	म	प
गा	S	ओ	S	च	तु	र	रू	S
x		२		०	०		३	प
प	प	प		ध	प	ध	ध	
म	म	म	प	ध	प	ध	म	प
ह	त	नी	S	क	ही	S	मो	S
x		२		०	०		३	सीS।

## श्यामकल्याण-मपताल ( मध्यलय ) .

## स्थायी.

रे			रे	म	प		
म	रे	सारे	नि	सा	रे	-	म
भू	ल	नS	आ	हिं	डो	S	रे
x		२		०	०		३
म			नि	प	म	-	प
प	रें	सां	ध	प	म	-	प
स	खी	न	मि	ल	के	S	S
x		२		०	०		३

## अन्तरा.

म	प	प	सां	—	सां	सां	—	रें	सां	—
प	च	रें	१	१	ग	पा	१	ट	की	१
५	नि	२			—	—		३		
सां	ध	सां	—	रें	सां	—	सां	ध	नि	प
डो	१	रे	१	ज	हां	१	नं	१	द	
५										
प	प	रें	सां	—	सां	ध	नि	प	प	
कुं	व	र	प्या	१	रे	१	१	१	कु	
५		२			०		३			
म	—	प	ध	—	म	—	प	ध	प	
ला	१	व	त	१	है	१	१	ज	व	
५		२			०		३			
म	रे	सा	नि,	सा	स्थायी के अनुसार					
भू	ल	न	आ,	हिं						
५		२								

## श्यामकन्यास—त्रिताल

गम	पध	मप	गम	पग	मरे	निसा	रे	नि	—	सा	—	रे	—	नि	सा
सा	१	१	१	१	१	१	१	सां	१	१	१	भू	१	१	१
०				३		वन	की	५				२			
म	—	प	—	म	प	ध	प	ध	—	म	—	प	—	म	ग
मो	१	को	१	सु	ख	द	भ	ई	१	१	१	१	१	१	१
०				३				५				२			

## अन्तरा.

म ग प प	सां - - -	रें सां नि धनि	म ध प -
आ ऽ नं द	की ऽ ऽ ऽ	त रं ऽ ग	मो ऽ को ऽ
०	३	×	२
म म प -	म प ध प	ध - म -	प - म ग
उ ठ त ऽ	न है ऽ न	है ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

## श्यामकन्याश - त्रिताल

## स्थायी.

गम पध मप गम	पग मरे निसारे-	नि - सा -	सा रे नि सा -
नौं ऽ दन आ ऽ बत	पिया विन दे ऽ ले ऽ	आ ऽ ली ऽ	मै ऽ का ऽ
०	३	×	२
प - प -	म प ध प	ध - म -	प - म ग
कै ऽ से ऽ	प रे अ व	चै ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ न ऽ।
०	३	×	२

## अन्तरा.

प प सां सां	सां सां रें सां	सां सां रें सां	सां ध - प प
घ री प ल	छि न मो हे	जु ग सी ऽ	ला ऽ ग त
०	३	×	२
म म प -	म प ध प	ध - म -	प - म ग
म ग जो ऽ	व त र हे	नै ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ न ऽ।
०	३	×	२



श्यामकल्याण-एकताल, विलम्बित ( दूसरा प्रकार ).

स्थायी.

ग  
म  
घ

(म)	गरे	ग	रे निता
टा	SS	S	कारि
३		४	

मंघ	प(प)	मग	मरे
SS	SS	गेS	Sअं
३		४	

रे	प	म,गरे	रे निता
टा	S	S,SS	कारि
३		४	

( अथवा )

म	(म)	रे	निता
टा	S	SS	कारि
३		४	

म	रे	-	-	म	प	मंघ	ध	प
हृ	S	S	स्ने	S	SS	च	रा	
X		०		२		०		
ग	रे	ग	ग	मग	प	म	रे,	रे
धे	S	S	रीS	S	S	S,	ब	
X		०		२		०		

अन्तरा.

मं	पप	सां	सांसां	-सां	रे	सां	-	निता	प	सां (सां)	सां	ध	निप
इला	जे	दमा	Sगे	म	कुन्	S	SS	कुं	S	S	S	उज	
३		४		X		०		२		०			



## श्यामकल्याण—त्रिताल ( विलम्बित )

स्थायी.

ग रे रे	म	प प	प
म गग - नि सा	रे - - रे	म म प मप	ध मप म ग
जि योऽऽ मेरो	लाऽऽ ल	व न राऽऽ	मेऽऽ राऽऽ
३	५	२	०
ग	सा - ध नि प	म रे म प -	प म
म (म) - रे	सा - ध नि प	म रे म प -	ध मप प(प) मग
अ तिऽऽ	सोऽ हेऽऽ	कंऽ ग नाऽ	ऽऽऽऽ
३	५	२	०

( अथवा )

ग ग	प	प	प
म म(म) - रे	मम प - मप	मरे मप - -	
अ तिऽऽ	वन राऽऽ	मेऽ राऽऽ	ऽऽ
३	२	०	
ग	प	प	प
म म(म) - रे	मरे मम प मप	ध मप प(प) मग	
अ तिऽऽ	कंऽ ग नाऽऽ	ऽऽऽऽ	ऽऽ
३	२	०	

अन्तरा.

म	नि	सां	नि
प प सां, सां	सां रें सां, सां	ध निध सां रें	सां (सां) ध निप
स र स, सु	नैऽ रा, व	नाऽऽ येऽ	सेऽ राऽऽ
३	५	२	०
म -	सां	प	ध
प रें सां -	ध नि प -	म प ध प	मप प(प) मग गमप
राऽ जेऽ	सोऽ हेऽ	मो ती ल रा	साऽऽ लाऽऽऽ
३	५	२	०



## श्यामकन्यासु-चौताल

स्थायी.

ग	म	ग	नि	—	सा	रे	—	—	प	म	प	प
५	पा	५	वे	५	त	ना	५	५	थ	५	अ	
०		३		४	५	५	०			२		
ध	—	म	प	गग	प	प	—	मग	म	रे	सा	
ना	५	थ	ना	५५	थ	बि	५	५५	ना	५	थ	
०		३		४	५	५	०			२		
रे	सा	सा	नि	नि	प	ध	म	प	म	प	गम	प
क	र	त्रि	शू	५	ल	बि	रा	५	ज	५५	त	
०		३		४	५	५	०			२		

अन्तरा.

प	प	प	सां	सां	सां	सां	सां	—	नि	सां	रें	सां
व	स	न	भु	प	न	ग	ज	५	च	५	म	
५		०		०		०		३		४		
सां	ध	नि	सां	—	रें	सां	सां	—	सां	ध	नि	प
रु	५	ड	मा	५	ल	प	शू	५	प	५	ति	
५				२				३		४		
म	—	प	रें	सां	सां	सां	सां	—	सां	ध	नि	प
प	५	रें	रें	सां	सां	सां	सां	५	धू	५	न	
तां	५	ड	व	ड	म	रू	५	५		४		
५		०		३		०		३				
म	प	ध	म	प	प							
रा	५	५	ज	५	त							
५		०		२								

श्यामकल्याण-चौताल ( विलम्बित ).

स्थायी.

म	ग	-	रे	नि	सा	म	रे	-	-	प	म	प	म	प,	म	प
लो	S	S	री	S	पा	S	S	S	S	व	S	र	तु,	पि		
३		४			५											
( अथवा )																
म	ग	-	रे	नि	सा	म	रे	-	-	प	म	प	म	प,	म	प
लो	S	S	री	S	पा	S	S	S	S	व	S	र	तु,	पि		
३		४			५											
-	म	ग	म	रे	सा	नि	सा	रे	सा	नि	सा	ध	नि	प	म	प
S	या	S	S	S	के	आ	व	न	को	S	S	S	S	मो		
३		४			५											
सा	रे	सा	सा	सा	सा	ध	प,	ध	म	प	म	ग	प			
हे	सु	ना	ए	आ	S	न,	वे	S	S	S	न	S	आ			
३		४		५												

अन्तरा.

म	प	-	-	सां	-	सां	सां	-	-	रे	सां	-
फा	S	S	गु	S	न	के	S	S	दि	न	S	
३		४		५								

नि	सां	ध	-	सां	-	रें	सां	-	-	सां	ध	नि	प
ऐ	S	S		से	S	हि	बी	S	S		त	S	त
x		°		२			°		३			४	
प	प					मं	सां	-	-	सां	ध	नि	प
म	म	-		प	-	प	प	सां	-				
वि	र	S		हा	S	स	ता	S	S		व	S	त
x		°		२			°		३			४	
प				प			ग						
म	प	मप		ध	म	प	मग	प					
दि	न	SS		रें	S	S	वS	आ					
x		°		२			°						



## राग मालश्री

प्रख्याता मालवश्रीः सगमपनियुता धर्षभाभ्यां विहीना ।  
 प्रारोहे चावरोहेऽप्यमृदुगमनिका भ्राजते सौदुबैव ॥  
 प्रोक्तोऽभ्यां पंचमोऽशः प्रविलसति च संवादिरूपस्तु षड्जः ।  
 मोदुग्राहन्यासराजत्सुरुचिरमतिभिर्गीयते सायमेषा ॥  
 रागकल्पद्रुमांकुरे ।

सगौ पमौ गपौ निश्च सनी पमौ गपौ गसौ ।  
 मालश्रीः पांशिका सायं गपसंगति मंडिता ॥  
 अभिनवरागमंजर्याम् ।

रिखव नहीं धैवत नहीं तीवर गमनि बखानि ।  
 सप संवादीवादिते मालसिरी पहिचानि ॥  
 रागचन्द्रिकासार ।

मालश्री राग कल्याण घाट से उत्पन्न होता है। इसमें रि और ध स्वर वर्ज्य होते हैं। जाति औड़व-औड़व है। इसका वादी स्वर पंचम और संवादी स्वर षड्ज है। इसका गान समय संध्याकाल है। कुछ लोगों का कथन है कि सा, ग, और प, इन तीनों स्वरों से ही यह राग गाना चाहिये। परन्तु राग के लिये कम से कम पांच स्वर होने चाहिये, इसलिये यह कथन मान्य नहीं किया जा सकता। फिर भी यह निर्विवाद है कि, इस राग में म और नि स्वर अत्यन्त गौण रूप से और केवल स्वर संख्या की पूर्ति करने के लिये ही प्रदण किये जाते हैं। इस राग में जगह-जगह ग और प स्वरों की संगति दृष्टिगोचर होती है। इस राग में तार षड्ज से पंचम पर उतरने की स्वररचना बहुत ही मधुर और रंजक होती है।

उठाव.

सा, गप, मंग, प, नि, सां, निप, मंग, पग, सा

चलन.

प, प, पगसा, सासागगप, प, पमंग, प ग सा,  
सासापन्निता, गपग, मंग, सा, नितागपमंग, पग, सा;  
पपगसा, गपसां, निसांगंसां, पंमंगंसां,

निनिपमंग, पसां, सांनिपग, सागपसां, निपगपग, गसा ।

## मालश्री-त्रिताल ( मध्यलय )

## स्थायी.

नि	मं	प	प - मं ग	प	मं ग ग प	ग सा सा -
सा सा ग प	यां ऽ मि ल	मं ऽ ग ल	गा ऽ वो ऽ			
स व स खि	मं	ग	प - ग प	ग - सा -		
नि	ग प ग सा	प - ग प	ग - सा -			
सा प सा सा	री ऽ सु र	नी ऽ के ल	गा ऽ वो ऽ।			
मा ऽ ल मि						

## अन्तरा.

मं	प - सां सां	सां - सां -	नि	सां गं गं पं	पं गं पं गं सां
मे ऽ च क	न्या ऽ णी ऽ	मे ऽ ल व	ना ऽ वो ऽ		
नि	ग	नि	प ग	प	ग प ग सा
सां सां प ग	सा ग प सां	सां प ग प	ग प ग सा		
रि ध सु र	व र जि त	रू ऽ प दि	खा ऽ वो ऽ।		

## मालश्री-भूमरा

प - ग प	ग - सा	सा - ग ग	प - प
मे ऽ ल क	न्या ऽ ण	औ ऽ ड व	रा ऽ ग
प प ग सा	सा ग प	प - सां -	नि प ग
रि ध व र	ज क र	चौ ऽ थे ऽ	प्र ह र



प - सां सां	पं	गं	सां	प	प	प	ग	प	ग - सा
मा ऽ ल व	सि	रि	को	क	र	त	व	खा ऽ न ।	
३	×			२				०	

अन्तरा.

प - सां सां	सां	-	सां	सां	गं	गं	पं	गं	-	सां
पं ऽ च म	वा	ऽ	दी	जा	ऽ	मे	ऽ	सो	ऽ	हे
३	×			२				०		
सां सां प ग	सा	ग	प	सां	प	ग	प	ग	-	सा
म नि सु र	अ	ऽ	ल्प	च	तु	र	प्र	मा	ऽ	न ।
३	×			२				०		

मालश्री-भूपताल

स्थायी.

सा	प	ग	-	सा	सा	मा	सा	-	सा
क	हे	क	ऽ	ल्प	द्रु	म	ग्रं	ऽ	थ
×		२			०		३		
सा	-	सा	ग	ग	सा	ग	प	-	प
मा	ऽ	ल	सि	रि	को	ऽ	रू	ऽ	प
×		२			०		३		
प	प	म	ग	-	सा	ग	प	प	सां
रि	ख	व	धै	ऽ	व	त	व	र	ज
×		२			०		३		
सां	नि	प	ग	प	ग	प	ग	ग	सा
क	ऽ	न्या	ऽ	णि	सों	ऽ	ज	नि	त ।
×		२			०		३		

## अन्तरा.

प	—	सां	सां	सां	सां	—	सां	—	सां
पं	ऽ	च	म	क	रे	ऽ	वा	ऽ	दि
×		२			०		३		
सां	सां	गं	गं	मं	गं	गं	सां	—	सां
ख	र	ज	सु	र	स	म	वा	ऽ	दि
×		२			०		३		
सां	सां	नि	प	प	ग	सा	ग	प	सां
वृ	ति	य	ऽ	प्र	ह	र	दि	व	स
×		२			०		३		
सां	—	प	ग	प	ग	प	ग	ग	सा
गा	ऽ	व	त	गु	नी	ऽ	सु	म	त
×		२			०		३		

## मालश्री—सूलताल

## स्थायी.

सा	—	ग	ग	प	—	प	प	ग
श्री	ऽ	ड	व	मा	ऽ	ल	सि	री
×		०		२		३		०
प	—	प	ग	प	ग	प	ग	—
रा	ऽ	ग	नि	नि	त	क	हा	ऽ
×		०		२		३		०
प	—	सा	—	सा	—	सा	रे	सा
वा	ऽ	को	ऽ	खा	ऽ	ड	व	क
×		०		२		३		०

सां	—	प	प	प	ग	प	ग	—	सा
सा	५	द	त	गु	नि	दि	स्वा	५	य ।
×		०		१		३		०	

अन्तरा.

प	प	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	सां
सं	पु	र	न	सु	र	ती	५	व	र
×		०		२		३		०	
सां	—	गं	गं	गं	पं	गं	—	सां	सां
सा	५	द	त	ज	ब	गा	५	व	त
×		०		२		३		०	
सां	सां	प,	ग	सा	ग	प	ध	प	—
र	मि	क,	न	बा	५	ब	ब	हा	५
×		०		२		३		०	
सां	सां	प	ग	प	ग	प	ग	—	सा
दु	र	को	५	म	न	रि	भा	५	य ।
×		०		२		३		०	

मालश्री-त्रिताल ( मध्यलय ).

स्थायी

नि	प	सा	सा	ग	प	—	प	सां	सां	मं	प	ग	—	प	ग	प	ग	सा
क	र	त	हो	५	स	क	ल	मि	गा	५	र	स	ज	नी	५			
०				३				×				२						
सा	प	प	—	ग	प	ग	—	सा	सा	सां	—	प	ग	प	ग	सा	—	
आ	५	ज	पि	या	५	घ	र	मे	५	रे	आ	५	वें	गे	५			
०				३				×				२						



## अन्तरा.

मं प प सां सां	— सां सां —	नि सां गं गं पं	गं पं गं सां
द र स न	१ ऽ भ ये १	२ श्या १ म सुं	द र के १
पं — गं पं	— गं सां सां	सां सां प ग	प ग सा —
रो १ ऽ म रो	१ ऽ म स खी	२ ह र ख पा	१ ऽ वें गे १

## मालश्री—त्रिताल ( मध्यलय ).

## स्थायी.

नि सा सा ग प	मं प पं ग प	ग प ग —सा —सा	सा — — —
वा जे रे १	२ तु म १ क तु	२ म क १ पा १ य	ला १ १ १
नि सा सा ग प	मं प पं ग सां	नि प ग —सा —सा	सा — — —
३ भ न न न	३ भ न १ न तु	२ म क १ पा १ य	ला १ १ १

## अन्तरा.

मं  
प  
के

प सां — सां	सां — सां सां	नि सां सां गं पं	मं पं गं गं सां
३ से क १ र	३ आ १ बुं स	२ दा रं गी ले	१ मं १ म १ द सा

नि	नि	प	ग	प	ग	सा	सा	सा	—	—	—
सां	सां	सां	सां	(प)	प	ग	प	प	ग	सा	सा
सा	५	नं	द	की	ला	ज	हु	म	क	५	५
३				×				२		०	

मालश्री—एकताल, ( मध्यलय ).

स्थायी.

नि	प	प	प	प	ग	ग	ग	ग	प	प
सां	ग	प	प	सां	—	—	प	ग	—	ग
में	डी	जिं	द	तू	५	५	सा	५	५	डे
३		४		×		०	२		०	
—	ग	—	सा	प	ग	—	प	—	ग	सा
५	ना	५	ल	ल	गी	५	वे	५	मि	यां
३		४		×		०	२			
सा	प	सा	सा	प	—	ग	प	ग	ग	सा
में	डी	व	ल	वे	५	ख	न	ज	र	भ
३		४		×		०	२		०	

अन्तरा.

मं	प	प	सां	—	सां	—	—	सां	नि	सां	गं	गं	पं
हु	ण	वं	५	दी	५	५	तू	सा	५	डा	५		
३		४		×		०	२						
गं	—	सां	—	सां	सां	पग	प	ग	—	सा	सा		
सां	५	ई	५	में	५	डा	५	दा	५	रं	ग		
३		४		×		०	२			०			

मं	प	सा	सा	सा	प	मं	ग	सा	सा
प	प	मे	डे	ना	ल	प	प	ग	सा
क	रे	मे	डे	ना	ल	तू	सु	ध	र।
३		४		५	६	७	८	९	१०

मालश्री—तिलवाड़ा (विलम्बित).

स्थायी.

नि  
सा  
आ

— गग प —	ग (प) — ग	ग प म गप	ग सा सा —
५ ५५ वे ५	५ ५ ५ ५	आ ५ ५ ५५	रां ५ ना ५
३	४	५	६
(अथवा)			
नि मंसा			
सा गग प —			
आ ५५ वे ५			
३			
नि सा ग प प	मं प (प) प ग	मं प सां सां प	मं प गप ग सा,सा
वे ५ तुं सी	नि त नि त	र दी में तु	ते ही ५ चा ५,आ
३	४	५	६
		(अथवा)	
		मं प सां प ग	
		रे दी में तु	
		३	



## अन्तरा.

मं प ग प प	सां - सां -	मं प प ग प	ग - सा -
औ ऽ र कि	सू ऽ दा ऽ	सु ख ऽ हू ऽ	ना ऽ वे ऽ
६	×	०	०
		( अथवा )	
		मं प प ग - ग प	
		सु ख ऽ हू ऽ	
		२	
प सां प (प) ग	ग प ग सा	नि सा सां (प) ग	प - ग सा, सा
दे ऽ ख ली ऽ	म न रं ग	वे ऽ ख ली ते	डी ऽ नि गा, आ.
३	×	२	०

मालश्री-रूपक  
स्थायी.

मं प प	ग - सा	सा -	नि	सा	ग प ग प	-
म ख	दू ऽ म	सा ऽ	वि	र	क लि य	री ऽ
३	०	२	३	०	०	०
प प	सां - सां	प -	ग	प	ग - सा	सा -
तो रे	द ऽ र	वा ऽ	र	में	आ ऽ यो	है ऽ
३	०	२	३	०	०	२
सा प	सा - ग	प प	प	मं प	ग - सा	
जै ऽ	दी ऽ ऽ	ऽ न	म	ख	दू ऽ म	
३	०	२	३	०	०	

## अन्तरा.

प - सां	सां -	सां सां	नि सां गं -	सां -	पं गं
६ ऽ च्छा	पू ऽ	२ न	की ऽ ऽ	जे ऽ	द र
०	२	३	०	२	३
गं सां -	पं गं	सां -	प सां -	प -	ग प
स की ऽ	तु म	हो ऽ	अ ति ऽ	ही ऽ	प र
०	२	३	०	२	३
ग - -	सा -	प प	ग - सा		
वी ऽ ऽ	न ऽ	म ख	दू ऽ म		
०	२	३	०		

## मालश्री-सूल ( मध्यलय )

## स्थायी.

सा	प	प	ग	प	ग	प	ग	- सा
अ	व	गु	न	व	क	स	मे	ऽ रे
०	०	०	२	३	३	३	३	०
नि	सा	ग	ग	प	सां	सां	प	- ग
कु	पा	ऽ	क	रे	क	र	ता	ऽ र
०	०	०	२	३	३	३	३	०





सा	सा	सा	ग	ग	सा	ग	प	प	ग
क	ब	लो	५	तुं	सो	वे	गो	अ	ब
×		२			०		३		
सा	सा	ग	प	प	प	—	प	सां	सां
अ	ब	ध	स	ब	खो	५	य	क	ब
×		२			०		३		
प	ग	सा	ग	प	ग	प	ग	—	सा
र	ब	को	५	सं	भा	५	रे	५	गो ।
×		२			०		३		

अन्तरा.

मं	—	सां	सां	सां	सां	—	सां	सां	—
प	५	दि	न	की	सां	५	स	को	५
दो		२			०		३		
×					पं				
सां	सां	गं	गं	पं	गं	पं	गं	—	सां
युं	हि	क	र	त	वि	स	वा	५	स
×		२			०		३		
नि	—	प	ग	सा	सा	ग	प	सां	सां
सां	५	त	स	म	य	न	को	५	ऊ
अं		२			०		३		
×			प		प				
सां	—	प	ग	प	ग	प	ग	—	सा
का	५	म	न	हि	आ	५	वे	५	गो ।
×		२			०		३		

## मालश्री-मकरताल ( मध्यलय )

## स्थायी.

नि	सा	ग — सा			सा	सा	सा	—	सा
मा	प	ग	—	सा	सा	सा	सा	—	सा
दु	र	गे	५	दु	रि	त	दु	५	र
×		२			०		३		
नि	सा	सा	ग	ग	सा	ग	प	प	प
सा	सा	सा	ग	ग	सा	ग	प	प	प
र	हो	दि	न	दु	ख	दा	ति	न	को
×		२			०		३		
नि	सा	मं—			प	—	प	सां	प
सा	सा	ग	प	प	प	—	प	सां	प
उ	द	र	५	बि	दा	५	र	द	ल
×		२			०		३		
प	ग	सा	ग	प	ग	प	ग	सा	—
दा	नि	व	दं	ड	दा	५	ह	यो	५ ।
×		२			०		३		

## अन्तरा.

प	प	सां	—	सां	सां	सां	सां	—
दं	द	फं	५	द	मं	द	दि	से ५
×		२			०		३	
सां	सां	सां	—	सां	सां	—	प	प ग
पा	द	प	५	ब	दा	५	स	न को
×		२			०		३	

मं									
प	प	ग	—	सा	सा	ग	प	प	सां
दु	र	वा	ऽ	सिं	दु	र	स	र	न
×		२			०		३		
सां	सां	प	ग	प	प	प	ग	सा	—
दा	रु	न	द	व	दा	ऽ	इ	यो	ऽ
×		२			०		३		

## संचारी.

मं									
प	प	ग	सा	—	ग	प	प	प	प
द	या	नि	धि	ऽ	द	र्ष	द	ल	न
×		२			०		३		
ग	सा	सा	ग	प	ग	प	सा	सा	सा
दु	ऽ	ष्ट	म	द	मो	ऽ	ह	ह	रो
×		२			०		३		
नि									
सा	प	सा	—	सा	ग	—	सा	सा	सा
द्वे	प	दं	ऽ	भ	दू	ऽ	र	कि	यो
×		२			०		३		
नि		ग							
सा	ग	सा	ग	—	प	—	प	ग	—
दा	नि	द	म	ऽ	दा	ऽ	ह	यो	ऽ ।
×		२			०		३		

## आभोग.

मं									
प	ग	प	प	सां	सां	सां	सां	—	सां
दु	ऽ	दु	भि	मृ	दं	ग	ना	ऽ	द
×		२			०		३		

ति	सां	सां	गं	सां	सां	सां	—	प	प	ग
ना	र	द	अ	लु	वा	५	५	द	क	रे
×		२			५			२		
ग	ग	सा	सा	—	ग	—	प	प	सां	
अ	नं	द	दे	५	खे	५	व	ल्ल	भ	
×		२			५		३			
मं	प	ग	ग	प	ग	प	ग	सा	—	
प										
दि	ल	हु	नो	ब	धा	५	इ	या	५।	
×		२			०		३			

मालश्री-सुलताल  
स्थायी.

सां	—	प	प	ग	ग	प	ग	—	सा
दा	५	न	क	र	त	स	मा	५	न
×		०		२		३	०		
सा	सा	ग	ग	प	प	—	प	ग	ग
धु	ज	प	ति	म	हा	५	ग्या	५	न
×		०		२		३	०		
प	—	प	प	प	—	प	ग	—	प
वि	५	क्र	म	जो	५	त	दी	५	प
×		०		२		३	०		
सां	—	सां	प	प	ग	प	ग	—	सा
म	५	ध्य	म	बु	ध	वि	ना	५	न।
×		०		२		३	०		



## अन्तरा.

प	प	सां	सां	सां	—	—	सां	—	सां
वि	भि	ख	न	को	५	५	दी	५	नो
×		०		२		३		०	
सां	गं	—	सां	—	सां	—	सां	प	प
ए	५	५	ग	५	ज	५	रा	५	म
×		०		२		३		०	
प	—	प	प	प	ग	प	ग	—	सा
रा	५	व	न	मा	५	र	सी	५	ता
×		०		२		३		०	
गं	—	सां	प	प	ग	प	ग	—	सा
ला	५	यो	च	तु	र	सु	जा	५	न ।
×		०		२		३		०	

## मालश्री-सूलताल

## स्थायी.

प	—	ग	ग	सा	—	सा	—	—	—
नि	५	मं	ल	मौं	५	ख	५	५	५
×		०		२		३		०	
सा	—	ग	—	प	ग	प	—	—	—
चं	५	दा	५	हु	५	तें	५	५	५
×		०		२		३		०	

सा	-	ग	-	प	-	सां	सां	प	प
जा	S	के	S	दे	S	ख	त	उ	द
x		०		२		३		०	
ग	प	ग	-	सा	-	प	ग	प	-
च	S	के	S	S	S	चं	S	दी	S
x		०		२		३		०	

## अन्तरा.

प	-	सां	सां	सां	-	-	-	सां	सां
दे	S	ख	त	दे	S	S	S	ख	त
x		०		२		३		०	
प	-	प	सां	सां	-	प	-	ग	प
आ	S	न	प	री	S	S	S	S	S
x		०		२		३		०	
ग	-	सा	-	सा	ग	प	-	सां	-
S	S	S	S	मा	S	नो	S	दा	S
x		०		२		३		०	
प	-	ग	ग	सा	प	ग	प	-	
S	S	S	S	मि	न	कों	S	दी	S।
x		०		२		३		०	

मालश्री-धमार  
स्थायी,

नि	सा प प प	ग सा - ग -	सा -	सा - सा
जो	१ ५ व न	म द ५ मा ५	ती ५	ना ५ र
३		×	२	०
सा - सा ग	सा ग - प ग	प -	प सां -	
आ ५ व त	कू ५ ५ ज न	में ५	सं ५ ५	
३	×	२	०	
सां प - प	प ग - प -	ग प	ग - सा	
ग ५ ५ लि	ये ५ ५ ५ ५	त्रि ज	रा ५ ज ।	
३	×	२	०	

अन्तरा,

प ग - प -	सां सां	सां - -	- सां सां -
हो ५ ५ हो ५	क र	धा ५ ५	५ व त ५
×	२	०	३
सां सां गं पं पं	गं पं	गं - सां	सां गं सां सां
ग रे ५ लि प	टे ५	जा ५ त	ने ५ क न
×	२	०	३
प ग - प -	ग प	ग - सा	
आ ५ ५ ५ ५	वे ५	ला ५ ज ।	
×	२	०	
सा			
प प प प			
हे जो व न			

स्थायी के अनुसार

## बिलावल थाट



## विलावल थाट के राग ( २८ )

हेमकल्याण.  
 यमनीविलावल.  
 देवगिरी.  
 औड़व देवगिरी.  
 सरपरदा.  
 लच्छासाख.  
 शुक्ल विलावल.  
 कुकुभ.  
 नट विलावल  
 नट.  
 नट नारायण.  
 नट बिहाग.  
 बिहागड़ा.  
 पटबिहाग.

सावनी ( बिहाग अङ्ग )  
 कामोद नाट.  
 केदार नाट.  
 मलुहा केदार.  
 मलुहा.  
 जलधर केदार.  
 दुर्गा.  
 छाया.  
 छायातिलक.  
 गुणकली.  
 पहाड़ी.  
 मांड.  
 मेवाड़ा.  
 हंसध्वनि.

## राग हेमकल्याण.

पधौ पसौ रिसौ मश्च गपौ धपौ गमौ रिसौ ।

हेमकल्याणकः सांशः प्रारोहे निधदुर्बलः ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ।

मृदु मध्यम तीवर सच्चै चदत न धैवत नेम ।

सप वादी संवादिते राग कहावत हेम ॥

रागचन्द्रिकासार ।

राग हेमकल्याण की उत्पत्ति विलावल थाट से होती है। इसके आरोह में धैवत और निषाद स्वर दुर्बल होते हैं। कुछ लोगों का मत निषाद को विलकुल वर्ज्य मानने का भी है। वादी स्वर षड्ज और सम्वादी पंचम है। राग का विस्तार प्रायः मन्द्र और मध्य सप्तक में होता है। जानकारों का मत है कि शुद्धकल्याण और कामोद के संयोग से यह राग उत्पन्न होता है। रात्रि के द्वितीय प्रहर में इसे गाया जाता है। इसका चलन विलम्बित लय में अधिक अच्छा दिखाई देता है। बहुधा इस राग का प्रारम्भ मन्द्र पंचम से किया जाता है। इस राग पर कुछ मलुहाकेदार की छाया जान पड़ती है, परन्तु निषाद स्वर वर्ज्य करने या असम्प्राय रखने से यह मलुहाकेदार से भिन्न हो जाता है।

कहीं-कहीं इस राग की जोड़ी का एक 'खेम' नामक राग भी सुनाई देता है; परन्तु वह बहुत थोड़े लोगों को याद है और उसके लक्षणों के सम्बन्ध में भी एक मत प्राप्त नहीं होता।

उठाव.

प, धप, सा, रेसा, सामगप, धप, ग, मरेसा ।

चलन.

पप धप, सा, सा, रेसा, गमरेसा, गमपगमरेसा ।

सा, मगप, गमरेसा रेसा, धप, सा, गमप,

गमरेसा सा, मग, रेसा, प, धपसांधप, धप,

गमप, गमरेसा, रेसा, धपसा ।





## अन्तरा.

नि	पप	म	प	ग	प	ग	रे	सारे	सा
सासा	गग	प	धप	प	प	ग	प	ग	रे
चहुँ	ओर	ते	धन	उ	म	इ	धु	म	इ
३		४		५	०		२		०
रे	प	ग	म	म	ग	प	रे	सा	—
सासा	गग	प	प	प	—	ग	प	रे	—
मद	गज	आ	५	दी	५	५	५	५	५
३		४		५	०		२		०

( अथवा )

नि	सा	प	प	प	ध	प	ग	प	रे	सा	—
सा	मग	प	प	प	ध	प	ग	प	रे	सा	—
म	३५	ग	ज	आ	५	दी	५	५	५	ये	५
३		४		५	०		२		०		

हेमकल्याण—मपताल ( मध्यलय ) एक प्रकार

स्वायी.

प	म	प	ध	प	म	—	ग	—	सा
सुं	५	द	५	र	गो	५	ल	५	क
५		२			०		३		
नि	सा	रे	रे	रे	रे	ग	म	प	ध
पो	५	ल	न	पै	अ	न	मो	५	ल
५		२			०		३		
म	—	ग	रे	ग	सा	सा	नि	सा	रे
सौं	५	कू	५	५	ड	ल	डो	५	ल
५		२			०		३		

सा	—	ग	—	म	प	—	ग	रे	सा
नी	५	प्या	५	५	५	५	५	५	री ।
×		२			०		३		

अन्तरा.

म	ग	म	—	ग	प	—	नि	सां	सां
हि	या	ह	५	ल	के	५	घू	५	ति
×		२			०		३		
गं	—	रे	—	सां	नि	सां	नि	ध	प
मो	५	ह	५	न	की	५	भ	ल	के
×		२			०		३		
प	प	नि	सां	नि	ध	प	प	ध	मग
ग	ध	री	अ	ल	के	५	घुं	ग	रु
सु		२			०		३		
×									
सा	—	ग	—	म	प	—	ग	रे	सा
या	५	५	५	५	५	५	५	५	री ।
×		२			०		३		

## राग यमनीबिलावल.

मता यमनपूर्विका पुनरियं हि विलावली ।  
प्रविष्ट इह तीव्रमध्यम इति स्वरूपे भिदा ॥  
सपावभिमतौ सदा रुचिरवासंवादिनौ ।  
मनोज्ञमधुरस्वरूपसि गीयते सांप्रतम् ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥१६॥

सरी गमौ गपौ मश्च धपौ मगौ मरी च सः ।  
सपसंवादसंपन्ना द्विमेमनी प्रभातगा ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥३२॥

चढत तीव्रमध्यम लगे ठाट बिलावलको हि ।  
पस संवादोवादिते यमनबिलावल होहि ॥

राग चन्द्रिकासार ॥१५॥

यमनीबिलावल, बिलावल थाट से उत्पन्न होने वाला एक बिलावल का भेद है। यह यमन और बिलावल, इन दोनों रागों के मिश्रण से उत्पन्न हुआ है। इसके गायन का समय प्रातःकाल माना गया है। इसमें दोनों मध्यमों का प्रयोग होता है। बादी पड़ज और संवादी पञ्चम है। आरोह में तीव्र मध्यम का प्रयोग कर यमन का अङ्ग दिखाया जाता है और स्पष्ट रूप से शुद्ध मध्यम लगाकर उसका निवारण किया जाता है। इसका रागवाचक प्रयोग “प, मं, प, गमगरे, गरेसा” है। इसका साधारण चलन बिलावल जैसा ही होता है।

उठाव.

सारेग, मग, पमधप, गमगरे, गरेसा ।

चलन.

सा, रेग, रे, सा, निधनि, धपधनिसा, ग, मग, पमप,  
गमगरे, गरेसा ।

यमनी बिलावल—भूपताल ( मध्यलय ).

स्थायी.

नि	रे	म	—	म	म	म	गरे	ग	—
सा	रे	ग	—	ग	ग	म	व	ली	५
य	म	नी	५	बि	ला	५	३	३	५
म	प	प	प	प	ग	म	गरे	ग	रेसा
प	पम	ध	प	प	मा	५	न	त	५
स	व	च	तु	र	०	५	३	३	५
नि	सा	ग	रे	सा	रे	सानि	नि	ध	—
सा	सा	म	५	प्र	ह	र	गो	५	य
प्र	थ	३	३	३	३	३	३	३	३
प	—	ध	प	पम	ग	म	गरे	ग	रेसा
प	५	ग	नि	क	हा	५	व	त	५।
रा	५	३	३	३	३	३	३	३	३
५	५	३	३	३	३	३	३	३	३

अन्तरा.

सां	नि	सां	सां	सां	—	नि	सां	रे	सां
ध	ध	नि	सां	सां	५	सां	सं	५	ग
वे	५	ला	५	व	५	३	३	३	३
नि	रे	मं	मं	रे	सानि	नि	ध	—	प
सां	५	गं	५	५	मि	ला	५	५	य
क	५	ल्या	५	श	३	३	३	३	३
५	—	३	३	३	३	३	३	३	३
ग	५	प	प	प	नि	ध	प	प	प
वा	५	दी	सु	र	र	ज	क	क	र
५	५	३	३	३	३	३	३	३	३



म	प	म		प		गरे	ग	रेसा
प	ग	प	ध	प	ग	म		
स	व	को	५	रि	भा	५	व	त ५।
x		२			०		३	

यमनी बिलावल-त्रिताल ( मध्यलय ) .

स्थायी.

नि	सा	रे	ग	रे	नि	सा	रे	सा -	प	मंग	प -	मपध	प	म	गरे
भो	५	र	भ	यो	५	है	५	मे	५	रे	५	ला	ढ़ि	ले	५।
०				३					x			२			
मग	मग	प	-	सां	सां	ध	प	म	प	(प)	म	ग	म	रे	सा -
जा	५	गो	५	कुं	व	र	क	न्हा	५	५	५	५	५	ई	५॥
०				३				x				२			

अन्तरा.

प -	सां	सां	सां -	रें	सां	सां	रें	गं	रें	सां	निध	नि(प)			
सं	५	ग	स	खा	५	स	व	द्वा	५	र	न	ठा	५	५	रे।
०				२				x				२			
मग	मग	प	रें	सां	नि	ध	प	म	गग	पम	ग	रे	सा	नि	ध
खे	५	लो	स	वै	५	अ	व	उ	ठो	५	जुहु	रा	५	ई	५॥
०				३				x			२				

## यमनी बिलावल-त्रिताल (मध्यलय).

ग  
रे  
पि

ग ग - रे	सा - नि ध	सा - (सा) -	नि ध प -
या वि ऽ न	कै ऽ ऽ ऽ	से ऽ ऽ ऽ	के ऽ ऽ ऽ
३	×	२	०
नि ध सा -	सा - - -	सा (सा) नि ध	- सा - रे
म ऽ री ऽ	ये ऽ ऽ ऽ	कै ऽ से ऽ	ऽ धी ऽ र
३	×	२	०
ग - रे -	ग - रे -	सा - - सा	गरे ग - ग
ज ऽ ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ	ये ऽ ऽ चै	ऽऽ न ऽ ना
३	×	२	०
म ध - प	प म प ग	म ग रे रे	ग रे सा, रे
ऽ ऽ ऽ प	रे ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ मा	ऽ ऽ ऽ, पि
३	×	२	०

## अन्तरा.

मग मग प प	नि ध सां -	सां - -, सां	सां नि ध प
जऽ वऽ से ग	ये ऽ मो ऽ	री ऽ ऽ, सु	ध ह ऽ न
०	३	×	२
प म प ग	म ग रे रे	, ग गम ध	प म प ग
ली ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ नीऽ	ऽ, स वाऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

म ग रे रे	ग रे सा -	नि सा म	प - - -
५ ५ ५ रं	५ ५ ग ५	कै ५ से प	रे ५ ५ ५
०	३	×	२
मप. धनि सांरें -	सां - नि ध	प म प ग	म ग रे रे
मो ५ ५ ५ ५	हे ५ चै ५	५ ५ ५ न	५ ५ ५ मा ।
०	३	×	२
ग रे सा, रे	ग ग - रे	सा	
५ ५ ५, पि	या बि ५ न	कै	
०	३	×	

यमनी बिलावल—एकताल ( विलम्बित ).

स्थायी.

नि सा रे	ग रे	नि सा	नि सा	ध नि पधनि सा	सा रे	ग रे सा
ज ब सु धि	आ	५ ५	वे	५ ५ ५ ५	मि त्र	की ५
३	४	×	०	०	२	०
नि सा सा	प प ग ग	प ग	प म	प	प ग म	ग रे मप
उ ठ त जि	या	५	५	५	रे ५	५ ५ ५ ५
३	४	×	०	०	२	०
प म प म ग	म ग	गम , गमपम	ग	रे	सा नि	रे -
हू ५	के ५	५ ५	मा	५	५ ५	५ ५
३	४	×	०	०	२	०

## अन्तरा.

नि	सा सा	ग, ग	ग	-	ग	म	ग	म	गम	गमप	मग	ग
ज	ब	ते ऽपि	या	५	प	र	देऽ	५	५	५	सऽ	ग
३		४	५	०	०		२				०	
(म)ग	रेसा	सारेग	सा	नि	ध	सा	नि	सा	मग	प	मप	
बऽ	ऽन	कीऽऽ	नो	तऽ	बऽ	ते	५	हो	ऽत	न	५	
३		४	५	५	५	०	२	२		०		
प	नि	धप	मग	रे	गप	निसां	सां, धप	गधनिध	ध, पम	गम, गमपम	ग	रेसा रे
म	योऽ	५	५	हेऽऽऽ	ग, ५	५	ले, ५	५, ५	मा	५	५	५
३		४	५	५	५	०	२	३		०		

यमनी बिलावल-तिलवाड़ा ( विलम्बित ).

स्थायी.

नि  
सा, सारे  
आ, नप

म	ग	म	रे	ग	ग	-	ग	म	ध	प	म	प	प	प	ग	म
	रो	५	५	५	री	५	को	५	५	ने	५	५	५	५	५	५
५					२			०					३			
म	रे	ग	रे	सा	सा	सारेग	रे	सा	सा	नि	ध	प	नि	सा	रे	ग
५	५	५	गु	न	औ	५	गु	न	ना	५	५	मे	मा	५	रा	५
५					२			०					३			





म ग म रे	रे नि रे सा नि सा	सारे ग रे सा (सा) नि ध	नि ध प प
रा S S S	S S ई SS	च S तु र S सु S	जा S S न
म	x		
पु सासा - नि सा	सा नि रे सा नि सा	सा नि रे ग -	म ग रे ग म ध
गुन नि धा S SS	S S न SS	अ प नो S	S SS S SS
३	x	२	०
प म ध ग	म ग रे ग रे ग म प	म ग म रे	नि रे सा नि
धा S S S	S SS S रो SSS	का S S S	S S जे S
३	x	२	०

अन्तरा.

सां नि ध सां सां	रें सां - नि सां नि सां रें मं पं	पं मै पं गं मं	रें गं रें गं रें
जो S मो पे	द या S, SS तें SS SSS	S S S S	S S की S
३	x	२	०
रें सां रें सां	सां (सां) नि ध प	म प नि सां रें सां नि ध	नि ध प म
SS न्ही का S वि धि	हो SS S उं	अ ब SSS उ त S	रा S S S
३	x	२	०
प ग म ग रे	ग रे नि रे सा	नि सा सा म ग प - मं प	
S S S SS	S S SS ई	दे हो ब ता S, SS	
३	x	२	
मं प ध नि सां रें गं रें	सां नि ध प म ग रें सा		
आ SSS	SSSS	SSSS	SSSS ज

नि		रे		म	मं	मं			
सा	ग	ग	-	ग	ग	ग	रे	ग	प प
धे	५ <sub>३</sub>	रो	५ <sub>४</sub>	री	ज x	ल	५ <sub>०</sub>	घ	५ <sub>२</sub>
प	-	मं	-	ग	ग	-	रे	ग	रे सा
हं	५ <sub>३</sub>	ओ	५ <sub>४</sub>	र	मो x	५ <sub>०</sub>	५ <sub>०</sub>	५ <sub>२</sub>	५ <sub>२</sub>
सा	ग	ग	-	प	ग	-	रे	सा	रे सा
दा	५ <sub>३</sub>	दू	५ <sub>४</sub>	र	शो x	५ <sub>०</sub>	५ <sub>०</sub>	क	र त
सा	रे	ग	रे	-	सा	-	-	नि सा	रे(ध) सा
या	५ <sub>३</sub>	वि	न	५ <sub>४</sub>	मो x	५ <sub>०</sub>	५ <sub>०</sub>	५ <sub>२</sub>	(५५) हे ।

प	प	सां	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	-	सां
त	र	फि	त	र	फि	च	म	के	कां	ऽ	ध
x		.		२		०		३		४	
सां	सां	ध	सां	-	सां	रें	सां	-	नि	ध	नि
च	का	ऽ	चौं	ऽ	ध	ला	ऽ	ऽ	व	त	ऽ
x		.		२		०		३		४	
ग	-	प	ध	सां	सां	रें	सां	सां	ध	ध	प
ए	ऽ	री	पा	ऽ	पी	प	पि	या	नि	ड	र
x		.		२		०		३		४	

प	ग	-	प	ध	सां	ध	सां	सां	-	प	ध	प
ना	५	हीं	५	द	ई	५	की	५	ड	५	र	
×		०		२		०		३		४		
रें	सां	ध	प	ग	प	गरे	सा					
तो	५	५	५	५	५	हे५,	घं					
×		०		२		०						

## संचारी.

प	प	प	प	प	प	—	प	ध	प	प
ग	ग	तो	अ	नं	ग	अं	ग	द	ह	त
ए	क	०	०	२	०	०	३	४	४	
प	—	—	प	—	ध	सां	सां	निध	नि	ध
ग	—	—	प	—	ध	सां	सां	निध	नि	ध
पा	५	५	व	५	त	प	र	म५	५	दु
५	०	०		२		०		१		४
प	—	ग	प	ध	प	ध	प	ग	रे	सारे
ग	—	ग	प	ध	प	ध	प	ग	रे	सारे
का	५	र	भा	५	र	र	ज	नी	५	५५
५		०		२		०		३		४
सा	—	—	प	ग	प	—	प	ध	प	ध
ना	५	५	हीं	५	५	व	ट	त	हो	५
५		०		२		०		३		४

## आभोग.

प	ग	प	ध	सां	-	सां	सां	-	-	सां	रें	सां
रा	जा	५	रा	५	म	प्या	५	५	५	रे	५	की
×		०		२		०		३		४		



सां	घ	—	सां	सां	सां	सां	गं	नि	सां	नि	ध	ध	—
ऐ	५	५	से	स	म	य	आ	५	न	मि	ले	५	५
ग	प	ग	०	०	२	०	०	३	३	४	४	४	४
प	ग	प	प	प	—	प	घ	सां	सां	ध	प	ग	ग
त	व	इ	दु	५	२	ख	दू	५	र	हो	५	त	त
५	५	०	०	०	०	०	०	०	३	४	४	४	४
ग	—	प	ध	सां	ध	सां	प	ध	रें	सां	—	—	—
अं	५	क	भ	रे	५	ई	५	दु	मु	खी	५	५	५
५	५	०	०	२	०	०	०	३	४	४	४	४	४
सां	रें	सां	ध	प	ग	प	गरे,	सा					
छो	५	५	५	५	५	हे५,	५	धे					
५	५	०	०	२	०	०	०	०					

यमनी विलावल—चौताल ( विलम्बित ).

स्थायी.

नि	सा	ग	ग	ग	ग	ग	रे	प	प	प	प	—
तू	५	कि	त	क	र	त	मा	५	न	का	५	५
३	५	४	५	५	५	०	२	३	०	०	०	०
प	प	ग	रे	ग	सा	रे	ग	रे	सा	रे	रे	रे
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
३	४	४	५	५	०	०	२	०	०	०	०	०
—	सा	—	सा	नि	ध	प	साध	सा	सा	रे	सा	सा
५	म्वा	५	ल	वा	५	५	ल५	५	नि	प	ट	ट
३	४	४	५	५	०	०	२	३	०	०	०	०

-	सा	प	ग	प	ग	-	रे	ग	रे	सा	रेषु	सा
५	न	ट	५	ना	५	५	ग	५	र	५५	तू	।
१		४		५		०		३		०		

## अन्तरा.

प	ग	प	प	सां	ध	-	प	सां	-	-	सां	-	सां
तू	५	सी	तू	५	५	ही	५	५	औ	५	र		
५		०	२			०	३						
सां	नि			सां	-	सां	सां	-	-	सां	ध	-	प
ध	५	५	खी	५	न	ले	५	५	खी	५	५		
५		०	२		०	३							
ग	-	-	प	ध	रें	सां	ध	सां	प	ग	प		
ऐ	५	५	सी	५	च	तु	र	५	रू	५	प।		
५		०	२		०	३							
ग	-	रे	ग	रे	सा	रेषु	सा						
आ	५	५	ग	५	र	५५	तू						
५		०	२		०								

## राग देवगिरी विलावल.

निसौ धनी धसौ रिगौ मगौ पमौ गमौ रिसौ ।

देवगिरी भवेत् प्रातः पड्जांशा मोदवर्धिनी ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥३१॥

विलावलीमेलभवो हि देवगिरिविलोमे धग दुर्बलेयम् ।

संपूर्णरागः किल पड्जवादी कल्याणमिश्रोऽभिमतः प्रभाते ॥

राग कल्पद्रुमांकुरे ॥१८॥

जबहि विलावल मेलमें उतरत धग नहि लाग ।

सप वादी संवादितें कहत देवगिरी राग ॥

राग चन्द्रिकासार ॥१७॥

देवगिरी विलावल, विलावल थाट से उत्पन्न होने वाला विलावल का एक भेद है। इस राग में भी कल्याण का अङ्ग है। इसका वादी स्वर पड्ज है। कोई धैवत को वादी मानते हैं। अवरोह में ध और ग स्वर दुर्बल हैं। विलावल के सभी भेदों के रागांग अवरोह में व्यक्त होते हैं। ऐसा होना उचित भी है क्योंकि विलावल के समस्त भेद दिवसगेय दिन में गाये जाने वाले हैं। जिस तरह रात्रिगेय रागों का अङ्ग आरोह में व्यक्त होता है, उसी तरह दिनगेय राग अवरोह में स्पष्टता प्राप्त करते हैं। कहीं पर देवगिरी को सम्पूर्ण मानकर गाने का प्रचार भी है। कई जगह स नि वर्जित, औड़व देवगिरी नामक एक भेद भी प्रचलित है। इसका विस्तार मन्द्र और मध्य स्थानों में बड़ी सुन्दरता से होता है। कुछ लोग इस राग में क्वचित् तीव्र मध्यम का स्वल्प प्रयोग भी करते हैं, परन्तु हमारे मत से ऐसा प्रयोग करने पर 'यमनी' राग आगे आजायेगा। देवगिरी, विलावल का ही एक भेद है; अतः इसके अवरोह में धैवत की सङ्गति में कोमल नि का स्पर्श अच्छा दिखाई पड़ता है।

उठाव.

निसा, धनिधसा, रेग, मग, प, मग, गरे, सा ।

चलन.

सा, धनिध, सा, रेग, गग, गरे, सा, साग, प, धनिप,  
मग, मरे, सा ।





सां	सां	सां	ध	नि	सां	—	सां	ध	नि	प
नि	नि	नि			चा	५	५	५	ये	
म	धु	र	५	र	०		३			
×		२						ध		
प	प	प	प	प	नि	ध	नि	प	प	
ग	ग	ग			अ	ध	ग	क	र	
अ	व	रो	५	ह	०		३			
×		२			ग					
मं		प			रे	—	सा	रे	ग	
प	प	ग	—	प			ये	५	५।	
म	न	को	५	रि	भा	५	३			
×		२			०					

देवगिरी—तिलवाड़ा ( विलम्बित ).

स्थायी.

सा ध ग	ग	नि	सा रे सा	नि ध प
निसा निध सा रे	रे ग - रे	सा रे सा -	नि ध प -	
आऽजऽऽव	धाऽऽऽ	ईऽमाऽ	ऽऽईऽ	
३	x	३	०	
ध प	प प	व	ग	
प ग ग ग	ग ग प -	पपपनि (प) ग रे	रे ग रे सा	
नंऽदऽम	ह लऽऽ	घऽऽऽ रऽऽ	छाऽऽई	
३	x	३	०	

अन्तरा.

ध	ध	नि	नि	सां	सां	—	सां	सां	(सां), निध	निध	सां	सां	सां	(सां) ध	नि	प
प	निध	नि	सां	सां	—	सां	सां	(सां), निध	निध	सां	सां	सां	(सां) ध	नि	प	
मो	ती	५	य	न	चौ	५	क	पु	ग	५	वो	५	स	व	मी	५
३					५				३						०	



## अन्तरा.

सां	नि ध सां -	सां - सां -	नि	सां - नि रें सां	नि सां	सां (सां) ध नि प
पो ऽ	थी ऽ	वां ऽ चो ऽ	मो ऽ	ती ऽ	वा ऽ	रुं
३		×	२		०	
प	निनि		म प	म		
म - धध - सां	सां ध नि प	प - निधनिप मपम	ग रे सा -			
द ऽ	च्छिन्ना ऽ, दि	ला ऽ ऽ ऊं	दो ऽ	नौ ऽ ऽ ऽ क	रे ऽ ऽ ऽ	
३		×	२		०	

## देवगिरी—एकताल ( विलम्बित ).

## स्थायी.

सानि साध	सा सारे	ग -	-	म गम	ग रे	-	ग
वऽ	धर	आ ऽ	ऽ	वे	ऽ	ऽ,	पि
३	४	×	०	२	०		
रे	ग	रे	सा	नि सा निध	सा सा	नि सा	रे
या	ऽ	मो	रे	ये	ऽ	रि तु	यों
३	४	४	४	×	०	२	०
सा	निध	निध	सा	-	नि सा	रे	-
मीऽ	ती	ऽ	जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
३	४	४	×	०	०	०	०

सा  
क





सा  
निसारेग—रें स प  
पऽऽऽऽ ऽव ना व्या  
३

## अन्तरा.

सां नि	रें सां — नितां	सांसारेंगं गं रें सां	सांसांनिध निध—सांसां
ध ध सां सां	ध न ऽ ऽ ऽ	राऽऽऽ ऽ त सु	हाऽऽऽ ऽ ऽ ऽग की
३	३	२	०
सां	म नि नि	सां—	
ध प म ग	ग म ध ध	ध — नि प	सांसांनिध नि सांसां
३	३	२	०
ॽ ॽ ॽ ॽ	व न री व	ना ॽ ॽ ये	नैऽऽऽ ॽ न न
३	३	२	०
सां रें सां —	ध प म ग	म रे ममगरेगम पम	म रे नि रे
३	३	२	०
ॽ ॽ में ॽ	क ज रा ॽ	ॽ ॽ ऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ	ला ॽ यो ॽ
३	३	२	०

निसारेग—रें सा प  
ऽऽऽऽ वऽ ना व्या  
३

देवगिरी—रूपक ( विलम्बित )

## स्थायी.

सा	नि	री	ग	प
ग री	सा(सा), निध निध, सारे	ग — —	प (प)	ग म
०	२	३	२	३
ये दि	नाऽ ऽऽ ऽऽ, हम	रें ॽ ॽ	दो ॽ	ॽ ॽ
०	२	३	२	३

ग रे -	ग रे	ग रे	ग म	ग रे -	सा नि रे	सा -
रे S S	च ले	S S	जा S S	ये S	ही S	
•	२	३	३	२	३	३
नि सा -	सा नि	नि ध प	सा रे -	नि रे	ग	रे पप
SS S	अब हूं S	S S	पा S S	यो S	ग, गग	प
•	०	३	०	२	३	३
म ग -	ग रे -	सा नि रे	सा नि सा	गरे	सा (सा	
वा S S	S S	S S	री SS	येदि	ना S	
•	२	३	०	२	२	

## अन्तगा.

पप	नि नि ध, नि	सां नि सां	सां	नि सां	रें	गं	रें	सां - नि
दिन	रें SS, न	वी SS	ती	ना S	S	म	ज	प S त
२	३	०	०	२	३	३	३	०
ध नि	(प) -	म ग -	प (प)	कि त	वे S	ग	म	गरे ग रे
S S	हूं S	S S	S S	२	३	३	३	अ S S ब
२	३	०	०	२	३	३	३	०
नि रे	सा -	नि रे -	नि रे	ग	ग	प प	ग, गप	म ग -
हूं S	हूं S	तो S S	हे S	S	S	गि, र S		धा S S ।
२	३	०	२	३	३	३		०
ग रे -	सा नि रे	सा नि सा	गरे					
S S	S S	री SS	येदि					
२	३	०						

## देवगिरी—एकताल ( विलम्बित )

स्थायी.

सा		प म		ग	रे	सा	निसा	सा ध	निसा	निध	सा	निसा
प	—	गम गमपम		ग	रे	सा	निसा	निसा	निध	सा	निसा	
रू	S	SS SSसे		हो	S	S	SS	पिS	वाS	S	SS	
नि				नि				ग		रे		
सा	ग	रे सा		सा	सा	रे	—	रे	ग	ग	म	
आ	S	S ज		ऐ	सी	का	S	ह	म	सें	S	
म												
प	—	गम, गमपम		ग	रे	सा	—	निनि	सासा	रेरे	गग	—म
चू	S	SS, SSक		री	S	S	S	SS	SS	SS	SS	
पध		प म										
निनि, (प)		गम गमपम										
SS, रू		SS SSसे										

अन्तरा.

प		गग	रे	मं		नि	
नि ध	प ,प	मम	गग	प ,मप	प ,प	ध निध	
ना S	हे ,ना	उS	तर	को SS	उ जव	र SS	
सां (सां), निध	निध	प	नि ध	प ,प	(प) मग	मरे ग	
दे SS	होS	S	चि न	ति ,क	रू SS	SS S	

ग	प	रे	निनि	सासा	रे
प (प)	गम, गमपम	ग रे सा -	सासा	रेरे	गग -म
क रे	SS, SSSजो	री S S S	SS SS	SS SS	SS SS
म ध					
नि (प)					
रु					



## अन्तरा.

प	नि	ध	प	मप	गग	रे	म	प	प	प	प	नि	ध
	जो	S	S	S,SS	का	S	S	र	न	सो	S,अ	व	S
	३		४		५	५	२			३		०	
ध नि	सां	सां(सां),निध	निध	प	प	नि	ध	प	प	प	(प)	म	ग
	मैं	S,SS	पह	रुं	ह	रि	या	ला	चू	री	मो	S	
	३		४		५	५	०			०			
	म	गरे	ग	ममपम	ग	रे	सा	-	स्थायी के अनुसार				
	S	S	S	S,SSरी	मा	S	S	S					
	३		४		५		०						

औड़व देवगिरी—मूलताल ( मध्यलय ) .

## स्थायी,

						सा	सा	रे
						क	स	प
						३	०	
						प	सां	ध
ग	-	ग	ग	ग	ग	ग	प	ध
नं	S	द	न	द	श	भु	जा	S
५		०	२	२	३	३	०	०

( अथवा )

						प	प	
						ग	ग	प
						रे	रे	
नं	S	द	न	द	श	S	भु	जा
५		०	२	२	३	३	०	S

सां	ध	सां	—	इत्यादि					
—	रे	—	—	ग	रे	—	—	सा	—
S	०	S	S	प	द	S	S	न	S
X	ग	ग	प	२	प	सां	ध	सां	—
सां	—	कं	S	२	द	S	S	न	S
S	S	०	२	ग	पग	प	ध	सां	—
X	रे	ग	ग	न	न	S	S	व	S
सा	—	गी	वा	२	२	३	३	सा	रे
सीं	S	०	ध	प	ग	रे,	सा	सा	प
X	ध	प	ध	त	ये	S,	क	स	०
प	क	ल	स	२	२	३	३	०	०
मु	०	०	०	२	२	३	३	०	०
X	०	०	०	२	२	३	३	०	०

## अन्तरा.

प	ग	प	सां	—	सां	—	सां	—	सां	—
ग	व	री	०	S	को	S	पु	S	त्र	S
X	—	सां	०	रें	सां	—	सां	—	प	—
सां	ध	—	सां	व	खा	S	S	S	न	०
नी	S	ल	०	प	ग	प	सां	ध	सां	सां
X	रे	मु	०	जा	S	२	३	दा	य	क
प	ग	श	०	२	२	३	३	०	०	०
द	०	०	०	२	२	३	३	०	०	०
X	०	०	०	२	२	३	३	०	०	०

प	ध	प	ध	प	गरे,	ग	रे	सा	रे
मु	क	ल	स	त	येऽ	ऽ	क	स	प
×		०		२		३		०	

औड़व देवगिरी—( मनि-वर्जित ) सुलताल ( मध्यलय ).

स्थायी.

ग	रे	सा	सा	सा	सा	—	रे	सा	—
अ	नु	द्रु	त	ल	घु	ऽ	गु	रु	ऽ
×		०		२		३		०	
सा	ग	ग	प	ग	रे	सा	रे	सा	सा
पु	लु	त	प्र	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न
×		०		२		३		०	
प	—	प	प	प	—	रे	प	प	प
ग	—	ग	ग	ग	—	रे	ग	प	प
ता	ऽ	ल	क	ला	ऽ	ऽ	का	ऽ	ल
×		०		२		३		०	
ग	—	प	प	ग	रे	सा	रे	सा	—
प	—	ग	प	ग	रे	सा	रे	सा	—
या	ऽ	वि	धि	जा	ऽ	ऽ	ऽ	न	ऽ ।
×		०		२		३		०	

अन्तरा.

ग	प	—	सां	सां	सां	—	सां	सां
अ	णु	ऽ	आ	दि	ती	ऽ	त्ति	र
×		०		२		३		०

सां	—	सां	ध	सां	ध	सां	—	ध	प	प	ध
चा	ऽ	ट	क	चा	ऽ	त्र	क	व	क	०	क
×		०		२		३		०			
प											
ग	—	प	ध	सां	ध	रें	रें	सां	—		
वा	ऽ	य	स	भे	ऽ	ऽ	क	को	ऽ		
×		०		३		३		०			
ध	प	ग	प	ग	रें	सा	रें	सा	—		
कु	ट	प	र	मा	ऽ	ऽ	ऽ	न	ऽ।		
×		०		२		३		०			

## संचारी.

प	ग	प	प	प	—	प	ध	प	—
अ	ति	त	अ	ना	ऽ	ग	त	अं	ऽ
×		०	२	३		३		०	
सां									
ध	ध	सां	सां	ध	प	प	ध	प	—
स	न्या	ऽ	स	क	र	दे	ऽ	त	ऽ
×		०	३	३		३		०	
प									
ग	—	ग	रें	ग	प	ध	ध	प	—
न	ऽ	ष्ट	उ	ही	ऽ	ऽ	ष्ट	सो	ऽ
×		०	३	३		३		०	
प									
ग	—	ध	प	ग	—	रें	—	सा	—
ले	ऽ	त	है	ता	ऽ	ऽ	ऽ	न	ऽ।
×		०	३	३		३		०	



## आभोग.

प	सां	सां	सां	—	सां	सां	—	सां
ग	ध	यां	ता	५	न	से	५	न
क	मि	०	२		३		०	
×								
सां	रें	गं	सां	—	ध	प	प	ध
पू	५	न	हो	५	सो	५	क	रे
×	०		२		३		०	
प	प	ध	सां	ध	सां	रें	सां	—
ग	—	५	सू	५	र	न	को	५
स	५	०	२		३		०	
×			प					
ध	ध	प	ग	प	ग	रे	सा	—
सां	—	५	छा	५	५	५	न	५
दे	५	खे	२		३		०	
×		०						

## राग सरपरदा.

सरी गमौ धपौ निधौ निसौ निधौ पमौ गमौ ।  
रिसौ सर्पदिका प्रातः सपसंवादमंडना ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥३७॥

विभाति सरपर्दकः सकलमान्यतीव्रस्वरै—  
बिलावल विशेष एव स इह प्रदिष्टो बुधैः ॥  
सपावथ धगा च कैश्चिदिह वादिसंवादिनौ  
स्मृतावुपसि गीयते सुमधुरस्वरं गायकैः

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥२०॥

सकल बिलावल के हि सुर धैवत वादि कहाइ ।  
संवादी गंधार रहि सर्पदा हो जाइ ॥

रागचन्द्रिकासार ॥१६॥

सरपरदा एक यावनिक राग भेद है। ऐसा माना जाता है कि यह हजरत अमीर खुसरो द्वारा प्रचार में लाये हुए रागों में से एक है। इसे भी एक बिलावल का भेद माना जाता है। यह राग अल्हैया बिलावल के साथ, यमन, गौड़ और बिहाग के मिश्रण से उत्पन्न होता है। इसमें पड़ज और पंचम का संवाद है। इसके गायन का समय दिवस का प्रथम प्रहर है। इसमें गान्धार और धैवत स्वर भी सहत्व के होते हैं।

उठाव.

सा, रेगम, ध, प, निध, निसां, निध, प, मग, मरे, सा ।

चलन.

सा, रेगमध, प, मग, मरे, सा, गमध, प, सारेग, मरे, सा ।  
सारेग, ग, रेग, मपमग, रे, सा, गमप, मग, मरे, सा ।



सां	सां	सां	ध	प	प	ध	मग	म	रे	सा
ह	र	ष	त	च	तु	तु	रु	सु	ज	न ।
×		१			०			१		

सरपरदा—झपताल

स्थायी.

सा	—	म	ग	ग	प	प	नि	ध	नि
ल	ऽ	च्छ	न	गु	नि	स	र	प	र
×		१			०		१		
सां	—	सां	रें	सां	ध	—	—	प	मग
दा	ऽ	को	ऽ	ब	ता	ऽ	ऽ	व	तुऽ
×		१			०		१		
म	प	म	ग	ग	म	ग	ग	म	रे
मे	ऽ	ल	शु	चि	सं	ऽ	पु	र	न
×		१			०		१		
ग	म	प	ग	म	ग	—	म	रे	सा
अ	ह	र	सु	ख	गा	ऽ	ऽ	व	त ।
×		१			०		१		

अन्तरा.

प	प	नि	ध	नि	सां	सां	सां	—	सां
स	प	क	र	त	स	म	वा	ऽ	द
×		१			०		१		



सां	रें	गं	गं	मं	मं	रें	—	—	सां	सां
का	हु	ध	ग	को	मा	५	५	५	न	त
×		२			०			३		
सां	ध	प	म	ग	म	ग	ग	म	रे	
य	म	न	वि	ल	व	ल	गौ	५	ड	
×		२			०		३			
ग	म	प	म	प	म	ग	म	रे	सा	
च	तु	र	सु	मि	ला	५	५	व	त	
×		२			०		३			

सरपरदा—त्रिताल ( मध्यलय ).

स्थायी.

सा  
ये

रे	ग	—	म	नि	ध	—	प	—	प	म	—	म	ग	—	म	रे
तो	म	५	न्वा	ना	५	५	५	५	५	५	५	र	हे	५	५	५
३				×				२					०			
प	ग	म	प	म	ग	—	रे	—	सा	—	—	—	नि	सा	—	सा
५																
५	५	ह	म	रा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	कै
३				×				२					०			
रे	ग	—	म	म	नि	ध	प	—	—	—	(प)	—	—	—	—	सा
सी	रे	५	क	रु	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	अ
३				×				२					०			

रे ग - ग	म ग म रे	ग रे म ग	ग रे सा सा
व मो ऽ री	मा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	६६ ऽ ऽ, ये ।
१	×	२	०

## अन्तरा.

नि नि - नि	सां - - -	सां - - -	(सां) - - नि
टि यां ऽ व	टी ऽ ऽ ऽ	यां ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ जा
१	×	२	०
- नि - नि	सां - - -	ध प - म	ग - - म
ऽ त ऽ ह	ती ऽ ऽ ऽ	अ रे ऽ भ	ला ऽ ऽ का
३	×	२	०
म नि ध - ध	नि ध नि प -	म प - नि ध	सां - - सां
हु को ऽ धी	ट ऽ नु ऽ	वा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ठा
३	×	२	०
गं सां - सां	सां ध - नि प	- - नि नि	सां - - सां
ऽ ड ऽ र	हे ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ भ	ला ऽ ऽ अ
३	×	२	०
सां सां ध नि प	ध - म -	ग म (म) -	ग रे सा सा
खि यां ऽ लु	मा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ये ऽ ऽ, ये ।
३	×	२	०

सरपरदा—एकताल ( मध्यलय ) .

स्थायी.

नि  
सा  
रै

—	रे	ग	म	घ	(प)	—	प	(प)	—	म	ग
S	न	मैं	तो	जा	गी	S	पि	या	S	के	उ
३		४		×		०		१		०	
मग	मरे	ग	म	प	मग	मग	मरे	मसा	रे	सा	सा
माS	SS	ये	S	सि	गS	रीS	SS	SS	S	S	,रै
३		४		×		०		१		०	

अन्तरा.

सां	नि	घ	सां	सां	सां	—	सां	—	नि	रें	गं (सां)
वे	S	तो	व	से	S	सौ	S	त	न	ढिं	ग
३		४		×		०		१		०	
सां	—	धनि	प	घ	ग	—	प	—	मप	नि	नि
ना	S	सS	र	मे	री	S	आं	S	SS	ख	न
३		४		×		०		१		०	
सां	रें	सां	—	सांरें	सांनि	धप	मग	मप	मग	रेसा	सा
ला	S	गी	S	रीS	SS	SS	SS	SS	SS	SS	,रै।
३		४		×		०		१		०	





ध	प	म	ग	ग	रे	म	पम	(प)	मग,	मग	(म)ग	रे	सा,	रे
लो	नी	५	५	५	५	सु५	र	त५	स५	हा५	५	ता,	रं	
३			४			५		०		२		०		

## अन्तरा.

म	पप	पप	सांनि	सां	धनि	प	ध	प	म	ग	म	रे	सा	
सुध	बुध	सय	५	बि५	स	रा	५	ई	५	मो	री	०		
३		४		५		०		२						
नि	सा	रे	सा	सा	प	—	—	सा	सा	रे	सा,	रे		
नि	त	उ	ठ	आ	५	५	५	५	५	ई,	रं।	०		
३		४		५		०		२						

सरपरदा—एकताल ( विलम्बित ).

स्थायी.

म	रे	म	ग	ग	रे	म	प	प	मप	पम	सारे		
ग	ग	ग,मरे	गम	म(म)ग	सा,गम	प	प	मप	पम	सां५	नज		
रां	रो	मे,५५	लो५	दी५जो	५५,हो५	दी	जो	५५	सां५				
३		४		५	०	२		०					
ध	म	गम	ग	प(प)	म	ग	मगमग	मरेगसा	रे	सा,सारे			
प	ली	या५	५	म्हा	ने	ही	५	हो५५५	५५५५	५	जी,नज।		
३		४		५		०		२		०			

## अन्तरा.

पप प,य	सां	सां	पपध	रे	म		
ध	सां	धनि प	धधग,म	ग	पम	ग	रे
छंछं द,प	गा	धां	रा	महा	ने	भा	५
३	४	५	०	२	०	०	
सा नि	नि	सा					
सा नि	सारं सासा	प (प)	म ग	मगमग मरेगसा	रे	सा,सारे	
वे	इत नी	र ज	सु न	ली	जो	जी,नज	
३	४	५	०	२	०	०	

तराना ( राग मिश्र ) - तीव्रा ( मध्यलय ).  
स्थायी.

सा  
नि सा  
दा नि

रे - रे	म रे	म रे	प	म रे सा	सा	सा	रे प
तो ५ म्ता	नो ५	म्ता	ना	ना ना ना	ता	ना	दे रे
५	३	३	५	५	५	५	३
प म रे	म -	रे सा	रे - सा	नि सा	म रे		
ना ५ ५	तो ५	म्ता ५	दा ५ नि	ता ना	दे रे		
५	३	३	५	५	५	५	३
म प -	प -	प म	नि प -	प म	रे म		
ना ५ ५	दा ५	नी ५	य ला ५	ली ५	या ५		
५	३	३	५	५	५	५	३
प म रे	म रे	म प	निप	नि सां नि	प म	रे सा	
५ ५ ५	ली ५	य ५	ला ५ ५	य ५	ला ले		
५	३	३	५	५	५	५	३

रे नि सा	रे -	म रे प	म रे सा
तो ऽ म्ता	नो ऽ	म्ता ना	ना ना ना
१	२	३	४

इत्यादि.

अन्तरा.

प	म	म	प	प ध	सा	सा	नि	नि	प	नि	-	सां	नि	सां	सां -	
दी	ऽ	म्दा	रा	दा	रा	ऽ	दी	ऽ	म्दा	रा	दा	रा	ऽ	दा	रा	ऽ
१		२		३		४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
सां	सां	सां	सां	रें	रें	-	सां	रें	-	सां	-	सां	-	नि	प	नि
दी	ऽ	म्दी	ऽ	म्दी	ऽ	म्दी	ऽ	म्दी	ऽ	म्दी	ऽ	म्दी	ऽ	म्तो	ऽ	म्त
१		२		३		४		५		६		७		८		९
सां	सां	रें	-	सां	-	-	म	रे	म	म	म	प	-	म	प	-
ना	द्रे	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ता	ना	दे	रे	ना	ऽ	ऽ	ना	ऽ	ऽ
१		२		३		४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
म	-	प	-	नि	प	-	प	म	रे	म	प	म	-	प	म	-
दा	ऽ	नी	ऽ	य	ला	ऽ	ली	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
१		२		३		४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
म	रे	म	प	नि	प	नि	सां	-	सां	-	सां	नि	सां	नि	सां	नि
१		२		३		४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
ली	ऽ	ये	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ये	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ला	ऽ	ऽ
१		२		३		४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
प	म	रे	सा	रे	-	सा	रे	-	रे	प	रे	रे	सा	रे	रे	सा
१		२		३		४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
ला	ऽ	ला	ले	तो	ऽ	म्ता	नो	ऽ	म्ता	ना	ना	ना	ना	ना	ना	ना
१		२		३		४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४

## राग लच्छासाख.

रागो लच्छासागो विलावल्युद्धवोऽस्ति निद्वन्द्वः ।

वादी धैवत एवहि संवादी भवति चात्र गांधारः ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥२२॥

पमौ गरी पमौ गधौ निसौ निधौ पमौ गमौ ।

रिसौ लच्छाद्यशाखास्यात्प्राह्वे धैवतवादिनी ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥३६॥

राग विलावल में जब संमाजहि मिलि जाय ।

धम वादी संवादिते लच्छासाग कहाय ॥

राग चन्द्रिकासार ॥२१॥

लच्छासाख राग, विलावल धाट से उत्पन्न होता है। यह विलावल अङ्ग का होने से प्रातर्गेय राग है। यह राग सम्पूर्ण है और इसमें दोनों निषादों का प्रयोग होता है। इसका वादी धैवत और संवादी गांधार है, तथा विलावल अङ्ग अवरोह में व्यक्त होता है। 'धम' सङ्गति राग वाचक है। क्वचित् 'सां' स्वर सङ्गति का भी उपयोग होता है। इस राग में भिमोटी का अंश होता है। यह धात मार्मिक श्रोताओं के ध्यान में तत्काल आ जाती है। गांधार के विशिष्ट प्रयोग के कारण गौडसारङ्ग की छाया भी इस राग पर पड़ती है, परन्तु इन दोनों रागों में विलावल अङ्ग विलकुल ही नहीं होता। लच्छासाख के लिये यह अङ्ग अत्यावश्यक है। विलावल के सब भेद एक दूसरे से अलग करना कठिन होता है। प्रचार पर लक्ष्य देकर अपना मत ठहराना ही सरल मार्ग है।



उठाव.

प, मग, रेप, मग, धनिसां, निध, प, मग, मरे, सा ।

चलन.

प, मग, म, पमग, मरेसा, सारेग, म, निधप, मग, म,  
रेसा । सां, निध, प, मगमरे, सा, साम, ग, पप, धनिधप, मग ।

---

## लच्छासाख-त्रिताल ( मध्यलय )

स्थायी.

म	ग	म	ग	सा
प - प -	ग म - प	म - ग ग	सा - ग म	
ल ऽ च्छा ऽ	सा ऽ ख	सुं ऽ द र	ए ऽ ऽ ऽ	
×	२	०	३	
प - प -	ग म - प	म - ग ग	म म ग ग	
ल ऽ च्छा ऽ	सा ऽ ख	सुं ऽ द र	सु ख क र	
×	२	०	३	
म ग रे सा	- रे सा सा	सा - रे -	ग ग म -	
क ह त रा	ग गु नि	वे ऽ ला ऽ	व ल के ऽ	
×	२	०	३	
मनि धनि ध प	म ग म -	प प म ग	रे सा नि सा	
सु ऽ स ऽ र ल	ठा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ठ	
×	२	०	३	
मनि धनि ध रे	रे रे ग -	म - ग रे	सा रे सा सा	
प्र ऽ थ ऽ म प्र	ह र को ऽ	गा ऽ व त	सुं ऽ द र ।	
×	२	०	३	

अन्तरा.

म	ग	म	प	ध	नि सां नि सां	सां - सां सां	सां
ग म प ध	नि सां नि सां	सां - सां सां	ध धनि प -				
ए ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	सु ऽ ध्व सु	र न ऽ सों ऽ				
०	३	×	२				
म	म	प	म	ग	ग - म -	ग - रे ग	
म प - प	म प म ग	ग - म -	ग - रे ग				
कि यो ऽ सु	पू ऽ र न	वा ऽ दि ऽ	धै ऽ व त				
०	३	×	२				

ग	प	म	ग	रे	सा	रे	सा	-	सा	-	सा	सा	सा	-	सा	सा
०	द्र	ढ	त	र	क	र	के	५	अं	५	ग	वि	ला	५	व	ल
					३				५				२			
ग	रे	-	ग	ग	म	म	प	-	नि	-	नि	नि	सां	-	रें	-
०	रा	५	ख	त	सु	ध	मु	५	द्रा	५	सु	ध	वा	५	नी	५
					३				५				२			
गं	गं	गं	गं	मं	-	पं	पं									
०	च	तु	र	गु	नी	५	स	व	मं	गं	रें	मं	गं	रें	सां	सां
					३				५				२			
सां	नि	ध	प	म	ग	रे	सा	।								
०					३											

लच्छासाख-भपताल ( मध्यलय )

स्थायी.

									म	ग	स	सा
म	नि	ध	प	म	ग	रे	ग	-	रे			
हे	ली	यां	५	५	गा	५	५	५	वो			
०		३			५		२					
ग	-	ग	म	ग	प	-	सां	सां	नि	नि	नि	
रि	५	भा	५	वो	आ	५	ज	तु	म			
०		३			५		२					







नि		रें				नि	
सां	गं	गं	—	मं	गं	रें	सां
मं	५	ग	५	ल	गा	५	वो
×		२			०	३	हु
सां	—	सां	ध	प	ध	म	गम
से	५	नी	५	५	व	न	रेग,
×		२			०		—
प	—	प					
आ	५	ज					
×		३					

लच्छासाख—मध्यलय ( त्रिताल ).

स्थायी.

सा		ग				ग			
प	—	प	—	ग	म	—	प	म	—
शं	५	भू	५	५	श्या	५	म	सुं	५
×				२				०	३
रे	ग								
म	म	रे	सा	—	सा	सा	सा	सा	—
क	र	न	हा	५	र	सु	ख	दा	५
×				२				०	३
म	ध							म	म
नि	नि	ध	प	म	ग	म	—	प	प
सु	ध	बु	ध	दा	५	ता	५	५	५
×				२				०	३
सा	ध	ध						रे	
नि	नि	नि	ध	रे	—	रे	ग	म	प
स	क	ल	५	से	५	टि	को	५	च
×					२				०



ग	म रे	—	ग	रे	सा	सा	—	सा	म	—	ग
मू०	५	५	र	५	ख	सां	५	भ	भो	५	र
		३		४		×		०		२	रे
प	प	प	नि	ध	ध	प	ग	ग	प	ग	ग
क	र	त	ज	५	न्म	जा	५	त	ते	५	रो।
०		३		४		×		०		२	

## अन्तरा.

प	प	नि	ध	सां	सां	सां	सां	सां	सां	—	सां
भ	व	वा	५	रि	धि	अ	ति	गँ	भी	५	र
×		०		२		०		३		४	नि
सां	—	सां	सां	सां	रें	सां	—	सां	सां	ध	प
हु	५	स्त	र	त	र	वे	५	को	रा	५	म
×		०		२		०		३		४	
म	म	नि	ध	—	ध	नि	प	सां	सां	—	
सु	ख	५	धा	५	म	चे	५	त	तु	५	५।
×		०		२		०		३		४	
रें	सां	सां	नि	ग	ग						
अ	व	हि	ध	म	रो						
×		०	प	वे							
			स	२							



## लच्छासाख-भंषा (मध्यलय).

## स्वायी.

सा	—	ग	रे	ग	म	—	म	प	प
प्र	ऽ	ध	ऽ	म	ता	ऽ	र	सु	र
०		३			×		२		
प	—	म	—	—	म	ध	ध	—	नि
ग	ऽ	धे	ऽ	ऽ	सो	ऽ	ही	ऽ	गु
सा		३			×		२		
नि	प	म	—	—	ग	म	ग	रे	ग
ध	ऽ	जो	ऽ	ऽ	सु	ध	सू	ऽ	द्रा
नी		३			×		२		
०					म		प		
म	ग	रे	सा	—	प	प	ग	—	म
वा	ऽ	नी	ऽ	ऽ	सु	ध	गा	ऽ	वे ।
०		३			×		२		

## अन्तरा.

म	ग	म	म	म	प	—	म	—	प
द्रु	त	म	ध	वि	लं	ऽ	वि	ऽ	त
०		३			×		२		
प	सां	म	म	प	म	—	म	ग	—
सां	र	ल	य	दि	खा	ऽ	वे	ऽ	ऽ
क		३			×		२		
०							प		
म	म	प	—	प	प	प	सां	—	सां
स	स	सू	ऽ	र	ति	न	ग्रा	ऽ	म
०		३			×		२		

म	म	प	—	घ	म	म	म	ग	—
ए	क	ई	५	स	सु	र	छ	ना	५
		२			५		२		
नि	नि	नि	धप	घ	प	घ	नि	सां	—
वा	इ	स	५५	सु	रु	ति	की	५	५
		३			५		२		
म	—	प	प	घ	ग	पम	म	ग	—
सा	५	ध	न	क	रा	५५	वे	५	५
		३			५		२		

## राग शुक्लविलावल.

सगौ गमौ मपौ धश्च निधौ पमौ गमौ रिसौ ।

शुक्लवेलावली मांशा प्रातर्गीता शुभप्रदा ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ ३० ॥

शुक्लविलावल कहत है सम संवादी वाद ।

ठाठ विलावल में जब उतरत दोउ निखाद ॥

रागचंद्रिकासार ॥ १४ ॥

मेले वेलावलीये प्रभवति रुचिरा शुक्लवेलावली यत्प्रारोहे  
दुर्बलो रिः क्वचिदपि च मृदुः स्यान्निषादोऽवरोहे ॥

वादित्वं मध्यमे स्यात्तदनुभवति संवादिता षड्ज एव  
प्राह्वे गानं प्रदिष्टं सुनिपुणमतिभिर्मध्यमे न्यास इष्टः ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ १५ ॥

शुक्लविलावल, विलावल थाट से उत्पन्न होता है। यह भी विलावल का एक भेद है। इसका गायन समय प्रातःकाल है। मध्यम वादी और षड्ज संवादी है। आरोह में रिषभ दुर्बल होता है। मध्यम पर न्यास होता है। 'रेप' की स्वर संगति रागवाचक है, अवरोह में 'निग' और 'धम' स्वर संगति मनोरंजक होती हैं। उत्तरांग प्रधान राग होने के कारण अवरोह में वैचित्र्य होता है। मध्यम पर न्यास करने से इसका रूप विशेष स्पष्ट होता है। अवरोह में धैवत की संगति में कोमल निषाद का किंचित् स्पर्श सुन्दर दिखाई देता है। मर्मज्ञों का मत है कि विलावल और केदार राग के मिश्रण से यह राग उत्पन्न होता है।

उठाव.

साग, गम, मप, धनिधप, मग, मरे, सा ।

चलन.

सा, ग, गम, मपम, रेप, मपधनि, ग, गम, मपमग, मरे, सा ।

सा, सा, <sup>म</sup>रेन, म, मप, प, मग, म, मरे, प, प, <sup>सां</sup>धसां, गम, प,  
 मग, मरे, सा, निग, म, सां, निध, नि धध मग, मरे, सा, रेग-  
 मपधनि, ग, म, रे, सा ।



शुक्लविलावल-भपताल ( मध्यलय ).

स्थायी.

ग		म	—	म	ध	प	म	प	म
म	ग	ला	ऽ	नि	ला	ऽ	व	ऽ	ल
शु	क	२		वि	०		३		
×				नि	३		रे		
म		ग	—	सा	सा	ग	ग	म	—
प	म	भा	ऽ	ऊं	मैं	ऽ	स	खी	ऽ
स	म	३		•	•		३		
×							सां		
ग	—	म	ग	म	प	ध	नि	सां	सां
म	ऽ	क	र	भु	प	न	मे	ऽ	ल
शं		२			•		३		
×					ध		सां		
नि	नि	ध	—	म	प	ध	नि	सां	म
सां	मि	ला	ऽ	ऊँ	मैं	ऽ	स	खी	ऽ।
को		२			•		३		
×									
म									
ग	ग								
शु	क								
×									

अन्तरा.

सां	सां	सां	—	ध	सां	सां	सां	—	सां
नि	नि	नि	ऽ	नि	सां	सां	रु	ऽ	प
सं	पु	र	२	न	ध	र	३		
×		२			•				
नि	गं	रें	गं	मं	गं	रें	सां	—	सां
सां	ऽ	३			•				
म		व्य	म	क	रुं	ऽ	वा	ऽ	दि
×		२			•		३		



## अन्तरा.

सां	सां	सां	ध	नि	सां	—	सां	सां	सां
नि	नि	नि	५	पि	या	५	बि	न	सि
स	गु	न	२		०		३		
×		२			सां		सां		
रें	रें	गं	रें	(सां)	नि	सां	ध	नि	प
सां									
गा	र	आ	भ	र	त	ज	दी	५	यो
×		२			०		३		
म		ध							
प	ध	ग	—	म	प	ध	नि	सां	सां
हे	५	र	५	त	हं	५	म	ग	५
×		२			०		३		
नि									
सां	नि	ध	—	म	प	ध	नि	सां	म
त	क	ती	५	ख	ड़ी	५	द	ई	५।
×		२			०		३		

शुक्लविलावल-तिलवाड़ा ( विलम्बित ).

## स्थायी.

ग	रे	म	ग	म
रेगमग	रेसानिसा	सासा	रे म — मम	म — ग प —
तू५५५	५५५५	५ हितो	पा ५ ५ लन	हा ५५ ५ ५
३			५	२
ग	म	रे	प	— मप प —
				सां — निसां —
दा ५ ५ ५	५ ५ ५	५ ५ ५	ता ५	मे ५ ५ ५
१			५	२

नि	रे	सा	ग	ग	मप	नि	नि	ध	ध	निम	ग	प	ग	म	प	मग	म	ग	रे	सा
मो	५	५	पर			क	र	५५	म			क	५	५	५५		५	५	५	रो।
३						×						२					०			

## अन्तरा.

म	प	सां	सां	सां	रें	सां	नि	रें	सां	गं	गं	मं	गं	रें	सां	ध	निप
ते	५	रे	५हि	ना	५	म की	सु	मि	र	नि	ज	५	प	त	५५		
३				×			२				०						
म	ग	रे	सा	नि	रे	सा	ग	म	प	सां	सां	ग	रे	ग	म		
हं	५	५	५	मो	५५	री	५	ई	५	छा	५	स	५	५५५	ब		
३				×			२				०						
ग	म	प	ध	नि	नि	ग	रे	ग	म	प	म	ग	म	ग	रे	नि	सा
पू	५	५	५	५	५	५५५	न	क	५	५	५	५	५	रो	५५		
३				×			२				०						

शुक्रविलावल-तिलवाड़ा ( विलम्बित ).

## स्थायी.

म	रे	म	म	ग	म	म	ग	प	म	प	म	ग	म	प	म	ग
मै	५५५	५५५५	५	नि	हा	५	रे	५५	दे	५५	५	५	५	५	खो	५
३				×			२						०			
म	रे	रे	प	म	प	सां	नि	सां	ग	ग	म	प	ग	ग	म	प
सा	५	५	हा	५	५	क	५	ब	५	५५	५	५	५	५	र	५
३				×			२					०				



( अथवा )

ग म - रे रे	प - म प -	प सां - निसां -	ग ग म म -
सा ऽ ऽ हा	ऽ ऽ अ क ऽ	व ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ र ऽ
रे म सासा गग म पप	निनि धध - नि ग ग	म ग म प मग	ग म रे सा -
जग पर रो शन	जमी ऽ ऽ र	दी ऽ ऽ ऽ	दा ऽ र ऽ ।

अन्तरा.

प - सां -	सां सां सां -	नि गं रें सां रें गं मंगं	मं सां धनि प
तू ऽ ही ऽ	ध र नी ऽ	तू ऽ ऽ मऽ	ही ऽ पऽ र
ग म म ग रे सा	म रे ग ग म -	म प प - सां -	नि सां ग म गम
क ऽ ऽ र	रा ऽ खो ऽ	सां ऽ चो ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
ग म प ध नि	सां ग म म	ग म प म ग	म रे सा -
क ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ल्य	त ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ र ऽ ।

शुक्रविलावल-भूपताल ( मध्यलय ).

स्थायी.

सा	सा	सा रे ग	म	-	प	प	प
ध	र	मी ऽ न	में	ऽ	ये	म	र
x		२	०		३		

ग	प	ग	म	रे	रे	प	गम	गरे	ग
जा	ऽ	द	में	ऽ	रा	ऽ	मऽ	चंऽ	द्र
×		२			०		३		
सा	सा	ग	ग	म	प	—	प	नि	नि
र	सि	क	में	ऽ	कु	ऽ	प्रा	औ	र
×		२			०		३		
सां	—	धम	प	ध	ग	पम	ग	गरे	ग
ते	ऽ	जऽ	में	ऽ	न	रऽ	ह	रीऽ	ऽ ।
×		२			०		३		

## अन्तरा.

प	प	प	नि	—	सां	सां	सां	सां	सां
क	ठि	न	में	ऽ	क	म	ठ	ब	ल
×		२			०		३		
गरें	मं	मं	गं	रें	सां	नि	नि	रें	सां
विऽ	पु	ल	में	ये	बा	ऽ	रा	ऽ	ह
×		३			०		३		
धप	प	प	ग	म	प	—	नि	—	नि
बऽ	लि	न	में	ऽ	वा	ऽ	म	ऽ	न
×		२			०		३		
सां	—	धम	प	ध	ग	पम	म	गरे	ग
दे	ऽ	हऽ	ऽ	वि	क्र	मऽ	ध	रीऽ	ऽ
×		२			०		३		

## संचारी.

पप गिरि ×	प न	नि में १	— ऽ	सां क ०	रेंसां नऽ ०	सां क	ध गि ३	प रि	ध उ
ग द ×	म धि	रे न १	प में १	— ऽ	धप छीऽ ०	ध ऽ	म र ३	ग नि	रेग धिऽ
सा स ×	सा र	सा न १	रे में १	ग ऽ	म मा ०	— ऽ	प न ३	प स	प र
ध न ×	प दि	म न १	रे में १	प ऽ	ध सु ०	ग र	पमप सऽऽ ३	गरे तीऽ	ग ऽ ।

## आभोग.

प ख ×	प ग	प न १	नि में १	— ऽ	सां ग ०	सां रु	सां र ३	— ऽ	— ऽ
सां हु ×	गुरें मऽ	गं न १	मं में १	गं ऽ	रें क ०	निसां ऽऽ	धनि ल्पऽ ३	रें त	सां रु
ध क ×	प पि	म न १	ग में १	म ऽ	प ह ०	प नु	नि मा ३	सां ऽ	सां न

रेसां पुऽ x	सां	धप नऽ २	प में ऽ	ध ऽ	ग अ ०	पम वऽ	ग ध ३	रे पु	ग रि।
-------------------	-----	---------------	---------------	--------	-------------	----------	-------------	----------	----------

शुक्लविलावल-भमताल ( मध्यलय ) .

स्थायी.

सा सु x	सा	रे ध २	रे री ऽ	-	रे सु ०	ग भ	सा दि ३	रे ऽ	सा न
रे छ x	ग	म ऽ	-	प ध ०	प ध ०	म रि	ग मा ३	रे ऽ	ग ई
म सु x	म भ	ग आ २	म ऽ	रे ज ०	प पं ०	- ऽ	नि डि ३	ध ऽ	सां त
सां ल x	सां ग	प न २	- ऽ	ध ध ०	प रो ०	म रि	ग मा ३	रे ऽ	ग ई।

अन्तरा.

प व x	प न	प नि २	ध ऽ	सां व	सां नी ०	- ऽ	सां ते ३	- ऽ	सां रो
-------------	--------	--------------	--------	----------	----------------	--------	----------------	--------	-----------



सां	नि	ध	ध	नि	रें	सां	-	ध	नि	प
ध	ध	ध	ज	ऽ	ग	जी	ऽ	वो	ऽ	ऽ
चि	र	२	म			०		३		
×								म		
म	-	ग	म	रे	ग	प	प	नि	ध	नि
जौ	ऽ	लों	ऽ	र	हे	ऽ	दि	व	स	
×		२			०		३			
ध	प	प	-	म	म	-	ग	रे	ग	
चं	ऽ	द्र	ऽ	दि	वा	ऽ	क	ऽ	र।	
×		२			०		३			

शुक्लविलावल-चौताल ( विलम्बित ) .

स्थायी.

-	नि	-	सा	रे	म	म	ग	म	मग	प	म	ग
ऽ	सा	ऽ	जा	रा	ऽ	म	नि	रं	ऽ	ऽ	ज	न
३		४		×		०		२			०	
मरे	मरे	प	प	ध	मग	मरे	मरे	प	प	सां	-	
SS	हिं	ऽ	द	प	ते	SS	सू	ऽ	ल	ता	ऽ	
३		४		×		०		२		०		
नि	धनि	प	-	ग	ग	मरे	ग	म	प	प	मग	
ध	न	के	ऽ	क	र	SS	ता	ऽ	र	स	क	ऽ
३		४		×		०		२		०		
मरे	सा	रे	सा	रे	ग	म	प	ध	नि	म	ग	
ल	स्र	ऽ	ष्टि	भ	र	न	पो	प	न	ये	ऽ।	
३		४		×		०		२		०		

## अन्तरा.

प	प	प	सां	-	सां	सां	-	रें	रें	नि	सां	सां
अ	ति	प्र	वी	५	न	वी	५	र	भा	५	न	न
५		०		२		०		३		४		
नि	गंरें	गं	मं	रें	सां	सां	सां	नि	ध	नि	सां	सां
सां	SS	द	न	अ	ति	ज	ग	वं	५	द	न	न
५		०		२		०		३		४		
नि	सां	ध	नि	प	म	ग	ग	म	ग	रे	सा	सा
सां	रि	५	द्र	ह	र	न	शु	भ	क	र	न	न
५		०		२		०		३		४		
नि	सा	सां	नि	नि	सां	सां	सां	रें	रें	नि	सां	सां
सा	हा	५	ज्ञा	५	नि	गु	ण	नि	धा	५	न	न
५		०		२		०		३		४		
नि	ग	-	म	प	ध	नि	म	ग	सा			
सां	र	५	दु	ख	न	५	ये	५।	,रा			
५		०		२		०		३				

शुक्लविलावल-चौताल ( विलम्बित ).

स्थायी.

म	ग	सा	ग	म	म
भ	र	न	जो	५	ग
०		३		४	

म	—	म	म	म	रे	प	प	—	म	ग	ग	म
३	५	ज	ल	ज	मु	ना	५	त	ट	प	न	
×		०		२		०		३		४		
प	ध	ध	सां	नि	ध	प	ध	म	ग	ग	रे	
घ	ट	न	ट	ना	५	ग	र	को	प्र	ग	५	५
×		०		२		०		३		४		
सा,	ग	म	प	ध	म							
ट,	द	र	स	भ	यो।							
×		०		२								

## अन्तरा.

प	प	सां	सां	सां	सां	सां	—	रे	नि	सां	सां	
मु	क	ट	मु	र	ली	सी	५	स	फू	५	ल	
×		०		२		०		३		४		
सां	गं	गं	गं	मं	रें	सां	सां	सां	सां	ध	नि	प
अ	व	न	कुं	ड	ल	छ	वि	दि	खा	५	य	
×		०		२		०		३		४		
प	ग	म	ग	रे	सा	सा	ग	म	प	ध	नि	
आ	५	लि	मे	५	रो	म	न	५	ह	५	र	
×		०		२		०		३		४		
नि	—	म	प	ध	म	म	ग	सा				
ग	५	५	नो	५	५।	भ	र	न				
लो	५	५		२		०		३				
×		०		२		०		३				

## राग ककुभ.

सगौ गमौ पमौ गरी गमौ पधौ सधौ पमौ ।  
पमौ गमौ रिसौ नित्यं ककुभा मांशिका प्रगे ॥

अपिच

रिगौ मगौ मरी सरी सनी धपौ मपौ धमौ ।  
गमौ रिसाविति प्रौचुः ककुभारूपकं परे ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥३४॥

बेलावल्याः प्रभेदः ककुभ इति मतो मान्यतीव्रस्वराढ्यः ।  
संवादी चर्षभोऽस्मिन् विलसति नितरां पंचमो वादिपीठे ॥  
संमिश्रो जैजवंत्याभवदिति सुधियो यद्वदंति ध्रुवं तद् ।  
गायंति प्रातरेव प्रतिदिवसममुं गानशास्त्रप्रवीणाः ॥  
रागकल्पद्रुमांकुरे ॥२३॥

राग बिलावल में जबै जयजयवन्ती होय ।  
रिप संवादी वादिते ककुभ निखादै दोय ॥

राग चन्द्रिकासार ॥२२॥

कुकुभ बिलावल, बिलावल थाट से निकलता है। यह प्रभात-काल में गाया जाता है। इसमें वादी स्वर मध्यम और संवादी पड़ज है। बिलावल के समान इसमें सम्पूर्ण अवरोह सुन्दर दिखाई देता है। बिलावल के समान इसमें भी दोनों निषादों का प्रयोग होता है। इसमें 'सा प' और 'सा म' स्वर सङ्गति महत्व की होती हैं। कुछ लोग अल्हैया और किमोटी का योग कर इस राग को गाते हैं और कोई जैजवन्ती और अल्हैया के मिश्रण से इसे गाते हैं।



कुकुभ-भपताल ( विलम्बित )

स्थायी.

नि	प	प	—	ध	प	म	गरे	ग	सा
सा	५	ओ	५	स	हे	लि	यां	५	५
गा	५	१					१		
गरे	—	—	ग	ग	ग	ग	रे	सा	—
आ	५	५	५	ज	कु	कु	भ	को	५
नि	सा	१			०		१		
सा	प	प	—	ध	प	म	ग	रे	गसा
पि	यु	को	५	रि	भा	५	ओ	५	५५
म		१			०		१		
रे	—	—	—	ग	ग	ग	रे	सा	—
आ	५	५	५	ज	च	तु	र	को	५
५		१			०		१		

अन्तरा.

म	प	नि	ध	सां	—	सां	—	सां
प	ल	वा	लि	को	ऽ	रू	ऽ	प
बि	नि	सां	—	सां	सां	सां	नि	प
५	ध	खो	ज	त	न	क	ऽ	र
नि	ऽ	ग	म	ग	प	नि	नि	रें
ध	प	वं	ति	को	ऽ	मृ	दु	ग
रा	ग							
५	य							
प								
ग								
ज								
५								

सां	-	सां	प	ध	नि	ध	ध	म	गरे	ग	सा
टा	S	रे	S	स	हे	लि	यां	S	S	S	
ग		२			०		३				
रे	-	-	ग	ग	ग	म	ग	रे	सा	-	
आ	S	S	S	ज	कु	कु	म	को	S	।	
५		२			०		३				

कुकुभ—भपताल ( मध्यलय ) .

स्थायी.

नि	प	म	प	-	ध	प	म	गरे	ग	सा
सा	प	प	रे	S	मि	ल	न	दा	S	S
ते	S	२			०			३		
ग			रे		ग	ग	म	ग	रे	सा
रे	-	-	ग	ग	म	ग	रे	सा	-	
चा	S	S	S	वे	सैं	यो	मैं	नूं	S	
५		२			०		३			
नि	प	म	प	-	ध	प	म	गरे	ग	सा
सा	प	प	वे	S	लो	नी	S	दा	S	S
आ	S	२			०			३		
ग			रे		ग	ग	म	ग	रे	सा
रे	-	-	ग	ग	म	ग	रे	सा	-	
चा	S	S	S	वे	सैं	यो	मैं	नूं	S	।
५		२			०		३			

प्रकार १

साग, म, निधप, मप, गम, सा, ग, गम, धनिसां,  
सांधनिप, धम, ग, सा, ग, म ।

प्रकार २

रे, रे, गमगरे, सा, निसारे, सा, ध, निप, मम,  
मप, धमप, सां, ध, प, धमग, मरे, सा ।

## कुकुभ-सूलताल ( मध्यलय ).

स्थायी.

सा		प		म	ग	रे	रे	सा	सा
प	-	प	-	म	ग	रे	रे	सा	सा
गा	५	बो	५	गु	नि	ज	न	स	व
x		०		२		३		०	
ग		ग		म		प		-	-
रे	-	ग	-	म		प		-	-
म	५	हा	५	दे	५	वा	५	५	५
x		०		२		३		०	
ग		रे				प		प	ग
म	म	ग	ग	म	प	म	प	म	ग
शि	व	शं	५	क	र	भो	५	ला	५।
x		०		२		३		०	

अन्तरा.

म		नि	ध नि	सां	सां	सां	सां	-	सां
प	-	नि	नि	सां	सां	सां	सां	-	सां
वे	५	ला	५	व	ल	प्र	मे	५	द
x		०		२		३		०	
सां		नि	सां	रें	सां	सां	नि	प	प
ध	नि	सां	रें	सां	-	ध	नि	प	प
कु	५	कु	भ	ना	५	म	सु	ल	भ
x		०		२		३		०	
म		प		म	ग	रे		सा	सा
ग	म	प	-	म	ग	रे		सा	सा
सा	५	धो	५	शु	५	द्ध	५	स्व	र
x		०		२		३		०	
ग		ग		म		प		-	-
रे	-	ग	-	म		प		-	-
म	५	हा	५	दे	५	वा	५	५	५।
x		०		२		३		०	



## अन्तरा.

म	प	नि	-	नि	सां	-	सां	-	सां
प	नी	सो	५	नी	सू	५	र	५	त
सो	२				०		३		
नि	सां	सां	-	रें	सां	सां	सां	नि	प
सां	ध						ध		
म	न	पा	५	र	व	स	री	५	५
×		०			०		३		
म	प	ग	म	रे	ग	प	सां	-	रें
प	-						ध		
मे	५	रो	५	री	त	प	त	५	बु
×		२			०		३		
सां	-	सां	ध	निप	ध	प	म	गरे	ग
									सा
भा	५	वे	५५	लो	नी	५	दा५	५	५
×		२			०		३		
ग	-	-	ग	रे	ग	म	ग	रे	सा
रे									-
चा	५	५	५	वे	सैं	यो	मैं	नूं	५
×		२			०		३		

कुकुभ-भापताल ( मध्यलय ).

## स्थायी.

ग	-	ग	-	ग	म	ग	ग	-	सा
रे									
का	५	को	५	भ	ज	न	बी	५	न
×		२			०		३		
नि	-	रे	रे	सा	सा	सा	सा	नि	प
सा							ध		
खो	५	व	त	उ	म	र	च	तु	र
		२			०		३		

ग		१				प		
म	-	म	-	म	प	प	ध	म
वे	ऽ	ला	ऽ	वि	त	त	तो	ऽ
×		२			०		३	
प		सां						
सां	-	ध	नि	प	ध	म	गरे	ग
पा	ऽ	छी	ऽ	न	आ	ऽ	वेऽ	ऽ
×		३					३	

## अन्तरा.

प	-	नि	-	नि	सां	सां	सां	-	सां
गा	ऽ	बो	ऽ	ह	रि	को	ना	ऽ	म
×		०			०		३		
नि									
सां	गं	गं	गं	मं	गं	रें	सां	-	सां
पू	ऽ	र	त	म	न	सु	का	ऽ	म
×		२			०		३		
सां	ध	प	ध	ग	प	-	नि	नि	सां
भा	ऽ	व	भ	ऽ	क्ती	ऽ	ते	ऽ	रि
×		३			०		३		
सां		सां			प				
रें	सां	ध	नि	प	ध	म	गरे	ग	सा
वि	र	था	ऽ	न	जा	ऽ	वेऽ	ऽ	गि ।
×		३			०		३		

## कुकुम-भूपताल ( मध्यलय ) .

## स्थायी.

ग रे	-	ग रे	ग	ग	म	ग	ग रे	-	सा
गो	५	विं	५	द	गि	रि	ध	५	र
सा		ग रे	ग	ग	म		ग रे	-	सा
नि	सा	२			प	मग	२		
ह	ल	ध	५	र	वि	प५	ध	५	र
सा	-	सा	नि	प	सा	-	सा	-	-
ना	५	म	५	ति	हा	५	रो	५	५
प	-	-	ध	म	ग	रे	ग	सा	-
का	५	५	५	५	५	५	५	न्हा	५

## अन्तरा.

म		नि	ध	नि	सां	सां	सां	-	सां
प	-	ध	नि	नि	सां	सां	सां	-	सां
मो	५	र	५	मु	कु	ट	सी	५	स
सां		२			०		२		
नि	नि	नि	-	नि	सां	सां	सां	ध	नि
मु	र	ली	५	अ	ध	र	गुं	५	ज
प		२			०		२		
ध	-	ग	म	-	प	-	सां	ध	नि
ग्वा	५	ल	५	५	मा	५	ख	५	न

सां	-	ध	नि	प	ध	म	ग	रे	सा
मां	ऽ	ग	ऽ	त	दा	ऽ	ऽ	ऽ	न।
×		२			०		३		

कुकुभ-सूलताल ( मध्यलय )

स्थायी.

म	-	प	-	म	-	ग	-	रे	सा
प	ऽ	री	ऽ	शं	ऽ	भू	ऽ	ह	र
शि	×	०		२		३		०	
ग	-	ग	-	म	-	प	-	-	-
रे	ऽ	हा	ऽ	दे	ऽ	वा	ऽ	ऽ	ऽ
म	×	०		२		३		०	
ग	-	ग	रे	प	-	म	-	ग	रे
म	ऽ	त्र	ऽ	भु	ऽ	जा	ऽ	ऽ	ऽ
च	×	०		२		३		०	

अन्तरा.

प	प	नि	ध	सां	सां	-	सां	-	सां
अ	ए	सि	ध	न	व	ऽ	नी	ऽ	ध
×		०		२		३		०	
नि	नि	सां	रें	सां	सां	सां	ध	-	नि
ध	ऽ	त	स	ब	न	को	ऽ	ऽ	प
दे	×	०		२		३		०	
ग	-	म	प	म	ग	म	ग	रे	सा
रे	ऽ	त	म	हा	ऽ	ऽ	भो	ऽ	ले
हो	×	०		२		३		०	



ग	-	ग	-	म	-	प	-	-	-
रे	S	हा	S	दे	S	वा	S	S	S
म		०		२		१		०	
×									

कुकुभ-चौताल  
स्थायी.

रे	-	रे	-	ग	म	प	म	ग	रे	ग	सा
म	S	हा	S	दे	S	S	S	S	S	S	व
×		०		२		०		३		४	
रे	(पम)	प	घ	प	(मप)	म	-	ग	म	रे	सा
भो	(SS)	ला	S	च	(SS)	क्र	S	S	S	वो	तो
×		०		२		०		३		४	
रे	(पम)	प	घ	प	(मप)	म	ग	म	रे	ग	सा
शि	(SS)	री	S	शं	(SS)	भू	S	S	S	S	S।
×		०		२		०		३		४	

अन्तरा.

म	-	प	नि	नि	नि	नि	नि	-	सां	निसां	सां
जै	S	म	न	वि	च	क	म	S	का	(SS)	र
×		०		२		०		३		४	
नि	सां	सां	रें	सां	-	नि	घ	नि	-	प	-
तो	S	पै	S	आ	S	व	S	S	S	त	S
×		०		२		०		३		४	



म	ध	प	सां	ध	प	म	-	-
ग	र	ध	नि	मे	रू	रू	१	१
×		२	१	०	३	३		
म	-	सां	नि	ध	प	म	-	-
सां	१	२	३	४	५	६	७	८
जा	१	२	३	४	५	६	७	८
×								
ग	ध	प	सां	ध	प	म	प	म
म	१	२	३	४	५	६	७	८
डं	१	२	३	४	५	६	७	८
×								

## अन्तरा.

प	-	नि	सां	-	सां	-	-
म	१	२	३	४	५	६	७
सो	१	२	३	४	५	६	७
×							
ध	प	नि	सां	ध	प	म	-
नि	१	२	३	४	५	६	७
बि	१	२	३	४	५	६	७
×							
ग	म	सां	नि	ध	प	म	-
म	१	२	३	४	५	६	७
स	१	२	३	४	५	६	७
×							
ग	ध	प	सां	ध	प	म	प
म	१	२	३	४	५	६	७
मे	१	२	३	४	५	६	७
×							

कुकुभ-धमार ( विलम्बित ).

स्थायी.

रे	ग	सा	ग	ग	म	-	-	म	-	ग	म	ग	म	प	-
अ	व	को	उ		कै	S	S	से	S	S	S	हो	S	S	
म				म											
प	-	-	प	म	ग	मरे	रे	नि		ध	प	म	प	-	
री	S	S	खे	ल	त	SS	वा	S		र	वा	S	र	S	
म	-	ग	-	ग	ग	-	म	रे		गम	प	म	ग	-	
मो	S	पै	S	रं	ग	S	S	S		छि	S	र	क	त	S
रे	ग	सा	ग	ग											
अ	व	को	उ												

अन्तरा.

ध	प	प	नि	नि	सां	सां	-	नि	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां
य	ह	अ	च		र	ज	S	S	S	दि	न	चा	S	S	
सां															
नि	-	ध	नि	सां	-	-	सां	ध	नि	प	ग	म	ध		
र	S	S	स	खी	S	S	री	S	S	S	मि	न	S		
नि	नि	नि													
ध	ध	ध	-	सां	सां	-	ध	नि	प	-	नि	ध	म		
मि	न	पा	S	प	र	S	S	S	वे	S	ल	त	S		



म रे  
ग सा ग ग  
अ व को उ

कुकुभ-धमार  
स्थायी.

प  
नि ध प | प ग म ग सासा | रे रे सा ग ग म प | म -  
ह र न चा ऽ ल नंद रा ऽ ऽ ऽ य के ऽ  
म - सा म रे प प रे म प ध म ग म मप  
जू ऽ ऽ छ वि सौ ऽ नि क स आ य के, मन

अन्तरा.

प प - नि - ध नि - सां सां - सां सां सां ध  
ह म ऽ को ऽ दे ऽ ख के ऽ ठा ऽ हे भ  
सां - - सां ध नि प ध रें सां सां ध नि प  
ये ऽ ऽ ने ऽ क प गी ऽ या पे ऽ च ब  
प ध म रे प ध म - ग ग म मप  
ना ऽ ऽ ऽ य के, मन

## नट.

प्रख्यातो नट राग एष विलसत्तीव्रस्वरैर्मैतरैरारोहे  
परिपूर्णताऽस्य ध्रुवयोस्त्यागोऽवराहे मतः ॥

वादी दीव्यति मध्यमो लसति संवादी तु षड्जस्वरो ।  
धीमद्भिः प्रहरात्परं सुमधुरं रात्रावसौ गीयते ॥

रागकल्पद्रुमाकुरे ॥ ७४ ॥

सगमपौ गमौ रिगौ मपौ मगौ मरी च सः ।

नटाह्वयो मतो मांशो द्वितीयप्रहरे निशि ॥

अभिनवरागमंजरीम् ॥ ४३ ॥

क्रोमल मध्यम तीख सव उतरत ध्रुव न लखाइ ।

सम संवादी वादिते नट छवि देत दिखाइ ॥

रागचंद्रिकासार ॥ ७५ ॥

‘नट’ अथवा ‘नाट’ विलावल थाट से उत्पन्न होता है । इसके अवरोह में धैवत और गांधार स्वर वक्र होते हैं । आरोह सम्पूर्ण होता है । अवरोह में कहीं-कहीं कोमल निषाद का प्रयोग होता है । वादी स्वर मध्यम और संवादी षड्ज है । इसका गायन समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है । इस राग में मध्यम स्वर गांधार की संगति में खुलकर जोरदार लगता है । उदाहरण के लिये “सा, गम, म, मपम, गम” आदि । साथ ही उक्त स्वर समुदाय और “रेगमप, सारेसा” राग वाचक भी हैं ।

## उठाव.

सा, ग, म, पगम, रेगमप, मग, मरे, सा ।

## चलन.

रे  
सा, ग, गम, म, पम, ग, ग, म, प, सांधनिप, मग, रे,  
ग, मप, सारेसा ।

‘नट’ एक स्वतन्त्र राग स्वरूप है। इसका अन्य कितने ही रागों से सहज और सुन्दर योग होकर और उन रागों के मिश्र रूप निर्मित होकर प्रचार में रूढ़ होगये हैं। उदाहरणार्थः—

नट विहाग अथवा बेहाग नाट.

सा, गम, प, म, पसां, प, गमग, निप, गम, पनिसांमं,  
गं, सां, पधम, पग, नि.सा । पपनि, निसां, गंसां,

<sup>ध</sup>  
निनिप, म, पनि, प, धम, पमग, रेसा ।

कामोद नाट.

गमपगमरेसारे, ग, म(प), म, ग, म, रेसा, सा(सा), <sup>प</sup>धनिप,  
सा, मगप, धप, पसां, प(प), पग, गमपगम, रेसारे ।

केदार नाट.

सा, रेसा, म, मप, धप, म, गम, म, प, सां, धनिप,  
धपम, सारेगमप, सारेसा ।

‘नटनारायण’ नाम का एक नट का भेद और भी है, उसमें अवरोह में धैवत स्पष्ट रूप से नहीं लिया जाता और मध्यम पर नट जैसा न्यास नहीं किया जाता, आरोह में निषाद दुर्बल रहता है, बाकी सब नट जैसा ही है।

नट-भयताल ( मध्यलय ) .

स्थायी.

सा	—	ग	म	म	म	प	म	—	म
शु	ऽ	द्व	स्व	र	र	च	मे	ऽ	ल
×		२			०		३		
ग	म	प	प	प	म	ग	म	—	म
म	ऽ	ध्य	म	क	रि	प्र	धा	ऽ	न
×		२			०		३		
ग	म	प	प	—	नि	सां	धा	नि	प
ना	ऽ	ट	रा	ऽ	ध	नि	गा	ऽ	य
×		२			०		३		
रे	ग	ग	म	प	सा	रे	सा	—	सा
गु	नि	शा	ऽ	स्व	प	र	मा	ऽ	न ।
×		३			०		३		

अन्तरा.

प	—	प	सां	—	सां	—	सां	सां	—
आ	ऽ	य	का	ऽ	मो	ऽ	द	खं	ऽ
×		२			०		३		
सां	गं	गं	—	मं	रें	—	सां	—	सां
अ	लि	या	ऽ	मि	ले	ऽ	आ	ऽ	य
×		२			०		३		
प	सां	नि	सां	रें	सां	सां	सां	नि	प
ध	ध	व	र	ज	अ	व	रो	ऽ	ह
×	ग	३			०		३		





नि	गं	रें	मं	रें	सां	सां	सां	नि	प
सां	दि	त	चे	ऽ	त	सु	फा	ऽ	ग
सु		२			०		३		
×									
प	प	रें	रें	सां	रें	सां	सां	नि	प
च	हं	ऽ	दि	स	मि	ल	गो	ऽ	प
×		२			०		३		
म	ग	रे	ग	म	ग	म	म	रे	सा
रे									
वा	ऽ	ल	विं	द	टो	ऽ	ऽ	ल	ना।
×		२			०		३		

नटनारायण—भूपताल ( मध्यलय )

स्थायी.

सा	रे	सा	सा	प	प	—	ध	ग	म
हा	ऽ	थ	ड	म	रू	ऽ	लि	ये	ऽ
३			×	२			०		
म									
सा	रे	सा	सा	प	प	—	ध	ग	—
हा	ऽ	थ	ड	म	रू	ऽ	लि	ये	ऽ
३			×	२			०		
म	—	—	म	—	सां	—	रें	सां	—
ऽ	ऽ	ऽ	प	ऽ	च	ऽ	त	गा	ऽ
३			×	२			०		
सां	—	प	म	—	ग	म	प	म	म
ध			रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ह्ला	ऽ।
३			×	२					



## नटविलावल.

वेलावली स्यान्नटपूर्विकाऽपि श्रुतिप्रिया मध्यमवाद्यलंकृता ।  
आरोहणे यत्र नटे विभाति प्रगीयते प्रातरियं सुधीभिः ॥

रागकल्पद्रुमांशुरे ॥१७॥

सगौ मपौ मगौ मरी गमौ पमौ गमौ रिसौ ।

नटवेलावली प्रोक्ता प्रातर्गेयांशमा जने ॥

अभिनवरागमंजर्यामि ॥३५॥

चढत विलावल राग में गावत नट की तान ।

सम संवाद 'वादिते नटविलावल जान ॥

राग चन्द्रिकासार ॥१६॥

‘नटविलावल’ नट और विलावल, इन दोनों रागों के संयोग से उत्पन्न होने वाला मिश्र राग है। इसके पूर्वाङ्ग में नट का अङ्ग और उत्तराङ्ग में विलावल का अङ्ग होता है। वादी स्वर मध्यम और संवादी पङ्कज है। सा, ग, ग, म, इस तरह उठाव लेकर आगे अवरोह में विलावल जोड़ देने से यह राग स्पष्ट होता है। इसका गायन-समय दिवस का दूसरा प्रहर है। इसमें भी मध्यम स्वर सुला लगाने से राग को शोभा प्राप्त होती है।

उठाव.

सा, गम, पम, ग, म, रे, गमप, मग, मरे, सा ।

चलन

सा, ग, गम, म, मप, मग, मरे, निधप, म, पमग,  
रे, ग, मप, मग, मरेसा ।



## नटविलावल-भूपताल ( मध्यलय ) .

स्थायी.

म	ग	-	सा	म	ग	ग	म	-	म	म	-
आ	५		ज	न	व	ना	५		ग	री	५
×			२			०			३		
ग			म						रे		
म	प		प	प	-	म	ग		ग	म	ग
ला	५		ल	सों	५	म	च		र	हे	५
×			२			०			३		
ग			रे			प					
म	रे		नि	ध	प	म	-		प	म	ग
ल	लि		त	सं	५	के	५		त	व	ट
×			२			०			३		
ग			रे								
रे	ग		ग	म	प	म	ग		मरे	सारे	सा
नि	क		ट	हो	५	५	५		५५	५५	री।
×			२			०			३		

अन्तरा.

प	प	नि	नि	ध	नि	सां	-	सां	रे	सां
स	व	न	हु	म	कू	५		ज	न	व
×		२			०			३		
सां	सां	ध						सां		
नि	नि	नि	सां	सां	रें	सां		सां	ध	निप
वि	पि	न	कु	सु	मि	त		स	दा	५५
×		२			०			३		
म	म	नि	नि	नि				सां		
		ध	ध	ध	सां	-		सां	ध	निप
क	र	त	धु	न	की	५		र	को	५५
×		२			०			३		

प	प	ध	प	—	ग	ग	म	रे	सा
कि	नि	च	को	ऽ	म	ऽ	ऽ	ऽ	रि।
×	ल	२			ऽ		३		

नटविलावल—भपताल ( विलम्बित ).

स्थायी.

प	प	प	प	—	ध	प	ग	म	प
मु	कु	ट	के	ऽ	रं	ऽ	ग	न	पै
×		२			०		३		
नि	नि	नि	सां	रें	सां	ध	नि	ध	प
ध	ध	नि	सां	सां	नि	नि	सां	ध	प
इ	न्द्र	को	ऽ	ध	नु	प	वा	ऽ	रुं
×		२			०		३		
प	रे	ग	म	प	म	ग	म	ग	रे
अ	म	ल	ऽ	क	म	ल	वा	ऽ	रुं
×		२			०		३		
सा	नि	ध	पम	प	म	ग	रे	सा	रे
लो	ऽ	च	नऽ	वि	भा	ऽ	ल	प	र।
×		२			०		३		

अन्तरा.

प	प	ध	नि	सां	—	—	—	सां
कुं	ड	ल	प्र	भा	ऽ	ऽ	ऽ	पै
×		२		०		३		

सां	गंरें	सांनि	सां	रें	सां	-	-	ध	नि
को	SS	टS	S	प्र	भा	S	S	क	र
X		२			"		३		
ध	-	प	-	प	म	ग	म	-	प
वा	S	S	S	र	डा	S	रू	S	S
X		"			"		३		
ध	नि	सां	रें	सां	नि	सां	ध	-	प
को	S	टि	क	म	ल	न	वा	S	रू
X		२			"		३		

## संचारी.

प	प	प	ध	प	म	ग	रे	सा	रे
व	द	न	S	र	सा	S	ल	प	र
X		"			"		३		
रे	रे	प	-	प	प	प	प	प	-
त	न	के	S	व	र	न	प	र	S
X		२			"		३		
रे	प	ग	म	प	ग	म	रे	-	सा
नी	S	र	द	स	ज	ल	वा	S	रू
X		२			"		३		
ग	रे	सा	-	रे	सा	सा	ध	-	प
च	प	ला	S	च	म	क	म	S	न
X		२			"		३		

सा	रे	ग	म	प	ग	—	रे	सा	सा
मो	५	ह	न	की	मा	५	ल	प	र।
×		२			०		३		

### आभोग.

पं	प	नि	नि	नि	सां	सां	सां	—	सां
चा	ल	ध	ध	म	रा	ल	वा	५	रुं
×		२			०		३		
गं	रें	सां	नि	सां	ध	नि	ध	प	प
म	न	प	र	म	ध	न	वा	५	रुं
×		२			०		३		
प	म	ग	म	प	ध	नि	सां	रें	नि
औ	र	क	हा	५	क	हा	वा	५	र
×		२			०		३		
सां	ध	प	ध	प	म	ग	रे	सा	रे
डा	रुं	नं	५	द	ला	५	ल	प	र।
×		२			०		३		

नटबिलावल—चौताल ( विलम्बित ).

स्थायी.

सानि	सा	रे	ग	म	प
पु५	५	र	रेग	५	मप
०		३	न५	५	पु५
				४	



म	ग	रे	रे	ग	म	प	म	ग	म	रे	सा
रा	ऽ	न	प	मा	ऽ	नं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	द
×		०		२		०		३		४	
सा	ध	प	ध	नि	सा	—	सा	रे	रे	—	ग
ई	ऽ	स	तू	ऽ	है	ऽ	प	र	मा	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	
म	म	प	—	ध	प	नि	नि	सां	रें	सां	सां
ऽ	हूँ	ते	ऽ	प	र	ध	कृ	ति	प्र	धा	ऽ
×		०		२		०		३		४	
ध	प	मप	मग	म	रे						
ऽ	ऽ	(नऽ)	(मेंऽ)	ऽ	ऽ।						
×		०		२							

## अन्तरा.

प	प	प	ध	नि	नि	सां	सां	—	—	—	सां
घ	ट	घ	ट	स्ते	ते	ऽ	रो	ऽ	वा	ऽ	स
×		०		२		०		३		४	
रें	सां	—	ध	नि	सांनि	रें	सां	सां	ध	—	प
स	दा	ऽ	तू	ऽ	स्वऽ	यं	ऽ	प्र	का	ऽ	स
×		०		२		०		३		४	
—	ध	नि	सां	—	रें	गं	मं	पं	मंगं	मं	रें
ऽ	ते	ऽ	रो	ऽ	चि	द	ऽ	आ	भाऽ	ऽ	स
×		०		२		०		३		४	

-	सां	-	रें	सां	सां	सां	ध	निध	सांनि	रें	सां
S	सो	S	S	S	न	आ	व	SS	तS	S	व
X		०		२		०		३		४	
ध	-	प	मग	म	रे						
खा	S	न	मेंS	S	S।						
X		०		२							

## संचारी.

सा	सा	-	रे	रे	गरे	ग	म	म	प	-	म
नि	धि	S	औ	र	निS	पे	S	ध	भा	S	व
वि		०		२		०		३		४	
X											
ग	रे	ग	म	प	-	प	ध	प	ध	नि	सां
अ	भा	S	व	तें	S	र	हि	त	तू	S	है
X		०		२		०		३		४	
-	सां	ध	प	मग	रे	ग	म	रे	सा	रे	सा
S	सु	ध	बु	धS	S	तू	S	है	ध्या	S	त
X		०		२		०		३		४	
ध	नि	रे	सा	रे	प	म	ग	म	रे	सा	-
अ	धै	S	आ	S	ठ	ध्या	S	S	न	में	S।
X		०		२		०		३		४	

## आभोग.

प	-	-	ध	नि	ध	नि	सां	--	सांनि	रें	सां
तू	S	S	है	S	S	नि	S	S	सौंS	S	ग
X		०		२		०		३		४	

सांनि	रें	सां	-	नि	नि	नि	सां	रें	सां	-	सां
तोऽ	ऽ	में	ऽ	ध	ध	के	ऽ	प्र	सं	ऽ	ग
×		०		२	२	०		३		४	
सां	ध	प	ध	नि	सां	सां	-	-	सां	-	रें
ऐ	ऽ	से	जै	ऽ	ऽ	से	ऽ	ऽ	रं	ऽ	ग
×		०		२		०		३		४	
गं	मं	पं	मंगं	मं	रें	सां	ध	-	सांनि	रें	सां
दे	ऽ	खी	यऽ	ऽ	त	फ	टी	ऽ	कऽ	ऽ	प
×		०		०		०		३		४	
ध	-	प	मग	म	रे						
खा	ऽ	न	मेंऽ	ऽ	ऽ						
×		०		२							

नटविभाग-त्रिताल ( मध्यलय ).

स्थायी.

ध	रे						
प	म	ग	ग	म	-	-	-
ऽ	ज	ऽ	न	ना	ऽ	ऽ	ऽ
ध				×			
म	ग	नि	सा	नि	प	नि	सा
ऽ	या	वि	न	स	खि	मो	रे
३				×			

## अन्तरा.

प

ग

प	नि - नि	सां - - ,सां	सां सां (सां) सां	नि नि प, प
र	जे ऽ घ	टा ऽ ऽ ,वि	ज री ऽ सि	च म के, च
प	ग म ग	नि नि सा सा	ग म प प	म ग गु, प
त	र द र	स न वि न	जि या त र	सा ऽ ये सा

## कामोदनाट—त्रिताल ( मध्यलय ).

## स्थायी.

गम रे सा सा	रे - - -	ग म गम प	म ग - म
हो गा ये का	मो ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽऽ ऽ	द ऽ ऽ ना
रे - सा सा	रे - सा -	सा - रे सा	सा ध ध प
ऽ ऽ ट स्व	रू ऽ प ऽ	पं ऽ डि त	अ नु म त
सा - म ग	प मप ध प	प सांघ सां प	धमप प ग गमप
शं ऽ क र	भू ऽ ख न	मे ऽऽ ऽ ऽ	ऽऽऽऽ ल ऽ ऽऽऽ



## अन्तरा.

प - सां सां	सां सां सां -	सां ध सां रें	सां नि ध प
रो ऽ ह न	अ व रो ऽ	ह न नि ग	को त ज त
सा सा म ग	प प ध प	प सां ध सां -	धपमप प ग गमप
रि प वा ऽ	दि च त र	ला ऽ ऽ ऽ	ssss गो ऽ sss ।

## कामोदनाट-चौताल ( मध्यलय ) .

## स्थायी.

सा	ध	प	ध	म	प	म	ग	म	रे	सा	सा
सां	व	रि	सु	र	त	मो	रे	म	न	व	स
ग	रे	रे	गम	प	म	ग	म	रे	सा	रे	सा -
ग	इ	हऽ	र	रं	ऽ	ऽ	ग	प्र	धु	की	ऽ
प	प	सा	सा	रे	रे	सा	सा	ग	रे	ग	ग
नि	र	ख	नि	र	ख	सु	ध	वु	ध	स	व
ग	म	प	-	म	ग	म	रे	सा	रे	सा	-
त	न	की	ऽ	भू	ऽ	ऽ	ऽ	ल	ग	ई	ऽ ।

## अन्तरा.

प	—	सां	सां	सां	—	सां	नि	नि	ध	—	सां	रें
मो	ऽ	र	प	खा	ऽ	मु	र	ली	ऽ	ब	न	
×		०		०		०		३		४		
सां	नि	ध	प	मं	मं	पं	गं	गं	मं	रें	सां	सां
मा	ऽ	ला	ऽ	सो	ऽ	हे	च	तु	ऽ	र	भु	ज
×		०		२		०		३		४		
नि	प	सां	नि	ध	प	म	ग	म	रे	सा	—	
का	ऽ	क	अ	प	ने	ऽ	म	न	की	ऽ		
×		०	२		०		३		४			

## केदारनाट—त्रिताल ( मध्यलय )

## स्थायी.

सा —

दै ऽ

नि	नि	सा	रे	नि	सा	सा	ध	प	म	—	प	रे	—	सा	सा	—
मा	रो	रे	ढी	ठ	न	तो	रा	का	ऽ	कि	नो	ऽ	रे	दै	ऽ	
०				३				×				२				
नि	नि	सा	रे	नि	सा	सा	ध	प	म	—	—	प	रे	—	सा	—
मा	रो	रे	ढी	ठ	न	तो	रा	का	ऽ	ऽ	कि	नो	ऽ	रे	ऽ	
०				३				×				३				

नि सा रे ग	म प , निध प	म ग रे नि सारे	ग गमप मरे, सा -
ड ग र च	ल त , मऽ न	ली ऽ न छीऽऽ	ऽऽऽ ऽन, दै ऽ।
	३	×	२

## अन्तरा.

म - म म	प - , निध प	म म रे नि सारे	ग गमप मरे सा -
मैं ऽ ज छु	ना ऽ , जऽ ल	भ र न जाऽऽ	ऽऽऽ ऽत थी ऽ
	३	×	२

नि सा रे ग	म प , निध प	म ग रे नि सारे	ग गमप मरे, सा -
वं ग री प	क र , मऽ न	ली ऽ न छीऽऽ	ऽऽऽ ऽन, दै ऽ।
	३	×	२

## राग बिहागड़ा व पटविहाग



ये दोनों बिहाग के ही उपांग हैं। इन दोनों के अवरोह में कोमल नी का प्रयोग होता है। आरोह में रिपभ किंचित प्रमाण में लिया जाता है। 'बिहागड़ा' में मध्यम स्वर का कुछ अधिक महत्व होता है। इसी तरह धैवत भी सरल लिया जाता है। कोमल नि का प्रयोग अवरोह में सरल रूप से "सां, नि ध" की रीति से किया जाता है। 'पटविहाग' में ऐसा नहीं होता। 'पटविहाग' में 'बिहागड़ा' की अपेक्षा बिहाग का अङ्ग अधिक प्रमाण में होता है। कोई-कोई तो यही कहा करते हैं कि 'शुद्ध बिहाग' में उपरोक्त रूप से नि का प्रयोग करने और आरोह में थोड़ा रिपभ ग्रहण करने से 'पटविहाग' हो जाता है।

### बिहागड़ा का चलन.

रे  
गमध, पधनिध, पमगसा, गग, पम, मगम, पधनि,  
सां, सां, निध, प, मपम, गरेसा ।

### पटविहाग का चलन.

गमनिधप, गमरेग, मपमग, सानि, पनिसा ।





## विहागड़ा—त्रिताल ( मध्यलय )

स्थायी.

सा - म ग	प - नि ध	सां - नि प	- - म ग
गा ऽ व त	रा ऽ ग वि	हा ऽ ग ङा	ऽ ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२
सां - नि ध	प - म ग	गम प ग म	ग - नि सा
नी ऽ सु र	को ऽ म ल	भेऽ ऽ द दि	खा ऽ व त
०	३	×	२
नि सा रे रे	नि सा ग म	प - ग म	ग - नि सा
रा ऽ ग वि	हा ऽ ग स	रू ऽ प मि	ला ऽ व त।
०	३	×	२

अन्तरा.

प - प -	नि - नि नि	सां सां सां सां	सां रें सां -
गा ऽ बा ऽ	दी ऽ औ र	नी ऽ स म	वा ऽ दी ऽ
०	३	×	२
सां - गं -	रेंगं मं गं रें	सां - सां सां	नि - प नि
दो ऽ नो ऽ	मऽ ऽ ध्य म	का ऽ हु क	हे ऽ गु नि
०	३	×	२
सां - नि ध	प - म ग	गम प ग म	ग - सा सा
नी ऽ सु र	अं ऽ ग ख	माऽ ऽ ज ब	ता ऽ व त
०	३	×	२
सा - रे रे	नि सा ग म	प प ग म	ग - नि सा
या ऽ म द्वि	ती ऽ य च	तु रौ स	गा ऽ व त।
०	३	×	२

विद्वागडा-रूपक ( विलम्बित ).

स्थायी.

गम	ध	पधनि	धप	म	प	म	—
५, मग	जै	SSS	SS	S	S	S	S
२		३	३	×			
ग	सा	ग	ग	ग	प	म	—
य	S	S	S	री	S	S	S
२		३		×			
ग	म	—	पध	सां	सां	सां	सां
म	गम	—	विध	नि	नि	नि	नि
ये	SS	S	ध	क	व	S	S
२		३		×			
नि	ध	प	ध, पध	सां	नि	ध	ध
ने	S	S	हु	ला	S	S	S
२		३		×			
प	प	म	प	ग	रे	सा	सा
ध	प	म	म	ग	रे	सा	सा
रो	S	S	S	S	S	S	S
२		३		×			

अन्तरा.

आ	निनि	सांसां	ध	निनि	रें	मां	—
२	वन	कह	SS	ग	ये	S	S
नि		३		×			
सां	सां	सां रें	सां	नि	ध	प	प
अ	ज	हं	न	आ	S	S	S
२		३		×			

नि						
घ	नि	ध	प	म	(म)	-
ये	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
२		३		×		
प						
सप	सां	गं	रेंगंमं	गं	रें	सां
(जग)	के	ऽ	ऽऽऽ	जी	ऽ	ऽ
२		३		×		
नि	ध	प	सां	नि	ध	प
व	ऽ	ऽ	न	ऽ	ऽ	ऽ
२		३		×		
नि			प			
घ	प	म	म	ग	रें	सा
मू	ऽ	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ऽ।
२		३		×		

पटविहाग—आड़ाचीताल ( मध्यलय ) .

स्थायी.

ग	म	नि	ध	प	प	प (प)	म	ग	-	ग	प	म	
	कै	से	कै	से	ऽ	बो	ऽ	ल	त	ऽ	मो	ऽ	सों
०		४		०		×		२		०		३	
ग	रे	-	नि	-	धनि	नि	रे	-	सा	-	सा	ग	रे
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	लु	ग	ऽ	वा	ऽ	दे	खो	सैं
०		४		०		×		२		०		३	

सा -	सा नि	निध नि	प सारे सानिमा	नि ध नि	ध प	- -
यां ऽ	ते हा	SS रे	खोऽ SS	ल न	वि ना	ऽ ऽ
०	४	०	×	२	०	३
- प	नि सा	रे -	सा -	निसारे गमप	म ग	- रे
ऽ पू	छे न	हीं ऽ	सा ऽ	सSS SS	न नं	ऽ द
०	०	०	×	२	०	३
- सा	- नि	- नि	सा ग	- म	ग रे	म ग
ऽ को	ऽ ऊ	ऽ ऽ	वा ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ त ।
०	४	०	×	२	०	३

## अन्तरा.

गम	-प नि	सां सां	नि रे	सां निनि	नि सां	- -	प
जन	ऽम जो	ब न	ऽ यू	ही SS	जा	ऽ ऽ	त
०	३	०	४	०	×	२	३
- म	- ग	गरे सा	- सा	प -म	ग रे	सा नि	रे
ऽ रं	ऽ गी	SS ले	ऽ ति	हा SS	मा	ऽ या	ऽ
०	३	०	४	०	×	२	३
सा -	ग म	प निसां	रंसां -नि	ध प	गम पनि	सारें निरें	
मैं ऽ	नि स	दि नऽ	ऽजि श्या	दु ख	पाऽ SS	SS SS	
०	३	०	४	०	×	२	
सानिधप	गम ग	ग, म	नि ध	प -			
SS SS	SS त	ऽ। कै	से कै	से ऽ			
०	३	०	४	०			



राग सावनी ( विहाग श्रंग )-भयताल ( मध्यलय ).

स्थायी.

नि	ग	म	प	सां	प	म	ग	—	सा
सा	५	ने	५	अ	क	ल	स	५	ब
जा		२			०		३		
×		रे					नि		
नि	ग	ग	प	म	ग	रे	सा	रे	सा
सा	५	र	५	वे	अ	५	क	५	ल
×		२			०		३		
सा	ध	सा	रे	सा	नि	ध	ध	—	—
नि	५	प	५	भ	यो	५	प	है	५
आ		३			०		३		
×		ग					सां		
नि	सा	म	ग	म	प	प	नि	सां	सां
सा	प	नी	५	क	ह	त	औ	५	र
अ		२			०		३		
×							नि		
प	नि	सां	—	सां	गं	रें	सां	रें	सां
का	हु	की	५	न	मा	५	५	५	५
×		२			०		३		
प	ग	म	प,	सां	प	म	ग	—	सा
५	५	ने	५।	अ	क	ल	स	५	ब
×		२			०		३		

अन्तरा.

म  
प  
ऐ  
>

-	नि	-	नि	सां	सां	सां	-	सां
ऽ	सै	ऽ	ब	हु	त	दे	ऽ	खे
	२			०		३		

नि	ध	सां	रें	सां	नि	ध	सां	-	नि
द	र	स	ऽ	म	न	स	ह	ऽ	मे
×		२			०	३			
म		प							
प	ग	ग	प	म	ग	रे	सा	-	-
या	ऽ	प्र	ऽ	थ	वी	ऽ	में	ऽ	ऽ
×		२			०	३			
सा	सा	म	ग	म	प	-	नि	सां	सां
गु	नि	ज	न	की	बि	ऽ	द्या	ऽ	को
×		२			०	३			
प	नि	सां	सां	मं	गं	रें	सां	रें	सां
नि	की	ऽ	ए	व	खा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×		२			०	३			
प	ग	म	प,	सां	प	ग	ग	-	सा
ऽ	ऽ	ने	ऽ।	अ	क	ल	स	ऽ	व
×		२			०	३			

## राग मलुहा अथवा मलुहा केदार

रिसौ पमौ पनी सश्च गमौ पगौ मरी च सः ।

मलुहा रात्रिगा मांशा प्रारोहे रिधदुर्बला ॥

अभिनवरागमंजरीम् ॥४७॥

केदारहिके मेलमें श्यामकमोद संजोग ।

चढत रिखव धैवत नहीं कहि मलुहा गुनिलोग ॥

राग चन्द्रिकासार ॥७८॥

केदारस्य प्रभेदो विलसति मलुहा मेतरैः सर्वतीव्रैः ।

संचुत्तो मध्यमांशः सहजरुचिरसंवादिपङ्जाभिरामः ॥

आरोहे प्रायशोसावृषभधरहितः श्यामकामोदमिश्रो ।

गीतः पूर्वे हि यामे निशि कुशलजनैर्मन्द्रमोद्ग्राहपूर्वम् ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥७७॥

मलुहा, यह केदार राग के एक उपभेद के नाम से प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि केदार में श्याम और कामोद का संयोग करने से यह राग उत्पन्न होता है। यह विलावल थाट का राग माना जाता है। इसमें क्वचित् ही तीव्र-मध्यम ग्रहण किया जाता है। प्रायः इसका विस्तार मन्द्र और मध्य सप्तक में ही होता है। विलम्बित लय में विस्तार होने पर राग को गांभीर्य प्राप्त होता है। इस राग की जीवभूत तान

“रे, सा, प, म म प, प प नो, सा, रे, सा” है। इस तान के आगे कामोद का अंग “सा, ग, मरे, गमप गमरेसा” जोड़ देने पर यह राग स्पष्ट हो जाता है। इस राग में पङ्कज और मध्यम का संवाद है। आरोह में रिषभ और धैवत स्वर दुर्बल होते हैं। मन्द्र नी से, विलम्बित रूप से सा पर जाने में राग रूप विशेष स्पष्ट दिखाई पड़ता है। इसके गाने का समय रात्रि का दूसरा प्रहर माना जाता है।

उठाव.

रेसा, प, मप, नि, सा, गमप, गमरे, नि, सा ।

चलन,

सा, रेसा, म, म, प सा, सा, रे, सा, ग, ग, मरे, गमप,  
गमरेनिसा, सा, धप, मप, सा, निसा, प, मग, मरे, सा, मग,  
प, मप<sup>ध</sup>नि, धप, पसा, पप, मगमरे, निसा ।

---



मलुहाकंदार—त्रिताल ( मध्यलय ) .

स्थायी.

सा प म म	प — — प	प नि सा सा	रे — नि सा
म लु हा के	दा ऽ ऽ र	च तु र सु	ना ऽ व त
३	×	२	०
सा — ग —	ग ग म रे	ग म प ग	म रे नि सा
सं ऽ पू ऽ	र न सु र	शु ऽ द्ध ल	गा ऽ व त ।
३	×	२	०

अन्तरा.

प प सां सां	सां — सां —	प नि सां रे	सां नि ध प
स प स म	वा ऽ दी ऽ	अ ध नि त	रो ऽ ह ण
३	×	२	०
ग म प ग	म रे नि सा	सा म्ग प धप	म रे नि सा
का मो दि सुं	मे ऽ ल न	के ऽ दा रिऽ	पा ऽ व त ।
३	×	२	०

मलुहा—त्रिताल ( मध्यलय )

स्थायी.

रे सा प म्ग	प — प प	— नि — सारे	सा — सा —
कृ ऽ ष्ण मुऽ	रा ऽ रि श्या	ऽ म ऽ गिर	घा ऽ री ऽ
३	×	२	०

नि	म	म	म	म	म	प	प	रे
सा -	ग	ग	ग	ग	म रे	ग	म	प ग
सं ऽ	ग	सो	ह	त	स ख	रा ऽ	धा प्या	ऽ ऽ री ऽ
३			×			२	०	
सा -	प	म						
कृ ऽ	प्या	मु						
३								

## अन्तरा.

प	प	सां	सां	-	सां	रें	सां	नि	सां	रें	सां	-	ध	प
श	र	न	जा	ऽ	य	वा	की	ज	न	म सु	धा	ऽ	र	त
३				×				२			०			
नि	सा	म	ग	ग	प	-	ध	प	ग	म	प	प	म	रे
सा	सा	म	ग	प	-	ध	प	ग	म	प	प	म	म	रे
च	तु	रा	ऽ	के	ऽ	प्र	भु	तु	म	प	रु	ऽ	वा	ऽ री ।
३				×				२						

## मलुहा—त्रिताल ( मध्यलय ) .

## स्थायी.

रे	सा	-	प	प	म	-	म	प	-	-	प	प	प	नि	सा
कै	से	ऽ	जि	या	ध	ऽ	रे	धी	ऽ	ऽ	र	मो	रि	आ	लि
०				३				×				२			
नि	सा	-	म	प	ध	-	प	म	प	म	प	-	म	रे	सा
सा	म	-	म	प	ध	-	प	म	प	म	प	-	म	रे	सा
वा	री	ऽ	रु	म	री	ऽ	या	पि	ऽ	वा	ऽ	ध	र	ना	ऽ हि
०				३				×					२		

नि सा सा म - मग	प सां - सां	मपध मप - म	ग रे सा - सा
नि स ऽ दिऽ	ना नै ऽ न	बऽऽ रऽ ऽ स	त नी ऽ र।

## अन्तरा.

प प - सां	सां - सां सां	निसारें निसां - ध	प म - प
का सें ऽ क	हं ऽ अ व	जिऽऽ याऽ ऽ की	ऽ बी ऽ थ
मपध मप - म	रे सा - सा	नि सा	प सां - प
कैऽऽ सेऽ ऽ क	रुं आ ऽ ली	ह र ऽ रं	ग बी ऽ न
मपध मप - म	रे सा - सा	प - - प	
नाऽऽ हीऽ ऽ मि	टे पी ऽ र	धी ऽ ऽ र	इत्यादि

मलुहा - तिलवाड़ा ( विलम्बित ).

## स्थायी.

नि प सा धप म प	सा - नि सा	नि सा सा मग प प	प ध - प मप
मं ३दर बा जो	रे ऽ ऽ ऽ	अ रेऽ बा जो	रे ऽ ऽ ऽऽ
मं (प) म म	धध, पमप म ग मरे	नि सा रे सा -	नि सा सा रे सा
ध न ऽ ऽ	सऽवऽऽ मि ऽ ल	गा ऽ ओ ऽ	स खी ऽ यां

नि, ध, प -	प ध सा नि नि रे सा	नि सा सा प - म	ग रे सा ध नि सारे
१ ५, स हे ५	५ ५ ५ ५	१ ल री ५ या	५ ५ ५ ५ ५ ५
	५		

## अन्तरा.

मं सांसां सां - रे	सां - नि सां -	सां नि सां	सां नि ध प
महुं मद सा ५, पि	या ५ ५ ५	म न के ५	वा ५ ५ ५
१	५	१	०
मं प मं प ध ध, प मं प	म ग रे सा	सा सा म - ग	प - (प) -
५ ५ ५ ५ म ५, नु ५ ५	वा ५ ५ ५	स दा ५ ५ ५	रं ५ ग ५
३	५	१	०
ग म रे सा -	ग म मग ध प	मं प (प) म ग	सा म रे सा ध नि सारे
ध ५ र ५	का ५ ५ ५ ज	रे ५ ५ ५ ५	५ ५ ५ ५ ५ ५
३	५	१	०

## मलुहा-तिलवाड़ा ( विलम्बित )

## स्थायी.

सा - ध प म, प प	सा - नि सा	नि सा प म ग रे	नि सा सा रे सा -
मैं ५, दर मा, दिय	नी ५ ५ ५	को ५ डी ५ ५	५ ५ ये ५
३	५	१	०
नि ग सांसा मगप मं प ध नि, ध प	ध प - सा सा	सा प (प) म ग रे	ध सा नि नि रे
आश के ५ ५ दा ५ ५ ५, मा नू	वा ५ त न	पू ५ छे ५ ५	५ ५ ५ ५ ५ ५
३	५	१	०



## अन्तरा.

मं	प	रें	सां	नि	सां	नि	ध	सां	नि	ध	प
पप सांसां सांसां निनि	रें सां - निसां	सां निध सांनि	रें	सां नि ध प							
सुख दुख अप SS	S नो S SS	सा नु S SS	S	आं S S S							
मं पप	नि	नि सा मं	म								
प धध, पर्मप म गरे	सा रे सा निसा	सा मग प, प(प)	म	ग रे सा							
को SS, बी SS S SS	S S ये SS	स दा S, रंग	त S र न								
सा	म नि	प	ध	प म -	पप	नि					
सा रेसा मग प	प धनिसारें सां नि	ध प म -	धध, पर्मप म, गरे	सारे सा							
Sमी लवि चे S S	क र SSS ता S S S र S	मी S, ल SS बी, SS SS च ।									

## मलुहा-धमार ( बिलंबित )

## स्थायी.

सा	प	नि
मं मग	प - - - -	सा प -
S S रं ग S	ढा S S S S	मो पे S
सा रे सा -	नि	ध
S S है S	सा - - ग -	प नि -
	ए S S S S	ग यो S
		म
		ग - -
		जी S S

म - रे -	म ग म प ग -	म रे	रे नि सा रे
५ ५ के ५	छो ५ ५ ५ ५	५ ५	रा ५ ५ ।
३	×	२	०
सा प म मग			
मो पे रं ग			
३			

अन्तरा.

म प - - सां -	सां -	सां सां -	ध नि सां रे
बा ५ ५ ट ५	घा ५	ट में ५	रो ५ क त
×	२	०	३
सां - - ध प	म गम प म रे सा	नि सा मग प प	
टो ५ ५ क त	सू ५ ५ ५ द र	श्या ५ ५ म स	
×	२	०	३
ध प - ग -	म रे नि सा रे,	सा प म मग	
लो ५ ५ ५ ५	५ ५ ना ५ ५ ।	मो पे रं ग	
×	२	०	३

मलुहा—( एक प्रकार ) धमार ( विलम्बित )

स्थायी.

प  
ल

ग - म	म ध - प -	ग म ग - म रे	सा -
जो ५ ५	५ ५ ही ५	आं ५ ५ ५ ५	खे ५
०	३	×	२

म	प	सा	सा	रे	रे	सा	सा	नि	ग	म	ग
	ला	ऽ	ग	र	ही	तो	सों	सा	- -	म	-
				३				का	ऽ	ऽ	सें
				म				×		२	क
	प	-	-	प	ध	प	-	प	म	प	-
	हूँ	ऽ	ऽ	ये	ऽ	ही	ऽ	व	ती	ऽ	यां
				३				×		२	ल

## अन्तरा.

प	प	-	सां	-	,	सां	सां	-	-	नि	सां	रें	सां	-
अ	व	ऽ	धी	ऽ	२	ब	दी	ऽ	ऽ	मों	ऽ	सों	ऽ	
×										३				
सां	सां					रें	सां	सां	-	सां	नि	प	-	
घ	घ	-	सां	-	,	वि	ल	म	ऽ	र	ऽ	हे	ऽ	
अ	न	ऽ	त	ऽ	२					३				
×						सां	घ	-	-	घ	सां	सां	रें	सां
म	-	मग	प	-	,	सां	घ	-	-	सां	रें	सां	-	
कै	ऽ	ऽऽ	से	ऽ	२	ल	गा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऊं	ऽ	
×										३				
सां	-	-	घ	प	म	प	म	ग,	मरे	ग	म	घ	प	
प्या	ऽ	ऽ	री	ऽ	२	ति	यां	ऽ।	लऽ	जो	ऽ	ऽ	ही	
×										३				

## राग-जलधर अथवा जलधर केदार

चांदनीजलधारौ च मलुहाख्यस्तृतीयकः ।

आधुनिका मत एते प्रभेदा लक्ष्यवर्त्मनि ॥ १०४ ॥

तीव्रमस्य प्रयोगेण तथा कोमल नेरपि ।

केदारे चांदनी नामा प्रकारः संभवेत्ततः ॥ १०५ ॥

मेघ केदारसंयोगाज्जलधारः समुद्भवेत् ।

संगिरंति पुनः केचिल्लक्ष्यलक्षणवेदिनः ॥ १०६ ॥

श्रीमल्लक्ष्यसंगीते ।

यह केदार राग का एक भेद है जो विलावल थाट से उत्पन्न होता है। यह औड़व है। इसमें गांधार और निषाद स्वर वर्ज्य होते हैं। इसमें केदार और मल्लार का संयोग होता है। इसका वादी स्वर मध्यम है और संवादी पड़ज है। स्थूल रूप में केदार का प्रस्तार कर बीच-बीच में "रेप" और "मरे" स्वर-संगति तथा मध्यम पर न्यास करने पर इसका स्वरूप अच्छा स्पष्ट हो जाता है। इसे रात्रि के दूसरे प्रहर में गाया जाता है।

इस राग का साधारण चलन इस प्रकार है:—

सां, रेसां, धपम, ममप, धपम, रेसा, सा, रेप, म, रे, सा,  
मपधसां, धपम, मप, धसां, सांसां, सां, रेमरेसां, ध, प मपसां,  
धप मरेसा, रेमरेसां, धप, म, प ।



जलधर—भगताल ( मध्यलय ) .

स्थायी.

प	सां	सां	रें	सां	-	ध	प	म	-	म
अ	ति	म	नो	१	१	ह	र	रू	१	प
×						०		३		
म	-	ध	प	-		म	म	म	रे	सा
प	१	ग	नी	१	१	ज	ल	धा	१	र
रा						०		३		
×						म				
नि	सा	सा	रें	प	म	रें	रे	सा	-	-
सा										
व	र	खा	१	१	दि	न	न	में	१	१
×						०		३		
प	प	सां	ध	सां	-	ध	प	म	-	प
म										
गा	१	व	त	१	१	न	र	ना	१	र।
×						०		३		

अन्तरा.

प	म	प	ध	सां	सां	सां	सां	सां	-	सां
म										
ग	नि	व	र	ज	क	र	गा	१	१	य
×								३		
नि	-	मं	रें	मं	रें	सां	सां	सां	-	प
सां										
म	१	ध्य	म	सु	र	व	ढा	१	१	य
×								३		
प	प	सां	ध	सां	सां	म	रे	सा	रे	सा
म										
सं	१	यो	१	ग	क	हे	च	तु	१	र
×						०		३		

मं	मं	रें	—	सां	प	प	प	—	प
रें	५	दा	५	र	ध	ल	म	५	र।
के		२			०		हा	३	
×									

जलधर—केदार—भूपताल ( कल्याणमेलजन्य प्रकार )

स्थायी.

प	प	म	प	प	सां	—	रें	सां	सां
ज	ल	ध	र	के	दा	५	र	गु	नि
×		२			०		३		
सां	नि	ध	प	म	ध	प	म	म	रें
क	ह	त	स	व	च	तु	र	ज	न
×		२			०		३		
सा	रें	सा	म	रें	प	म	ध	प	म
×		२			०		३		
सां	नि	ध	प	म	ध	प	म	रें	सा।
×		२			०		३		

अन्तरा.

म	म	प	म	प	सां	—	सां	रें	सां
×		२			०		३		

सां ×	रे	सां २	नि	ध	नि ०	ध	प ३	म	म
प ×	प	नि २	सां	रे	सां ०	नि	ध ३	प	म
ध ×	प	म २	रे	रे	प ०	रे	म ३	रे	सा ।

---

## राग दुर्गा ( विलावल थाट )

पमौ पधौ मरी पश्च सधौ मरी पधौ मरी ।

दुर्गा गनिपरित्यक्ता रात्रिगेयाऽथ मांशिका ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥४६॥

शुद्धमेलसमुत्पन्ना दुर्गाख्या लोकविश्रुता ।

आरोहे चावरोहेऽपि गनिहीनैव संमता ॥४७॥

मध्यमः संमतो वादी कैश्चित् पंचम ईरितः ।

गानमस्याः सदाभिष्टं द्वितीयप्रहरे निशि ॥४८॥

श्रीमल्लह्यसंगीते ( द्वितीयावृत्ति )

दुर्गा राग विलावल थाट से उत्पन्न होता है। इसमें गांधार और निषाद वर्ज्य होते हैं। अर्थात् इसकी जाति औड़व-औड़व है। इसका वादी स्वर मध्यम और सन्वादी पड़ज है। गायन का समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। इसमें मध्यम पर विभ्रान्ति लेना अच्छा शोभित होता है। 'धम' 'रेप' और 'रेध' स्वर संगतियां रागवाचक हैं। अवरोह वक्र होता है। इस राग पर किंचित् शुद्ध मल्लार और सोरठ की छाया पड़ती है, परन्तु उपरोक्त स्वर संगतियों के कारण शुद्धमल्लार से तथा गांधार और निषाद के वर्ज्य होने के कारण सोरठ से भिन्न हो जाता है। दक्षिणात्य-सङ्गीत के ग्रन्थों में 'शुद्ध सावेरी' नामक एक राग बताया गया है। ऐसा जान पड़ता है कि उसी राग को इधर के विद्वानों ने 'दुर्गा' नाम से प्रचलित किया होगा।

खमाज थाट में, खमाज अङ्ग का एक 'दुर्गा' नामक राग अलग है, उसकी चीजें आगे खमाज थाट के प्रकरण में देखी जावें।



उठाव

प, मप, धमरे, प, सांध, सारें, पध, मरे सा ।

राग का साधारण चलन.

प, म, प, ध, मरे, रेसा, सांध, सां, रेंध, सां, प, ध, मरे, प ।

मप, ध, सां, सारें, धसां, सारें, मरें, धसां,

पधसां, ध, मरे, रेंधसां, पध, मरे, प ।

## दुर्गा-त्रिताल ( मध्यलय )

स्थायी.

रे प प म पध ध	(म) - रे म	रे प - प	ध ध (म) रे
रा ऽ गुऽ गु	नी ऽ ऽ, दु	र गा ऽ व	खा ऽ ने ऽ
सा म प म मसा	रे रे सा सा	सां घ सां रे	ध सां घ (म) रे
औ ऽ ड वऽ	शु द्व स्व र	सा ऽ वे री	प्र मा ऽ नेऽ

अन्तरा.

म प ध सां	सां सां रे सां	सां रे मं रे	सां ध (म) रे
सां सां प ध	(म) रे सा सा	रे ध सां प	ध (म) रे ऽ ।

## दुर्गा-त्रिताल ( मध्यलय ).

स्थायी.

ध सां सां ध ध	(म) म - रे	सा - सा रे	ध सा सा -
छि ट क र	ही चां ऽ द	नी ऽ रं ग	भी ऽ नी ऽ

रे	म	सां	सां	ध	सां	ध	सां	प	ध
सा - रे म	प - ध ध	सां ध सां रे	ध सां प ध						
रा ऽ त पि	या ऽ तो रे	मि ल न की	ऽ आ ऽ स						
×	२	०	३						

अन्तरा.

प	सां	सां	सां	सां	रे	ध	सां	ध	सां
म प ध सां	सां सां सां -	ध सां रे ध	सां ध (म) रे						
सा ऽ ऽ स्न	न दि या ऽ	जा ऽ गे मो	ऽ ऽ री ऽ						
×	२	०	३						

( अथवा )

प	ध	सां	सां	ध	सां	सां	रे	ध	सां	ध	म
म - प ध	सां ध सां -	ध सां सां रे	ध सां ध म								
सा ऽ स न	नं दि या ऽ	जा ऽ गे मो	ऽ ऽ री ऽ								
×	२	०	३								
मं रे	मं रे	सां रे सां	म प ध सां	रे	सां ध प						
कै ऽ से आ	ऽ उं अ व	सैं ऽ यां तो	रे पा ऽ स								
×	२	०	३								

( अथवा )

सां	रे	सां	ध	सां	ध
म प ध सां	रे ध सां प ध				
सैं ऽ या तो	रे पा ऽ स				
×	२				

दुर्गा-त्रिताल ( मध्यलय ) .

स्थायी.

म	प	ध	ग	ग	म	ध
प - मप	पधध	म - रे	म	रे	प मप	प ध म रे
दे S SS	वीष्म	जो S S	दु	र गा SS	भ	वा S नी S
३		X		२		
ग म ग म		रे रे सा सा	सा	नि	ध प	सां ध (म) रे
म प म सा		न नी म हि	पा S सु	रु		म र द नी ।
ज ग त ज		X		२		
३						

अन्तरा.

ग	म	प	सां ध	सां	सां - रे	सां	नि	रें	प
म	प	सां ध	सां	सां	रें	मं	रें	सां ध (म)	रे
हि	म	न S	ग	नं	S	दि नी	भ	व	भ य
३				X			२		
ग	म			रे	रे	स सा	सा	सां	प
म	प	म	मसा	रे	रे	स सा	सां ध	सां	ध (म) - रे
श	र	न	ग S	त	च	तु र	अ	भ य व	र दा S नि ।
३				X			२		

दुर्गा त्रिताल ( विलम्बित ).

स्थायी.

प

अ

प	प	प	म	म	म	प	म	प	ध	म	रे
प - मप	धध	(म) - रे	-	रे	रे	प मप	मपध	ध	म	रे	
हो S SS	जिन	बो S S S	S	लो S SS	SSS	पि या S					
३		X		२							



( २३० )

( अथवा )

सा  
अ

सा प - मप मपध	म - रे रे	प - मप मपध	म - रे -
हो ऽ ऽ ऽ जिऽन	बो ऽ ऽ लो	ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ पि	या ऽ ऽ ऽ
रे म	म	सा ध	प
म प म -	सा रे सा -	सां सां ध सां रें ध	सां ध (म), रे
मो ऽ सों ऽ	ऽ तु म ऽ	आ ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ जे। अ
३	×	२	०

अन्तरा.

प	म प सां ध सां सां	सां - रें सां	नि मं	सां रें मं रें रें	प	सां ध (म) रे
ज हां ऽ ऽ	से ऽ नि स	व हां ऽ ऽ	सां ध प	सां ध (म), रे	का ऽ हे ऽ	ह म सों ऽ
रे	म	सां	सां	सां	का ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ जे। अ
म प म -	सा रे सा -	सां सां ध सां रें	सां ध (म), रे	सां ध (म), रे	का ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ जे। अ
३	×	२	०	०	३	×

दुर्गा-त्रिताल ( बिलम्बित )

स्वायी.

रे	प - मप, म, पध	(म) - रे -	म म	रे रे प, मप	मप मपध (म) रे
तूं ऽ ऽ ऽ, जिऽन	बो ऽ ऽ ऽ	ल रे ऽ ऽ	प्या ऽ ऽ ऽ	रे ऽ	३
३	×	२	०	०	३

रे	म	प	म	-	सा	रे	सा	-	सा	सांघ	रें	ध	सां	ध	(म)	रे
१																
रं	ऽ	ग	ऽ		चू	ऽ	वे	ऽ	प	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	गो	ऽ।
३					X				१							

---

अन्तरा.

म	प	सांघ	सां	सां	-	रें	सां	सां	रें	मं	रें	सां	ध	(म)	रे	
१																
घ	री	ए	क	मा	ऽ	ऽ	न	रें	ऽ	न	अं	घे	ऽ	रो	ऽ	
३				X				२								
रे	म			सा	रे	रे	सा	-	सां	सां	सांघ	रें	सां	ध	(म)	रे
	म	प	म	मसा												
मो	ऽ	रा	ऽऽ	जि	य	रा	ऽ	ड	रे	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	गो	ऽ।	
३				X				२								

## राग छाया -

कुछ गायकों के मतानुसार छायानट राग, छाया और नट इन दो रागों के मिश्रण से बना है। किन्तु केवल 'छाया' के स्वतन्त्र रूप का वर्णन नहीं मिलता। यहां पर दिये हुए गीत में छायानट की तरह तीव्र माध्यम व नट का अंग नहीं है। अवरोह में गान्धार व आरोह में निषाद लगाया गया है। छायानट के आरोह में निषाद का और अवरोह में गान्धार का वक्रत्व है।





प	प	रें	-	सां	सां	सां	सां	नि	प
प	रि	यो	ऽ	ग	शु	म	दे	ऽ	ख
×		<sup>२</sup>			°		<sup>३</sup>		
रे	ग	ग	म	प	म	ग	म	-	सा
च	तु	रा	ऽ	भ	यो	हु	ला	ऽ	स ।
×		<sup>१</sup>			.		<sup>१</sup>		

—

## राग छाया-तिलक.



यह एक मिश्र राग है, जो 'छायानट' और 'तिलक कामोद' के संयोग से उत्पन्न होता है। इसका स्वरूप इस प्रकार है। इस राग में—  
“रेग, रेगमप, म, पग, मरे” छायानट का भाग और “रेप, मग, सारेग, सा” तिलककामोद का भाग आता है।

इसका साधारण स्वरूप इस प्रकार है:—

ग  
सा, रे, ग, रेग, मप, म, पग, सारेग, म, रेग, सा, पप

साध, सा, रेगसा, सां, पधम, गरेग, सा । मप

नि, निसां, रेंपमंगं, सारेंगंसां, सां रें सां

धनिप, सां, प, धम, गरेग, सा ।



## छायातिलक—भूमरा ( मध्यलय ).

स्थायी.

ग रे ग गम (प)	म ग रे	सा रेग सा -	गम ग सा
जा ऽ यऽ सु	ना ऽ ओ	ह रिऽ सों ऽ	बिऽ न ति
सा रे	×	२	•
प प ध सा	रे ग सा	सां सां प ध म	गरे ग सा
ह म री ऽ	स ज नी	पै यांऽ ला गु	तोऽ ऽ रे ।
३	×	२	•

अन्तरा.

म मप नि नि	सां सां सां	गं गं	सां रेंगं सां
द रऽ स न	के बि न	रें रेंपं मं गं	रा ऽऽ वे
३	×	२	•
प सां - रें सां	सां ध नि प	सां सां प धप	ग म गरेग सा
बे ऽ गि प	धा ऽ रो	ह र रं गऽ	मो ऽऽऽ रे ।
३	×	२	•

## राग गुणकली

बिलावलीसुमेलाच्च जातो रागो गुणप्रियः ।  
 गुणकलीति नामासौ सप्तसंवादशोभनः ॥  
 यतो बिलावलांगेन गीयते लज्ज्यवर्त्मनि ।  
 गानं सुसंमतं तस्य प्रथमप्रहरे दिने ॥  
 केचिद्गुणकलीं प्राहुः कल्याणांगविभूषिताम् ।  
 गांधारवादिनीं चापि साऽस्या भिन्ना परिस्फुटा ॥  
 रागतरंगिणीग्रन्थे गुणकरी समीरिता ।  
 गौरीमेलसमुत्पन्ना सा चास्या भेदमर्हयेत् ॥

श्रीमल्लहयसंगीते ( द्वितीयावृत्ति ) ॥ १२२-१२५ ॥

राग गुणकली बिलावल धाट से उत्पन्न होता है। यह संपूर्ण जाति का राग है। इसका वादी स्वर षड्ज और संवादी पंचम है। यह राग बिलावल अंग से गाया जाता है, अतः इसका गान समय दिवस का प्रथम प्रहर उचित ही है। कुछ लोगों के मत से यह राग कल्याण अंग का है, और इसका वादी स्वर गांधार है। यह स्पष्ट है कि, यह स्वरूप पूर्वोक्त स्वरूप से भिन्न ही होगा। प्राचीन ग्रन्थों में "गुणकरी" अथवा "गुणक्री" नामक एक गौरी ( वर्तमान भैरव ) धाट से उत्पन्न होने वाले राग का वर्णन किया गया है। यह स्वरूप भी इस समय कुछ जगहों पर प्रचलित है। इसका विवरण आगे यथास्थान आवेगा। इस गुणकरी का, और प्रस्तुत राग का कोई सम्बन्ध नहीं है। ये दोनों भिन्न-भिन्न राग हैं। [ हि० सं० प० ( भातखण्डे संगीत शास्त्र ) भाग १ पृष्ठ २०२-२०३ देखो ]

गुणकली का साधारण चलन निम्न रूप में होता है—



## गुणकली का साधारण चलन

सा, गरेसानिध, निधप, सा, रेसा, गप, रे, सा, सा,  
 गरेसा, निधप, सा, । पप, निध, सां, सां, निध,  
 निध, सांरेंसांनि, पप, पपधसां, धप,  
 ग, परेसा ।

गुणकली-सूलताल ( मध्यलय )  
स्थायी.

सा	रे	सा	नि	ध	नि	ति	सा	सा	-
ग	५	५	५	हां	५	पा	बि	धा	५
कां	×	०		२		३		०	
प	-	प	प	ग	रे	-	सा	सा	-
ग	५	इ	५	रे	५	५	बि	धा	५
पा	×	०		२		३		०	
सा	रे	सा	नि	ध	नि	रे	-	सा	-
ग	हां	५	५	५	५	पा	५	इ	५
कां	×	०		२		३		०	
सा	नि	सा	सा	सा	नि	ध	-	प	-
नि	ध	ने	सि	खा	५	५	५	इ	५
मैं	५	०		२		३		०	
×	-	सा	नि	ध	सा	-	सा	सा	-
म	५	ध	ध	सा	५	५	बि	धा	५
प	-	तो	५	ये	५	५		०	
तु	५	०		२		३			
×									

अन्तरा.

म	सां	नि	सां	सां	सां	सां	-
प	ध	ध	आ	गे	तु	५	५
मो	रे	५	२	३	०		
×	०						

सा	नि	सां	रें	सां	—	मां	ध	—	नि	प
ध	ध	गु	रु	को	५	ना	५	५	५	म
ले	५	०	२	२		३				
×						सां				
म	—	ध	सां	—	सां	ध	—	प	—	
प	५	न	पा	५	ठ	शा	५	ला	५	
कौ	५	०	२	२		३		०		
×			प	प	ग	ग	३	सा	—	
प	ग	ग	—	ग	प	ग	३	३	५	
में	५	तू	५	प	ढ	आ	५	३	५	
×		०	२	२		३		०		
सा	नि	सा	सा	सा	नि	सा	—	प	—	
ध	ध	ने	सि	खा	५	५	५	३	५	
में	५	०		२		३		०		
×										

गुणकली—सूलताल ( मध्यलय ) .

स्थायी.

सा	सा	सा
च	तु	र

ग	रे	सा	नि	ध	नि	रे	रे	सा	—
ना	५	५	५	५	म	ज	प	ले	५
×		०		२	३			०	
प	ग	प	प	ग	रे	—	सा	सा	सा
ग	ग	ग	५	ग	५	५	च	त	र
ज	प	ले	५	रे	५	३		०	
×		०		२					

ग	रे	सा	नि	ध	नि	रे	रे	सा	-
ना	५	५	५	५	म	ज	प	ले	५
×		०		२		३		०	
सा						सा	—		
नि	ध	सा	सा	सा	-	ध	-	नि	प
क्यों	५	अ	व	सो	५	वे	५	५	५
×		०		२		३		०	
म		सा		सा	-	-	सा	सा	सा
प	-	ध	-	सा	-	-			
तू	५	तो	५	रे	५	५	च	त	र
×		०		२		३		०	

## अन्तरा.

प	प	नि	निध	सां	सां	सां	सां	सां	-
ह	र	ध	(५५)	ना	५	म	लि	ये	५
×		०		२		३		०	
सां	नि	सां	रें	सां	-	सां	नि	प	प
ध	ध	र	न	ते	५	ध	५	जा	की
ता	५	०		२		३		०	
×			सां	प	प	-	प	ग	-
सां	सां	-	ध	५	ग	५		रे	५
ध			से	५	मु	५	क्त	हो	५
क्रि	पा	५		२		३		०	
×						सा	—		
सा	-	रे	सा	सा	-	ध	-	प	प
मा	५	न	व	दे	५	ही	५	स	ब
×		०		२		३		०	



प	-	सा	-	सा	-	सा	सा	सा
तु	S	धो	S	रे	S	च	व	र।
x		.		२		३	.	

---

## राग पहाड़ी.



पाहाडिका प्रभवति मेतरसर्वतीव्रा ।

मन्यल्पका सततसंश्रितमंद्रमध्या ॥

वादी तु षड्ज इह पंचममंत्रियुक्तः ।

संगीयते सुचतुरैः खलु सर्वदाऽसौ ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ८८ ॥

गरी सधौ पधौ सश्च गपौ धपौ गरी सधौ ।

मंद्रमध्यस्वरा गांशा पहाडी मनिवर्जिता ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ ४४ ॥

मध्यम मृदु तीखे सवहि अत थोरे मनि लाग ।

सप वादीसंवादिते होत पहाडी राग ॥

रागचंद्रिकासार ॥ ८७ ॥

राग पहाड़ी विलावल थाट से उत्पन्न होता है । इसमें मध्यम और निषाद स्वर असत्याय ( अति दुर्बल ) होते हैं । इस कारण इस राग पर किंचित् मात्रा में भूपाली की छाया आ जाती है, परन्तु अवरोह में थोड़ा मध्यम लगा देने से भूपाली की निवृत्ति हो जाती है । इस राग का विस्तार मन्द्र और मध्य सप्तक में ही अच्छा होता है । इसका वादी स्वर षड्ज और संवादी पंचम है । मन्द्र सप्तक के धैवत पर विश्रान्ति इस राग की एक राग वाचक विशेषता है । “ग, रेसा, ध, पधसा” इस राग की एक पकड़ ही समझना चाहिए । यह राग जुद्ध प्रकृति के रागों में से एक माना जाता है ।

उठाव.

ग, रेसा, ध, पधसा, गपधप, ग, रेसाध ।

चलन.

ग, रेसा, ध, पधसा । गपधप, ग, रेसाध, ध, रेग, सा,

ध, पधसा । गप, घसां, धप, गरे, धसारेग,

साध, पधसा ।

## पहाड़ी—त्रिताल ( मध्यलय )

स्थायी.

ध ध सा रे	ग ग ग ग	ग रे सा रे	ग रे सा ध
सु र लि म	धु र धु न	च तु र सु	ना ऽ व त
१	×	२	•
सा रे ग ग	ग ग ग रे	ग रे सा रे	ग रे सा ध
त न म न	स खि मे रो	अ ति हि लु	भा ऽ व त ।
३	×	२	•

अन्तरा.

ग ग ग ग	प प प प	प — ध ध	सां ध प ग
म नि सु र	ब र जि त	रू ऽ प दि	खा ऽ व त
१	×	२	•
ग ग ग ग	ध प ग ग	ग रे सा रे	ग रे सा ध
त्रि ज व नि	ता ऽ स व	प हा ढि व	ता ऽ व त ।
३	×	२	•

## पहाड़ी—दीपचन्दी ( मध्यलय )

स्थायी.

सा ध ध सा रे	सा रे ग —	मग रे रे ध	सा ध सा रे
सा धु जी ऽ	रे ऽ ऽ	ना ऽ ऽ ही ऽ	डो ऽ ऽ
३	×	२	•



सारे	ग - रे	सा - -	ध प ध -	रे सा -
SS	S S ल	ना S S	रे S S S	नै या S
१		×	२	•

## अन्तरा.

सा - सा	ग - ग ग	ग - ग	मग रे रे -
ढा S ल	वे S त ल	वा S र	तें S ङी S
×	१	•	१
सा सा -	रे - रे -	सारे गरे सानि	ध प ध सा -
खुं टी S	य S न S	हें S SS ग S	दी S S S
×	२	•	३
सा ध -	सा - - रे	ग - -	प - प ध
घ र S	मैं S S भु	ले S S	वा S की S
×	१	•	१
पध सांसां धप	ग रे - सा	सा - ध	
SS SS SS	S S S S	ना S र	
×	२	•	

## राग मांड

सगौ रिमौ गपौ मधौ पनी धसौ सधौ निपौ ।

धमौ पगौ भवेद्वक्रं सांशं मांड स्वरूपकम् ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥४५॥

मध्यम मृदु तीवर सबै वक्र सजत अवरोहि ।

सम वादी संवादित्रे मांड राग सुकहोहि ॥

राग चन्द्रिकासार ॥२३॥

अथ मेवाडदेशीयो मांड रागः प्रकीर्तितः ।

पङ्कज ग्रहांशकन्यासः संपूर्णः सार्वकालिकः ॥

निषादर्षभगांधारधैवतास्तीव्रसंज्ञकाः ।

मध्यमः कोमलश्चात्र संवादी पंचमः स्वरः ॥

आरोहे दुर्बलावत्र स्वरावृषभधैवतौ ।

अवरोहे वक्रता च निषादे कंपनं स्मृतम् ॥

सङ्गीतमुधाकरे

यह राग बिलावल थाट से उत्पन्न होता है। कहा जाता है कि इस राग की उत्पत्ति मालवा और राजपूताना प्रान्त से हुई है। आज भी इन प्रान्तों में यह राग सर्वसाधारण लोगों में प्रचलित है। यह छुद्र प्रकृति के रागों में से है। इसका स्वरूप वक्र है। यह राग प्रत्येक समय गाया जाता है। इसका वादी स्वर पङ्कज और संवादी स्वर पंचम है। इस राग में सा, म और प स्वर महत्वपूर्ण हो जाते हैं। निषाद पर आंदोलन लेना इस राग का एक चिन्ह ही है। इसके आरोह में रे और ध स्वर दुर्बल हैं और अवरोह में वक्र हो जाते हैं। अनेक

मार्मिक लोगों का मत है कि “साग, रेग, गग” आदि स्वर क्रम वाले “अभ्युच्छ्रय” नामक अलंकार से यह राग उत्पन्न होता है। “सां, निध, म, पग, म, सा” इस प्रकार स्वर गाने पर मांड राग स्पष्ट हो जाता है।

### आरोहावरोह स्वरूपः

सा ग रे म ग प म ध प नि ध सां । सां ध नि प ध न  
प ग म सा ।

इस राग का साधारण चलन इस प्रकार है—

सा, रेग, सा, रे, ममप, ध, पधसां, सां, निसानिध,  
धनिप, पध, म, पग, मसा, रेग, ग, सा ।

## मांड-त्रिताल

स्यायी.

ध - प म	ग सा रे ग	सा - सा रे	- रे सा सा
मां ऽ ड सु	र त व त	ला ऽ ये का	ऽ न्ह मो हे
०	३	×	२

१ ला अन्तरा.

म - म म	म म म -	प - प प	प ध सां सां
शु ऽ द्ध स्व	र न को ऽ	मे ऽ ल क	रे ऽ ता में
०	३	×	०
सां रें सां नि	ध ध म म	प - - -	प - - -
म ऽ ध्य म	सु र को व	ढा ऽ ऽ ऽ	ये ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२
सां सां नि -	ध ध प प	म म ग ग	म ग सा सा
म ध सं ऽ	ग त अ ति	म धु र च	तु र स खी
०	३	×	२
सा		म	
सां - नि नि	ध ध प ध	प - म ग	- म्ग सा सा
दे ऽ ख त	म न ह र	खा ऽ य का	ऽ न्ह ऽ मो हे
०	३	×	२

२ रा अन्तरा.

म म म म	म - म म	प - प प	सां सां सां सां
व ऽ क्र ग	ती ऽ अ व	रो ऽ ह न	स खि मो रे
०	३	×	२



सां - सां सां	ध - म म	प - - -	प - - -
सां ऽ च क	हैं ऽ म न	भा ऽ ऽ ऽ	ये ऽ ऽ ऽ
•	३	×	२
सां सां ध नि	प ध म प	ग म रे ग	सा ग रे सा
•	३	×	२
गं गं सां -	ध - नि नि	प - प म	- म प प
क व हैं ऽ	ना ऽ बि स	रा ऽ य का	ऽ न मो दे।
•	३	×	२

## राग मेवाड़ा

---

यह मांड का ही एक भेद है। इसके नाम पर से यह ज्ञात होता है कि यह राग राजपूताने के ग्राम गीतों ( FolkMusic ) में से एक है। इसका विस्तार तार सप्तक में विशेष नहीं होता। गुजरात प्रान्त के रास ( गरबा ) आदि गीत अधिक तादाद में इसी राग में सुनने को मिलते हैं। यह राग बिलावल थाट का है।

इसका साधारण चलन इस प्रकार है:—

म, गरेग, सा, रेमप<sup>ध</sup>ध, मप, मगरेसा । सा, गमप, पधपधनि  
 प  
 ध, प, मम, ध, पधमप, गम, गरेसा ।

## मेवाडा-दादरा

स्थायी.

ग	म	-	-	गरे	ग	सा	रे	म	-	-	रेम	प	ध
कू	५	५		ज५	५	र	ली	५	५		दे५	५	५
×				°			×				°		
ग	ध			मग	रेसा	सा	सा	-	-		सा	-	-
म	प	म		सो५	५५	ह	मा	५	५		रो	५	५
सं	दे	५		°			×				°		
×													
म													
ग	-	-		गरे	ग	सा	रे	म	-	-	रेम	प	ध
जा	५	५		ये५	५	वा	ल	म	५		रो५	५	५
×				°			×				°		
ग													
म	-	-		धप	म	ग	गम	-	-		सा	-	-
जै	५	५		ये५	५	५	जी५	५	५		रे	५	५।
×				°			×				°		

अन्तरा ( १ )

ग	-	-	रे	ग	-	सा	रे	म	-	प	ध	म
थां	५	५	रें	५	कां	टा	ने	५		ह	मे	५
×			°			×				°		
प	म	ग	ग	सा	सा	सा	-	-		सा	-	गम
ना	५	५	ना	५	प	खे	५	५		रू	५	हे५
×			°			×				°		

प	प	—	पध	पध	नि	प	ध	ध	—	पध	म	प
उ	ढी	ऽ	वऽ	ढीऽ	ऽ	ओ	ले	ऽ	काऽ	ते	ऽ	
×			•			×			•			
म	—	—	धप	म	ग	गम	ग	रे	सा	—	—	
जै	ऽ	ऽ	वेऽ	ऽ	ऽ	जीऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	
×			•			×			•			

## अन्तरा ( २ )

म	ग	—	—	ग	सा	सा	रे	म	—	रेम	पध	—
मा	ऽ	ऽ		ण	ऽ	स	हो	ई	ऽ	रेऽ	ऽऽ	ऽ
×				•			×			•		
म	धप	म		गम	गरे	सा	सा	—	—	सा	—	गम
ल	खऽ	ऽ		लऽ	ऽऽ	ख	भे	ऽ	ऽ	जू	ऽ	ऽऽ
×				•			×			•		
प	प	—		पध	नि	—	प	ध	—	म	प	—
ल	ख	ऽ		जोऽ	ऽ	ऽ	ह	मा	ऽ	री	ऽ	ऽ
×				•			×			•		
ग	म	—	—	म	ध	—	म	ग	मग	रेसा	सा	—
पा	ऽ	ऽ		ख	ऽ	ड	ली	ऽऽ	ऽऽ	रे	ऽ	ऽ
×				•			×			•		



## राग पटमंजरी

( बिलावल थाट )

राग पटमंजरी को कोई-कोई शुद्ध स्वर थाट के अन्तर्गत रागों में मानते हैं। इसके वास्तविक स्वरूप के सम्बन्ध में अनेक विवाद उत्पन्न होते रहते हैं। प्रस्तुत भेद में बिलावल के स्वर लगते हैं और कहीं-कहीं जयजयवन्ती जैसा भाग दिखाई देता है।

जब कभी इसे गाते हुए पंचम पर से रिषभ पर आते हैं, वहां जयजयवन्ती का आभास हो जाता है, परन्तु जयजयवन्ती में दोनों गांधार और दोनों निषाद का प्रयोग होता है, उस प्रकार पटमंजरी में नहीं होता। इस तरह यह राग स्वरूप सहज में भिन्न हो जाता है। इस राग भेद को कोई-कोई 'वज्राल बिलावल' भी कहते हैं।

[ देखो हि० सं० प० (ध्योरी मराठी) भाग ४ पृष्ठ ४६४-४६७ ]

श्रीमल्लह्यसंगीत की प्रथम आवृत्ति ( सन् १६१० ई० ) में ग्रंथकार ने 'पटमंजरी' को काफी थाट में सम्मिलित किया था, वहां इसके 'शुद्ध स्वर-भेद' के सम्बन्ध में कहा है:—

मेले शुद्धस्वराणां तां केचिदन्ये विदो विदुः ।

लक्ष्यदृष्ट्या न मे भाति तन्मतं चापि संगतम् ॥५६॥

( श्रीमल्लह्यसंगीते पृष्ठ १२१ )

इसी के अनुसार 'हिन्दुस्थानी सङ्गीत पद्धति' के सन् १६१० ई० में लिखे हुए प्रथम भाग में बिलावल मेलजन्य रागों का वर्णन करते हुए, उसमें 'पटमंजरी' का उल्लेख नहीं किया। परन्तु 'हिन्दुस्थानी सङ्गीत पद्धति' के सन् १६३२ ई० में प्रकाशित चतुर्थ भाग में उपरोक्त वर्णन प्राप्त होता है। साथ ही सन् १६३४ ई० में प्रकाशित 'श्रीमल्लह्यसङ्गीत' की द्वितीय आवृत्ति में उपरोक्त श्लोक में निम्नलिखित परिवर्तन किया गया है:—

मेले शुद्धस्वराणां तां केचिदन्ये विदो विदुः ।

न तद्विसंगतं भाति मतं लक्ष्यानुसारतः ॥ ६८ ॥

( श्रीमल्लक्ष्मणसङ्गीते पृष्ठ १५४ )

सगौ मगौ रिसौ रिश्च सनी धपौ रिगौ सपौ ।

मगौ रिसौ भवेदन्या शुद्धमेलोत्थमंजरी ॥

( अभिनवरागमंजर्याम् ॥१५२॥ )

इसके अतिरिक्त आगे दी हुई दोनों चीजों का समावेश ग्रंथकार ने बिलावल थाट के अन्तर्गत किया है; अतः वे दोनों चीजें यहां दी जा रही हैं ।

काफी मेलोत्पन्न 'पटमंजरी' की चीजें आगे काफी थाट के प्रकरण के अन्तर्गत क्रमिक पुस्तक मालिका के छठे भाग में दी जायेंगी ।

### साधारण चलन.

साग, गम रेरे, सासा, साध, सारेसा, धधप, पपरेरे, रेरेरेगसा,  
साग, गमप, मगमरेसा । पपसां, सांसांसारेंसां, सांगंगमंपं, मंगं,  
मरेंसां, पपरेंसां, पधप, गरेगमरेरेसा ।

## पटमंजरी—धमार ( बिलंबित )

( बिलावलमेलजन्य प्रकार )

## स्थायी.

नि	सा	ग	रे	ग	म	प	म	—	ग	रे	—	नि	सा	रे	सा	सा
चा	ह	ऽ	त	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म	न
×						२			•			३				
सा	नि	—	ध	सा	—	—	सा	नि	ध	नि	ध	प	—	—	—	—
हो	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	२	खे	ल	न	ऽ	को	ऽ	ऽ	ऽ		
×						२	•				३					
म	प	—	—	—	—	ग	ग	रे	ग	ग	सा	—	—	सा		
प	रे	—	रे	—	—	रे	—	ग	रे	ग	सा	—	—	सा		
लो	ऽ	ऽ	ग	ऽ	न	ऽ	ला	ऽ	ऽ	जे	ऽ	ऽ	ल			
×					२	•				३						
नि	सा	ग	रे	ग	म	प	ग	रे	ग	ग	सा	रे	सा	—		
जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ये	ऽ	र	हे	ऽ	ऽ	ऽ			
×					२	•				३						

## अन्तरा.

म	प	—	—	सां	—	—	सां	सां	—	—	नि	सां	रें	सां	—	
कृ	ऽ	ऽ	ष्ण	ऽ	ऽ	२	सु	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ		
×					२	•					३					
सां	नि	—	ध	सां	—	रें	सां	नि	ध	नि	ध	प	—	—	—	
रं	ऽ	ऽ	ग	ऽ	ऽ	२	मा	र	त	ऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ		
×					२	•					३					
ध	ग	—	ग	—	—	ग	ग	रे	ग	—	प	सा	—	सा	—	
प	रे	—	रे	—	—	रे	रे	ग	—	सा	—	सा	—			
भी	ऽ	ऽ	ज	ऽ	ऽ	२	ग	ई	ऽ	ऽ	त	ऽ	न	ऽ		
×					२	•					३					

नि	सा	ग	रे	ग	म	प	म	—	ग	रे	ग	रे	सा	—	—	—
सा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
×						२						२				

पटमंजरी-धमार ( विलम्बित ).

( विलावलमेलजन्य प्रकार )

स्थायी.

नि	सा	ग	रे	ग	—	—	म	ग	रे	सा	नि	सा	रे	सा	सा
रू	५	५	प	५	५	५	जो	व	न	५	गु	५	न	५	५
×						२					२				
नि	सा	नि	ध	सा	—	सा	रे	सा	नि	सा	ध	—	प	—	—
खे	५	५	ल	५	५	५	त	हो	५	५	री	५	५	५	५
×						२					३				
ध	प	प	—	रे	—	ग	रे	ग	रे	ग	रे	सा	—	—	सा
न	यो	५	५	५	५	५	जो	व	न	५	को	५	५	उ	५
×						२					३				
नि	सा	ग	रे	ग	म	प	म	—	ग	रे	ग	सा	—	—	—
भा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
×						२					२				

अन्तरा.

म	प	—	—	सां	—	—	सां	सां	—	—	सां	सां	रें	सां
अं	५	५	ग	५	५	५	म	भू	५	५	त	न	य	न
×						२					२			



नि	सां	गं	रें	गं	में	पं	मं	गं	रें	—	सां	रें	सां	सां		
	म	द	ऽ	तें	ऽ	ऽ	भ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	इ	ठ		
×						२		०			३					
सां	—	प	ध	—		प	ध	प	ध	म	—	ग	रे	ग	सा	
ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ		व	त	व	न	ऽ	व	ऽ	ऽ	न		
×						२		०			३					
नि	सा	ग	रे	ग	म	प	म	—	ग	रे	ग	नि	सा	रे	सा	सा
आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ	।
×						२		०			३					

## पटमंजरी-सूलताल ( मध्यलय ).

( विलावलमेलजन्य प्रकार )

स्थायी.

नि	सा	ग	ग	म	—	ग	ग	ग	ग
सा	शू	ऽ	ल	ख	ऽ	प्प	र	ड	म
त्रि	×	०		२		३		०	
म	रे	ग	म	प	म	ग	रे	सा	—
रू	ऽ	ली	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ये	ऽ
×		०		२		३		०	
सा	—	रे	म	—	म	ग	रे	सा	—
दे	ऽ	ऽ	व	ऽ	न	दे	ऽ	व	ऽ
×		०		२		३		०	
सा	—	निध	सा	—	—	सा	रे	सा	—
नि						ग			
मा	ऽ	ऽऽ	हा	ऽ	ऽ	दे	ऽ	व	ऽ।
×		०		२		३		०	

अन्तरा.

प	प	सां	सां	सां	—	सां	रे	सां	—
त्रि	प	ऽ	व	वा	ऽ	ह	ऽ	न	ऽ
×		०		२		३		०	
प	—	प	म	—	म	प	—	ग	—
चं	ऽ	द्र	मा	ऽ	ल	ला	ऽ	ट	ऽ
×		०		२		३		०	

ग	म	गरे	ग	म	प	म	ग	रे	सा	-
ली	SS	SS	ये	S	S	S	S	S	S	S
×			०		०		३		०	
नि		रे	-	म	-	म	म	रे	सा	-
सा	S	S	S	व	S	न	दे	S	व	S
दे			०		२		३		०	
×					सा					
सा	निध	सा	-	ग	-	रे	-	सा	-	
नि	SS	हा	S	दे	S	S	S	S	व	S
मा		०		२		३			०	
×										

एटमंजरी-चौताल ( विलम्बित ).

( विलावलमेलजन्य प्रकार )

स्थायी.

सा	सा	म	ग	-	सा	नि	-	प	नि	-	सा
अ	नू	S	ह	S	त	ना	S	S	द	S	स
०		३		४		×		०		२	
-	सा	नि	रे	सा	-	सा	सा	म	ग	-	सा
S	मू	S	S	द्र	S	अ	प्र	S	पा	S	र
०		३		४		×		०		१	
सा	सा	सा	नि	-	प	सा	रे	ग	ग	ग	सा
लै	गु	नि	गा	S	वे	सु	ध	अ	लं	S	का
०		३		४		×		०		२	







## राग हंसध्वनि.

—\*—

हंसध्वन्याह्वयो रागः स्यात् शुद्धस्वरमेलनात् ।  
 आरोहेऽप्यवरोहे च मधहीनो भवेत्सदा ॥७४॥  
 स्वरःपङ्क्तौ मतो वादी कैश्चिद्गांधारको ह्यसौ ।  
 गानमस्य समादिष्टं रात्र्यां प्रथमयामके ॥७५॥  
 हिन्दुस्थानीयपद्धत्यां प्राचुर्यं नास्य दृश्यते ।  
 संगीते दाक्षिणात्यानां स तु साधारणो मतः ॥७६॥

श्रीमल्लक्ष्म्यसंगीते ( प्रथमावृत्ति ) पृ० ७४

‘हंसध्वनि’ कर्नाटकी पद्धति का राग है। यह उत्तर भारत में विशेष प्रसिद्ध नहीं हुआ है। सम्भवतः इसीलिये ग्रंथकार ने इस राग को ‘श्रीमल्लक्ष्म्यसंगीत’ की द्वितीय आवृत्ति में क्रम कर दिया है। यह राग बिलावल थाट से उत्पन्न होता है और औड़व जाति का है। इसमें मध्यम और धैवत स्वर वर्ज्य होते हैं। इसका वादी स्वर पङ्क है। कोई-कोई गांधार को वादी मानते हैं। यह राग रात्रि के प्रथम प्रहर में गाया जाता है।

इसका साधारण चलन निम्न रूप में होता है:—

चलन

सारेगसा, सा, गपगरे, गपनि, पनिनि, सां, रेंसां, रेंगेंसां  
 नि, पनिरेंसांनि, गरेगपनि, नि, रेंगेंसां ।

हंसध्वनि—त्रिताळ ( मध्यलय ) .

स्थायी.

सा रे ग रे	सा रे नि सा	नि प नि नि	सा - - सा
गु णि ज न	हं ऽ स ध्व	नि को स म	भा ऽ ऽ य
•	३	×	२
सा - ग रे	ग - ग ग	सां नि प प	रे - - नि
शं ऽ क र	भू ऽ प न	मे ऽ ल मि	ला ऽ ऽ य
•	३	×	२

अन्तरा.

ग - ग -	प - नि नि	सां सां रे नि	सां सां सां सां
गा ऽ वा ऽ	दी ऽ सु र	ह र त च	तु र म न
•	३	×	२
गं रे नि रे	नि प ग रे	नि प ग रे	ग रे सा ऽ ।
•	३	×	२

## राग दीपक.

( विलावलमेलजन्य प्रकार )

वेलावलसुमेलोत्थो निद्वयः श्रूयते क्वचित् ।  
लक्ष्यगतमनुसृत्य बुधः कुर्यात् स्वनिर्णयम् ॥

( श्रीमल्लक्ष्यसंगीते द्वि० ) ॥ ६७ ॥ पृ. १२७

यह बहुत प्राचीन रागों में से है। ग्रन्थों में इसका वर्णन प्राप्त होता है। इसका स्वरूप आजकल भिन्न-भिन्न प्रकार का प्रचलित है। उसमें से एक विलावल मेलजन्य प्रकार है जो विहाग और भिम्कोटी के मिश्रण से गाया जाता है। इसका विस्तार प्रायः मन्द्र और मध्य सप्तक में ही होता है। यह रात्रिगेय राग है। इसका वादी स्वर गांधार है। कोई-कोई षड्ज को वादी मानते हैं। इसके आरोह में ऋषभ स्वर वर्ज्य है और धैवत स्वर वक्र लगता है। कोई-कोई इसे खमाज मेलोत्पन्न मानते हैं। मुख्य प्रचलित प्रकार पूर्वी थाट का है। उसकी चीजें आगे पूर्वी थाट के प्रकरण में देखी जावें।

चलन.

प, मपध, पनि, निंसा, साग, गरेसा, गुमप, धप, निधप,  
( म ), गम, पमग, रेसा, नि, ध, पधसा, सा  
नि, धप ।

उठाव.

सा, गमप, म, गमपमग, रेसा, प, म, मग, रेसा, सा, निधप ।





## ( ३ ) भाग के दाहिने भाग में

अथवा	अथवा	अथवा
अथवा	अथवा	अथवा
अथवा	अथवा	अथवा
अथवा	अथवा	अथवा
अथवा	अथवा	अथवा
अथवा	अथवा	अथवा
अथवा	अथवा	अथवा
अथवा	अथवा	अथवा
अथवा	अथवा	अथवा
अथवा	अथवा	अथवा

## खंमाज थाट.

## संमाज थाट के राग ( ६ )

भिमोटी  
 खंवावती  
 तिलंग  
 दुर्गा  
 रागेश्वरी

गारा  
 सोरठ  
 नारायणी  
 सावन ( देस-धंग )

---

श्री गुरुदेव

## राग किंभोटी



किंभूटीत्येष रागः सकलजनमतः कोमलाभ्यां मनिभ्या ।  
मन्ये तीव्राः प्रयुक्ताः क्वचिदपि मृदुगस्तीव्रनिश्चापि गेयः ॥  
वादी गांधार उक्तः श्रुतिरुचिरतरो धैवतः संप्रवादी ।  
प्रारोहेऽल्पौ निगौ स्तो निशि मधुरगलैर्मंद्रमध्याभिगीतः ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ८७ ॥

धसी रिमौ गपी मश्च गरी सनी धपौ तथा ।

किंभूटी गांधिका नक्तं स्वमेलोत्थसमाश्रया ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ १६ ॥

कोमल मनि किंभूटि है चढत न लगे निखाद ।

कहुँ कोमल गन्धार है धग संवादीवाद ॥

रागचंद्रिकासार ॥ ८६ ॥

किंभोटी राग खमाज थाट से उत्पन्न होता है । यह आरोह-अवरोह में सम्पूर्ण जाति का है । इसमें गांधार स्वर वादी है । सम्वादी निषाद है । गायन का समय रात्रि का दूसरा प्रहर है । इसे खमाज थाट का आश्रय राग कहा जाता है । इसका स्वरूप बहुत सीधा और सरल है । यह भी एक लुट्ट रागों में से है । इसका विस्तार प्रायः मन्द्र और मध्य सप्तक में विशेष रूप से होता है । इसके आरोह में रिषभ ग्रहण किया जाने से इससे खमाज भिन्न हो जाता है । इसके सिवाय इसका सरल आरोह भी इसे अन्य रागों से स्वतन्त्र बनाये रखता है । “धुसा, रे मग” स्वर समुदाय रागवाचक है ।

आरोहावरोह स्वरूप.

सा रे ग म प ध नि सां । सां नि ध प म ग रे सा ॥



उठाव.

धसा, रेम, ग, पमगरेसान्निधप ।

चलन.

धसा, रेमग, प, मग, रेसा, निधप, धसा, रेमग, गमपमग,  
धपमग, सारेग, सा, निधप, धसा, रेमग ।

प्रकार २

सा, रेग, सा, ध, पधसा, सा, रेमपध, मग, गमसा,  
रेपमग, सा, रेग, सा, ध, पधसा ।

## भिम्भोटी—त्रिताल ( मध्यलय )

स्थायी.

ध सा रे <sup>म</sup> पम	ग - ग ग	म रे ग सा	ध नि ध प
आ ऽ श्र यऽ	रा ऽ ग क	ह त गु नि	ज न स व
३	×	२	०
प - रे -	रे ग सा -	प म ग रे	सा नि ध प
भि ऽ भो ऽ	टी ऽ को ऽ	स र ल सु	ग म सुर ।
३	×	२	०

अन्तरा.

सा ग - म	प - प प	ग ग म ध	प म ग ग
वा ऽ दि गं	धा ऽ र नि	स द्वि ती ऽ	य प ह र
३	×	२	०
ध म प ग	म रे ग सा	रे नि सा ध	नि प ध प
ज न क रा	ऽ ग क हे	च तु र नि	रं ऽ त र ।
३	×	२	०

## भिम्भोटी—दादरा ( मध्यलय )

स्थायी.

नि नि नि	सा सा सा	नि ध नि	ध प प
म धु र	म धु र	प न ध	ट प र
×	०	×	०
सा ध - ध	सा - रे	रे - ग	- म -
भि ऽ भु	टी ऽ व	जा ऽ ई	ऽ ऽ ऽ ।
×	०	×	०

नि	नि	सा	ग	ग	म	प	प	प	ध	म	प
सु	ध	बु	ध	स	व	ह	र	न	क	र	त
×			रे			×			°		
ग	म	ग	सा	सा	सा	ग	रे	—	ग	—	म
च	तु	र	स	खि	क	न्हा	ऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ।
×			°			×			°		

## अन्तरा.

सा	—	ग	—	ग	म	प	—	प	प	ध	प
कां	ऽ	भो	ऽ	जी	ऽ	ठा	ऽ	ठ	क	र	त
×			°			×			°		
प						ग	म				
ग	—	ग	—	म	प	म	प	म	ग	ग	ग
गा	ऽ	वा	ऽ	दी	ऽ	सु	र	उ	च	र	त
×			°			×			°		
ग	ग	म	म	म	म	गम	प	म	ग	—	ग
अ	ति	सु	ल	भ	वि	ची	ऽ	त्र	रू	ऽ	प
×			°			×			°		
ग	म	ग	रे	सा	—	ग	रे	—	ग	—	म
रा	ऽ	गि	नि	को	ऽ	मा	ऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ।
×			°			×			°		

भिम्भोटी-त्रिताल ( विलम्बित ).

स्थापी.

रेप  
अंलि

म - - ग, गरे	ग - सा सारे	सा नि - धध	सा - - सासा
पां S S जो, ह S	ती S S अब	नै S S नम	ये S S कज
म	X	प प	रे
रे म - पध	सां - नि धप	ध म - गग	ग सा, - रेप
रा S S जोदि	यो S S मृग	छो S S वन	को S S अंलि
३	X	२	०

अन्तरा.

मप  
तब

सां - नि धध	सां - - पप	सां ध सां - गेंम	गं सां - सांरें
धा S S रिह	ती S S अब	ना S S रिभ	ई S S पिथा
३	X	२	०
सां नि - धध	सां नि - धप	ध म - गग	ग सा - रेप
से S S जके	बी S S चवि	छो S S नन	को S S अंलि
३	X	२	०



रे रे	ग (सा)	सानि	नि धनिपध	ध सानि	सा धध	सा सासा	ग रेम पध	सा सा निनि धप
मेऽ	रेऽ	SS	मऽनऽ	ला SS	ऽ	लंगो	पाऽ SS	SS लऽ
३		४		X	•		२	•
प नि	ध धम	प	मसा	म रे प	प मग ग	प ग मसा	सा सा रेग	
की	मुऽ	र	ऽत	ठा ऽ	दिऽ	र	ही SS	री SSS
३		४		X	•	२	•	
ग सा	नि नि	नि धनिपध						
मे रे	SS	मऽनऽ						
३	४							

प	मम	पध	सांघ	सांसां	नि सां	रें	गंसां	सां, निध	ध रे	पध सांनि	ध (म)
मधु	रम	धुर	धुन	मुर लीअ	धुर	ध, रेऽ	वाऽ	ऽऽ	ज	त	
३		४		×		०	२				
प	ग	मसा	सा	सा	म	पम	प	गग	ग मग	सा, सारेग	
	गा	ऽऽ	व	त	रे	प	—	नर	सा	ले, ऽऽऽ	
	३		४		×		०		२		
	ग	सा	सा सा नि	निनि, ध निपध							
	मे	रे	ऽऽ	मऽनऽ							
	३		४								

भिम्बोटी चौताल ( विलम्बित ).

स्थायी.

ग  
रेप  
(  
अंलि

म -	-	गरे	ग -	सा	सारे	सा -	नि	ध, पध
यां ऽ	ऽ	जोह	तो ऽ	ऽ	अब	नै ऽ	ऽ	न, मेऽ
१	४		×	•		२	•	
सा -	-	सासा	रे म	-	पध	सां -	नि	धध
ये ऽ	ऽ	कज	रा ऽ	ऽ	जोदि	यो ऽ	ऽ	ऽऽ
१	४		×	•		२	•	
सां नि	-	धप	ध प म	गरे	ग सा	-	रेप	
ऽ ऽ	ऽ	मृग	छौ ऽ	ऽ	नन	को ऽ	ऽ।	अंलि
१	४		×	•		२	•	

अन्तरा.

प  
मप  
(  
तव  
(  
गं  
रेमं  
(  
रिभ

सां -	नि	प मप	सां ध	सां -	पप	सां ध	सां -
बा ऽ	ऽ	रिह	ती ऽ	ऽ	अब	ना ऽ	ऽ
×	•		१	•		१	४

गं -	सां सांरें	सां -	नि धप	सां ध	सां नि	धप
ई S	S पिया	से S	S जके	बी S	S	चवि
X	०	२	०	३	४	
घ प	म गरे	ग सा	रे, रेप	म -	-	गग
छो S	S नन	को S	S अंलि	यां S	S	जोह
X	०	२	०	३	४	

उपरोक्त चीज पृष्ठ २७३ पर त्रिताल में दी गई है, किन्तु कोई-कोई गायक इसे चौताल में यहां दिये हुए प्रकार से गाते हैं।

### झिंझोटी—एकताल ( मध्यलय ) .

स्थायी.

					-	ध	ध	सा	रे	-
					S	ज	हां	क	छू	S
					०		३		४	
ग -	ग ग	म ग	सा -	सा नि	धप	ध				
ता S	जि में	ना S	हं S	ग ढा	SS	ल				
X	०	२	०	३	४					
ग -	ग गरे	ग सा	सा ध	ध सा	रे	-				
नी S	ति रीS	S ति	S नां	हि र	हे	S				
X	०	२	०	३	४					
ग -	म ग	ग -	म ग	म ग	रे	-				
री S	त ज	हां S	व हां	S क	हां	S				
X	०	२	०	३	४					

रेरे (कहि) X	ग	म	ग	रे	सा	,	ध	ध	सा	रे	-
	S	S	S	S	ये	,	ज	हां	क	छू	S
		०		२		०		३		४	

## अन्तरा.

	सा	सा	ग	-	ग	म	प	-	प	प	-
S	ज	हां	क	S	छू	सु	ने	S	न	हीं	S
X		०		२		०		३		४	
	ग	ग	म	-	म	ग	ग	-	रे	सा	-
S	क	हो	को	S	उ	क	हे	S	न	हीं	S
X		०		२		०		३		४	
	सा	ग	ग	-	ग	ग	ग	-	ग	म	-
S	क	हि	ये	S	तो	सु	ने	S	जै	से	S
X		०		२		०		३		४	
	ग	रे	ग	रे	सा	ध	ध	,	सा	रे	ग
रू	S	ठ	रू	S	ठ	स	ही	S	ये	S	S
X		०		२		०		३		४	
	म	ग	रे	सा	नि	ध	प	सा	ध	ध	सा
S	S	S	S	S	S	S	S	ज	हां	क	छू
X		०		२		०		३		४	



भिम्भोटी-चौताल ( मध्यलय )

स्थायी.

ग	ग	म	—	ग	रे	सा	रे	म	—	—	म
ह	त	ना	ऽ	को	१	उ	क	हो	ऽ	ऽ	मे
२		सां		१		४	×	×			
प	प	ध	सां	सां	सां	नि	ध	प	प	ध	म
ऽ	री	ओ	ऽ	र	ते	ऽ	क	ऽ	र	जो	ऽ
२		०		३		४	×	×		०	
ग	ग	सा	सा	नि	—	ध	प	ध	सा	रे	म
र	जो	ऽ	र	वे	ऽ	गि	द	र	स	दी	ऽ
२		०		१		४	×	×		०	
ग	सा	नि	—	—	नि	ध	—	प	म	प	सा
जे	ऽ	व्या	ऽ	ऽ	कू	ऽ	ल	त	र	फ	त
२		०		३		४	×	×		०	
सा	रे	म	प	ध	सां	—	सां	सां	नि	ध	प
स	हो	ऽ	ना	जा	ऽ	ऽ	त	वि	ऽ	ऽ	छ
२		०		३		४	×	×		०	
—	सां	सां	सां	नि	—	ध	प	ध	म	ग	सा
ऽ	ध	ऽ	न	को	ऽ	दु	ख	भा	ऽ	री	ऽ
२	र	०		३		४	×	×		०	

अन्तरा.

म	-	प	प	सां	सां	-	सां	सां	-	सां
जो	ऽ	ए	क	प	ल	गो	ऽ	पि	न	ऽ
×		.		२		.		३		४

प	—	सां	सां	रे	गं	—	सां	—	सां	नि	ध	प
हो	५	त	क	ब	हुं	५	न	५	न्या	५	४	रे
×		०	०	०	०	०	०	३	०	४	४	४
ध	ध	म	ग	ग	सा	नि	सा	रे	नि	ध	प	प
प	५	ह	म	से	५	नि	हु	र	भ	५	४	ये
सो	५	०	०	२	०	०	०	३	०	४	४	४
×		०	०	२	०	०	०	३	०	४	४	४
सा	रे	म	प	ध	सां	सां	सां	नि	ध	प	प	प
म	धु	ब	न	जा	५	ये,	सु	धि	ना	५	४	सं
×		०	०	२	०	०	०	३	०	४	४	४
प	म	ग	सा,	ग	ग	म	—					
ध	५	रे	५	ह	त	ना	५					
भा	५	०	०	२	०	०	०					
×		०	०	२	०	०	०					

किंभोटी—धमार ( विलम्बित )

स्थायी.

सा	नि	—	ध	पुध	सा	—	—	ग	रे	प	—	म	—	ग	—	म
आ	५	यो	५५	फा	५	५	गु	न	५	५	मा	५	५	०	५	५
३				×					२							
रे	ग	ग	सा	—	सा	नि	—	—	धनि	पुध	सा	सा	—	सा	—	
स	स	खी	५	मो	५	५	हु	न	५	५	सं	ग	५	खे	५	
३				×					२							
रे	—	म	ग	म	ग	—	सा	रे	—	म	—	ग	सा	—		
५	५	ल	त	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	गी	५	५	५
३				×					२							

## अन्तरा.

प	म	म	—	प	ध	सां	—	सां	म	प	ध	सां	रें	मं
अ	वी	ऽ	र	गु	ला	ऽ	ल	की	ऽ	भ	र	पि	च	
×					२		०			३				
गं	—	सां	नि	—	ध	प	म	—	—	प	ध	सां	नि	
का	ऽ	ऽ	री	ऽ	मु	ख	मीं	ऽ	ऽ	ज	त	है	ऽ	
×					२		०			३				
नि	ध	प	—	ध	प	म	गरे	ग	सा	—				
व	र	ऽ	जो	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	री	ऽ					
×					२		०							

भिन्नोटी—धमार ( विलम्बित )

स्थायी.

प

च

म	ग	सा	रे	ग	रे	म	ग	—	सा	—	—	—	सा	नि	—
लो	रि	स	खि	ब्रि	ज	ऽ	में	ऽ	ऽ	ऽ	धू	ऽ	ऽ		
१				×					२		०				
—	—	ध	ध	सा	—	—	सा	—	सा	—	म	रे	म	—	
ऽ	ऽ	म	म	ची	ऽ	ऽ	हो	ऽ	री	ऽ	खे	ल	ऽ		
१				×					२		०				
प	—	ध	ध	सां	नि	—	ध	प	ध	म	ग	सा,	प		
त	ऽ	नं	द	ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल	ऽ	च		
१				×					२		०				





## राग खंवावती.

—:❀:—

खंवावती मृदुमनी रिगधैश्च तीव्रै-

युक्तापभेण नियतं रहितावरोहे ।

गांशा निषादसहचारिसमाश्रिता च

गायन्ति तां किल निशि प्रहरे द्वितीये ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ८३ ॥

रिमौ पधौ पधौ सश्च निधौ पधौ मगौ मसौ ।

गांशा खंवावती रात्र्यां मससंगमनोहरा ।

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ ६४ ॥

खंमाजसि खंवावती उत्तरत रिखव न देखि ।

मध्यमसँ खरजहि गहे पंचम वक्र बिसेखि ॥

राग चन्द्रिकासार ॥ ८२ ॥

खंवावती राग, खमाज थाट से उत्पन्न होता है । खमाज के नियमों में किंचित् परिवर्तन करने से खंवावती राग उत्पन्न हो जाता है अर्थात् इस राग का स्वरूप प्रायः खमाज जैसा ही है । इस राग में "म सा" स्वर संगति विशेष रंजकता उत्पादक होती है । खमाज के आरोह में ऋषभ वर्ज्य होता है, वही स्वर इस राग के आरोह में रक्तिवर्धक होजाता है । इस राग का वादी स्वर गांधार और संवादी स्वर धैवत है । यह रात्रि के द्वितीय प्रहर में गाया जाता है । खमाज और मांड राग के संयोग से यह राग उत्पन्न होता है । उत्तरांग में कुछ वागेश्री का आभास हो जाता, परन्तु इसमें कोमल गांधार नहीं होने से वह राग भिन्न हो जाता है । इसमें "धम" संगति रागांग दर्शक होती है ।

इस राग में "रेमप" और " धमग, मसा" ये टुकड़े महत्वपूर्ण होते हैं ।

उठाव.

रेमपध, पधसां, निधपधम, गमसा ।

चलन.

सा, रेमप, ध, पधसां, निधपध, म, ग, मसा । म, मप,  
नि, सांसारेंगसां, निध, धनिप, धसांनिध, प,  
धम, ग, मसा ।



सां	सां	सां	नि	प	ध	ध	सां	सां	नि
ध	ध	ध	वि	प	प	ध	त्र	मो	हे
अ	भि	न	व	वि	ची	५	३	मो	हे
×		२			०				
नि	प	ध	ध	म	ग	—	म	सा	—
ध	५	५	५	दि	खा	५	ग	यो	५ ।
रू	५	५	५	२	०		३		
×									

स्वभावती—सूलताल ( मध्यलय ) .

स्थायी.

प	—	(म)	—	प	ग	ग	म	सा	सा
ध	५	वा	५	ग	ग	ग	५	व	त
खं	५	०	२	ति	गा	३	५	०	
×									
म	रे	म	—	प	—	ध	—	प	ध
रे	रि	कां	५	भो	५	जी	५	सु	र
ह		०	३	सां	सां	सां	सां	नि	नि
×		ध	ध	सां	सां	ध	सां	नि	नि
नि	—	नि	ध	अ	नु	लो	५	म	ख
ध	५	ख	०	२	३	३			
री	५	०		प	ग	ग	म	सा	सा
×				ग	ग	ग	५	व	त
ध	प	ध	म	ग	ग	ग	म	सा	सा
मा	५	ज	न	व	त	ला	५	व	त
×		०	२	३	३	३			



## अन्तरा.

प	म	म	प	मां	नि	सां	नि	सां	सां
दु	र	गा	ऽ	रि	प	छां	ऽ	ड	त
×		०		०		३		०	
नि	—	रें	—	गं	गं	सां	—	नि	ध
सां									
रा	ऽ	गे	ऽ	स	री	पं	ऽ	च	म
×		०		२		३		०	
नि	नि	धप	ध	सां	—	ध	सां	नि	नि
ध									
अ	रि	धऽ	ति	लं	ऽ	ग	सो	र	ट
×		०		२		३		०	
नि	प	ध	म	ग	ग	ग	म	सा	सा
ध									
गां	ऽ	धा	ऽ	र	छु	पा	ऽ	व	त ।
×		०		२		३		०	

## खंवावती—त्रिताल ( मञ्जलय )

## स्थायी.

म	प	ध	ध	सां	नि	—	प	प	प	ग	—	म	सा		
रै	म	प	ध	ध	सां	नि	ध	—	(म)	मप	ग	—	म	सा	
पि	या	बि	न	नै	ऽ	ना	नी	ऽ	द	नऽ	आ	ऽ	वे		
३				×			२				०				
सां	सां	सां	प	ध	सां	नि	धप	ध	(म)	प	ग	—	म	सा	
नि	नि	सां	प	पध	रें	सां	नि	धप	ध	(म)	प	ग	—	म	सा
पि	या	बि	न	नै	ऽ	ना	नी	ऽ	द	नऽ	आ	ऽ	वे		
३				×			२				०				



सॉिंगं	गं	सां	नि	ध	म	मप	ग	म	सा
निऽऽ	क	स	त	प्रा	ऽ	णऽ	म्हा	ऽ	रे।
×		२			०		३		

अन्तरा.

प	म	—	प	सां	—	सां	सां	—	सां
नीं	ऽ	द	ना	ऽ	व	त	नै	ऽ	न
×		२			०		३		
सां	सां	सां	रें	गं	सां	सां	नि	ध	ध
वि	र	हऽ	विऽ	थ	त	न	जा	ऽ	रे
×		२			०		३		
नि	नि	नि	नि	प	प	ध	सां	सां	नि
ध	ध	ध	ध	प	प	ध	सां	सां	नि
ह	र	रें	ग	पि	या	ऽ	के	वि	न
×		२			०		३		
सां	प	प	म	म	मप	ग	—	म	सा
नि	ध	म	म	म	ग	—	म	सा	सा
क	व	न	दु	खऽ	हा	ऽ	ऽ	ऽ	रे।
×		२			०		३		

खंवावती—आढाचौताल ( बिलंबित )

स्थायी.

म	रे	म	प	—	ध	—	—	ध	सां	सां	नि	—	ध	प
मैं	तो	ऽ	ऽ	जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	गी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सा
४		०		×	२			०		३			०	

ग	मसा	सा	सा	ग	म	म	प	सां	सां	सां	सां	रे
५	५	रा	५	ए	री	५	मा	ई	५	५	पि	या
४		.		×		२		.	३		.	
-	सारेंगं	-	सांसां	सां	नि	ध	-	नि	नि	नि	प	प
५	५५५	५	बिछु	रे	५	५	५	क	र	व	ट	लू
४		.		×		३		.	३		.	
सां	-	नि	-	नि	ध	प	प	म	ग	ग	म	सा
५	५	५	५	त	र	फ	५	५	त	र	५	फ
४		.		×		२		.	३		.	

अन्तरा.

प	म	प	-	सां	नि सां	-	सां	-	सां	नि सां	सां	-		
सु	प	नें	ऽ	नीं	ऽ	ऽ	द	ऽ	न	आ	ऽ	वे	ऽ	
४		.		×		२		.		३		.		
सां	सां	रें	गं	सां	-	नि ध	ध	-	नि	प	-	पध		
वि	र	हा	ज	री	ऽ	ऽ	ऽ	चों	ऽ	ऽ	क	ऽ	उऽ	
४		.		×		२		.		३		.		
ध	सां	-	नि	-	नि	ध	प	ध	म	ग	ग	म	सा	-
ठी	ऽ	ऽ	ऽ	भि	भ	क	ऽ	ऽ	भि	भ	ऽ	क	ऽ	
४		.		×		२		.		३		.		



## राग तिलंग.

तिलंगिकाऽथ कथिता गांधारांशविराजिता ।

निषादसंवादिनी च धैवतर्षभ वर्जिता ॥ ६६ ॥

औडुवा संगतिस्त्वस्यां स्यात् पंचमनिषादयोः ।

गानमस्या विनिर्दिष्टं द्वितीयप्रहरे निशि ॥ ६७ ॥

गांधारस्तीव्र आख्यातो मध्यमश्चैव कोमलः ।

उभावपि निषादी स्तस्तीव्रकोमलसंज्ञकौ ॥

सङ्गीतसुधाकरे ॥

निसौ गमौ पनी सश्च सनी पगौ मगौ च सः ।

तैलंगी चौडुवा गांशा रात्रौ द्वितीययामके ॥

अभिनवररागमंजर्याम् ॥६८॥

औडव कोमल मनि जहां धैवत रिखव न होइ ।

गनि वादीसंवादिते राग तिलंग कहोइ ॥

राग चन्द्रिकासार ॥६९॥

राग तिलंग, खमाज थाट से उत्पन्न होता है। इसमें ऋषभ और धैवत स्वर वर्ज्य होते हैं। इसकी जाति औडव औडव है। इसका वादी स्वर गांधार और संवादी स्वर निषाद है। गायन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। यह खमाज अंग का राग है। इसमें धैवत नहीं लगता, अतः यह सहज में ही खमाज से भिन्न रखा जा सकता है। “नि प” स्वर संगति राग वाचक है। “नि, प, गमग सा” यदि इतने स्वर गाये जावें

तो श्रोता तिलंग की ही आशा करने लगते हैं। कोई-कोई अवरोह में थोड़ा ऋषभ ग्रहण करना भी स्वीकार करते हैं। आजकल इस तरह का प्रचार भी होने लगा है।

### आरोहावरोहस्वरूप

सा ग म प नि सां । सां, नि, प, मग, सा ।

### चलन

निसागमप, निप, सांनिप, गमग, पग, मगसा । निसां,

निप, सांनिप, गंमंगं, गंमंगंसां, सांनिप, गमग,

पगमग, सा ।

तिलंग-त्रिताल ( मध्यलय ) .

स्थायी.

ग म

रि ध

प नि सां सां	सां नि प सां	सां नि प म	ग ग, ग म
व र जि त	रू ऽ प ति	लं ऽ ग क	हा ड्यु, रि ध
२	०	३	×
प नि प सां	सां नि प नि	नि प म म	ग ग, ग म
व र जि त	रू ऽ प ति	लं ऽ ग क	हा ड्यु, हरि
२	०	३	×
प ग प म	ग - नि सा		
कां ऽ भु जि	के ऽ सु र	नि सा ग म	प ग म ग
२	०	३	×
	नि सां	सां नि प म	ग ग, ग म
म प नि नि	सां गं नि त	सा ऽ च ल	गा ड्यु, रि ध
२	०	३	×

अन्तरा.

ग म प नि	नि सां सां सां	प नि सां सां	सां नि प प
रा ऽ ग ख	मा ऽ ज रि	ध क व हं	न त ज त
३	×	२	०
ग म ग म	प - नि सां	सां गं मं गं	सां नि प, सां
आ ऽ श्र य	भि ऽ भू ऽ	टि च तु र	क ह त, अ
३	×	२	०

नि प ग म	ग —, ग म	प नि सां सां
रि प दु र	गा ऽ। रि ध	व र जि त
३	×	२

तिलंग—भमताल ( मध्यलय ).

स्थायी.

प	—	सां नि प	प	ग	म	प	ग	रे
सां	—	सां नि प	ग	म	प	म	ग	
गा	ऽ	य स खी	रा	ऽ	धि का	ऽ		
×		२	०		३			
म	—	म प नि	नि	प	म	ग	—	
ग	—	म प नि	नि	प	म	ग	—	
रा	ऽ	ग नी ति	लं	ऽ	गि का	ऽ		
×		२	०		३			
म	सा	म ग म	प	ग	म	नि	प	
ग	सा	म ग म	प	ग	म	नि	प	
×		२	०		३			
प	—	नि नि प	प	ग	म	प	ग	रे
सां	—	नि नि प	ग	म	प	म	ग	
सो	ऽ	हे स्व र	मा	ऽ	लि का	ऽ		
×		२	०		३			

अन्तरा.

म	—	म प —	सां नि	सां	नि सां सां
ग	—	म प —	नि	सां	नि सां सां
वा	ऽ	दि गं ऽ	धा	ऽ	र सु र
×		२	०		३



सां				नि			
नि	—	नि	सां	सां	—	सां	नि प
बो	ऽ	ले	जे	सी	ऽ	रि	का ऽ
×		२			०	३	
ग		रे	म				
म	ग	सा	ग	म	—	नि	सां गं
अ	ध	र	क	र	ऽ	ल	ह रि
×		२			०	३	
रे					प	ग	रे
सां	—	नि	नि	प	ग	म	प म ग
पू	ऽ	र्व	कां	ऽ	भो	ऽ	जि का ऽ।
×		२			०	३	

तिलंग-त्रिताल ( मध्यलय )  
स्थायी.

ग  
म  
स

प	सां	निप	नि	सां	सां	—	नि	प	प	ग	म	प	प	ग	म	ग	—
ज	नऽ	तु	म	का	ऽ	हे	न	ह	रि	गु	न	गा	ऽ	वो	ऽ		
०				३				×				२					
ग	म			सां				ग				सां					
सा	—	ग	म	प	प	नि	सां	सां	नि	प	म	प	निप	नि	सां		
ना	ऽ	ह	क	ज	न	म	ग	मा	ऽ	वो।	स	ज	नऽ	तु	म		
०				३				×				२					

अन्तरा.

प				सां	—	सां	सां	सां	सां	नि	प	प					
ग	म	प	नि	मो	ऽ	हि	त	अ	खि	ल	ज	ग	म	ग	ग		
०				३				×				२					
त्र	य	गु	ण									ग	त	य	ह		

सा नि सा ग म	सां प - नि सां	ग सां नि प म
ना ऽ ह क	दे ऽ ख लु	भा ऽ बो, । स
०	३	×

तिलंग-त्रिताल ( मध्यलय )

स्थायी.

गम  
होमे

प नि सां सां	सां नि प नि	नि नि प गम	ग - ग, म
रे तो म न	श्या ऽ म सुं	द र ऽ बन	मा ऽ ली, मे
३	०	३	×
प नि प नि सां	सां नि प सां	सां नि प गम	ग - ग -
रे तो ऽ मन	श्या ऽ म सुं	द र ऽ बन	मा ऽ ली ऽ
३	०	३	×
नि			
सा - ग म	प - - नि नि	सां - सां गं	(सां) नि प गम
जा ऽ य बु	ला ऽ ऽ वोको	ई ऽ मो री	आ ऽ ली होमे ।
३	०	३	×

अन्तरा.

ग म प नि	सां सां सां सां	प नि सां सां	प ग नि प म ग
वि न द र	स न म न	धी ऽ र ध	र त ना हिं
०	३	×	३
सा सा ग म	प प सां गं	(सां) नि प गम	प नि सां सां
म द न मो	ह न गो ऽ	पा ऽ ल । होमे	रे तो म न
०	३	×	३

## तिलंग-त्रिताल ( मध्यलय )

स्थायी.

प नि सां सां	- नि प प	गम ग म प	ध नि प ग म
ब स कि नो	ऽ वा ट च	लऽ त जि या	पि या मो रा
२	०	३	×
प सां नि सां	प नि सां सां	सां ग रें (मं)	गं गं नि सां
ब स कि नो	मो रि आ ली	सु ध र पि	या ने क छु
२	०	३	×
प नि सां रें	निसां नि प प	गम ग म प	ध नि प ग म
जा दु कि नो	ऽऽ वा ट च	लऽ त जि या	पि या मो रा।
२	०	३	×

अन्तरा.

प म प नि नि	सां सां सां सां	नि सां गं रें मं	गं - (सां) -
ऐ सो टो ना	कि नो मो हे	सु ध बि स	रा ऽ ई ऽ
३	×	२	०
सां गं रें मं	गं रें सां सां	प नि सां रें	नि सां नि प प
वा ऽ ट घा	ऽ ट म न	ह र लि नो	ऽ वा ट च
३	×	२	०
गम ग म प	ध नि प ग म		
लऽ त जि या	पि या मो रा।		
३	×		

तिलंग-चौताल ( विलम्बित ).

स्थायी.

सा	नि	सा	ग	मप	प	ग	म	नि	प	-	नि	सां	सां
स	म	भ	स	स	म	भ	आ	ली	५	प्रा	५	न	
×		०			२		०			३			
नि	-	प	सां	प	नि	प	ग	म	प	ग	म	ग	
जा	५	त	प्या	रे	मो	ह	न	५	वि	५	न		
×		०		२		०		३		४			

अन्तरा.

ग	म	ग	म	प	नि	-	सां	सां	प	सां	नि	सां	सां
ब	हो	५	र	न	५	य	ह	५	रं	५	ग		
×		०		२		३		४		५			
नि	प	नि	-	सां	नि	सां	नि	प	ग	म	ग		
ब	हो	५	र	व	५	य	ह	५	रु	५	प		
×		०		२		३		४		५			
सा	नि	सा	-	ग	म	प	नि	सां	गं	नि	सां	सां	
ब	हो	५	५	५	५	र	न	५	र	५	हे		
×		०		२		३		४		५			
प	सां	-	-	नि	-	प	ग	म	प	ग	म	ग	
आ	५	५	ली	५	५	य	ह	५	दि	५	न।		
×		०		२		३		४		५			



## राग दुर्गा ( खंमाज थाट )



अथ दुर्गा निगदिता गांधारांश विभूषिता ।  
 निषादसंवादिनी स्यात्पंचमर्षभवजिता ॥  
 आहुवा मधयोनित्यं संगत्यातिमनोहरा ।  
 तीव्रौ धैवतगांधारौ मध्यमः कोमलस्तथा ॥  
 निषादौ द्वौ गीयतेऽसौ रात्रौ यामे द्वितीयके ॥

सङ्गीतसुधाकरे ।

गसा निधौ निसौ मगौ मधौ निधौ मगौ च सः ।  
 गांशिका कीर्तिता दुर्गा द्वितीये यामके निशि ॥

अभिनवरामंजर्याम् ।

गनि वादीसंवादि है मनिसुर कोमलकीन ।  
 गावत दुर्गा राग गुनि ओडव जो रिपहीन ।

रागचन्द्रिकासार ।

राग दुर्गा, खमाज थाट से उत्पन्न होने वाला राग है । इसी नाम का एक और राग विलावल थाट का है, जिसकी चीजें पीछे दी जा चुकी हैं । इस खमाज थाट के दुर्गराग में ऋषभ और पंचम स्वर वर्ज्य होते हैं । इसकी जाति ओडव है । वादी गांधार और संवादी निषाद होता है । इस राग में 'ध म' स्वरसंगति अच्छी शोभा देती है । इस स्वर संगति से किंचित बागेश्री का आभास होता है, परन्तु पूर्वाङ्ग में कोमल 'ग नी' न होने से यह राग भिन्न हो जाता है । इसके आरोह में

कुछ स्थलों पर तीव्र निषाद का प्रयोग होता है। इसके गायन का समय रात्रि का दूसरा प्रहर है।

आरोहावरोह स्वरूप.

सा ग म ध नि सां । सां नि ध म ग सा ।

चलन.

सा, निध, सा, मग, मधनि, ध, मग, । मधनिसां, गंमंगंसां,  
सां, निध, मग, धमग, म, सा ।

---

## दुर्गा-भूपताल ( मध्यलय )

स्थायी.

म			ध			ग		
ग	म	सा	नि	ध	सा	—	म	ग
दे	५	वि	दु	र	गा	५	स	दा
×								
म			नि					
ग	म	ध	ध	नि	ध	—	म	ग
गा	५	य	रे	५	मा	५	न	वा
×		२					३	
म		ग	म		ध			
ग	म	म	नि	ध	सां	—	सां	सां
जा	५	कि	कि	र	पा	५	सुं	स
×		२					३	ब
ध		सां						
सां	सां	सां	ध	धनि	ध	—	म	ग
ट	र	त	रि	पुऽ	आ	५	प	दा
×		२					३	५।

अन्तरा.

म			म					
ग	म	म	नि	ध	सां	—	सां	सां
मे	५	ल	खं	५	मा	५	ज	ग
×		२					३	त
ध								
सां	—	गं	गं	मं	गं	—	सां	सां
पं	५	च	सु	र	सुं	५	द	रा
×		२					३	
सां								
नि	सां	नि	ध	नि	ध	म	ग	म
×		२					३	ध







## राग रागेश्वरी

रागेश्वर्यपि पंचमेन रहिता खंमाजसंस्थानजा  
 प्रारोहे ऋषभं न संस्पृशति धो वक्रोऽवरोहे मतः ।  
 षड्जो वाद्यथ मध्यमेन सततं संवादिना रोचते  
 यामिन्यां प्रहरात्परं सुमतिभिर्मंजुस्वरं गीयते ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ८४ ॥

रिसौ निधौ समौ गश्च मधौ निधा मगौ रिसौ ।  
 रागेश्वरी मता तज्ज्ञैर्गाशिका रात्रिगोचरा ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ ६३ ॥

मनि कोमल पंचम नहीं धग संवाद सुहाइ ।  
 चढते रिखव न लगत है रागेश्वरी कहाइ ॥

रागचंद्रिकासार ॥ ८३ ॥

यह राग खमाज थाट से उत्पन्न होता है। इसमें पंचम स्वर बिलकुल वर्ज्य है और आरोह में रिषभ वर्ज्य है। इसकी जाति औड़व-पाड़व है। वादी स्वर गांधार और संवादी निषाद है। अन्य मत से 'सा-प' का संवाद होता है। इसके गाने का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसमें 'धम' स्वर संगति बड़ी मनोरंजक है। उत्तरांग में बागेश्री का आभास होता है, परन्तु पूर्वाङ्ग के तीव्र गांधार से यह राग बागेश्री से अलग हो जाता है। रिषभ के प्रयोग से दुर्गा राग को अलग कर देता है। कर्नाटकी पद्धति के 'रागलक्षण' नामक ग्रन्थ में 'नाटकुरंजिका' नामक रागिनी का वर्णन आता है, वह रागेश्वरी जैसी ही है।

आरोहावरोह स्वरूप.

सा ग, म ध नि सां । सां नि ध म ग रे सा ।

चलन.

सा, रेसा, निधनिंसा, मग, मध, निध, गग, मग,  
सारेसा, गमध, निसां, मंगं, रेंसां निध, मध, निध,  
मग, रे, सा, निध, सा ।

रागेश्वरी—भूपताल ( मध्यलय ).

स्वायी.

										रे
										प्र
नि	सा	नि	—	ध	सा	—	सा	—	सा	
थ	म	मे	ऽ	ल	सा	ऽ	धे	ऽ	,ह	
०		३			×		२			
२										
सा	—	नि	—	ध	नि	—	ध	—	सा	
री	ऽ	का	ऽ	बु	जी	ऽ	को	ऽ	,त	
०		३			×		२			
नि										
सा	ग	म	ध	ध	म	ध	सां	सां	रें	
ज	त	पं	ऽ	च	म	ऽ	स्व	र	,र	
०		३			×		२			
सां	सां	ध	नि	ध	म	म	ग	—	रे	
च	त	रा	ऽ	गे	शि	री	को	ऽ।	प्र	
०		३			×		२			

अन्तरा.

										म
										स
ग	म	नि	नि	ध	सां	सां	सां	—	सां	
ज	त	बा	ऽ	गे	शि	री	अं	ऽ	ग	
०		३			×		२			



नि	सां	गं	गं	गं	मं	गं	रें	सां	—	सां
अं	५	त	र	सु	गां	५	धा	५	र	
०		३			×		२			
सां	सां	ध	नि	ध	म	ग	रे	—	सा	
वि	न	रि	ख	व	अ	तु	लो	५	म	
०		२			×		२			
सा	सा	ध	—	नि	सा	ग	म	ध	ध	
र	वि	धं	५	द्रि	का	५	च	त	र	
०		३			×		२			
सां	सां	ध	नि	ध	म	—	ग	—	रे	
क	हे	रा	५	ग	नी	५	को	५,	प्र	
०		३			×		२			

रागेश्वरी—भूपताल ( मध्यलय )

स्थायी.

सा	सा	ध	नि	ध	सा	—	म	म	सा
थ	म	सु	५	र	सा	५	धे	५	प्र
०		३			×		२		
सा	सा	ध	नि	ध	सा	—	सा	—	सा
थ	म	सु	५	र	सा	५	ध	५	र
०		३			×		२		



ग	ध	घ	सां	सां	नि	नि	घ
म	५	सां	-	रें	सां	नि	घ
पा	५	वे	५	गु	रु	५	वे
×		१			०	३	
म	-	ग	-	रे			
आ	५	दे	५।	प्र			
×		०					

## राग गारा.

—:०:—

रिगौ रिसौ धनी पधौ निसौ गमौ रिगौ रिसौ ।  
गारा संकीर्तिता लोके गांशिका रात्रिगोचरा ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ ६५ ॥

द्वै गंधार निखाद द्वै मध्यम कोमल जान ।  
तीखे रिध बादी खरज गारा राग बखान ॥

राग चन्द्रिकासार ॥ १०० ॥

गारा, खमाज थाट से उत्पन्न होता है। इसमें दोनों गांधार और दोनों निषाद प्रयुक्त होते हैं। कोमल गांधार अवरोह में लगता है। इस राग का ढांचा खमाज अङ्ग का होने के कारण इसे खमाज थाट में सम्मिलित करना होगा। इसका बादी स्वर गांधार और संवादी धैवत अथवा निषाद माना जाता है। यह राग रात्रि के दूसरे प्रहर में गाया जाता है। इसका विस्तार मन्द्र और मध्य सप्तक में ही विशेष रूप से होता है। अनेक मर्मज्ञों का मत है कि मन्द्र मध्यम को षड्ज मानकर उस पर खमाज राग गाने से गारा उत्पन्न होता है। यह मत अधिकांश में यथार्थ है। कोई-कोई इसमें 'सा-प' का सन्वाद मानते हैं। यह राग छुद्र प्रकृति का अर्थात् ठुमरी जैसे गीतों के योग्य है। ऐसे रागों का एक नाम 'धुन' भी प्रचलित है।

राग का चलन इस प्रकार है:—

सा, धनि, मग, मप, मग, म, रेगुरेसा, निसा, निध निप,  
मप, धनि, रेनि, धनि, ग ।

ग, मग, साग, मप, म, रेगुरेसा, प, मप, गम, रेगुरेसा, रे,  
निसा, निध निप, मप, धनि ।



## गारा—एकताल ( मध्यलय )

स्थायी.

म	म	रे	ग	रे	सा	नि	सा	रे	सा	नि	ध
गु	नि	व	र	न	त	गा	ऽ	रे	के	सु	र
×		०		२		०		३		४	
म	—	नि	ध	सा	—	ग	म	प	ग	म	म
मं	ऽ	द	र	म	ऽ	ध्य	म	के	च	तु	र
×		०		२		०		३		४	
ग	म	ग	म	प	ग	म	प	ध	नि	ध	म
×		०		२		०		३		४	
ग	म	प	रे	ग	म	प	रे	ग	रे	नि	सा ।
×		०		२		०		३		४	

अन्तरा.

सा	—	ग	म	प	ग	म	—	ध	—	नि	ध
ती	ऽ	व	र	सु	र	सों	ऽ	रो	ऽ	ह	त
×		०		०		०		२		४	
म	ध	नि	ध	म	—	म	प	ग	—	रे	रे
को	ऽ	म	ल	सों	ऽ	अ	व	रो	ऽ	ह	त
×		०		२		०		३		४	
म	—	ध	नि	ध	सां	नि	ध	म	प	ग	म
दो	ऽ	उ	गं	धा	ऽ	रें	ऽ	वि	ल	स	त
×		०		२		०		३		४	
सां	ध	नि	प	ध	म	प	ग	म	ग	रे	सा
×		०		२		०		३		४	

## गारा-त्रिताल ( धीमा )

स्थायी.

रे सा नि ध	सा - सा सा	सा ग म प	मग रेग रे निता
का ऽ न प	री ऽ ज व	भ न क मु	रऽ लिऽ की रीऽ
३	×	२	.
नि ध नि ध	सा ग म प	ध मगम रे सा	नि सा रे सा
सु ध बु ध	क छु न हिं	र हीऽऽ म न	की ऽ री ऽ ।
३	×	२	.

अन्तरा.

प प सां -	नि नि सां सां	नि ध रें सां	सां नि ध प
ह रि कां ऽ	बु जि सु र	गा ऽ रे के	नि के क र
३	×	२	.
म ग म ग	म - प म	म ग रे सा	नि सा रे सा
स प सं ऽ	वा ऽ द मि	ला ऽ ऽ ऽ	यो ऽ री ऽ ।
३	×	२	.

## गारा-त्रिताल ( मध्यलय )

स्थायी.

नि ध नि सा रे	म ग - म ग रे	- सा नि सा सा	नि ध रे सा
ऽ मेऽ , रो रं	गो ऽऽ ला ऽ	ऽ संऽ म द	सा ऽ आ या ।
३	×	२	.



नि सासा प	प -मप मग	(म)ग -	मरे सा	सा नि सा	सा निसा, निसारेग रेसा, सा
सदा S	S, रंग की	नाS S	SS S	मा S	SS, SSSS नीS, गु
सा	सा	X			
नि सा	निसा, निसारेसा	निध, सासा			
मा S	SS, SSSS	निS   जानि			
३	४	X			

गारा-तिलवाड़ा ( बिलंबित )

स्थायी.

नि सा  
सा(सा) - धनि  
एस S, बाण

म गम	म ग मरे सा	सा ग	सा	ध प	प
ग - - मप	दी S SS मौ	रे नि सा सा	ला S S मे	(सा)ध निप म, मम	मम
दा S S, बाण	३	३	३	राS दिल दी, पिउ	३
X					
म सा	सा सा	रे गुरेसानि सा निसा	सा निसा	सा निसा, धनि	धनि
नि - ध, निनि	सा निसा मा निसा				
ने S S, कि	रा SS खो, विर	मा SSSS S SS	येS S SS, बाण		
X	३		३		

( अथवा )

सा नि सा सा(सा) धनि  
३



## अन्तरा.

नि	प म	मम	म	सा
सासा, गग ग ग	गग प म ग	ग मग म, रेग रेसा	नि सा रे सा	
कोइ, नहि जा ने	जिन ऽ रं ग	स वऽ ऽ, ऽऽ कळु	प हि चा ऽ	
३	×	२	•	
ध	प म	सा	सा रे	
सा निध निप म	मम नि - ध	नि सा सा निसा, सा	रे गुरेसानि सा निसा	
ऽ ऽऽ ऽऽ नो	इक् दी ऽ ऽ	वा ऽ तें ऽऽ, नि	वा ऽऽऽऽ ऽ ऽऽ।	
३	×	२	•	
नि	सा			
सा सा(सा) - धनि				
हे ऽऽ ऽ, जाण				
३				
(अथवा)				
सा	सा			
नि सा सा(सा) धनि				
हे ऽ ऽऽ, जाण				
३				

गारा-रूपक ( विलम्बित ).

## स्थायी.

रे सा	नि - ध	सा - सा	नि	म	ग म	म	रे - ग रेसा
त ख त	ऽऽ	वै ऽ ठो	हु ल	हा, ब	ना ऽऽ योऽ		
२	३	•	२	३	•		
नि		म			म	रे	
सा निध	सा सा	रे गम प	म ग	म रे	रेग रे सा		
स वऽ	मि ल,	मं गऽ ल	गा ऽ	ऽ ऽ,	ऽऽ यो ऽ।		
२	३	•	२	३	•		

## अन्तरा.

प	म	प	सां -	सां	नि	सां	सां	नि	घ	नि	रें	सां	नि	घ	प
घ	डि	आ	५	व	ल	के	डों	५५	५	ड,	डं	५	क		
२		३		०			२		३		०				
म	-	म	म	प	गम	म	प	म	ग	म	रेंग	रे	सा		
ग															
नौ	५	व	त,	खा	५५	न,	व	जा	५	५	५५	यो	५		
२		३		०			२		३		०				

गारा-चौताल ( मध्यलय )  
स्थायी.

															घ
															प्या
															०
नि	सा	ग	म	ग	-	-	म	ग	म	प	म	ग			
५	रे	की	५	मू	५	५	र	५	५	त	५				
३		४		×		०	२								
-	ग	रे	गु	रे	नि	सा	-	सा	नि	घ	नि	प			
५	चि	५	त	५	५	५	च	ढी	५	५	नि				
३		४		×		०	१								
म	म	नि	घ	सा	नि	सा	-	रे	नि	सा	-	सा			
स	दि	न	५	र	ह	५	त	५	५	५	ह				
३		४		×		०	२								
रे	गु	रे	सा	नि	सा	-	रे	नि	सा	नि	घ	घ			
मा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	रे	५	प्या		
३		४		×		०	२				०				

## अन्तरा.

ग	म	—	म	नि	ध	नि	सां	—	नि	सां	—
क	र	५	उ	प	५	चा	५	५	र	दे	५
×		०		२		०		३		४	
रें	गुं	रें	सां	नि	सां	रें	सां	—	नि	ध	—
चा	५	र	को	५	५	५	टी	५	वि	ध	५
×		०		२		०		३		४	
प				रे	ग	म	—	—	म	ग	म
नि	प	—	म	ग	ग	म	—	—	म	ग	म
वि	स	५	र	५	त	ना	५	५	हीं	५	वि
×		०		०		०		३		४	
रे	गु	रे	नि	सा	सा	—	सा ध	नि	सा	ग	म
सा	५	५	५	५	रे	५	प्या	५	रे	की	५
×		०		२		०		३		४	

गारा—धमार ( विलम्बित ).

स्थायी.

रे	गु	रे	सा	नि	सा	रे	सा	—	नि	नि	—	ध	म
क	र	सिं	गा	५	५	र	खे	५	ल	न	५	को	५
२					३				×				
प	ध	नि	नि	सा	सा	—	नि	सा	नि	सा	—	रे	रे
५	५	नि	क	५	सी	५	५	५	अ	वी	५	र	ली
२					३				×				
ग	ग	प	मग	म	म	रे	गु	रे	सा	ग	—	ग	म
रे													
ये	५	भ	रु	५	को	५	री	५	सां	५	व	रो	५
२		०			३				×				

## अन्तरा.

सा	ध - नि सा -	,	रे	ग म -	रे	ग - - -
हो	५ ५ री ५	,	खे	ल न ५	को	५ ५ ५
×		२			३	
म	ग - म प -	म	-	म रे - गु	रे नि सा -	
आ	५ ५ ई ५	रा	५ ५ ५	धि	का ५ ५ ५	
×		२			३	
नि सा	प	ग	म प म	म	रे गु रे सा	
सा प - म प	ग	म	प म	म	रे गु रे सा	
सु ध ५ र च	बु	र	अ ल ५	५	वे ५ ली ५	
×		२			३	
म रे	म रे	ग	रे सा -			
ग - ग म -	रे	ग	रे सा -			
ना ५ र हो ५	क	र	सि गा ५			
×		२				

गारा—धमार ( विलम्बित )

## स्थायी.

सा सा नि नि	म	प				
ग ग - ग म	प	-	म	ग	म	
रं ग म रि	पि च ५ का ५	५ ५	री	५ ५		
३	×	२				
म रे गु रे सा	सा नि - सा रे गु	रे	सा	नि सा -		
मा ५ री ५	रे ५ ५ मो ५	रे ५	हो	री ५		
३	×	२				



नि	घ	नि	प	म	ग	म	नि	घ	सा	नि	सा	-	रे	नि	सा
के	५	५५	खे			लै	५	५	५	५	५	५	या	५	५।
३						×					२				

## अन्तरा.

रे	सा	-	-	ग	-	-	ग	ग	-	-	-	-	ग	ग	
का	५	५	हा	५	५	क	रू	५	५	५	५	क	छु		
×						२	०					३			
ग	म	प	-	म	-	ग	-	म	ग	म	ग	रे	ग	रे	सा
ब	न	५	ना	५	५	५	हीं	५	५	मो	५	रे	५		
×						०	०			३					
नि	प	सा	प	-	ग	-	म	-	म	ग	म	रे	ग	रे	सा
ह	म	५	द	५	म	५	तु	म	५	ही	५	प	र		
×						०	०			३					
सा	नि	-	सा	रे	ग	रे	सा	रे	नि	सा					
बा	५	५	५	५	री	५	५	५	५	५।					
×					२										

## राग सोरट

यदा तु रिगधाः स्वरा निगदिताश्च तीव्रास्तथा ।

मृदुर्भवति मध्यमो विलसतो निषादाबुभौ ॥

रिधौ विलसतो मिथो रुचिरवासंवादिनौ ।

धगौ यदि न रोहणे निशि तदा मता सोरटी ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥८६॥

रिमौ पनी तथा सश्च निधौ मपौ धमौ च रिः ।

सोरटी कीर्तिता रात्रावृषभस्वरवादिनी ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥९६॥

ढै निखाद कोमल मध्यम चढते धग न लगाइ ।

परि संवादीवादितें सोरठ गुनियन गाइ ॥

राग चन्द्रिकासार ॥८८॥

सोरट, खमाज थाट से उत्पन्न होने वाला एक औड़व सम्पूर्ण राग है। खमाज थाट के रागों के दो मुख्य वर्ग हैं। १—वे राग जिनमें गांधार प्रबल होता है। २—वे राग, जिनमें रिषभ प्रबल होता है।

सोरट के आरोह में गांधार और धैवत वर्ज्य होते हैं। अवरोह में भी गांधार स्वर दुर्बल ही रहता है। इसका किंचित् प्रयोग मध्यम से रिषभ तक आने वाली मीढ़ में किया जाता है। यह मीढ़ सोरट के लिये जीवभूत अङ्ग ही है। इस क्रमिक पुस्तक माला के तीसरे भाग में आये हुए 'देस' राग से इस राग का बहुत साम्य है। यथासंभव कम से कम प्रमाण में गांधार का प्रयोग कर इसे 'देस' से भिन्न किया

जा सकता है। इसके सिवाय 'धमरे' स्वर संगति से भी 'देस' काफी दूर हो जायेगा। सोरट का बादी स्वर रिपभ और सम्बादी धैवत है। इसके गाने का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है।

### आरोहावरोहस्वरूप

सा रे, म प नि, सां । सां, रें, नि ध, मपध, मरे, नि, सा ।

### चलन

सा, रे, मप, नि, सां, रें, निध, प, धमरे, रेपमरेरे, रेसा ।

रे, प, मपध, मरे, नि, ध, मरे, रेमपनि,

सां, रें, निध, मरे, प, मरे, रेनि, सा ।

## सोरट—त्रिताल ( मध्यलय )

स्थायी.

ग  
म  
क

म रे म प	प प सां नि ध (म)	म रे ग (सा) सा	सा — रे रे
हुं ५ अ व	सो ५ र ट	दे ५ ५ स को	भे ५ ५ द
म म म	रे	म रे	ग
रे — रे रे	प — म —	रे रे ग —	नि नि सा सा
ओ ५ ड व	सं ५ पू ५	र न सो ५	ह त नि त
रे	सां सां		
म रे म म	प प नि नि	सां — नि सां —	नि सां नि सां नि ध प म
क ह त ध	ग न को नि	पे ५ ५ ५ ५	५ ५ ५ ५ ध ५ क
म रे			
रे — म प			
हुं ५ अ व			

अन्तरा.

प	सां सां	सां सां सां	सां
म म म प	नि — नि —	सां — सां सां	नि सां सां सां
ह रि कां ५	भो ५ जो ५	ठा ५ ठ ज	नि त द्व य
सां			
नि नि नि नि	सां — सां सां	नि सां नि सां नि सां	नि — ध प
स व सु र	छू ५ व त	दे ५ ५ ५ ५	५ ५ ५ स



प—	सां - नि -	धप ध (म) -	म रे रे ग ग	रे नि - सा सा
रे	५ वा ५	दी ५ ५ सो ५	र ट स व	सं ५ मत
म		सां	×	३
रे - म म	प प नि नि	सां निसां रे नि धप, म		म रे म प
पं ५ च म	को उ क हे	दे ५ ५ ५ ५ स ५, क		हैं ५ अ व
	३	×		२

## सोरट-चौताल ( विलम्बित )

स्थायी.

प	सां नि	धप धम	म रे - -	रे म रे	गुनि	सा सा
सो	५ ५	र ५ ट ५	रा ५ ५	५ ५	५ ५	ग नि
३		४	×	२		
म रे	- म म	प - प	ध	ध म	रे	प म
ओ	५ ड व	सं ५ पू	५	५ र	न ध	ग
३	४	×		२		
म रे	म रे	सा सा	म रे म रे	सां सां	सां सां	सां ५
सु	र ५ वि न	म रे ५	म रे ५	प नि नि	नि नि	सां ५
३	४	×	०	२		
सां नि	सां नि	सां ५	रें रें सां ५	रें नि	नि ध प ।	
३	४	×	०	२		
सां नि	रें नि	धप धम				
सो ५	५ ५	र ५ ट ५				
३	४	४				

## अन्तरा.

रे	म	रे	म	प	सां	नि	नि	सां	-	नि	सां	सां	सां
रा	×	५	त	स	म	य	दू	५	जे	प	ह	र	
ना			०		२		०		३		४		
नि	सां	सां	सां	सां	रेंगुं	रेंसां	नि	सां	-	रें	नि	ध	प
कां	५	भु	जी	५५	के५	ठा	५	ठा	५	ठ	म	धु	र
×		०		२						३		४	
म						सां	सां	नि	नि	सां	नि	सां	सां
रे	-	म	म	प	-	नि	नि	सां	नि	सां	नि	सां	सां
गी	५	ख	व	अं	५	श	क	रे	३	च	तु	र	
०		०		०		०		३		४			
गं				प	रें	नि	ध	प					
रें	रेंगुं	रें	सां	सां	नि	ध	प						
गु	नि५	ज	न	धा	५	ये	५।						
×		०		२		०							

सोरट-तिलवाड़ा ( विलम्बित ).

## स्थायी.

नि	नि	नि	सां	नि	धपम	म	म	रे	-	रे	-	म	-	-	रे
५	जो	व	न	भा	५	ल५५	र	हो	५	५	ना	जा	५	५	५
२				०				३				×			
सा	रे	नि	सा	रे	रे	रे	रे	प	ध	म	-	म	-	रे	रे
५	५	५	५	दि	न	दि	न	दू	५	नो	५	दू	५	ख	प
२				०				३				×			



गुगुरेसा रेसानि सासा सा

नं५५ ५५५ ५५५ ल  
२

म रे म - प - - निनि सां नितां सां निसारेंगुं रेंसांनिध  
पि छ ली ५ पी ५ ५ तज ता ५५ ५५५५ ५५५५  
० ३ ×

प, धम म रे, मप  
५, ५५ वे हो। ला५  
२

### अन्तरा.

ग म - - , मप सां नि सां सां - प निनिधप मप सां नि सां नितां निसारें रे -  
नं ५ ५ , दरो ढी ५ टो ५ व५५५ ५५५५ ना हीं मा५ ५५५ ने ५  
३ × २

नि नि सां सां सां निसां गुंगुरेंसां रेंसांनिध  
कू डा वो , लसु ना ५५ ५५५५ ५५५५  
३ ×

निसांनिध पधप प रे, मप सां  
५५५५ ५५५५ वे हो। ला५ रा  
२



## सोरट-तिलवाड़ा ( विलंबित )

स्थायी.

रे म म रे ,मप	सां नि सां निसारें निनि	नि ध धप ध (म)	म - - रे
हो जी S, म्हारी	वे S SSS Sग	सु Sध S ली	जो S रे S
म म रे रे प -	मप ,मपध - म	ममगरे ग - सानि	सा - - सा
हो जी S S	SS ,SSS S S	SSSS S S म्हारा	रा S S ज्

अन्तरा.

,मप प प	नि नि सां सां	,मप नि सां	नि सां निसां रे
S कब की मैं	उ भी ठा डी	S दुर व ज	वा S SS S
,निनि निनि	सां - सां -	नि नि सां सां	निसां रें रें सानि धप
S अर ज क	रो S छो S	बो लो म्हा रा	रा S SS SS Sज् ।

## सोरट-तिलवाड़ा ( विलम्बित ).

स्थायी.

निनि  
मारु

सां निसां निसारें नि	निधप ध धपम म	ग म - रे रे	गगरेसा रेसानि सा नि
जी SS SSS S	चांSS S दSS नि	रा S S ते	SSSS SSS S SS

म रे - - ,मम प - - निनि सां <sup>सां</sup> निसां निसारेंगं रेंसानिध निसानिध पधप रे - मप,  
 से S S ,जरि या S S क्युना चा SS SSSS SSSS SSSS SSSो होS ,मारु  
 ० १ २

नि सां निसारें नि  
 जी S SSS S

## अन्तरा.

प म मप नि नि सां सां सां सां सां म प नि ,नि सां निसारें रे -  
 उ भी<sup>१</sup> उ भी मि र्गा ने णी अ र ज ,क रे SSS छे S  
 ० रें सां सां सां सां सां सां म प नि ,नि सां निसारें रे -  
 नि नि नि नि सां सां सां सां सां अ र ज ,क रे SSS छे S  
 ० उ भी उ भी मि र्गा ने णी  
 १ रें नि नि नि सां सां सां सां सां निसारेंगं रेंसानिध निसानिध पधप  
 वा दि जी रा गो रे गा र गाSSS SSSS SSSS SSSो  
 ० १ २

प रे - - ,मप  
 हो S S । मारु  
 १ २

नि  
 जी  
 ०

## सोरट—भूपताल ( मध्यलय )

स्थायी.

म	रे	म	—	प	नि	नि	नि	नि	नि
ते	५	रो	५	हि	ध्या	न	ध	र	त
×		२			•		३		
सां	—	सां	रें	नि	नि	—	ध	प	प
ज्ञा	५	न	क	र	ता	५	र	तु	हि
×		१			•		३		
म	प	धप	ध	म	ग	रे	ग	सा	—
तु	हि	जो५	५	त	ज	ग	त	में	५
×		२			•		३		
नि	सा	रे	म	प	म	रे	प	म	—
भा	५	नू	५	द	ये	५	भ	यो	५
×		२			•		३		

अन्तरा.

म	प	नि	—	नि	नि	नि	सां	—	सां
तु	५	ही	५	प	व	न	पा	५	नि
×		२			•		३		
नि	सां	रें	—	नि	ध	प	नि	ध	प
वा	नि	क	५	र	सु	५	ध	तु	हि
×		२			•		३		

म	प	नि	सां	-	रें	-	मं	गं	रें
दा	५	नि	दा	५	ता	५	र	तुं	हि
×		२			०		३		
सां	-	रें	नि	ध	प	रे	म	म	म
रें	५	ग	न	को	मा	५	न	द	यो
×		२			०		३		

सोरट-चौताल ( विलंबित )

स्थायी.

म	म	प	नि	नि	सां	रें	नि	ध	प	ध	म	म	रें	-
रे	५	यो	५	हो	५	५	५	आ	५	५	व	लो	५	
पा		४		×		०		२				०		
ग	रे	रे	नि	सा	-	सा	-	रे	म	प	प	प	प	
५	नो	सा	५	नो	५	आ	५	मा	५	त	प	प	प	
३		४		×		०		२				०		
ध	-	नि	सां	सां	रें	रें	नि	ध	प	ध	म	रें	रें	
नो	५	अ	प	५	नो	५	जा	५	५	नो	५	नो	५	
३		४		×		०		२				०		

अन्तरा.

म	म	प	नि	सां	सां	सां	-	सां	रें	नि	सां	सां
वि	ख	या	का	५	ज	धा	५	य	धा	५	य	य
×		०		२		०		३		४		



नि	नि	सां	रें	गुं	रें	सां	-	नि	ध	प	-
क	री	ऽ	क	रि	ल	वा	ऽ	र	प	नो	ऽ
×		०		२		०		३		४	
म	प	रें	रें	रें	रें	सां	सां	नि	ध	नि	रें
ह	री	ऽ	च	र	न	अ	सू	ऽ	रा	ऽ	ग
×		०		२		०		३		४	
सां	-	नि	धप	ध	म	रे	-				
दू	ऽ	र	दूऽ	ऽ	नो	ऽ	ऽ				
×		०		२		०					

## संचारी.

म	रे	म	प	-	प	प	ध	म	-	रे	रे
दे	ऽ	ह	गे	ऽ	ह	दा	ऽ	रा	ऽ	सु	त
×		०		२		०		३		४	
म	म	प	नि	नि	सां	नि	सां	रें	नि	-	धप
प	र	म	हि	त	ऽ	जा	ऽ	नि	जा	ऽ	नोऽ
×		०		२		०		३		४	
प	-	रे	रे	प	म	रे	-	-	सा	-	सा
का	ऽ	म	को	ऽ	ते	रो	ऽ	ऽ	रू	ऽ	प
×		०		२		०		३		४	
म	म	-	प	प	प	-	-	-	नि	ध	म
ते	ही	ऽ	म	न	ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	यो	ऽ
×		०		२		०		३		४	

## आभोग.

म	प	नि	सां	सां	सां	सां	सां	नि	सां	-	सां
चि	ऽ	ता	ऽ	म	नि	स	र	न	ता	ऽ	तें
×		०		२		०		३		४	
नि	सां	सां	रें	रें	गुं	रें	सां	नि	ध	-	प
आ	ऽ	न	प	रो	ऽ	ते	रे	ऽ	द्वा	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	
म	प	रें	रें	रें	-	सां	-	नि	ध	नि	रें
दी	ऽ	न	हि	त	ऽ	दी	ऽ	ना	ना	ऽ	थ
×		०		०		०		३		४	
सां	-	नि	धप	प	ध	म	रे				
दी	ऽ	न	जाऽ	ऽ	ऽ	नो	ऽ				
×		०		२		०					

## सोरट-चौताल ( बिलंबित )

## स्थायी.

नि  
सां  
पू

नि	धप	ध	प	म	रे	-	-	म	रे	प	म	रे	-
ऽ	जऽ	ऽ	न	जा	ऽ	ऽ	त	ऽ	शि	व	ऽ		
३		४		×		०		२		०			

म	रे	ग	रे	नि	सा	म	रे	-	-	म	प	म	ध	ध
सु	३	५	५	५	५	को	५	५	५	न	५	म	नो	५
-	-	म	म	रे	-	रे	म	म	रे	ग	रे	नि	सा	-
५	३	५	५	५	५	हि	५	५	५	त	५	की	५	५
म	५	प	सां	सां	नि	सां	-	-	सां	नि	रे	नि	ध	प
५	५	सों	५	५	दु	रा	५	५	५	५	५	५	५	ये।
५	५	सां	५	५	म	न	५	५	५	५	५	५	५	५
पू	३	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५

अन्तरा.

५	म	-	प	सां	नि	-	नि	सां	सां	-	सां	नि	सां	सां
भा	५	५	ल	ला	५	५	ल	द	ग	५	दे	५	खे	५
सां	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
नि	-	५	सां	नि	सां	सां	सां	नि	सां	५	५	५	५	५
औ	५	५	५	लो	च	५	न	जो	व	५	दि	न	टी	५
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
म	-	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
आ	५	५	५	गा	५	५	द	दि	ये	५	५	५	५	५





सां	-	सां	रें	गं	रेंसां	सां	-	सां	रें	नि	ध	प
नि	५	व	ना	५	५५	सा	५	स	ले	५	त	
जो	५	०		२		सां		३		४		
५	म	-	म	प	-	नि	सां	नि	सां	सां	-	
रे	रे					मो	५	हे	घ	री	५	
म	या	५	बि	ना	५	"		३		४		
पि	५	०		१								
५	गें	रें	सां	नि	रेंनि	ध	प					
गें	गें			सां	५५	ये	५					
५	ल	न	सु	हा		०						
५	५	०		२								

## राग नारायणी



हरिकांबोजिमेलोच्च संजातश्च सुनामकः ।

नारायणीतिरागश्च सन्यासं सांशकग्रहम् ॥

आरोहे गनिवर्ज्यं चाप्यवरोहे गवर्जितम् ॥

स रे म प ध स । स नि ध प म रे सा

रागलक्षणे ॥ पृ. ४१ ॥

कांभोजी मेलसंजाता नारायणी प्रकीर्तिता ।

आरोहे गनिहीनाऽसाववरोहे गवर्जिता ॥७२॥

कैश्चित्सैव मनीत्यक्ता शंकराभरणे मता ।

मतभेदास्तत्र संतु ग्रंथेऽत्र प्रथमा मता ॥७३॥

ऋषभं वादिनं मत्वा भवेत्सारंगसंनिभा ।

निवर्ज्यत्वे धसंयोगे भवेत्तद्रूपवारणम् ॥७४॥

( श्रीमल्लक्ष्यसंगीते प्रथमा पृ. ८१ )

‘नारायणी’ दक्षिण-पद्धति के ग्रन्थों में वर्णित किया हुआ और अपने यहां के विद्वानों द्वारा प्रचलित किया हुआ राग है। यह खंमाज थाट से उत्पन्न होता है। इस राग में गांधार वर्ज्य है और आरोह में निषाद वर्ज्य होता है। इससे इस राग में सारङ्ग का आभास होने लगता है, परन्तु निषाद के वर्ज्य होने और धैवत प्रहरण करने से यह सारङ्ग से सहज में भिन्न हो जाता है। इसकी जाति औड़व-पाडव है। इसका वादी स्वर रिषभ और सम्वादी पंचम है। गायन का समय रात्रि का दूसरा प्रहर है।

## आरोहावरोह स्वरूप.

सा रे म प ध सां । सां नि ध प म रे सा ।

चलन.

सां, निध, मप, निधप, मपम, रे, सारे, मरे, धसा । मप

धसा, रे, मरे, निधप मपधप, म, रे, मरेसा ।

मपधसां, सां रेंरेसां, मरेंसां, सारें, सारेंसां

निधप, मपधसां, धप, मरे, सारेमरे,

सा धधसा ।

## नारायणी-सूतताल ( मध्यलय ) .

## स्थायी.

प	सां	-	नि	ध	ध	म	प	प	नि	ध	-	प
	ना	५	रा	५		य	ण		को	ना	५	म
×						२			३			
प	नि	प	म	रे	म	रे	सा	सा	नि	सा	रे	-
भ	ज	ले	५		म	न	मे	५	रे	५		५
×		०			२			२		ध		
रे	नि	सा	रे	म	म	रे	म	प	ध	म	प	
	ना	५	म	धि	ना	५		क	छु	न	हि	
×			०					३		०		
प	सां	-	(नि)	-	नि	म	-	प	प	नि	-	प
	का	५	मे	५	आ	५		वे	ते	५		रे ।
×			०		२			३		०		

## अन्तरा.

प	म	प	सां	सां	सां	-	सां	सां	सां	सां
	जो	इ	जो	इ	ध्या	५	व	त	प्र	भु
×		०			२		३		०	
	सां	रे	सां	रे	सां	निध	म	-	ध	प
	नि	र	गु	ण	इ	री५	को	५	ज	स
×		०			३		३		०	
प	म	प	ध	सां	निध	प	म	रे	सा	सा
	रि	ध	सि	ध	फ	ल	पा	५	व	त
×		०			२		३		०	





## भैरव थाट.

## भैरव थाट के राग ( १५ )

बंगालभैरव

आनन्दभैरव

सौराष्ट्रटक

अहीरभैरव

शिवभैरव या शिवमतभैरव

प्रभात

ललितपंचम

मेघरंजनी

गुणकरी या गुणक्री

जोगिया

देवरंजनी

विभास ( भैरव थाट )

भीलफ

गौरी ( भैरव थाट )

जंगूला

## राग वंगालभैरव.

धपौ मगौ मरी सपौ धसौ धपौ गमौ रिसौ ।

बंगालो धांशकः प्रातर्नित्यक्तो वक्रगो जने ॥

अभिनवरागमंजरीम् ॥ ७६ ॥

संभेदः किल भैरवस्य कथितो बङ्गालमंजो बुधै-

रारोहेऽप्यवरोहणो च नियतं वज्र्यो निषादस्वरः ॥

अन्यद्भैरवतुल्यमेव सकलं वक्रोऽवरोहे तु गो

गायन्ति प्रचुरं प्रभातसमये षड्भिः स्वरैर्गायिकाः ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ४ ॥

याही भैरव राग में सुर निखाद जब नाहिं ।

वक्र होय गंधार सुर कहत बङ्गाला ताहि ॥

रागचंद्रिकासार ॥ ३ ॥

बंगाल भैरव, भैरव थाट से उत्पन्न होने वाला एक भैरव का भेद है । इसमें निषाद स्वर बिलकुल वज्र्य है, अर्थात् इसकी जाति 'पाड़व-पाड़व' है । इसका वादी स्वर धैवत और संवादी स्वर ऋषभ है । इसके अवरोह में गांधार वक्र होता है । इसके गायन का समय प्रातःकाल है । "साधु" स्वर संगति राग-वाचक होती है । प्रचार में एक "बङ्गाली" नामक राग और भी है परन्तु वह 'बङ्गाल भैरव' से बिलकुल अलग है । भैरव का एक प्रकार होने से इस राग में भैरव-अंग प्रधान होता है ।



### आरोहावरोह स्वरूप

सा रे, ग म, प, ध, सां । सां ध, प, म प ग म, रे सा ।

साधारण स्वरूप इस प्रकार है:—

ध, ध, प, गम, प, गमरे, सा, सारे, सा, धसा, रे, रे, सा,  
गमरे, पगमरे, रे, सा ।

बंगालभैरव-त्रिताल ( विलम्बित ).

स्थायी.

नि प म म ध्र - मप गम, गमपमग	म रे - सा, सासा	ग रे - सा -	नि ध्र - प गम
ए ऽ ऽ ऽ वऽ, ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ	ता ऽ ऽ , वन	आ ऽ या ऽ	मा ऽ ई ऽ ऽ
म म म	म	नि सा	सा
ध्र - प गम, गमपमग	रे - सा -	सा ध्र - -	रे - सा -
सा ऽ ज ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ	के ऽ ऽ ऽ	घ र ऽ ऽ	आ ऽ ई ऽ ।

अन्तरा.

नि ध्र - - सांसां	नि सां - सां सां	नि ध्र - सां , सां	नि नि रे सां, निसां सां ध्रप
गा ऽ ऽ ओष	जा ऽ ओ रि	भा ऽ ओ ऽ, स	व ऽ, ऽ ऽ मि लैऽ
प नि	ध्र	नि म म	म
म प ध्र -	सां - निसां -	ध्र - प, मप गम, गमपम	रे - सा -
म न ई ऽ	छा ऽ ऽ ऽ	फ ऽ ल, ऽ ऽ ऽ, ऽ ऽ ऽ	पा ऽ ई ऽ ।

## राग आनन्दभैरव.

—:—

गमौ रिगौ पमौ गमौ स्तौ गमौ सधौ पमौ ।

गमौ रिसाविति प्रोक्त आनन्दभैरवोऽशमः ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ ८५ ॥

भैरवकेही मेलमें तीखो धैवत पेखि ।

मस बादीसंवादितें आनन्दभैरव लेखि ॥

राग चन्द्रिकासार ॥ ४ ॥

संस्थानकेऽस्मिन्यदि भैरवस्य

तीव्रो भवेद्धैवत एष नित्यम् ।

पूर्णरतदानीमिह षड्जवादी

आनन्दपूर्वोऽयमवादि भैरवः ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ५ ॥

‘आनन्द भैरव’, भैरव थाट से उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का भैरव है। इसमें धैवत तीव्र लगता है। पूर्वाङ्ग में भैरव और उत्तराङ्ग में विलावल, इस प्रकार के संयोग से यह राग उत्पन्न होता है। इसमें वादी स्वर मध्यम और संवादी षड्ज है। इसका गायन समय प्रातःकाल है। कोई-कोई कहते हैं कि, इसके आरोह में कोमल धैवत और अवरोह में तीव्र धैवत रखा जावे। हमारे लिये बहु प्रचलित को ग्रहण करना ही श्रेयस्कर है। इस राग में भैरव अंग प्रधान रहता है, और भैरव के अनुसार ही ऋषभ पर आंदोलन होता है। इसमें मध्यम स्वर पर विभ्रांति अच्छी दिखाई देती है। “आनन्द भैरवी” नामक एक अन्य राग प्रचार में और है। वह इस राग से विलकुल भिन्न होता है। वह राग आसावरी थाट का है क्योंकि उसमें गांधार और निषाद कोमल लगते हैं।

चलन.

ग, मगरे, रे, सा, सा, रेग, म, म, मप, । सां, धनिप,  
मग, मरे, पमगरे, रे, सा ।



आनन्दभैरव—भूपताल ( विलम्बित ).

स्थायी.

मग आS X	मग SS	म रे जे २	ग S	प आ	मग नS ०	म रे द ३	ग रे भ ३	सा यो
सा सा X	- S	रे ज २	सा न	निरे सुS	ग ना ०	म म यो ३	- S	- S
म पृ X	- S	म ग वा २	प S	प ग	सां में ०	- S	ध वि ३	नि स र
मग मैS X	मग SS	म रे र २	ग व	प दि	मग खाS ०	म रे S ३	ग रे S	सा यो ।

अन्तरा.

प सु X	- S	सां र्य २	सां कां	- S	सां ती ०	- S	सां मे ३	- S	सां ल
रे अ X	रे वि	मं गं क २	मं ल	गं मं र	मं रे चा ०	- S	सां यो ३	- S	- S

सां	-	रु	-	सां	सां	सां	घ	नि	प
सं	ऽ	वा	ऽ	द	स	म	स	म	य
×		२					३		
म	ग	म	ग	प	मग	म	ग	ग	सा
सं	ऽ	रु	ग	व	ताऽ	ऽ	रु	रु	यो
×		३					३		

आनंदभैरव-भरताल ( मध्यलय )

स्थायी.

ग	ग	म	रे	रे	म	ग	म	रे	सा
मे	रे	म	न	सु	म	र	न	क	र
×		२			०		३		
ग	सा	—	सा	रे	म	म	—	म	
रे	ला	५	ही	५	ग	५	ना	५	म
ह		२			०		३		
×				ग					
ग	—	म	—	म	प	प	—	प	
म									
जा	५	सौ	५	स	क	ल	ते	५	रे
×		२			०		३		
प	—	सां	प	मप	ग	ग	म	रे	सा
सां		धनि			म				
हो	५	ब५	त	स५	फ	ल	का	५	म।
×		३			०		३		

## अन्तरा.

प	प	सां	सां	सां	सां	सां	नि	सां	रें	सां
मो	हं	म	द	र	सू	ल	पं	५	ज	
×		मं			•		३			
रें	रें	गं	-	मं	मं	रें	सां	-	सां	
त	न	पा	५	क	चा	रो	या	५	र	
×		२			•		३			
नि	-	रें	सां	-	सां	सां	सां			
सां	५	त	जा	५	नि	सां	ध	नि	प	
मू		२			ली	५	श्री	५	र	
×		२			•		३			
प	मग	म	ग	ग	म	ग	म	रें	सा	
ग	(५५)	रें	ग	प	म	ग	म	५	म।	
झा		ज्जे	५	ई	मा	५	५	५		
×		२			•		३			

## सौराष्ट्रभैरव या सौराष्ट्रटंक.

( चौरासी या चौर्यायशी टंक )

गमौ पमौ रिसौ गमौ धमौ घसौ रिसौ धपौ ।

सौराष्ट्रटंक इत्याहो मध्यमांशोऽपि ध्वयः ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥८२॥

भरवके संस्थानमें सौराष्ट्रहिको गान ।

द्वै धैवत सोहत अति वादी मध्यम जान ॥

रागचन्द्रिकासार ॥११॥

सौराष्ट्रोऽयं भैरवस्यव मेले मांशः पूर्णो धैवतद्वन्द्वयोगी ।

आरोहे स्यात्तीव्रधोऽन्योऽवरोहे प्रातर्गोयो दुर्बलोऽस्मिन्निषादः ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ८ ॥

सौराष्ट्र-भैरव अथवा सौराष्ट्र-टंक, भैरव थाट से उत्पन्न होने वाला राग है। कोई-कोई इसे भी भैरव का भेद समझते हैं। इसमें मुख्य अङ्ग भैरव का होने से इसे भैरव थाट का माना जाता है। इसका वादी स्वर मध्यम और सन्वादी स्वर षड्ज है। इसका गायन समय प्रातःकाल है। इसमें दोनों धैवत लगते हैं। तीव्र धैवत का प्रयोग एक विशिष्ट तरीके से होता है। यह स्वर “गमध, मधसां, निधम” इस प्रकार के स्वर समुदायों में आता है। तीव्र धैवत के प्रयोग में पंचम स्वर गौण बनाना पड़ता है। यद्यपि यह राग प्राचीन ग्रन्थों में वर्णित प्राप्त होता है, परन्तु आजकल यह बिलकुल अप्रसिद्ध होगया है, अतः इसके स्वरूप के सम्बन्ध में मतभेद प्राप्त होता है।



# उठाव

गम, पम, रे, सा, गम, ध, मध, सां, रेसां, ध्रप ।

चलन.

गगमगरे, सा, गम, गरे, सा । गमध, मधसां, निधम  
धम, मध, निसां, मगमगरे, सा । म, म, प, प, ध्रध्र,  
निध्रप, सां, सां, ध्र, प, मगमग, रेरेसा ।

सौराष्ट्रटंक-तीव्रा ( मध्यलय ).

स्थायी.

सा	सा	धु	नि	सा	-	सा	म	म	म	म	म	-	म
प्र	धु	कि	र	ता	ऽ	र	तु	म	हो	अ	पा	ऽ	र
२		३		×			२		३		×		
म	-	म	ध	ध	ध	ध	म	ध	सां	सां	रें	सां	सां
मैं	ऽ	हूं	ऽ	श	र	न	तु	म	बि	न	क	ब	न
२		३		×			२		३		×		
म	प	प	म	ग	रें	-	सा						
मैं	ऽ	को	अ	घा	ऽ	र							
२		३		×									

अन्तरा.

ग	-	ग	म	प	-	प	नि	-	नि	धु	धु	नि	-	प
मा	ऽ	ल	व	ठा	ऽ	ठ	रा	ऽ	ग	सु	रा	ऽ	पृ	
२		३		×			२		३		×			
म	धु	प	म	रें	-	रें	म	म	प	मग	रें	-	सा	
प							ग	ग						
स	म	स	म	वा	ऽ	द	गा	ऽ	य	सऽ	मा	ऽ	ज	
२		३		×			२		३		×			
सा	-	सां	-	रें	सां	सां	सां	म	प	प	मग	रें	-	सा
सां														
की	ऽ	जे	ऽ	च	त	र	को	ऽ	म	वऽ	पा	ऽ	र	
२		३		×			२		३		×			

## सौराष्ट्रटंक-तीव्रा ( मध्यलय )

स्थायी.

ग	म	मग	म	प	मग	म	रे	-	सा	प	ग	-	म	मग	ग	रे	-	सा
क	ट	ड	त	वि	का	ड	र	ना	ड	म	अ	ध	ड	र	ध	ड	र	
सा			३	३	×		नि	२		३		×			×			
नि	सा	ग	म	म	ध	-	सां	-	सां	-	सां	-	रे	सां	-	रे	सां	
जे	ड	न	र	सु	म	ड	र	ड	त	ड	गु	नी	ड	गु	नी	ड	गु	
म		३	३	×	२		२		३		×			३		×		
ग	म	प	मग	रे	-	सा	रे	-	सा	ग	-	म	मग	ग	रे	-	सा	
त	र	ग	ये	पा	ड	र।	पा	ड	र।	पा	ड	र।	पा	ड	र।	पा	ड	
२		३	३	×	२		२		३		×			३		×		

दूसरा प्रकार.

नि	सा	सा	नि	नि	सा	म	म	म	-	म	म	म	-	म
क	ट	त	वि	का	ड	र	ना	ड	म	अ	ध	ड	र	ध
२		३	३	×	२		२		३		×			३
ग	-	ध	ध	ध	ध	-	म	ध	सां	-	रे	सां	-	रे
म	ड	न	र	सु	म	ड	र	ड	त	ड	गु	नी	ड	गु
जे		३	३	×	२		२		३		×			३
२		३	३	×	२		२		३		×			३
ग	म	म	प	मग	रे	-	सा	रे	-	सा	ग	-	म	मग
म	म	ग	ये	पा	ड	र।	पा	ड	र।	पा	ड	र।	पा	ड
त	र	३	३	×	२		२		३		×			३
२		३	३	×	२		२		३		×			३

## अन्तरा.

ग	म		नि	नि	नि	नि
म -	ग म	प प -	ध ध	ध -	ध -	प
जी ऽ	ने ऽ	र चो ऽ	स व	सं ऽ	सा ऽ	र
२	३	×	२	३	×	
म प	म		ग		म	
प ध्र	प प	मग मरे सा	म ग	(म) ग	रे - सा	
भ व	वि ऽ	स्ता ऽ	ली ऽ	नो ऽ	भा ऽ	र
२	३	×	२	३	×	
सा					म	
सां -	सां -	रें - सां	(म) -	प मग	रे - सा	
की ऽ	न्हे ऽ	चं ऽ	द्र	र ज ऽ	ता ऽ	र
२	३	×	२	३	×	



## राग अहीर-भैरव

गमौ रिसौ रिगौ मपौ धनी धपौ मपौ मगौ ।

मरी सोऽपि सदाहीरभैरवो मध्यमांशकः ॥

अभिनवरागमंजरीम् ॥ २७ ॥

भैरव पूरव अङ्गमें काफी उत्तर भाग ।

अति विचित्र द्वैरूपसे होत अहीरी राग ॥

रागचन्द्रिकासार ॥ ६ ॥

पूर्वांगे किल भैरवः स्फुटतरं यत्रोत्तरांगे पुनः

स्पष्टं भाति हरप्रिया भवति तद्रूपं विचित्रं ततः ॥

वादित्वं त्विह षड्ज एव निहितं संवादिता पंचमे

द्वैरूप्येण हि गीयते सुमतिभी रागिण्यहीरी प्रगे ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ११ ॥

अहीर भैरव एक भैरव-प्रकार है । यह सम्पूर्ण जाति का है । इसके पूर्वाङ्ग में भैरव और उत्तरांग में काफी मिश्रित होती है । अर्थात् उत्तरांग में शुद्ध ध और कोमल नि का प्रयोग होता है । परन्तु भैरव अङ्ग प्रधान होने से यह भैरव थाट में ही सम्मिलित किया जाता है । इसका वादी स्वर मध्यम और संवादी षड्ज है । गायन का समय प्रातःकाल है । परस्पर भिन्न अंग वाले-भैरव और काफी का मिश्रण होने से इस राग में बड़ा ही वैचित्र्य आ जाता है । आरोह में क्वचित् तीव्र ऋषभ ग्रहण

करना भी पाया जाता है। इस राग में मध्यम पर विश्रांति बड़ी लाभनीय होती है। “रागलक्षण” नामक ग्रन्थ में “आहीरी” नामक भैरवी थाट की एक रागिनी बताई है; वह इस राग से बहुत भिन्न है।

### चलन

ग, म, रं, सा, रेग, म, प, धनिध, प, मप, मग, मरे, सा ।

ममरेम, पपमप, पमपध, निधपध, मपगम,

रेरेगम, पगरेसा ।

अहीरभैरव-ममताल ( मध्यलय )  
स्थायी.

मग	मसा	सा	सा	रे	म	ग	म	म	म	म
राऽ	ऽऽ	धि	का	ऽ	र	र	म	ण	गि	र
×		२			०			३		
ग	ग	रे	ग	प	मग	मग	ग	रे	—	सा
म	र	न	गो	ऽ	पीऽ	ऽऽ	ना	ऽ	थ	
ध		०			०		३			
×										
नि	रे	सा	सा	रे	म	म	म	—	म	
सा	द	न	मो	ऽ	ह	न	कृ	ऽ	ण	
म		२			०		३			
×										
म	म	प	म	ग	रे	गुरे	ग	म	प	
न	ट	व	र	वि	हा	ऽऽ	ऽ	ऽ	री।	
×		२			०		३			

## अन्तरा.

ग	—	म	रे	—	म	—	प	प	प
म	ऽ	स	ली	ऽ	ला	ऽ	र	सि	क
रा		२			०		३		
×					सां				
म	म	म	प	ध	नि	—	धप	ध	प
त्रि	ज	जु	व	ति	प्रा	ऽ	न	प	ति
×		२			०		३		
प	ध	म	प	ध	म	म	मग	ग	सा
स	क	ल	दु	ख	ह	र	न	गो	ऽ
×		२			०		३		

सा	प	म	ग	-	रे	गरे	ग	म	प
ग	ण	न	चा	५	५	५५	५	५	री।
×		२			०		३		

अहीरभैरव—आढाचौताल ( विलंबित )

स्थायी.

ग	रे	सा	निसा	सारुग	ग	म	गम	म	म	प	पग	मरे	सा	नि	सानि
व	न	रा	५५	मो	५५	५	रा	५५	र	५५	५५	५५	स	मा	५५
४		०		×		२		०	०		३		०	०	
रे	सा	-	सा, सारे	म	ग	म	म	गम	म	प	गमप	-	म	प	मग
५	ता	५	र, स	मा	५	ता	५५	आ	५	५५	५	न	मो	५५	
४		०		×		२		०				३		०	
म	रे	सा	निसा	नि	प	म	प	ग	रे	सारुग	ग	म	प		
५	५	ला	५५	रे	५	५	५	५	५	५५	५	५	५	५	५।
४		०		×		२		०		३			०		

अन्तरा.

ग	म	म	रे	-	म	म	प	प	प	-	म	-	प	ध
व	न	री	५	दे	ख	५	न	को	५	चा	५	वे	५	म
४		०		×		२		०		३		०		
सां	नि	धप	ध	पम	म	म	म	-	म	प	प	ध	म	-
न	रं	ग	५५	र	स	सों	५	घू	५	ग	५	ट	५	
४		०		×		२		०		३		०		





## अहीरभैरव-तिलवाड़ा ( विलंबित )

## स्थायी.

ग, गम, गरे सा(सा) नि, सारे	म ग म म गम	ग म म म प, मग	म (म) ग रे सा, नि, सा
ए, SS, टोन वा S, SS	मो S रा SS	ज ग त, स S	लो S ना, SS
निग सारे - सारे ग मम	ग म मग प, म	पम (म) रे पम पग	रे रे सारे ग म प
हमा S, रे S भा Sग	सो SS S, खि	लो S SS रे S SS	SSS S S S।
ग रे सा, सारे			
टो न वा, SS			

## अन्तरा.

रे म (म) रे म, म	प म प प प	प मम प ध, ध	सांसां प निनि ध प धम
अ प S ने, पि	या S प र	मख री S, पु	रा S ये हो SS
सा प मम, म मप प	ध प ध म, म	(म) ग म रे रे प - ग	रे रे सारे ग म प
और Sभ रा S ये	हो S S, खि	लो S ना S रे S SS	SSS S S S।

## राग शिवभैरव या शिवमत भैरव

गमौ धपौ मपौ गमौ रिसौ मपौ निधौ पनी ।

सधौ पगौ मरी सश्च शिवभैरवकोऽशधः ॥

अभिनवरागमंजरीम् ॥८४॥

भैरवके अवरोहिमें कोमल गनि सुर होई ।

वादी ध रिसंवादितें शिवभैरव ऐसोई ॥

रागचन्द्रिकासार ॥५॥

संस्थान एवाजनि भैरवस्य मिश्रस्वरूपः शिवभैरवोऽसौ ।

भेदस्त्वियान् भैरवतोऽस्य दृष्टोऽवरोहणे यन्निगयोर्मुदुत्वम् ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥६॥

राग शिवभैरव अथवा शिवमत भैरव, एक मिश्रमेलोत्पन्न भैरव का भेद है। इस राग में दोनों गांधार और दोनों निषाद तथा बाकी के सभी स्वर भैरव थाट के लगते हैं। इसका विस्तार प्रायः भैरव अङ्ग से होता है, अतः इसे भैरव थाट में मानना उचित होगा। इसका वादी स्वर धैवत और संवादी रिषभ है। इसे प्रातःकाल गाते हैं। एक अप्रसिद्ध राग होने के कारण इसके स्वरूप के सम्बन्ध में मतभेद होना शक्य है। आरोह में तीव्र गांधार, निषाद, भैरव का अङ्ग है, और अवरोह में कोमल गांधार से किंचित टोड़ी का आभास होता है। कुछ लोगों के मत से यही राग पूर्वकालीन शुद्ध भैरव है। कुछ स्थलों पर इसमें तीव्र धैवत का प्रयोग किया हुआ प्राप्त होता है। इस राग में कोमल गांधार और कोमल निषाद सरल अवरोह के रूप में नहीं लगाये जाते बल्कि 'निसागुरेसा, निसा, धृनिप' इस प्रकार के स्वर समुदाय में लिये जाते हैं।





शिवभैरव-धमार ( विलम्बित ).

स्थायी.

रे	सा	-	म	-	प	प	नि ध्र प - प	प	-
अ	हो	५	५	५	सो	भ	ल ५ ५ ५ जि	न्हे	५
०			३				×	२	
प	ध्र	म	प	ग	म	म	-	गु म - - रे -	सा
का	५	५	५	५	न	५	चा ५ ५ ५ ५	हे	५
०			३				×	२	
ग	रे	-	सा	सा	-	ध्र ध्र	रे - सा म प	प	-
रा	५	धे	सो	५	च	क	रे ५ ५ कै ५	से	५
०			३				×	२	
नि	ध्र	-	-	प	-	नि	-	ध्र - प म -	रे
आ	५	५	वे	५	चै	५	५ ५ ५ ५ ५	५	सा
०			३				×	२	न।
ग	रे	सा	म	प	-	प	प	नि	
अ	हो	५	५	५	सो	भ	ली		
०			३				×		

अन्तरा.

प	म	प	-	नि	-	-	प	ध्र ध्र	रे	सां	-	-	सां
सि	ग	५	रे	५	५	न	ग	र	५	में	५ ५	प	
×					२		०			३			
सां	-	ध्र ध्र	-	-	प	ध्र	रे	-	सां	सां	-	-	ध्र
री	५	५	है	५	५	च	वा	५	५	ऊं	५ ५ ५		
×					३		०			३			

म	प	म	-	ग	म	प	प	प	म	नि	नि	-	ध	रें	सां	-
आ	नं	५	५	५	५	५	५	५	५	कुं	व	५	री	५	के	५
×																
सां	ध	-	नि	-	ध	प	प	म	-	ग	म	प	प	प	प	प
हि	र	५	दे	५	५	५	५	अ	हो	५	५	५	सो	भ		
×																

शिवमतमैरव-त्रिताल ( विलम्बित ) .

स्थायी.

म	नि	गुम	ध	पध	पमप	म	म	ग	म	रें	-	सा	म	म	गुम	गुमप	प
गा	वो	मिल	के	५	५	आ	५	५	व	धा	५	५	व	रा	५	५	५
३						×				२							
निनि	ध	सां	नि	सां	निसारें	नि	ध	प	नि	ध	प	म(म)	रें	सा	नि	म	-
ज	५	५	५	५	५	नी	५	५	५	५	५	री	५	५	५	५	५
३						×				२							

अन्तरा.

प	प	ध	ध	सां	सां	नि	सां	सां	नि	गं	सां	रें	-	सां	नि	नि	नि
सां	व	रे	स	लो	ने	५	वन	सु	ख	५	बा	क	रे	५	ई		
३				×				२									
म	निनि	प	ध	सां	नि	सां	नि	ध	प	नि	ध	प	म(म)	रें	सा	म	ग
सदा	रंग	को	५	५	म	ना	५	५	५	व	रा	री	५	५	५	५	५
३					×					२							

## शिवमत भैरव-चौताल ( विलम्बित )

स्थायी.

प	ग	म	म	ग	रे	-	रे	ग	-	सा	मासा
ग	ग	ग	रे	ग	रे	-	रे	ग	-	सा	मासा
चा	S	ल	च	ल	त	S	अल	सा	S	नी	कछु
X		०	२	२	०	०		३		४	
नि	रेग	रे	सा	सा	नि	-	सासा	म	मग	मरे	सा
सा	रेग	रे	सा	सा	नि	-	सासा	म	मग	मरे	सा
ए	SS	क	बो	ल	त	S	अल	सा	SS	SS	नि।
X		०	२	२	०	०		३		४	

अन्तरा.

म	-	नि	-	नि	सां	-	सां	सां	सां
प	-	ध	-	नि	सां	-	नि	सां	सां
आ	S	S	S	न	को	S	S	रं	S
X		०	२	२	०	३		४	
नि	-	नि	सां	रें	रें	सां	नि	सां	निप
ध	-	नि	सां	रें	रें	सां	नि	सां	निप
आ	S	S	S	म	यो	S	S	S	SS
X		०	२	२	०	३		४	
प	मप	-	मग	म	म	प	-	नि	सां
ला	SS	S	ज	S	भ	री	S	अ	सां
X		०	२	२	०	३		४	
गं	सां	नि	सां	ध	प	म	ग	म	सां
रें	सां	नि	सां	ध	प	म	ग	म	सां
यां	S	S	S	अ	ल	सा	S	S	S
X		०	२	२	०	३		४	

## संचारी. ( द्रुतलय )

नि	सा	सा	नि	—	नि	—	प	प	म	सां	सां
सा	सा	सा	ध	—	ध	—	प	प	प	नि	नि
क	हु	ए	क	ऽ	भा	ऽ	त	भ	ले	प	ट
×		०		२		०		३		४	
सां	नि	नि	ग	म	म	ग	—	ग	म	ग	—
	ध	ध	प	म	प	म					
ऽ	भू	ख	न	दी	ख	त	ऽ	ऽ	दे	ह	ऽ
×		०		२		०		३		४	
प	प	मु	रे	ग	प	म	—	ग	रे	—	सा
ग	ग	मु	रे	ग	प	म					
स	व	ऽऽ	दि	ख	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	नि ।
×		०		२		०		३		४	

## आभोग.

म	—	—	नि	—	नि	सां	—	—	सां	सां	—
प	—	—	ध	—	नि	सां	—	—	सां	सां	—
जा	ऽ	ऽ	न	ऽ	ल	ई	ऽ	ऽ	ह	म	ऽ
×		०		२		०		३		४	
नि	—	—	नि	सां	—	सां	रुं	सां	नि	सां	—
ध	—	—	नि	सां	—	सां	रुं	सां	नि	सां	—
तो	ऽ	ऽ	स	ज	ऽ	ऽ	नी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	
नि	नि	नि	ध	प	प	प	प	सां	सां	सां	—
सां	ध	नि	ध	प	प	प	प	नि	सां	सां	—
म	न	ऽ	मो	ह	न	सो	ऽऽ	ह	न	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	
नि	प	नि	ध	प	—	म	ग	म	रे	—	सा
ध	प	नि	ध	प	—	म	ग	म	रे	—	सा
सो	ऽ	ऽ	रु	त	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	नि ।
×		०		२		०		३		४	



## राग प्रभात या प्रभातभैरव

गमौ गरी सधौ निसौ गमौ धर्पा मगौ रिगौ ।

ममौ भवेत् प्रभाताख्यो भैरवो मध्यमांशकः ॥

अभिनवरागसंजयाम् ॥८३॥

जबही भैरव रागको ललत अङ्गसे गाय ।

सम संवादीवादिते सो प्रभात कहि जाय ॥

राग चन्द्रिकासार ॥६॥

संस्थाने किल भैरवस्य कथितो रागः प्रभाताभिधः ।

संपूर्णस्वरमंडितश्च ललितांगेन प्रयुक्तः सदा ॥

वादी मध्यम ईरितो मधुरसंवादी च षड्जस्वरो ।

गायन्ति ध्रुवमेनमत्र सुधियः प्रत्यूषकाले मुदा ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥७॥

प्रभात अथवा प्रभात-भैरव राग, भैरव थाट का माना जाता है। यह सम्पूर्ण जाति का राग है। इसका वादी स्वर मध्यम और संवादी स्वर षड्ज है। यह प्रातःकाल गाया जाता है। इसमें किंचित् रूप से तीव्र मध्यम प्रयुक्त होता है और वह भी अवरोह में शुद्ध मध्यम की संगति में लगता है। इस कारण इस राग में थोड़ा सा 'ललितांग' रहता है और यह अङ्ग बड़ा सुन्दर मालूम होता है। शुद्ध मध्यम पर विश्रान्ति बड़ी शोभनीय होती है। भैरव अङ्ग का राग हाने के कारण इस राग में भी भैरव जैसे ही रिषभ और धैवत प्रयुक्त होते हैं। परन्तु मध्यम खुला रखने और ललित अङ्ग आ जाने से, इससे भैरव अलग हो जाता है।

उठाव.

गमग, रे, सा, रे, सा, ध, निसा, ग, म, ध, प, मग,  
रे, गम, म ।

चलन.

सा, रेरेसा, ग, म, गरेसा मम, गम, पधप, म, रे, गमम,  
गम, गरेसा ध, सा । गमगरे, सा, सा, ध, निसा,  
सारंग, रेगम, मम, रेगमम, गमगरेसा, धनिसा  
मम मगम, धधप, मग, रे, ग, मम, गमग,  
रेसा । प, प, धध, निसां, सां, धनिसां,  
रेरे, सांनिधप, मगम, ध, प, मग,  
रे, ग, मम, गमग, रेसा ।

## प्रभात-त्रिताल ( मध्यलय )

स्थायी.

ग म ग रे	ग रे रे सा -	नि धु धु नि नि	सा - मा सा
का ऽ हे न	म न तू ऽ	शु रु प द	से ऽ व त
०	३	×	२
ग म धु धु	धु प म -	ग - रे रे	ग - म म
क व न क	रे ऽ गो ऽ	ते ऽ रो स	हा ऽ ऽ य।
०	३	×	२

अन्तरा.

म - म -	नि धु - नि -	सां सां सां सां	नि सां सां सां
आ ऽ शा ऽ	तू ऽ ष्णा ऽ	क व हुँ न	पू ऽ र त
०	३	×	२
नि धु - धु नि	सां सां सां -	रे - सां सां	नि धु प म म
व्य ऽ र्थ दे	ऽ ख तू ऽ	जा ऽ त लु	भा ऽ ऽ य
०	३	×	२
म म म म	म म म -	धु - प म	ग रे ग ग
ह र रं ग	ज ग मे ऽ	दू ऽ जो न	दे ऽ ख त
०	३	×	२
सां - सां रे	सां नि धु प म	ग ग रे रे	ग - म म
ना ऽ म वि	ना ऽऽ को ह	त र न उ	पा ऽ ऽ य।
०	३	×	२

## रागललित पंचम अथवा ललितपंचम

भैरवाख्यसुमेलाच्च जातो ललितपंचमः ।

आरोहे तु पञ्चमं स्यात्पूर्ववक्रावरोहकम् ॥ ८२ ॥

मध्यमः संमतो वादी संवादी षड्ज ईरितः ।

गानं चानुमतं तस्य तुरीयप्रहरे निशि ॥ ८३ ॥

रागोऽयं गीयते लज्जे ललितांगपरिष्कृतः ।

मध्यमावप्युभौ तत्र स्वाकृतौ गायनोत्तमैः ॥ ८४ ॥

मध्यमेन प्रमुक्तेन ललितांगं समुद्भवेत् ।

पंचमस्य प्रयोगेण बुधस्तत्परिमार्जयेत् ॥ ८५ ॥

श्रीमल्लह्यसङ्गीते ( द्वि. पृ. १२१ )

जबै ललितके मेलमें धैवत कोमल होइ ।

अरू उतरत पंचम लगे ललितपंचम कहोइ ॥

रागचन्द्रिकासार ॥ १२० ॥

‘ललितपंचम’ एक मिश्र राग है, जो भैरव थाट से उत्पन्न होता है । इसमें दोनों मध्यमों का प्रयोग होता है । इसके आरोह में पंचम वर्ज्य है । अवरोह पूर्ण और वक्र है । वादी स्वर शुद्ध मध्यम और संवादी षड्ज है । यह राग रात्रि के अन्तिम प्रहर में गाया जाता है । इसे ललित अंग से गाते हैं । इसमें मुक्त मध्यम के प्रयोग से ललित अंग उत्पन्न किया जाता है, परन्तु पंचम लगाने पर यह ललित से भिन्न हो जाता है । मारवा थाट में एक “पंचम” नामक राग है । उसमें धैवत स्वर शुद्ध लगता है, अतः वह भी इस राग से सहज ही भिन्न हो जाता है । ‘पंचम’ की चीजें आगे मारवा थाट के प्रकरण में इस क्रमिक पुस्तक के छठे भाग में देखी जावें ।



उठाव.

गर्मगरे सा, निसागम, मग, प, मधुनि, धुप, धुमम, पग, रेसा ।

चलन.

गर्मगरेसा, धुनिसागम, ममम, ममग, मधुनिसां, सारें,  
सांनिधुप, मपमधु पम । गमधुनिसां, सां, सांनिरें  
सांनिधुनि, सां गं गं में गं रें सांनिधुप मप  
गर्मगरेसा ।

ललितपंचम-त्रिताल ( मध्यलय ) .

स्थायी.

मं	प ग रे सा	सा	नि सा म म	म - म म	गममं गम ग -
क	हो तु म	सां	५ चि क	हां ५ ते जु	आ <sup>५५</sup> ५५ ५ ये
०		३	×	×	२
ग	प - प प	प	धु रे नि	धु नि धु प म	ग म ग रे
भो	५ र म	ये	५ नं द	ला ५ ५ ५	५ ५ ला ५ ।
०		३	×	×	२
ग	प ग रे सा				
क	हो तु म				
०					

अन्तरा.

म	ग - ग ग	धु	म - धु धु	सां - सां सां	रे - सां -
पी	५ क क	पो	५ ल न	ला ५ ग र	ही ५ है ५
०		३	×	×	२
नि	सां - सां सां	नि धु धु धु	धु रे रे नि धु	म ग म ग	
धू	५ म त	नै ५ न बि	शा ५ ५ ५	५ ५ ला ५ ।	
०		३	×	×	२

ललितपंचम-त्रिताल ( मध्यलय ) .

स्थायी.

रे	नि	धु	म प धु नि धु प म	म - - म	- मम (म) ग
सां सां सां	निधु	का	५ ५ ५ ५ ५	चा ५ ५ र	५ मनु जा ५
क	र म न ५	३	×	×	२

सा	म	ध	रे
म - मग म	सां सां निधु	म - धु म गम	ग रे सा -
लो ऽ भऽ मो	ह म दुऽ	आ ऽऽ शा ऽऽ	त्रे ऽ घ्णा ऽ
नि सा	ग सां	सां	
मा - म -	म म नि सां	रे निधु नि धुम	धु मम म ग
भू ऽ टा ऽ	य ह सं ऽ	सा ऽऽ ऽ ऽऽ	ऽ ऽऽ ऽ र।

अन्तरा.

ग ध म ग म ध	नि सां - सां -	नि सां सां सां -	सां नि रे सां -
कि स की ऽ	मा ऽ ता ऽ	कि स का ऽ	पोऽ ऽ ता ऽ
नि सां - सां, सां	नि ध नि -	सां रे गं रे सां, सां	सां नि धुमं म
छां ऽ ड, भ	र म जा ऽ	श र नऽ, उ	सी ऽ कोऽ ऽ
ग ग म म म म	म ग नि नि -	धु म - धु मं गमं	रे ग रे सा -
जि न य ह	स बऽ सं ऽ	सा ऽऽ र ऽऽ	चो ऽ है ऽ
नि सा सा - म -	ग सां म म नि सां	सां रे नि धु नि धुमं	धु मं म म ग
बो ऽ ही ऽ	अ प रं ऽ	पा ऽऽ ऽ ऽऽ	ऽ ऽऽ ऽ र।

ललितपंचम-एकताल ( द्रुतलय )

स्थायी.

ग	म	ग	रे	सा	-	धु	नि	सा	म	म	-
ज	व	आ	ऽ	वे	ऽ	मो	रे	सै	ऽ	यां	ऽ
१		०		३		४		×		-	

म	-	म	म	म	प	ग	ग	ग	ग	प	ध
वां	५	ह	ग	हे	रा	५	खुं	औ	र	ला	गुं
२		०		३		४		×		०	
सां	सां	धुं	नि	रें	सां	नि	धुं	प	प	धुं	प
उ	न	के	५	५	५	५	५	ऐ	५	यां	५।
२		०		३		४		×		०	

अन्तरा.

ग	-	नि	नि	सां	-	सां	-	नि	सां	सां	निरें
म		धुं		का	५	गा	५	पी	या	स	न५
जा	५	रे	५	३		४		×		०	
सां	नि	धुं	नि	रें	गं	गं	मं	गं	रें	सां	नि
क	हि	यो	५	इ	त	नो	सं	दे	५	५	५
२		०		३		४		×		०	
धुं	प	प	धुं	प	मं	ग	प	मं	ग	रें	सा -
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	सा ५
२		०		३		४		×		०	
सा	सा	सा	सा	-	धुं	नि	सा	सा	सां	नि	धुं
गि	न	त	जा	५	त	मो	हे	ध	री	पा	५।
२		०		३		४		×		०	

ललितपंचम-आदिताल ( विलंबित )

स्थायी.

रे	-	म	ग	रे	-	सा	-	ग	म	म	-	ग	प
ग	५	५	म	दे	५	५	५	व	म	हा	५	दे	५ ५ व
२				×				२				०	



ग	प - - म	धु नि धु प	म - धु -	म
पा S S S	र व ती S	S S S S	S प ते S	
३	×	१		
धु ध	सां -	सां सां नि रे नि धु	धु म धु नि नि	धु ग
वे S जू S	के सा S धे S	प शु S प	ती S S S	
३	×	२	०	

अन्तरा.

धु	म - धु सां	- सां सां सां	नि	सां नि रे गं	रे सां नि धु
कं S ठ मा	S ल शि व	गं S ग बि	रा S ज त		
३	×	०			
धु सां	म धु नि सां	- नि रे सां	नि रे धु धु	म धु म ग	
गौ SS री S	S S शि व	शि व S ज	टी S S S		
३	×	२	०		

ललितपंचम—आदिताल ( मध्यलय )

स्वायी.

म  
गमग  
एअ

रे सा नि रे गम	म - म -	म पम धु म	म - ग -
ला S SS तेरो	सा S चो S	ना SS S S	S S म S
३	×	२	०

धु	म ध सां नि	रें नि ध -	धु	म ध नि म	धु	म मग गमग
सा ऽ हे	अ	क व र ऽ	पा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ	योऽ	एऽअ
३		×	२		०	

## अन्तरा.

धु	म धु - सां	सां नि रें सां सां	सां नि रें गं रेंसां	सां नि रें नि मं ध मं ग		
रू मशा ऽ मधु	रा ऽ सा न	व ल ख ऽस	व ऽऽ ऽऽ ऽऽ			
३	×	२	०			
धु	म ध सां नि	रें नि ध -	धु	म ध नि म	धु	म मग गमग
प ग ला ऽऽ	ऽ ग न ऽ	धा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ	योऽ	एऽअ	
३	×	२	०			

ललितपंचम—तिलवाड़ा ( विलम्बित ).

## स्थायी.

ग  
मं ग  
अल

रे सा निरे	ग	म - म -	प - म धु नि म	म - म (म) ग ग	
स ऽ ऽऽ	उ	नी ऽ दे ऽ	नै ऽऽ ऽऽ न	ला ऽऽ लऽ ति	
३		×	२	०	
म ध सां नि	रें नि ध ध	धु	म ध नि धु नि	धु	म धु मं गम गमग
हा ऽ रे	क	हां ऽ तु म	रै ऽ ऽ न वि	ता ऽऽ ऽऽ	ये, अल
३		×	२	०	

## अन्तरा.

धु म ध सां, सां	सां - नि रे सां	सां नि - रे ग रे सां
पी ऽ क, क	पो ऽऽ ऽ ल	दे ऽ खि य ऽ त
३	×	३
		नि सां, नि रे नि ध नि, धर्म धर्म म ग
		है, ऽऽ ऽ ऽऽ ऽ, ऽऽ ऽऽ पिय।
धु म ग - म ध	नि सां - नि रे सां	रे नि ध नि म धु म ग म ग, म ग
अ ध ऽ रु	अं ऽऽ ज न	ल खा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽऽ दे, अल
१	×	२

## राग मेघरंजनी.

—\*—

निरी गमौ गरी गमौ निसौ रिसौ मगौ रिसौ ।

रंजनी मेघपूर्वास्यान्मध्यमांशा पञ्चोज्झिता ॥

अभिनवरागमंजयामि ॥ ८१ ॥

अथ रागो मध्यमांशो नामतो मेघरंजनी ।

संवादीपङ्कजचिरो वर्ज्यपञ्चमधैवतः ॥ ५०० ॥

नित्यमौडुव एवायं ललितांगविभूषितः ।

तीव्रस्य मध्यमस्यात्र प्रयोगः किञ्चिदिष्यते ॥ ५०१ ॥

तीव्रौ निषादगांधारावृषभः कोमलः स्मृतः ।

मध्यमौ द्वौ निशायां च गीयते प्रहरैऽतिमे ॥ ५०२ ॥

सङ्गीतसुधाकरे ।

भैरव थाट से यह 'मेघरंजनी' नामक एक मनोरंजक राग स्वरूप उत्पन्न होता है । इसमें पञ्चम और धैवत स्वर बिलकुल वर्ज्य होते हैं । इसका वादी स्वर मध्यम और संवादी स्वर पङ्कज है । इसके गायन का समय रात्रि का चौथा प्रहर है । इसमें मध्यम पर विश्रांति ली जाती है । इस कारण इस राग पर किञ्चित् ललितअंग की छाया आ पड़ती है, परन्तु धैवत वर्ज्य होने से यह ललित से अलग हो जाता है । ललितअङ्ग दिखाते हुए कोई-कोई इसमें तीव्र मध्यम का प्रयोग भी करते हैं, परन्तु यह अनिवार्य नहीं है । इसके बीच-बीच में "सा म" स्वर संगति आती है । यह राग विलंबित लय में गाये जाने पर अच्छा लगता है । इस राग का आधार—"राग लक्ष्मण" नामक प्राचीन ग्रन्थ है ।



उठाव.

निरेग, म, ग, रेगम, नी, सां, रेसां, मग, रेसा ।

चलन.

निरेगग, म, मग, रेग, रेसा, म निसां रेरेसां, निम, ग,  
मरेगरेसा, निरेगम ।

तीव्र मध्यम लगाना चाहें तो निम्न रूप से लगाया जावे:—

निरेगम, म, ममग, रेग, म, गरेसा ।

## मेघरंजनी—ममताल ( मध्यलय )

स्थायी.

सा	रु	ग	म	म	म	—	म	म	म
नि	ल	त	न	अ	ही	५	र	न	प्र
ल	२				०		३		
×					म				
ग	—	म	म	म	ग	—	रु	ग	—
म									
भा	५	त	न	भ	खा	५	र	है	५
×	२				०		३		
ग	—	म	म	सां	सां	—	सां	रु	सां
म				नि					
पं	५	च	म	वं	गा	५	ल	न	हि
×	२				०		३		
नि	—	म	म	म	ग	—	रु	ग	मम
सां									
हो	५	त	भ	टि	या	५	र	है	५५।
×	२				०		३		
ग	सा	रु	ग	म	म	—	म	म	म
ल	नि	त	न	अ	ही	५	र	न	प्र
×	ल	२			०		३		

अन्तरा.

ग	—	नि	सां	सां	सां	—	रु	सां	—
म					नि				
मा	५	ल	व	सु	मे	५	ल	मे	५
×	२				०		३		
सां	सां	रु	गं	रु	नि	—	रु	सां	—
नि					सां				
प	घ	न	को	५	त्या	५	ग	है	५
×	२				०		३		

नि					सां		रें		सां	सां	सां
सां	-	सां	सां	-	रें	रें	नि	च	तु	र	
मे	S	घ	रं	S	ज						
×		२			म						
नि					ग						
सां	-	म	म	म	ग	-	रें	ग	मम		
मां	S	श	प	र	का	S	र	है	S, ।		
×		२					१				
ग	सा	रें	ग	म							
ल	नि	त	न	थ	इत्यादि						
×	ल	२									

## राग गुणकरी या गुणक्री

गुणकरी त्वयं मंद्रमध्यमा ।

गनि विवर्जिता भैरवांगिनी ॥

अपभध्वतो मंत्रिवादिनी ।

सदमि गीयते प्रातरौडवा ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ १० ॥

रिसौ धसौ मरी पश्च धपौ मरी पमौ रिसौ ।

गुणक्री गीयते प्रातर्भैरवांगी धवादिनी ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ ८६ ॥

गनि सुर वरजै गुणकरी रिमध कोमलही मान ।

वादी धैवत है रिखव संवादी सुर जान ॥

रागचन्द्रिकासार ॥ ८ ॥

गुणक्री अथवा गुणकली भैरव थाट से उत्पन्न होने वाला एक औड़व राग है। इसमें गांधार और निषाद स्वर वर्ज्य होते हैं। वादी स्वर धैवत और सम्वादी रिषभ है। यह भी भैरव अङ्ग का राग है। यह विलंबित में अच्छा गाया जा सकता है। इसकी प्रकृति शान्त और गम्भीर है। यह प्रातःकाल प्रथम प्रहर में गाया जाता है। इस राग का जोगिया राग से थोड़ा साम्य है। परन्तु जोगिया में निषाद प्रयुक्त होने और भैरवांग न होने से 'गुणक्री' भिन्न रह सकता है। भैरव की मरु मीढ़ इस राग में भी लगती है। इसमें कोई-कोई कोमल धैवत का



उच्चार कोमल नि के स्पर्श के साथ करते हैं। इस राग को 'सङ्गीत पारिजात' और 'रागतरंगिणी' इन दोनों प्राचीन ग्रन्थों का आधार प्राप्त है। बिलावल थाट का 'गुणकली' नामक राग इससे बिलकुल भिन्न है। इस गुणकली की चीजें पोछे वृष २३७-२४२ पर दी जा चुकी हैं।

### आरोहावरोह स्वरूप.

सा, रे, म, प, ध्र, सां । सां, ध्र, प, म, रे, सा ।

### चलन

सा, सारे, रेसा, ध्र, सा, रे, सा, मपमरे, सा, साध्रप,  
मपम, रेसा ।

## गुणक्री—तीव्रा ( बिलम्बित )

स्थायी.

रे - रे	रे	रे	सा	सा	धु - धु	धु	सा	-	सा	-
रू ऽ प	अ	तु	प	म	आ ऽ ज	गा	ऽ	यो	ऽ	
×	२	३	३	×	२	३	३	३	३	
ग रे - रे	ग रे	रे	सा	सा	धु - धु	धु	सा	-	सा	-
रा ऽ ग	गु	न	क	रि	जो ऽ क	हा	ऽ	यो	ऽ	
×	२	३	३	×	२	३	३	३	३	
सा धु धु	नि धु	-	प	प	म प म	म रे	-	सा	-	
मे ऽ ल	भै	ऽ	र	व	को ऽ मि	ला	ऽ	यो	ऽ	।
×	३	३	३	×	३	३	३	३	३	

अन्तरा.

प - प	नि धु	-	धु	धु	सां सां सां	सां	सां	सां	सां	
अं ऽ श	धै	ऽ	व	त	रि ख व	स	ह	च	र	
×	२	३	३	×	२	३	३	३	३	
धु धु धु	सां	-	सां	सां	रे रे सां	सां	-	धु	प	
अ ग न	औ	ऽ	ड	व	सु ग म	खं	ऽ	द	र	
×	२	३	३	×	२	३	३	३	३	
धु सां सां	धु	प	प	प	प - प	मप	धु	धु	धु	
प्रा ऽ त	च	ऽ	त्र	सु	जा ऽ न	गा ऽ	ऽ	य	सु	
×	२	३	३	×	२	३	३	३	३	
धु सां सां	धु	धु	प	प	म मप म	म रे	-	सा	-	
ना ऽ य	गु	नि	ज	न	म न ऽ रि	भा	ऽ	यो	ऽ	।
×	२	३	३	×	३	३	३	३	३	



## राग जोगिया.

—:०:—

आरोहे किल न गनी कदापि दृष्टौ ।

क्वाचित्को विलसति पंचमोऽवरोहे ॥

षड्जोऽशोऽस्त्युपरितनोहि मस्तुमन्त्री ।

सा योगिन्युपसि चकास्ति भैरवांगे ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥१२॥

रिमौ पधौ सनी धश्च पधौ मपौ धमौ रिमौ ।

गहीना जोगिया मांशा क्वचिद्गांधास्संयुता ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ ७८ ॥

भैरव मेलहि जोगिया नित गांधार वरजे हि ।

वादीम ससंचादि हे आरोहत नि तजेहि ॥

राग चन्द्रिकासार ॥ १० ॥

जोगिया राग भैरव धाट से उत्पन्न होता है। इसमें गांधार स्वर विलकुल वर्ज्य है और आरोह में निषाद वर्ज्य है। वादी स्वर मध्यम और सन्वादी षड्ज है। गायन का समय प्रातःकाल है। कोई-कोई वादी तार षड्ज और मध्यम को सन्वादी मानते हैं। 'रेम' और 'धुम' स्वर संगति इस राग में बहुत रंजक होती है। मध्यम स्वर मुक्त रखने से यह राग विशेष अच्छा जमता है। दाक्षिणात्य ग्रन्थों में 'सावेरी' नामक राग बताया गया है। जोगिया का स्वरूप थोड़ा बहुत उसी के जैसा है। केवल सावेरी के अवरोह में गांधार लिया जाता है। मर्मज्ञों का मत है कि जोगिया राग, भैरव और सावेरी के संयोग से



बना हुआ है। यह यथार्थ भी है। इस राग के अवरोह में क्वचित् स्थलों पर कोमल नी लेकर कोमल धैवत पर आते हैं।

### आरोहावरोह स्वरूप

सा रे म प ध सां । सां नि ध प, ध, म, रे सा ।

चलन.

रेमम, पप, धमरेसा, सारेरेसा, निध, सा, मपधपधम, रेम

रेसा । मम, पप, ध, सां, सां, रे सां, सां रे मं मं,

रे रे सां, सां रे सां निध प, ध नि ध प

मम म प ध ध म म, रे रे सा;

सा, सा रे म ।

## जोगिया-त्रिताल ( मध्यलय )

स्थायी.

प प प ध	सां - सां नि	ध ध प ध	म - प -
गु नि ज न	रा ऽ ग लि	ख त जो ऽ	गी ऽ को ऽ
०	१	×	१
म - म प	ध ध प प	म - म म	रे रे सा -
मे ऽ ल क	र त नि त	भै ऽ र व	सु र को ऽ
०	१	×	१
- रे म म	म - प -	ध - ध पम	म म प ध
ऽ म ध्य म	वा ऽ दी ऽ	नी ऽ को ऽ	गु नि ज न
०	१	×	१

अन्तरा.

प प ध ध	सां - सां रे	रे रे रे रेसां	गं रे - सां सां
ग नि सु र	छां ऽ ड स	ज त अ नुऽ	लो ऽ म क
०	१	×	१
सां सां सां नि	ध ध प धम	प ध सां -	- - - -
प्र ति लो ऽ	म त जे ऽ	गा ऽ को ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
०	१	×	१
सां - सां सां नि	ध नि ध प	म - प म	रे - सा सा
सं ऽ ग तऽ	रि म ध म	रू ऽ प दि	खा ऽ व त
०	१	×	१

रे - म म	म - प -	ध - ध पम	म म प ध
सं ऽ नि ध	सा ऽ वे ऽ	री ऽ को ऽ	गु नि ज न।
०	३	×	३

## जोगिया-त्रिताल ( मध्यलय )

स्थायी.

प	नि		
म म प ध	सां सां सां ध	- (म) - म	प - प -
अ नि अ नि	च र क दा	ऽ मैं ऽ तुं	भां ऽ दा ऽ
३	०	३	×
- - - -	सा रे रे म -	प - मप ध	मप मप ध पम
३	०	३	३
ऽ ऽ ऽ ऽ	सैं यो नी ऽ	मैं ऽ ऽ ऽ	क्युं ऽ ऽ ऽ कऽ
३	०	३	×
म रे - - रेरे	ग रे - सा -	रे रे म म	प - ध म
३	३	३	३
रे ऽ ऽ कित	सा ऽ हा ऽ	म न ल ल	चां ऽ दा ऽ।
३	३	३	×

अन्तरा.

म - म -	प ध सां -	- रे - रेसां	गं रे सां (सां) ध
क ऽ ची ऽ	रु इ दा ऽ	ऽ ता ऽ रु	क ढ ना ऽ
०	३	×	३
प ध - ध -	(ध) - म म	ध - सां -	- - - -
३	३	३	३
सो ऽ सा ऽ	नू ऽ न हि	आं ऽ दा ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
३	३	×	३

प	म म म म	प प ध सां	- रे रे रे	(रे) - सां ध
०	म न रं ग	म हे र म	ऽ को उ न	जा ऽ ने ऽ
		३	×	२
		५	५	५
पधु	रे सां -	सां - ध ध	म - प -	म म प ध
सोऽ	सा ऽ	नूऽ व त	लां ऽ दा ऽ।	अ नि अ नि
		१	×	२

जोगिया-तिलवाड़ा ( विलम्बित ).

स्थायी.

सा	रे म प पप	ध ध ध ध नि	ध (म) - मम	रे - सा -
हुँ	तो ऽ थाने	जा ऽ ऽऽ ऽ	व न ऽ नहि	दे ऽ शां ऽ
३		×	१	०
प	म म प पधु	सां - - -	(सां) - ध म	रे - सा -
हो	जी ऽ म्हारा	रा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ज ऽ।
३		×	२	०

अन्तरा.

प	म प - नि धधु	सां - सां -	रे रे रे मं	रे रे सां -
हुँ	तो ऽ थारी	दा ऽ सी ऽ	ज न म ज	न म री ऽ
३		×	२	०
प धु	रे - सांसां	सां - ध म	प नि ध म	म (म) रे सा
तुं	तो ऽ म्हारा	रा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ज।
३		×	२	०



## जोगिया-चौताल ( विलंबित ),

स्थायी.

म	रे	म	म	प	प	ध	-	-	ध	-	म
अ	खि	ल	गु	न	न	भां	५	५	डा	५	र
×	०	०	२	२	०	०	३	३	४	४	
म	प	म	रे	-	सा	रे	म	-	प	-	ध
र	च	त	सु	५	ए	सु	र	५	ज	५	न
×	०	०	२	२	०	०	३	३	४	४	
सां	-	-	ध	-	म	प	म	-	रे	-	सा
हा	५	५	५	५	र	क	र	५	ता	५	र।
×	०	०	२	२	०	०	३	३	४	४	

अन्तरा.

म	म	प	प	ध	ध	सां	-	सां	सां	-	सां
स	क	ल	गु	न	न	को	५	अ	धा	५	र
×	०	०	२	२	०	०	३	३	४	४	
रे	-	मं	रे	-	सां	रे	सां	सां	ध	-	प
दा	५	स	ता	५	प	भं	ज	न	हा	५	र
×	०	०	२	२	०	०	३	३	४	४	
ध	-	सां	-	ध	ध	म	म	म	रे	-	सा
मा	५	या	५	प	त	ज	ग	त	प	५	त।
×	०	०	२	२	०	०	३	३	४	४	

( ३६१ )

जोगिया—धमार ( विलंबित ).  
स्थायी.

प	—	प	—	नि	ध	—	—	प	—	ध	म	प	ध	—	
री	५	को	५		छे	५	५	ल	५	मो	हे	हूँ	५	५	
				×											
प				म	रे	—	—	सा	—	सा	सा	नि	सा	ध	—
म	—	म	—		हो	५	५	ले	५	अ	ब	क	हां	५	
ड	५	त	५		×										
				नि	सा			प		म	म	म	रे	—	
सा	—	सा	सा		ध	—	—	म	—	प	म			सा	
जा	५	य	छि		पो	५	५	५	५	मो	रि	आ	५	ली।	
				×											
सा	रे	म	प	प											
हो	५	री	को												

अन्तरा.

म					प	ध	सां	—	—	रें	—	सां	सां
प	—	—	ध	—	—	ध	सां	—	—	५	५	द	स
अं	५	५	ध	५	५	द्वा	रे	५	५	५	५	५	५
				×					०				
सां	रें	—	मं	—	रें	—	सां	—	—	नि	ध	—	—
रे	—	—	र	५	ही	५	ली	५	५	ने	५	५	५
घे	५	५	र	५	३					३			
				×									

प	ध	ध	-	सां	सां	नि	ध	-	नि	ध	-	-	प	-	ध	म
मो	रे	५	अं	ग	ना	५	मे	५	५	धू	५	म	म			
×					२											
ध		प			म		म			सा			सा			
प	ध	-	म	-	प	म	रे	-	सा	रे	म	प	प			
चा	५	५	वे	५	मो	रि	आ	५	ली	हो	५	री	को			
×					२											

जोगिया-धमार ( विलंबित ).

स्थायी.

प	ध	म	ध	-	-	म	-	,	म	रुं	-	सा		
५	रं	ग	अ	धी	५	५	र	५	५	क	हां	५	से	
३				×				२						
सा	धू	रुं	सा	रुं	म	-	प	-	-	प	ध	-	ध	
पा	५	५	उं	स	खी	५	य	५	५	न	मि	५	ल	
३				×					२					
प	ध	-	-	सां	ध	ध	-	म	-	म	-	रुं	-	सा
लू	५	५	ट	ल	ई	५	५	५	है	५	श्या	५	म।	
३				×					२					

अन्तरा.

म	प	-	ध	-	,	सां	सां	-	-	सां	-	-	सां
अ	व	५	मै	५	५	तु	मी	५	५	सं	५	५	ग
×					२								

प ध - - सां - हो ऽ ऽ री ऽ ×	, सां न २	रें - - खे ऽ ऽ -	सां - ध - लूँ ऽ ऽ ऽ ३
ध सां - ध - व हीं ऽ क्यूं ऽ ×	- ऽ २	प म रें - सा न जा ऽ वो -	म म प ध ज हां त क ३
रें सां - ध ध त है ऽ तु म ×	म री ३	- ऽ -	रें - सा रा ऽ ह। -



## राग देवरंजनी

मायामालवगौलाच्च मेलाज्जातः सुनामकः ।

देवरंजीति रागश्च सन्यासं सांशकग्रहम् ॥

आरोहे गरिवर्ज्यं चाप्यवरोहे तथैव च ।

स म प धु नि स । स नि धु प म स ॥

रागलक्षणो ॥ पृ. १८ ॥

‘देवरंजी’ अथवा ‘देवरंजनी’ एक दाक्षिणात्य राग है जिसे अपने यहां के विद्वानों ने प्रचलित किया है। यह भैरव थाट का औड़व राग स्वरूप है। इसमें ऋषभ और गांधार स्वर वर्ज्य होते हैं। इसका वादी स्वर षड्ज और संवादी मध्यम है। इसका उठाव षड्ज से होता है और इसी पर विभांति ली जाती है। उत्तरांग प्रबल होने के कारण यह राग प्रातर्गेय है। अवरोह में किंचित् कोमल नी का स्पर्श क्षुब्ध है।

इसका साधारण स्वरूप इस प्रकार है:—

नि  
सा, म, मप, ध, प, ध, धसां, ध, प, सांध, निध, प, म,  
पम, मपधसां, म, मपम । मपध, धसां, सां, सां,  
मं, सां, निसांध, प, मपसां, धनिधपम, सा,  
म, मपधसां, मपम ।





## राग विभास ( भैरव थाट )

विभास इह वर्ज्यमध्यमनिषादकस्त्वौडुवो ।

रिकोमल धकोमलो भवति तीव्रगांधारकः ॥

अमान्य ऋषभस्वरो स्फुरति धैवतांऽशस्वरो ।

मनो हरित श्रृण्वतामुपसि पंचमन्यामतः ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥१३॥

धपौ गपौ गरी सश्च गपौ धपौ सधौ च पः ।

विभासो मनिरिक्तः स्याद्दैवतांशः प्रभातगः ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥८०॥

कोमल रिखवरु धैवतहि सुर मनि विना उदास ।

वादीध रिसंवादि हे ओडव राग विभास ॥

रागचन्द्रिकासार ॥१२॥

‘विभास’ राग का एक प्रकार भैरव थाट से उत्पन्न होता है। इसमें मध्यम और निषाद स्वर वर्ज्य होते हैं। इसकी जाति औडव है। इसका वादी स्वर धैवत और सम्वादी गांधार है। कोई-कोई रिषभ को संवादी मानते हैं। यह राग उत्तरांग प्रधान है। इसका गाने का समय प्रातःकाल का है। इसकी प्रकृति शान्त और गम्भीर होने से यह प्रातःकाल के समय बड़ा प्रभावशाली होता है। मनि वर्ज्य होने के कारण इसमें ‘गप’ स्वरों की संगति अपने आप सम्मुख आ जाती है। कोमल धैवत पर से सावकाश रीति से पंचम पर न्यास करने से विभास-अङ्ग विशेष शोभनीय हो जाता है। सायंकाल के समय पूर्वी थाट से निकलने वाला एक ‘रेवा’ नामक राग गाया जाता है, उसमें भी वर्ज्यावर्ज्य स्वर विभास के समान ही होते हैं। केवल वह ( रेवा ) राग पूर्वाङ्ग प्रबल है और यह ( विभास ) उत्तरांग प्रबल है। दोनों में इतना ही अन्तर है। ये



राग मानों एक दूसरे के जवाब ही हैं। 'विभास' राग पूर्वी थाट से भी निकलता है। इसके विषय में आगे पूर्वी थाट में देखा जावे। 'विभास' नामक एक राग मारवा थाट में भी है, उसकी चीजें अगले क्रमिक पुस्तक के छठे भाग में विभास राग में देखी जावें।

### विभास का उठाव.

धु, प, गप, गरेसा, गप, धु, प, सां, धु, प ।

### चलन.

धध, प, गप, धप, गरेसा; सारेसा, गपधप, गपधसांधप,

धधप, सारेगप, सांधरेसां धप, गपधप, गरेसा, धु, प ।

गप, धसां, सां, सारेंसां, रेंगरेसां, सांधप,

पधगप, सांधप, गपधप, गरेसा ।

विभास-सूलताल ( मध्यलय )

( भैरव मेलजन्य )

स्वायी.

धु	-	प	प	प	प	ग	रे	सा	सा
रा	५	ग	वि	भा	५	स	म	धु	र
×		०		२		३		०	
रे	-	रे	-	प	प	ग	रे	सा	सा
मा	५	या	५	मा	५	ल	व	सु	र
×		०		२		३		०	
सा	रे	सा	प	प	प	धु	धु	प	प
प्रा	५	त	स	म	य	स	सु	चि	त
×		०		२		३		०	
सां	-	धु	प	प	प	ग	रे	सा	सा
गा	५	व	त	स	व	गु	नि	व	र ।
×		०		२		३		०	

अन्तरा.

प	प	धु	धु	सां	सां	सां	सां	रें	सां
म	नि	सु	र	व	र	जि	त	क	र
×		०		२		३		०	
रे	रे	रे	-	गं	-	रें	रें	सां	सां
रि	ध	सं	५	वा	५	द	रु	चि	र
×		०		२		३		०	

सा	-	प	ग	प	-	ध	ध	ध	ध
पं	५	च	म	न्या	५	म	क	ह	त
×		०	२	२		३		०	
सां	-	ध	प	ग	प	ग	रे	सा	सा
शा	५	ख	प्र	मा	५	न	च	तु	र।
×		०	२	२		३		०	

विभास—त्रिताल ( मध्यलय )

( भैरव मेलजन्य )

स्थायी.

ध	नि	प	प	
प ध सां सां	ध ध प -	ध प ग प	ग रे सा सा	
प्या री प्या री	व ति यां ऽ	क र क र	मो ऽ ह न	
३	×	२		
सा	प ग		नि नि	
रे - रे -	ग प रे सा	रे रेंगं रे सां	सां - ध प	
आ ऽ ली ऽ	री ऽ मे रो	म न ऽ ब स	की ऽ नो ऽ।	
३	×	२		

अन्तरा.

ध	ध	प	ध	सां	-	सां	सां	रें	रें	रें	रें	गं	रें	सां	-		
ध	री	प	ल	मू	५	र	त	ट	र	त	न	हि	य	तें	५		
				×				२				०					
सां	सां	रें	सां	सां	नि	ध	-	ध	प	ध	प	ग	प	ग	रें	सा	-
ह	र	रं	ग	वे	५	गि	दि	खा	५	बो	सु	र	ति	या	५।		
				×				३				०					

विभास-त्रिताल ( मध्यलय ) .

( भैरवमेलजन्य प्रकार )

स्थायी.

सां -

वै ऽ

नि	धु - प -	- धु ग ग	प - धु -	धु - - -
रि ऽ न ऽ	ऽ न ऽ न	दो ऽ ऽ ऽ	या ऽ ऽ ऽ	
०		×		
प	धु - प -	ग प धु प	ग - रे -	सा - - -
ला ऽ गी ऽ	ऽ ऽ ऽ ङ	रा ऽ ऽ ऽ	त ऽ ऽ ऽ	
०		×		
रे रे रे रे	प ग रे सा	ग - प -	ग रे सा -	
नि त उ ठ	ऽ मा ऽ ई	ना ऽ ले ऽ	जा ऽ वां ऽ	
०		×		
प	ग - प प	धु - धु धु	नि धु - सां -	नि धु प सां -
ना ऽ ऽ क	ही ऽ उ ठ	जा ऽ ऽ ऽ	त ऽ ऽ ऽ	वै ऽ
		×		

अन्तरा.

प	ग - प प	धु धुप धु धु	सां - सां सां	- रें - सां
सां ऽ चि क	ह तऽ तो रे	बा ऽ व रे	ऽ नै ऽ न	
०		×		
रें - रें गं	रें रें सां सां	रें सां - धु	- प सां -	
भूँ ऽ टि क	र त स र	स ले ऽ जा	ऽ त, वै ऽ।	
		×		



## विभास-रूपक ( विलंबित )

( भैरवमेलजन्य प्रकार )

स्थापी.

प	ध	सां	सां	नि	ध	-	प	ग	प	प	गप	ग	रे	सा
ध	ध	सां	सां	ध	-	प	प	ध	प	ग	हिऽ	आ	ऽ	ये
आ	ज	तु	म	भो	ऽ	र	भो	ऽ	र	हिऽ	आ	ऽ	ये	
२		३		×			२		३		×			
सा	-	रे	प	ग	रे	सा	सा	-	ग	प	प	ध	ध	
रे	-	रे	प	ग	रे	सा	रे	-	ग	प	प	ध	ध	
हो	ऽ	रि	म	चा	ऽ	ये	ऐ	ऽ	से	ऽ	हो	तु	म	
२		३		×			२		३		×			
प	ध	सां	सां	नि	ध	-	प							
ध	ध	सां	सां	ध	-	प	ध	-	प	ग	हिऽ	आ	ऽ	ये
च	तु	र	खे	ला	ऽ	रि	ऐ	ऽ	से	ऽ	हो	तु	म	
२		३		×			२		३		×			

अन्तरा.

प	नि	ध	सां	सां	सां	रे	गं	रे	रे	सां				
ध	-	ध	-	सां	-	सां	गं	रे	रे	सां				
छी	ऽ	न	ऽ	लू	ऽ	गि	मु	कु	ट	ऽ	मु	र	ली	
२		३		×			२		३		×			
प	ध	सां	सां	नि	ध	-	प	ध	-	ध	गप	ग	रे	सा
ध	-	सां	सां	ध	-	प	ध	-	ध	गप	ग	रे	सा	
औ	ऽ	र	म	लू	ऽ	गी	मु	ऽ	ख	ऽ	रो	ऽ	री	
२		३		×			२		३		×			



## विभास-तिलवाड़ा ( विलंबित )

( भैरवमेलजन्य प्रकार )

स्थायी.

सा नि	ध ध ध प	ध प ग प	ध प, गप गुरे सा	सा प
आ, जब धा ओ	रा S S S	S S, S S जे S द्र	रे गप गुरे मामा	सा S S तु रस्य
नि	×	प ध नि	ग प	ग प
सा ध रे सा	सा गप प ध	ध सां ध प	प धग प ध	प धग प ध
वा S जो रे	मं दिल रा S	वा जो रे S	S S S S	S S S S
ध नि	×	२	२	०
ध नि ध प				
आ, जब धा ओ				

अन्तरा.

ग	ध	नि	ध	सांसा, सांसां रे सां	रे रे, गंग रे सां	रे सां ध प
प, पग पप ध ध	सांसा, सांसां रे सां	रे रे, गंग रे सां	रे सां ध प	वन, वन आ ई	भुर, पट खे ले	पि या सं ग
च, र S, पर आ ई	×	२	२	प	प	०
प	प	ध	ध	धुग प ध ध	रे, रेग रे सां	रे सां ध प
धुध सांसां ध प	धुग प ध ध	रे, रेग रे सां	रे सां ध प	सहे S ल री S	अ S खी नी की	वा S जो रे।
३	×	२	२	३	३	०

विभास-कपताल ( मध्यलय )

( भैरवमेलजन्य प्रकार )

स्थायी.

ग	ग	प ध प	ग	रे	सा - सा
प	रि	यां S चु	ह	चु	हा S नि
चि	२	०	३	३	३
×					





धु	धु	प	ग	प
चि	रि	यां	ऽ	चु
×		२		

विभास—चौताल ( विलंबित )

( भैरवजन्य प्रकार )

स्थायी.

प	प	ग	रे	सा	सा	रे	सा	—	प	ग	प
धु	ऽ	न	र	ह	र	ना	ऽ	ऽ	ग	ऽ	प
ये		३		४		×		०	रा	२	य
०											
प	धु	—	धु	—	प	प	ग	—	रे	—	सा
न	गो	ऽ	पा	ऽ	ल	गि	रि	ऽ	ध	ऽ	र।
०		३		४		×		०	२		

अन्तरा.

ग	—	प	धु	धु	—	सां	सां	—	सां	—	सां
प	ऽ	पि	प	ति	ऽ	ध	न	ऽ	श्या	ऽ	म
गो		०		२		०		३		४	
×											
रें	रें	रें	गं	रें	सां	रें	सां	—	धु	—	प
क	म	ल	न	य	न	ब	न	ऽ	वा	ऽ	रि
×		०		२		०		३		४	
ग	प	प	—	धु	धु	धु	सां	सां	सां	धु	—
प	ग	प									प
ग	रु	ह	ऽ	ध्व	ज	च	तु	र	भू	ऽ	ज
×		०		२		०		३		४	



## अन्तरा.

ग	प	प	प	ध	ध	सां	-	सां	सां	-	सां
प	ग	प	ज	व	भू	ते	५	मि	गा	५	र
द	श	भु	२	२	०	०	३	३	४	४	४
सां	-	गं	रें	सां	सां	रें	-	सां	-	सां	प
रें	५	घां	५	व	र	ओ	५	ढे	५	शि	व
वा	५	०	२	२	०	०	३	३	४	४	४
५	प	ग	प	ध	-	रें	सां	-	सां	-	प
उ	र	ग	न	के	५	अ	भू	५	प	५	न
५	०	०	२	२	०	०	३	३	४	४	४
सां	सां	ध	ध	ध	प	ग	प	-	ग	प	सां
च	र	म	इ	भ	के	प	हि	५	रे	५	५
५	०	०	२	२	०	०	३	३	४	४	४

## संचारी.

ग	प	ग	प	-	प	ध	-	ध	नि	ध	ध	प
आ	५	धे	शं	५	भु	आ	५	धे	ग	व	री	५
५	०	०	२	२	०	०	३	३	४	४	४	४
प	प	ध	सां	-	सां	सां	-	ध	ध	प	-	५
दो	ऊ	५	ए	५	क	मे	५	प	ध	रे	५	५
५	०	०	२	२	०	०	३	३	४	४	४	४
ध	प	ग	प	ध	प	प	ग	प	ग	रे	सा	५
त्रि	व	भा	५	प	र	अ	स	५	वा	५	री	५
५	०	०	२	२	०	०	३	३	४	४	४	४

सा	सा	ग	प	प		नि	नि	प	-
१	शु	ल	ड	म	रु	धु	धु	ध	क
×		०		२		०		३	४

### आभोग.

प	धु	सां	-	सां	सां	सां	सां	सां	रु	सां	-
त्रि	दि	शा	५	प	ति	अ	स्तु	ति	क	रे	५
×		०		२		०		३		४	
रु	-	गं	रु	-	सां	रु	सां	सां	सां	धु	प
रा	५	जा	रा	५	म	प्र	भु	शि	व	को	५
×		०		२		०		३		४	
प	धु	ग	प	धु	धु	सां	-	सां	सां	धु	प
नि	स	वा	५	स	र	ध्या	५	न	ध	र	त
×		०		२		०		३		४	
प	सां	सां	धु	धु	प	प	ग	प	धु	धु	-
धु	सां	धु	धु	प	प	ग	प	धु	धु	-	सां
ह	र	ह	र	ह	र	क	ह	त	मो	५	से।
×		०		२		०		३		४	

विभास—ब्रह्मताल ( मध्यलय )

( भैरवमेलजन्य प्रकार )

स्वायी.

प	धु	-	-	प	ग	प	ग	रु	सा	सा
स्था	५	५	म	अ	ति	सुं	५	द	र	
×		०		२		३		४		



सा	रे	प	प	ग	रे	सा	सा		
सु	र	लि	म	नो	ऽ	ह	र		
४		५		६		०			
नि	प	प	प	ध	ध	सां	—	ध	प
सा	ग	व	र	ध	न	धा	ऽ	र	न
गो	ऽ	८		६		१०		०	

## अन्तरा.

प	प	ध	—	सां	सां	सां	सां	—	सां
वि	द	रा	ऽ	ब	न	वि	हा	ऽ	रि
×		०		२		३		०	
सां	रे	गं	रे	सां	—	ध	प		
रे	रे	के	ऽ	का	ऽ	र	न		
सु	ख	५		६		०			
४		नि		प					
प	सां	ध	प	ग	प	म	रे	सा	सा
घ	ऽ	पी	ऽ	म	न	रं	ऽ	ज	न,
गो		८		६		१०		०	

## राग भीलफ.

आसावरीमेलजन्यो भीलफः श्रूयते जने ।

राग आधुनिको ह्येष संपूर्णो धैवतांशकः ॥ ८७ ॥

जौनपुर्यपि खद्वागो द्वावत्रावयवौ मतौ ।

प्रातःकालप्रगेयत्वादुत्तरांगं परिस्फुटम् ॥ ८८ ॥

भैरवमेलनेऽप्याहुः केचिदेनं विचक्षणाः ।

धवादीनं रिनित्यक्तं वृधः कुर्याद्यथोचितम् ॥ ८९ ॥

श्रीमल्लद्वयसङ्गीते ( द्वि. पृ. १६४ )

'भीलफ' राग, एक यावनिक राग है, जो हजरत अमीर खुसरो द्वारा प्रचलित किया गया है। इस राग के दो प्रकार हैं। एक आसावरी थाट से उत्पन्न होने वाला सम्पूर्ण जाति का भीलफ है और दूसरा यह भैरव थाट का भीलफ, जिसमें ऋषभ और निषाद दुर्बल होते हैं। आसावरी थाट का भीलफ, जौनपुरी और खट राग के मिश्रण से उत्पन्न होता है। दोनों प्रकार के भीलफ का वादी स्वर धैवत है। ये दोनों राग प्रातःकाल गाये जाते हैं। आसावरी थाट के भीलफ की चीजें छठे माग में, आसावरी थाट के प्रकरण में देखी जावें।

चलन.

सा, गम, प, प, प, ध, ध, सां, ध, प, पप, मगम, पध,  
सां, पपमप, मग, म ।

भोलफ-भपताल ( विलंबित ).

( भैरवमेलजन्य प्रकार )

स्थायी.

नि		म	ग			ध		
सा	-	ग	म	म	प	प	प	-
मे	ऽ	री	ऽ	म	द	द	क	रो
×		२			-		३	ऽ
म		नि	नि	नि	ध		नि	
प	-	ध	ध	ध	सां	-	ध	प
या	ऽ	शा	ऽ	ह	मे	ऽ	रे	ऽ
×		२			-		३	ऽ
प	म	म	प					
	प	प	ग	म	प	-	ध	सां
दु	ख	द	रि	द्र	दू	ऽ	र	सां
×		२			०		३	क
प	म	ग						रो
	प	म	ग	म	प	मप	म	ग
सु	ख	दो	ऽ	ऽ	मे	(ऽऽ)	रे	म
×		२			०		३	ऽ

अन्तरा.

प	म	नि	नि			सां		सां
	प	ध	ध	-	सां	-	सां	सां
अ	लि	यो	न	ऽ	बी	ऽ	ते	ऽ
×		२			०		३	री
नि		ध	सां	-	नि	सां	नि	प
ध	ध	सां	सां	सां	सां	ध	-	प
वि	न	ती	क	र	त	हं	ऽ	ऽ
×		२		०		३		

प	प	ग	म	ग	प	ध	सां	-	सां
म	द	का	ऽ	ह	स	न	का	ऽ	छु
स		२			०		३		
×		म							
नि	प	प	म	प	प	मप	म	ग	म
ध									
व	त	च	र	न	ते	ऽऽ	रे	ऽ	ऽ।
×		२			०		३		

भीलफ-भूपताल ( मध्यलय )

( भैरवमेलजन्य प्रकार )

स्थायी.

नि	नि	सा	ग	म	प	प	प	प	-
सा	म	ही	ऽ	के	व	ल	स	ह	ऽ
ना		२			०		३		
×									सां
प	म	प	ध	प	ध	सां	रें	सां	प
सा	ऽ	न	न	ध	रा	ऽ	ध	र	त
×		२			०		३		
प	-	ध	प	नि	ध	प	म	ग	म
ना	ऽ	म	व	ल	र	च	च	त	ऽ
×		२			०		३		
सा	रु	ग	म	प	म	प	ग	म	रु
रा	ऽ	न	न	ज	ग	त	को	ऽ	ऽ।
×		२			०		३		



## अन्तरा.

प	प	धु	—	सां	सां	सां	सां	नि	सां
ना	म	ही	ऽ	के	व	ल	शि	वा	ऽ
×		२			०		३		
धु	धु	नि	सां	नि	सां	—	गं	रें	सां
शि	व	को	ऽ	प्र	भा	ऽ	ब	स	न
×		२			०		३		
प	—	ग	ग	म	प	—	प	रें	सां
ना	ऽ	म	हि	अ	धा	ऽ	र	ए	क
×		२			०		३		
प	नि	धु	—	प	म	प	ग	म	रें
के	व	ल	ऽ	भ	ग	त	को	ऽ	ऽ
×		२			०		३		

## संचारी.

सां	नि	धु	—	धु	प	—	प	प	प
ना	म	ही	ऽ	के	आ	ऽ	स	ज	न
×		२			०		३		
म	प	धु	नि	—	सां	—	सां	नि	धु
में	ऽ	भ	व	ऽ	त्रा	ऽ	स	स	ब
×		२			०		३		
प	—	नि	धु	धु	प	—	म	प	म
ना	ऽ	म	व	ल	हो	ऽ	तो	न	तो
×		२			०		३		

ग	म	रु	सा	-	प	म	ध	प	-
रु	ऽ	प	को	ऽ	ल	ख	त	को	ऽ ।
×		२			•		३		

## आभोग.

प	ध	नि	सां	सां	सां	सां	नि	सां	-
ना	म	के	ऽ	र	ट	न	नि	स	ऽ
×		२			•		३		
नि	सां	सां	सां	-	रुं	-	सां	नि	ध
दि	न	अ	म	ऽ	रे	ऽ	श	क	रो
×		२			•		३		
प	-	ध	म	प	ग	म	प	ध	रुं
ना	ऽ	म	के	वि	सा	ऽ	रे	कि	त
×		२			•		३		
सां	नि	ध	प	ध	म	प	ग	म	रुं
धा	ऽ	व	त	ऽ	न	त	को	ऽ	ऽ ।
×		२			•		३		

## राग गौरी ( भैरव थाट )

मालवगौडके मेले गौरी शास्त्रेषु वर्णिता ।  
 आरोहे धगहीनासावरोहे समग्रिका ॥ ७७ ॥  
 ऋषभः स्यात्सवरो वादी संवादी पंचमो भवेत् ।  
 गानं सुनिश्चितं तस्याश्चतुर्थप्रहरे दिने ॥ ७८ ॥  
 आदिशन्ति पुनः केचिदत्र तीव्रमयोजनम् ।  
 सायंगेये स्वरूपेऽस्मिन् भाति मे न विसंगतम् ॥ ७९ ॥  
 कलिगांगा मता गौरी पूरियांगा तथैव च ।  
 मतं त्विदं प्रसिद्धं स्यात्सर्वत्र लज्ज्यवर्त्मनि ॥ ८० ॥  
 मन्द्रस्थस्य निषादस्य वैचित्र्यमद्भुतं मतम् ।  
 श्रोतारः प्रायशस्तत्र कुर्वन्ति रागनिर्णयम् ॥ ८१ ॥

श्रीमल्लक्ष्म्यसंगीते ( द्वितीया० पृ० १२०-१२१ )

‘गौरी’ राग के बहुत से प्रकार हैं, उनमें से यह एक भैरव थाट से उत्पन्न होने वाला भेद है। इसके आरोह में गांधार और धैवत स्वर वर्ज्य होते हैं। अवरोह सम्पूर्ण है। इसलिये इसकी जाति ‘औडव-सम्पूर्ण’ हुई। इसका वादी स्वर रिषभ और सम्वादी पंचम है। यह सायंगेय राग है। इसमें कोई-कोई तीव्र मध्यम प्रयुक्त करते हैं। सायंगेय राग होने के कारण इस स्वर का प्रयोग असंगत नहीं जान पड़ता। गौरी के इस भेद में कालिंगड़ा और श्री राग का मिश्रण होता है। इसमें मन्द्र सप्तक का निषाद एक विशेष रीति से लिया जाता है, और इसी पर विश्रान्ति की जाती है। इसका यह प्रयोग ही इसके और अन्य गौरी-प्रकारों के लिये एक चिन्ह जैसा मानकर पहचाना जाता है।

उठाव.

सानिधुनि, रेगरेम, गरेसारेनि, सा ।

चलन.

सानिधुनि, रेगरेम, गरेसारे, निनिसा, मधुनिसा, धुनिसा,  
ममरेग, रे, सा; मपधुपम, रेग, रेरेसा, नि, सा,  
मपधुपम, धुपम, रेग, रेसा ।



गौरी-चौताल ( विलम्बित )

( भैरवमेलजन्य प्रकार )

स्थायी.

रु	-	प	म	प	म	ग	रु	-	ग	रु	रु
फू	५	ली	५	सां	५	५	भू	५	म	धू	५
३		४		×		०	२		०		
सा	सा	सा	प	प	सां	नि	धु	प	म	प	ग
व	न	मैं	५	५म	धु	व	५	५	न	मैं	५।
३		४		×		०	२		०		

अन्तरा

सा	रु	-	प	-	प	-	सां	सां	नि	धु	प	नि
रु	जै	५	सो	५	ही	५	चं	५	चु	हा	५	ट
३			४		×		०		२	०		
सां	रु	रु	रु	सां	-	सां	नि	-	रु	गं	रु	सां
चि	री	य	न	की	५	तै	५	सो	ही	५	५	
३		४		×		०		२	०			
रु	सां	-	सां	नि	रु	नि	धु	प	-	म	प	ग
चं	५	५	द्र	५	छि	पो	५	५	मे	५	५	
३		४		×		०		२	०			
-	रु	ग	-	ग	-	रु	सा	सा	रु	-	प	-
५	घ	५	न	५	मैं	५	फू	५	ली	५	५।	
३		४		×		०		२	०			

गौरी-चौताल ( विलंबित )

( भैरवमेलजन्य प्रकार )

स्थायी.

ग	रे	-	रे	ग	रे	-	सा	नि सा	नि	रे	-	ग
र	ली	५	व	जा	५	५	वो	री	५	५	५	भा
३				५			०		१			
रे	ग	रेसा	सा	प	ग	रे	सा	सा	नि सा	सा	सा	ध ध
५	५	वो ५	म	न	मो	ह	न	म	धु	र	म	
३		५	५	५	५	०	०	२		०		
प	म	प	ग	प	-	ग	रे	ग	रे	सा, प		
धु	र	सु	र	ता	५	५	५	५	५	न । सु		
३		५		५		०		२		०		

अन्तरा.

प	धु	प	-	सां	नि	-	नि	सां	सां	-	नि	सां	सां
स	स	५	ती	५	न	५	ए	क	५	५	ई	५	स
५		०		२			०		३			५	
रे	-	-	मं	-	गं	रे	-	सां	नि धु	-	प		
वा	५	५	ई	५	सो	ला	५	ग	डां	५	ट		
५		०		२		०		३		५			

प	घ	—	—	सां	नि	सां	—	रे	नि	घ	नि	घ	प
मा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
×		०		२		०		३		४			
ग	प			रे		ग	रे	सा		प			
प	ग	—		रे		ग	रे	सा,	प				
५	५	५	५	५	५	५	५	न।	मु				
×		०		२		०							

गौरी-चौताल ( विलंबित ).

( भैरवमेलजन्य प्रकार )

स्थायी.

ग	रे	सारे	सा	ग	रे	—	सा	नि	सा	नि	रे	—	ग
र	त	मन	में	ला	५	५	गी	र	हे	५	५	५	मा
३		४		×			०		२				
रे	ग	रेसा	सा	ग	रे	—	ग	रे	सा	—	नि	सा	धु
५	५	५	प	ग	५	५	स	हं	५	५	ए	त	
३		४		×			०		२		०		
प	—	म	—	प	—	ग	प	ग	रे	सा,	प		
नी	५	५	५	पी	५	५	५	५	५	५	र।	मू	
३		४		×			०		२		०		

## अन्तरा.

प	ध	प	सां	सां	—	सां	सां	—	सां	सां	सां
ध	व	न	के	५	५	दि	न	५	गि	न	त
×		•		२		•		३		४	
सां	रें	—	रें	गं	रें	सां	सां	सां	नि	ध	प
र	स	५	ना	५	५	ज	प	त	मा	५	ला
×		•		२		•		३		४	
प	ध	प	नि	सां	—	सां	रें	नि	ध	प	ध
द	र	स	बि	ना	५	न	य	ना	५	५	५
×		•		२		•		३		४	
ग	प	—	रे	ग	रे	सा,	सा	प			
फ	की	५	५	५	५	र।	मू				
×		•		२		•					



## राग जंगूला



‘जंगूला’ भैरव थाट से उपन्न होने वाला राग स्वरूप है। इसमें दोनों धैवत लगते हैं, परन्तु शुद्ध धैवत कम प्रमाण में लगता है। जहां यह स्वर प्रयुक्त होता है, वहां ‘धनिष’ स्वर समुदाय लेकर विलावल की छाया दिखाई जाती है, परन्तु इस राग में मुख्य अंग भैरव का ही रखा जाता है। यद्यपि इसमें दोनों धैवत लिये जाते हैं और विलावल की छाया दिखाने के लिये क्वचित् कोमल निषाद का प्रयोग होता है, परन्तु कोमल निषाद के बाद कभी भी कोमल धैवत नहीं लिया जाता। इस तरह यह राग आसावरी थाट के ‘जंगूला’ राग से सहज ही में भिन्न हो जाता है। यह राग आनन्द भैरव के बिलकुल निकट आ जाता है; उसमें वादी मध्यम है और उसका मुक्त प्रयोग स्पष्ट रूप से होता है। इस राग में ऐसा नहीं होता।

यह बिलकुल ही अप्रसिद्ध राग है। इसका केवल एक ही गीत उपलब्ध हो सका है, जो यहां दिया जा रहा है। “जंगूला” नामक अत्यन्त प्रसिद्ध ‘धुन’ वैसा एक राग है। यह राग आगे क्रमिक पुस्तक के छठे भाग में आसावरी थाट के अन्तर्गत वर्णित किया जावेगा। उसे वहीं पर देखा जावे।





# 1. $\frac{1}{2}$ $\frac{1}{3}$ $\frac{1}{4}$ $\frac{1}{5}$ $\frac{1}{6}$ $\frac{1}{7}$ $\frac{1}{8}$ $\frac{1}{9}$ $\frac{1}{10}$ $\frac{1}{11}$ $\frac{1}{12}$ $\frac{1}{13}$ $\frac{1}{14}$ $\frac{1}{15}$ $\frac{1}{16}$ $\frac{1}{17}$ $\frac{1}{18}$ $\frac{1}{19}$ $\frac{1}{20}$ $\frac{1}{21}$ $\frac{1}{22}$ $\frac{1}{23}$ $\frac{1}{24}$ $\frac{1}{25}$ $\frac{1}{26}$ $\frac{1}{27}$ $\frac{1}{28}$ $\frac{1}{29}$ $\frac{1}{30}$ $\frac{1}{31}$ $\frac{1}{32}$ $\frac{1}{33}$ $\frac{1}{34}$ $\frac{1}{35}$ $\frac{1}{36}$ $\frac{1}{37}$ $\frac{1}{38}$ $\frac{1}{39}$ $\frac{1}{40}$ $\frac{1}{41}$ $\frac{1}{42}$ $\frac{1}{43}$ $\frac{1}{44}$ $\frac{1}{45}$ $\frac{1}{46}$ $\frac{1}{47}$ $\frac{1}{48}$ $\frac{1}{49}$ $\frac{1}{50}$ $\frac{1}{51}$ $\frac{1}{52}$ $\frac{1}{53}$ $\frac{1}{54}$ $\frac{1}{55}$ $\frac{1}{56}$ $\frac{1}{57}$ $\frac{1}{58}$ $\frac{1}{59}$ $\frac{1}{60}$ $\frac{1}{61}$ $\frac{1}{62}$ $\frac{1}{63}$ $\frac{1}{64}$ $\frac{1}{65}$ $\frac{1}{66}$ $\frac{1}{67}$ $\frac{1}{68}$ $\frac{1}{69}$ $\frac{1}{70}$ $\frac{1}{71}$ $\frac{1}{72}$ $\frac{1}{73}$ $\frac{1}{74}$ $\frac{1}{75}$ $\frac{1}{76}$ $\frac{1}{77}$ $\frac{1}{78}$ $\frac{1}{79}$ $\frac{1}{80}$ $\frac{1}{81}$ $\frac{1}{82}$ $\frac{1}{83}$ $\frac{1}{84}$ $\frac{1}{85}$ $\frac{1}{86}$ $\frac{1}{87}$ $\frac{1}{88}$ $\frac{1}{89}$ $\frac{1}{90}$ $\frac{1}{91}$ $\frac{1}{92}$ $\frac{1}{93}$ $\frac{1}{94}$ $\frac{1}{95}$ $\frac{1}{96}$ $\frac{1}{97}$ $\frac{1}{98}$ $\frac{1}{99}$ $\frac{1}{100}$

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

## पूर्वी थाट.



## पूर्वी थाट के राग ( १० )

गौरी

त्रिवेणी

टंकी या भीटक

मालवी

बिभास

रेवा

जेताभी या जेतभी

दीपक

हंसनारायणी

मनोहर

---

## राग गौरी ( पूर्वी थाट )

सनी धनी रिगौ रिश्च मगौ रिसौ रिनी च सः ।

दिनान्ते गीयते गौरी मद्रया ऋषभांशिका ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ ६७ ॥

तीख मगनि कोमल धरि वादि रिखव सुरजान ।

संवादी पंचम कहै गौरी रागनिदान ॥

राग चन्द्रिकासार ॥ ६५ ॥

गौरीरागः प्रकटतरमाभाति तुल्यः श्रियैव ।

भेदः किंचिद्भवति च परं वादिसंवादितोऽस्य ॥

वादी चात्रर्षभ इति जगुः पंचमोऽभात्यवर्यः ।

सायं गीतः सुखयति मनो मंद्रनी रक्तिदोऽस्मिन् ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ६४ ॥

गौरी राग का यह प्रकार पूर्वी थाट से उत्पन्न होता है । इसके आरोह में भी गांधार और धैवत स्वर वर्ज्य होते हैं । इसमें वादी स्वर रिषभ और सम्वादी स्वर पंचम है । इसके गायन का समय संध्याकाल है । इसमें भी श्रीराग का अङ्ग लगता है । मन्द्र स्थान में पूरिया के समान "नि धु नि" इस प्रकार निषाद का प्रयोग होता है । कुछ लोगों का मत है कि इसके आरोह में स्वल्प धैवत ग्रहण करने से यह राग श्रीराग से स्वतन्त्र रखा जा सकता है । कोई इसमें वादी पंचम को बनाकर राग भिन्नता रखते हैं । इस राग के कुछ गीत दोनों मध्यम लगने वाले प्राप्त हुए हैं । मैरव थाट के 'गौरी' राग की चीजें पीछे दी जा चुकी हैं ।

उठाव.

सानिधुनि, रेग, रेमंगरे, सारे, निसा ।

( अथवा )

ममंगरेसा, निधुनि, रे, रेगरेसा; मधुनि, सा रे, रेरे, गरेसा;  
सासापप, पमपधु, मंग मंगरेसा ।

दोनों मध्यम लगाकर गाये जाने वाले गौरी राग का स्वरूप निम्न प्रकार का है, प्रचार में यही अधिक प्रचलित है ।

सानिधुनि, रेगरेमंगरेसारेनिसा; म, ममंगमरेग, रे, मंगरे  
सारेनि, सा, मधुमधुनि, सा, रे, रेगरेसा, म, ग,  
मधुपम, रेग, रेम, गरेसारेनि, सा ।

‘ललिता गौरी’ नाम एक गौरी-प्रकार, शुद्ध धैवत और दोनों मध्यम ग्रहण करने वाला प्रचलित है । यह राग मारवा थाट में आया है । इसका विवरण अगले छठे भाग में दिया जावेगा ।

‘गौरी’ का एक और प्रकार प्रचलित है, जिसे आरोह में धैवत लेकर श्रीराग का विस्तार मध्य और तार सप्तक में करते हुए गाया जाता है । इसका उदाहरण इस प्रकार है:—

म  
प, मंग, रेग, रेसा, मधु, निसां रेसां, रेनिधुप, पमंगरे,  
नि  
गरे, सा, साप, पमंगरे, गरेसा, नि, सां, रेनिधुप ।

गौरी-त्रिताल ( मध्यलय ) .

( पूर्वमिलजन्य प्रकार )

स्थायी.

नि	सा	सानि ध्रु नि	रे	ग	ग	म	ग	रे	सा	रे	सा	नि नि सा -
क	हाऽ	क रुं	प	ग	न	च	ल	त	स	खी	घ	र को ऽ
१			•				१				×	
			ध्रु	म	म	ध्रु सा	सा	सा	रे	सा	रे	- रे रे
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न	य	न वि	मु	ख	ज	न	दे	ऽ ख त
२				•			१				×	
ग			नि	सा			प	पम	प ध्रु		म	ग रे, म
रे	-	सा सा	सा	-	प	प	अ	रुऽ	ण अ		घ	र को। क
जा	ऽ	त न	लो	ऽ	ल	त	अ	रुऽ	ण अ		घ	र को। क
२			•				१				×	
ग												
म	ग	रे सानि										
हा	ऽ	क रुंऽ										
३												

अन्तरा.

ध्रु	म	ध्रु	म	सा	सा	सा	-	रे	रे	रे	म	ग	रे	सा	सा
अ	व	ण	क	ह	त	वे	ऽ	व	च	न	सु	न	त	न	हि
•				१				×				१			
सा															
नि	-	सा	रे	ग	मग	रे	सा	नि	नि	सा	-				
री	ऽ	स	पा	व	तुऽ	मो	ऽ	प	र	को	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
•				१				×				१			
सा												ध्रु	ग		
म	म	ग	म	प	-	प	प	ध्रु	ध्रु	प	ध्रुप	म	प	म	ग
म	न	अ	ट	क्यो	ऽ	र	स	म	धु	र	हुऽ	स	न	प	र
•				१				×				१			



सां	नि नि सां रे	(सां) - ध प	प	ग म ग -	
ड	र त न	का ऽ ह ऽ	ड	र को ऽ	
सा	म म म म	ग (अथवा)	×		
म	म म म	म म म ग	म ध प ध प	ग म ग ग	
म	न अ ट	क्यो ऽ र स	म धु र ह ऽ	स न प र	
ध	ध सां सां	नि प ध	×		
ड	र त न	ध - म प	प	ग म ग -	
		का ऽ ह ऽ	ड	र को ऽ	

गौरी-त्रिताल ( मध्यलय ) .

( पूर्वीमेलजन्य प्रकार )

स्थायी.

सा  
मो

- नि ध नि	सा ग ग म	म ग रे सा	नि - सा -
ऽ हे वा ट	च ल त छे	ड त है बि	हा ऽ री ऽ
१	०	३	×
- - सादे सा नि	धुधु म ध	नि नि नि नि	सा
ऽ ऽ रे ऽ ऽ	ऽ निर ख ह	स त बि ज	रे सा रे , सा
१	०	३	×
			ऽ ना रि । मो

## अन्तरा.

रे नि रे	ग - म -	- मम म म	ग ग मम मग
५ ला ज कि	मा ५ री ५	५ इन गो पि	य न में ५ ५
	१	×	२
रेरे नि रे	ग ग रे सा	नि - सा -	- - सारे नि
५ मुधि बु धि	ग इ मो रि	मा ५ री ५	५ ५ रे ५ ५
	१	×	२
सा नि रे	ग ग म -	म म म म	ग ग मम मग
५ दे खो चां	५ द ए ५	नि तु र श्या	५ म ने ५ ५
	१	×	२
रे रे नि रे	म ग रे सा	नि - सा -	- - सारे सानि
५ उ च क कां	५ क री ५	मा ५ री ५	५ ५ रे ५ ५
	१	×	२
धुधु म धु	नि नि नि नि		
५ निर ख ह	स त त्रि ज ।		
	१		

गौरी-त्रिताल ( मध्यलय )

( पूर्वमेलजन्य प्रकार )

स्थायी.

म म ग रे	नि - सा धु	नि - - रे	- रे सा -
५ भ ट क त	का ५ हे फि	रे ५ ५ वा	५ व रे ५
	१	×	२

मे - ध ध	नि नि सा -	रे - रे रे	ग रे - सा -
न ऽ श्व र	त न को ऽ	कौ ऽ न म	रो ऽ सो ऽ
•	३	×	२
सा सा प प	मे - प ध	मे ग रे मे	ग रे सा -
ख ट प ट	युं ऽ हि क	रे ऽ ऽ वा	ऽ व रे ऽ ।
•	३	×	२

## अन्तरा.

धु मे मे मे ग	धु मे - ध मधु	सां नि - सां सां	सां - सां -
क र म लि	खो ऽ उ त	नो ऽ हि मि	ले ऽ गो ऽ
•	३	×	२
सां सां	सां नि नि सां रे	सां नि - सां -	नि ध प -
नि - नि -	ज त न क	रे ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
ला ऽ खो ऽ	३	×	२
प मे प ध	मे - मे ग	रे ग मे ग	रे - सा सा
च तु र कृ	पा ऽ बि न	क छु न हि	सा ऽ ध त
•	३	×	२
सा - प प	धु मे - प ध	धु मे - ग मे	ग रे सा -
का ऽ हे को	सो ऽ च क	रे ऽ ऽ वा	ऽ व रे ऽ ।
•	३	×	२

गौरी-त्रिताल ( मध्यलय )

( पूर्वमेलजन्य प्रकार )

स्थायी.

सा रे

ता रे

रे	नि	सा	ग	रे	म	गम	प	रे	ग	-	रे	-	सा	सा	सा	नि	-
दा	नि	त	द		नौ	५	५	द्वि	तो	५	मो	५	म	न	द्वि	ना	५
३					×					३				०			
ध	-	प	प	ध	नि	सा	-		नि	रे	म	ग	-	सा	रे		
५	५	५	त	न	त	ना	५	५	त	न	त	ना	५	ता	रे		
३				×				३						०			

अन्तरा.

सा	रे	रे	ग	म	प	ध	प	ध	म	प	ग	म	रे	ग	-	रे
है	या	या	रं	य	ल	लि	य	ल	लि	य	लि	या	ला	५	ला	
०				३				×				३				
-	सा	-	रे	नि	सा	ग	रे									
५	ला	५	ला	ला	ले	त	द।									
०				३												

गौरी-रूपक ( विलंबित )

( पूर्वमेलजन्य प्रकार )

स्थायी.

प	म	प	सां	नि	सां	रे	सां	-	नि	-	रे	नि	ध	प	-
लं	५	का	५	ल	ई	५	रा	५	५	म	जी	५	५		
३		३		०			३		३		०				



मं	प	प	ग	रे	- सासा	नि	सा	प	म	पग	रे	ग	रे	सा
प	म	प	ग	रे	- सासा	नि	सा	प	म	पग	रे	ग	रे	सा
रा	५	व	न	मा	५ रिउ	डा	५	५	ये	५	दी	५	नो	
२		३		०		२		३			०			

## अन्तरा.

प	म	प	नि	नि	सां	- निसां	सां	नि	रे	गं	रेसां	सां	रेनि	ध	प
जी	५	त	च	ले	५	५५	घ	र	को	५५	बा	५	जे		
२		३					२		३						
प	धुम	प	ग	ग	रे	सा	सां	नि	रेगं	रे	सां	सां	रेनि	ध	प
त	त	वि	त	त	घ	न	शि	ख	रे	५	रा	५	ज		
२		३					२		३						
मं	प	धुम	पग	रे	ग	रे	सा								
प	धुम	पग	रे	ग	रे	सा									
वि	मी	प	न	को	दि	ये									
२		३		०											

गौरी-तिलवाड़ा ( विलंबित ).

( पूर्वमेलजन्य प्रकार )

स्थायी.

मं  
प  
ए

धु	म	गु	ग	रेसा	धु	म	ध	नि	सां	रे	- सां	सां	नि	रे	सां	लिध	नि	ध
री	है	या	५५	का	५	के	५	पा	५	स	र	हि	लो	५	मो			
०				३				×					२					

प - मं	प	मं	धु	गरे	ग	रे	ग	रे	सा -	सा	सा	रे	सा	प -	
रा	५	५	पि	यु	सि	५	ग	रे	दौ	५	से	५	चि	रि	यां
मं	धु	प	मं	गरे	ग	रे	सा	नि	सां	रे	-	नि	धु	नि	धु
बो	ल	न	ला	५	गि	सां	भ	की	५	५	५	५	५	५	५

अन्तरा.

प	धु	प	मं	धु	सां	नि	सां	सां	सां	नि	सां	-	नि	रे	गं	रे	सां	-
ऐ	सो	को	हो	वे	५	म	न	रं	५	ग	सु	धि	ले	आ	५			
सां	नि	धु	नि	रे	नि	धु	-	प	-	मं	धु	नि	सां	रे	-	सां	-	
वे	५	५	उन	की	५	५	५	वा	५	टे	५	मा	५	५	५			

सां	नि	धु	नि	रे	नि	धु	प	मं
५	५	५	५	की	५	५	५	ए

गौरी-त्रिताल ( विलम्बित )

( पूर्वमिलजन्य प्रकार )

स्थायी.

निरे	गरे	सा -	निसा	सा	सा	नि	धु	धु	धु	-	-	पनि	सासा
अक	वर	दौ	५	५	र	दौ	५	र	५	५	५	मुर	मुर

रुँ - रुँ ग	ग रुँ सा -	सा - - रुँ	नि - सासा पप
दे S S ख	त S S S	तो S S को	S S खल बल
३	×	२	•
धु - निप धुम	ग रुँ ग रुँ	सा - सा पम	म पग रुँ ग
S S पS SS	री S है S	S S S सब	ठी SS S S
३	×	२	•
गला रुँनि, निरुँ गुरुँ	सा		
रुँS SS अक वर	दौ		
३	×		

## अन्तरा.

रुँमप नि सां रुँसां	प नि सां सां	रुँ नि धु प	धुनि पधु नि धु
औरक रमी S रुँS	ब S न्क खु	खा S रो S	सब जग जी S
३	×	२	•
म			प म
प म पग रुँसा	रुँम पनि सांरुँ निसां	नि धु प पधु	नि धु प ग
S S तोS SS	और गुज राS Sत	जी S तो सब	ठी S S र
३	×	२	•
रुँ सा, निरुँ गुरुँ			
S S अक वर			
३			





## राग त्रिवेणी

रिसौ गपौ गरी सथ रिपौ धपौ सनी धपौ ।  
गपौ गरी स इत्युक्ता त्रिवेणी र्यंशिकाऽप्यमा ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ ६८ ॥

कोमल रिध तीवर गनी मध्यम सुर वरजोइ ।  
रिप बादीसंवादितें तिरवेनी है सोइ ॥

रागचन्द्रिकासार ॥ ५७ ॥

पूर्वीस्वरैरेव युता त्रिवेणी

सदा विहीना खलु मध्यमेन ॥

बादी मतोऽस्यामृषमोऽस्त्यमात्यो—

भिगीयते पंचम एव सायम् ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ५६ ॥

त्रिवेणी राग पूर्वी थाट से उत्पन्न होता है। इसमें मध्यम स्वर वर्ज्य है। इसकी जाति पाड़व है। इसका बादी स्वर रिपम और संवादी पंचम है। इसमें श्रीराग का अङ्ग आता है। मध्यम के अभाव से 'गप' स्वर संगति आगे आ जाती है। यह राग अवरोह वर्ण से गाने पर अच्छा शोभित होता है। इसे सायंकाल के समय गाते हैं। यह प्राचीन राग है। पूर्वकालीन ग्रन्थों में उस समय प्रचलित स्वरूप के अनुसार इसका वर्णन प्राप्त होता है।

उठाव.

रेसा, गपगरे, सा, रे, प, ध्रुप, सां, निध्रुप, गप, गरे, सा ।

चलन.

सा, रे, <sup>ग</sup>रेसा, <sup>प</sup>सारे, गपग, रे, सा, सा, प, प, ध्रुप, सां,  
निध्रु, प, पग, <sup>ग</sup>रेसा ।

---

## त्रिवेणी-ममताल ( मध्यलय )

स्वायी.

रे	रे	रे	रे	प	ग	रे	सा	-	सा
अ	हो	ब	ल	क	ह	त	रा	ऽ	ग
×	२	२			०		३		
सा	रे	सा	सा	ग	प	ग	रे	सा	सा
ति	र	ब	न	ग	प	सु	ला	ऽ	ग
×	२	२			०		३		
सा	रे	सा	ग	प	प	-	प	धु	प
मे	ऽ	ल	गौ	ऽ	री	ऽ	म	धु	र
×	२	२			०		३		
नि	सां	नि	धु	प	ग	प	ग	रे	सा
म	ऽ	ध्य	म	क	र	त	त्या	ऽ	ग ।
×	२	२			०		३		

अन्तरा.

प	प	नि	-	नि	सां	-	नि	सां	सां
सि	रि	रा	ऽ	ग	अं	ऽ	ग	गु	नि
×	२	२			०		३		
नि	-	सां	रे	सां	नि	सां	नि	धु	प
सं	ऽ	म	त	रि	ख	ब	अं	ऽ	स
×	२	२			०		३		
सा	रे	सा	ग	प	प	प	धु	धु	प
अ	ऽ	स्त	दि	न	स	ब	च	तु	र
×	२	२			०		३		

नि	सां	नि ध्रु प	ग	प	ग रे सा
गा	५	व त व	हे	५	भा ५ ग ।
×		१	०		३

त्रिवेणी-ममताल ( विलम्बित ).

स्थायी.

सा	-	रे - रे	ग	रे	रे सा -
रे	५	लि ५ दि	स	र	सु ती ५
का		२	०		३
ग	रे	रे - रे	ग	प	ग रे सा
अ	रु	न ५ व	र	न	दे ५ वि
×		२	०		३
सा	रे	प - प	प	प	ध्रु - प
रे	ज	ले ५ व	र	न	तू ५ हि
उ		२			३
प	सां	ध्रु प ग प	ग	-	रे - सा
सां	-	प ग प	ग	-	रे - सा
गं	५	गा ५ त्रि	वे	५	५ ५ नि ।
×		२	०		३

अन्तरा.

म	-	सां - सां	सां	-	सां - सां
प	५	नी ५ प्र	का	५	से ५ क
वे		२	०		३
×					



नि	रुँ	गं	रुँ	सां	सां	-	नि	धु	प
ट	त	दु	ऽ	ख	द्वं	ऽ	ऽ	ऽ	द
×		२			०		३		
नि		प			प	-	प	धु	प
सां	-	ग	प	प	प	-	प	धु	प
खं	ऽ	ज	ऽ	न	मी	ऽ	न	लि	ये
×		२			०		३		
प		धु			प				
सां	-	प	ग	प	ग	-	रुँ	-	सा
सं	ऽ	ग	ऽ	त्रि	वे	ऽ	ऽ	ऽ	नि ।
×		२			०		३		

त्रिवेणी-भमताल ( मध्यलय )

स्यायी.

सा	-	रुँ	-	रुँ	ग	रुँ	सा	सा	सा
रुँ	ऽ	सा	ऽ	र	का	ऽ	र	न	तु
सं		२			०		३		
×					प				
सा	-	रुँ	-	प	ग	प	ग	रुँ	सा
रुँ	ऽ	चो	ऽ	वि	धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ
सां		२			०		३		
×									
नि		सा							
सा	रुँ	सा	प	प	प	-	धु	प	-
तु	ऽ	हि	ध	र	णी	ऽ	प	ती	ऽ
×		२			०		३		
नि	धु	प	ग	प	ग	प	ग	रुँ	सा
तु	ऽ	हि	ज	ग	ना	ऽ	था	ऽ	ऽ ।
×		२			०		३		

## अन्तरा.

मं				सां	सां				
प	-	धु	प	नि	नि	सां	सां	सां	-
ए	ऽ	क	हु	अ	ने	ऽ	क	तु	ऽ
×		२			०		३		
सां					सां				
नि	सां	रुं	-	सां	नि	सां	नि	धु	प
अ	वि	ना	ऽ	श	अ	वि	का	ऽ	र
×		२			०		३		
प					सां				
धु	-	नि	सां	-	नि	रुं	नि	धु	प
आ	ऽ	दि	तु	ऽ	अं	ऽ	त	तु	ऽ
×		२			०		३		
सां	-	धु	प	प	ग	प	ग	रुं	सा
		प	ग	प	ग	प	ग	रुं	सा
तु	ऽ	हि	स	व	दा	ऽ	ता	ऽ	ऽ ।
×		२			०		३		

## राग टंकी अथवा श्रीटंक

टंकीरागश्च कथितः पूर्वीमेलसमुद्भवः ।  
 संपूर्णः पंचमांशश्च संवादिच्छपभस्वरः ॥ २५६ ॥  
 तीव्रा निषादगांधारमध्यमा धैवतर्षभौ ।  
 कोमलौ कथितावत्र सायंकाले च गीयते ॥ २६० ॥  
 कैश्चिन्मध्यमवर्ज्यश्च वणितोऽयं त्रिवेणिवत् ।  
 वादिभेदाद्रागभेद इति युक्तं तदप्युत ॥ २६१ ॥

सङ्गीतलुधाकरे ( पृ. ३६-३७ )

गरी सरी सगौ पधौ पसौ निधौ पगौ पगौ ।  
 रिसौ टंकी भवेत्पांशा दिनान्ते भूरिरक्तिदा ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥६५॥

कोमल धैवत रिखव है मध्यम सुर न लगाइ ।  
 परि वादीसंवादितें टंकी गुनिजन गाइ ॥

रागचन्द्रिकासार ॥५८॥

पूर्वीमेले संस्थिता सा तु टंकी  
 संपूर्णाऽसौ पंचमांशा प्रसिद्धा ।  
 संवादस्यां प्रोच्यते चर्षभोऽयं  
 सायंकाले गीयते गीत्यभिज्ञैः ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥५७॥

‘टंकी’ अथवा ‘श्रीटंक’ राग पूर्वी थाट से उत्पन्न होने वाला एक सम्पूर्ण जाति का राग है। इसमें वादी स्वर पंचम और संवादी ऋषभ है। यह सारंगेय राग है। यह भी श्री अङ्ग से ही गाया जाता है। कोई-कोई इसमें मध्यम स्वर वर्ज्य करते हैं, ऐसा करने से इस राग और त्रिवेणी राग में गड़बड़ी हो जाना शक्य है, परन्तु इस राग का वादी स्वर पंचम है और त्रिवेणी में वादी ऋषभ है। इस प्रकार वादी स्वर के अंतर से यह राग स्वतन्त्र रहता है। यदि टंकी में मध्यम लगाया गया, तो भी वह गौण ही रखना पड़ता है। त्रिवेणी के समान यह भी प्राचीन राग है और पूर्वकालीन ग्रंथों में इसका उल्लेख प्राप्त होता है।

उठाव.

ग, रेसा, रेसा, गप, धप, सां, निध, प, मंग, प, ग, रेसा ।

चलन.

रेरे, गप, प, धधप, निधप, गपगरे, प, निरेनिधप, धनि  
धप, निसां, निधपमंगरेग, पगरे, रे, सा ।



टंकी-सूलताल ( मध्यलय )

स्थायी.

ग	—	रे	सा	सा	सा	नि	रे	सा	सा
का	ऽ	म	व	र	ध	नी	ऽ	सु	र
×		•		२		३		•	
सा	—	नि	रे	ग	प	ग	रे	सा	सा
टं	ऽ	की	ऽ	मा	ऽ	न	त	व	र
×		•		२		३		•	
नि	—	प	प	म	ध	नि	ध	प	प
सा	ऽ	धि	प्र	का	ऽ	श	प्र	ह	र
सं	×	•		२		३		•	
प	—	म	म	ग	म	ग	रे	सा	सा
पं	ऽ	च	म	जी	ऽ	वि	त	क	र।
×		•		२		३		•	

अन्तरा.

प	प	ध	प	नि	—	सां	नि	सां	सां
ति	रि	व	न	अं	ऽ	श	रि	ख	व
×		•		२		३		•	
नि	—	रें	गं	रें	सां	रें	नि	ध	प
म	ऽ	ध्य	म	व	र	जि	त	ज	व
×		•		२		३		•	
प	ध	नि	सां	सां	सां	रें	नि	ध	प
म	ऽ	री	ऽ	व	र	न	त	अ	ग
गौ	×	•		२		३		•	

म	धु	म	ग	म	रे	म	ग	रे	सा
मा	ऽ	ल	वि	अ	न	ध	च	तु	र।
×		०		२		३		०	

---

श्रीटंक-त्रिताल ( मध्यलय ) .

स्थायी.

सा	रे	रे	रे	रे	ग	रे	सा	सा	नि	सा	रे	सा	-	सा	रे	-	ग	ग
ह	रि	ह	रि	रि	क	र	म	न	ज	ग	में	ऽ	जी	ऽ	व	न		
×					०				०				३					
ग	रे	ग	प	प	प	-	म	ग	ग	प	-	ग	प	ग	रे	सा	सा	
है	ऽ	दि	न	चा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र।	
×					२				०				३					

अन्तरा.

सा	रे	रे	-	सा	सा	सा	रे	ग	रे	-	सा	सा	ग	प	ग	प	-	
गु	मा	ऽ	इ	ध	रि	पा	ऽ	छी	ऽ	न	हि	आ	ऽ	वे	ऽ			
×				२				०				३						
म	प	नि	धु	प	प	प	ग	ग	ग	प	-	ग	प	ग	रे	-	सा	
ह	र	रं	ग	क	र	ले	वि	चा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र।	
×				२				०				३						

---

## श्रीटंक-सूलताल ( मध्यलय ) .

## स्थायी.

सा	रे	रे	रे	सा	सा	ग	रे	सा	-
रे	मि	र	न	क	र	म	नु	जा	ऽ
×		०		२		३		०	
रे	रे	रे	-	ग	प	ग	रे	सा	-
र	व	को	ऽ	घ	ट	में	ऽ	रे	ऽ
×		०		२		३		०	
नि	-	सा	-	प	प	धु	-	प	प
सा	ऽ	प	ऽ	भ	व	सा	ऽ	ग	र
जा	ऽ	खु	ऽ	२		३		०	
×		०							
प	धु	प	प	ग	प	ग	रे	सा	-
ता	ऽ	र	न	हो	ऽ	ते	ऽ	रे	ऽ।
×		०		२		३		-	

## अन्तरा.

प	प	धु	प	नि	नि	सां	-	सां	सां
जो	इ	जो	इ	न	०	र	ध्या	ऽ	व
×		०		२		३		०	त
नि	सां	रें	सां	नि	सां	नि	धु	प	प
ई	ऽ	छा	ऽ	फ	ल	पा	ऽ	व	त
×		०		२		३		०	

सा	सा	प	प	प	—	धु	धु	प	प
घ	रि	प	ल	बी	ऽ	त	त	स	ब
×		•		२		३		•	
प	धु	प	—	ग	प	ग	रे	सा	—
वि	र	था	ऽ	जे	ऽ	ते	ऽ	रे	ऽ।
×		•		२		३		•	

1. General



## राग मालवी.

सपौ गपौ गरी सश्च सगौ मधौ रिसौ तथा ।

मालवी कीर्तिता सायं श्रीरागांगा रिवादिनी ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥१००॥

कोमल धरि तीवर निगम रोहनमें नी नाहिं ।

रिप वादी संवादितें कहत मालवी ताहिं ॥

रागचन्द्रिकासार ॥६०॥

पूर्वीसंस्थानजन्याऽखिलविवुधमता मालवी रागिणीयं

प्रारोहे निनिषादा भवति विकलिता धैवतेनावरोहे ।

वादी यत्रर्षभः संप्रविलसति तथा पंचमोऽमात्य इष्टः

संगत्या गस्य पस्याप्यतिरुचिरतरा गीयते सायमेव ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ६० ॥

‘मालवी राग’ पूर्वी थाट से उत्पन्न होता है। इसके आरोह में ‘नि’ दुर्बल और अवरोह में ‘ध’ दुर्बल स्वर हैं। इसका वादी स्वर रिषभ और संवादी पंचम है। यह राग सायंकाल के समय गाया जाता है। यह श्री अङ्ग से गाया जाता है। इसमें ‘गप’ और ‘निप’ स्वर संगति वैचित्र्यदायक होती हैं। यह एक स्वतन्त्र और अप्रसिद्ध रागस्वरूप है, फिर भी यह बहुत रंजक है। मालवी का उल्लेख प्राचीन ग्रंथों में किया हुआ प्राप्त होता है, परन्तु उस समय प्रचलित स्वरूप और इस राग के स्वरूप में आज बहुत अन्तर हो गया है।

उठाव.

सां, पग, पग, रेसा, साग, मधु, रे, सां ।

चलन.

सां, निप, ग, मंग, रेसा, साग, मधु, रेसां, सां, नि, प,  
मंग, मंग, रेसा ।

---

मालवी-त्रिताल ( मध्यलय ) .

स्थायी.

सा	सां	-	-	पप	मं	ग	-	पप	ग	-	रे	सा	नि	सा		
ऊ	ऽ	ऽ	ठन	म	न	ऽ	कर	ले	ऽ	ऽ	ऽ	प्या	ऽ	रे	ऽ	
नि	मं			धु	मं	धु	सां	नि	नि	नि	नि	धु	नि	-	मं	धु
सा	सा	ग	ग	मं	धु	सां	-	सां	सां	सां	सां	नि	-	मं	धु	
दि	न	क	र	अ	ऽ	स्ता	ऽ	च	ल	ते	सि	धा	ऽ	रे	ऽ	
					३			×					२			

अन्तरा.

मं	धु	ग	-	मं	धु	सां	-	सां	सां	सां	-	सां	सां	नि	सां	रे	सां	सां
कं	ऽ	च	न	मं	ऽ	डि	त	से	ऽ	रा	सु	सो	ह	ऽ	त			
सां	रे	-	गं	गं	-	रे	सां	सां	सां	-	सां	सां	नि	-	मं	धु		
दि	ऽ	व्य	पु	ऽ	ष्य	ग	ल	मा	ऽ	ल	वि	रा	ऽ	जे	ऽ			
.				३				×				२						

मालवी-धमार ( विलम्बित )

स्थायी.

प	सां	-	-	प	-	ग	-	प	ग	-	-	-	ग	प
आ	ऽ	ऽ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	फा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	गु	न
×				२			.				३			

ग - - रे -	सा सा	रे - -	ग रे - सा -
मा ऽ ऽ ऽ ऽ	स स	खी ऽ ऽ	अ ऽ ब ऽ
×	२	•	३
सा रे सा - ग -	ग -	धु म ध -	सां - सां -
च लो ऽ स ऽ	ब ऽ	हि ल ऽ	मी ऽ ल ऽ
×	२	•	३
नि सां - - रे -	सां -	नि सां नि -	धु म - ध -
खे ऽ ऽ ले ऽ	ऽ ऽ	हो ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ ।
×	२	•	३

## अन्तरा.

धु म - ध सां सां	सां -	सां - -	सां रे - सां -
ले ऽ ऽ पि च	का ऽ	री ऽ ऽ	स ऽ ब ऽ
×	२	•	३
सां रे - - गं -	- गं मं	गं - रे	गं रे सां -
रं ऽ ऽ ग ऽ	ऽ उ	डा ऽ ऽ	ऽ ऽ वो ऽ
×	२	•	३
नि सां सां मं - गं -	- गं मं	गं - -	रे - सां -
अ बी ऽ र ऽ	ऽ गु	ला ऽ ऽ	ल ऽ की ऽ
×	२	•	३
सां सां - रे -	सां -	सां नि -	धु म - ध -
भ र ऽ भ ऽ	र ऽ	भो ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ ।
×	२	•	३



## राग विभास ( पूर्वी थाट )



मस्तु तीव्रतरो यस्मिन् गनी तीव्रौ रीधौ मतौ ।

कोमलौ न्यासधोपेते विभासे गादिमूर्छने ।

आरोहे मनिवर्ज्यत्वं गपांशस्वरसंयुते ॥

सङ्गीत पारिजाते ।

‘विभास’ पूर्वी थाट से उत्पन्न होने वाला एक बिलकुल अप्रचलित राग है। ‘विभास’ राग का भैरवमेलजन्य प्रकार पीछे दिया ही जा चुका है, और मारवामेलजन्य प्रकार आगे क्रमिक पुस्तक माला के छठे भाग में दिया जावेगा।

पूर्वी थाट के इस विभास को सम्पूर्ण जाति का माना जाता है। इसमें मध्यम और निषाद स्वर दुर्बल होते हैं। यह उत्तरांग प्रधान राग है। इसकी सायंगेयता दूर करने के लिये कुछ गायक इसके अवरोह में तीव्र मध्यम ग्रहण करने को बचा दिया करते हैं। निषाद अवरोह में लिया जाता है। इसका वादी स्वर धैवत और संवादी रिषभ है। पंचम पर विभ्रान्ति लेने से यह राग अच्छा स्पष्ट हो जाता है। इसके विभ्रान्ति स्थान सा, ग, प और ध, भी होते हैं।



विभास—भूपताल ( मध्यलय ).

( पूर्वीमेलजन्य प्रकार )

स्थायी.

धु	धु	प	धु	प	ग	प	ग	रे	सा
रा	ऽ	ग	वि	भा	ऽ	स	च	तु	र
×		२			"		३		
सा	रे	सा	ग	प	धु	धु	नि	धु	प
का	ऽ	म	व	र	धु	न	के	सु	र
×		२			"		३		
प	ग	प	धु	सां	रे	सां	नि	धु	प
गा	ऽ	व	त	गु	नि	ज	न	सं	ऽ
×		२			"		३		
सां	धु	नि	धु	प	धु	प	ग	रे	सा
पू	ऽ	र	न	म	नि	हु	र	व	ल।
×		२			"		३		

अन्तरा

प	म	ग	प	धु	सां	सां	सां	रे	सां
अ	व	रो	ऽ	ह	में	म	त	ज	त
×		२			"		३		
सां	रे	सां	गं	रे	सां	—	नि	धु	प
आ	ऽ	रो	ऽ	ह	अ	नि	क	ह	त
×		२			"		३		

ध	ध	रें	रें	सां	रें	सां	नि	ध	प
पं	ऽ	च	म	मु	का	ऽ	म	है	ऽ
×		२			•		३		
सां	ध	नि	ध	प	ध	प	ग	रें	सा
पा	ऽ	ब	त	अ	नं	ऽ	द	त	ब।
×		२			•		३		

## राग रेवा

पूर्वामेलसमुत्पन्ना ख्याता रेवा गुणिप्रिया ।

आरोहे चावरोहेऽपि मनिहीनैव संमता ॥ ८६ ॥

न्यंशिका गांशिका वासौ सायंगेया बुधैर्मता ।

वर्जने निमयोः सिद्धा गपयोः संगतिः स्वयम् ॥ ८७ ॥

उत्तरांगप्रधानत्वे विभासांगं भवेत्स्फुटम् ।

निमयोर्यत्परित्यागस्तद्रागेऽपि सुसंमतः ॥ ८८ ॥

श्रीमल्लह्यसङ्गीते ( द्वी. पृ. १२६ )

पूर्वामेले भाति वर्ज्या मनिभ्यां

पङ्जांशा वा गांशिका कैश्चिदुक्ता ॥

संवाद्यस्यां पंचमः संप्रदिष्टः

सेयं रेवा सायमेवाभिगीता ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ २६ ॥

‘रेवा’ पूर्वाथाट से उत्पन्न होनेवाला ‘औड़व-औड़व’ जाति का राग है। इसमें मध्यम और निषाद वर्ज्य होते हैं। इसका वादी स्वर गांधार है। किसी-किसी के मत से वादी ऋषभ है। निषाद और मध्यम वर्ज्य होने के कारण इसका स्वरूप भैरव थाट के “विभास” के समान हो जाता है, क्योंकि विभास में भी ये ही स्वर वर्ज्य होते हैं, परन्तु वादी स्वर के भेद, और पूर्वाङ्ग की प्रयलधा से यह राग विभास से भिन्न हो जाता है। ‘म’ और “नी” वर्ज्य होने के कारण “गप” संगति अपने आप आगे आ जाती है।

चलन.

ग, रेग, पग, रे, सा; सारेग, प, पध, पग, सारेग, रेग,  
सारेंसां, धप, ग, पग, रेसा ।



रेवा-सूलताल ( मध्यलय )

स्थायी.

ग	—	रे	सा	सा	—	सा	रे	सा	सा
सां	५	ॠ	स	मै	५	सु	ख	क	र
×		०		२		३		०	
सा	रे	ग	—	प	ग	प	ग	रे	सा
रे	५	वा	५	रू	५	प	म	धु	र
×		०		२		३		०	
सा	सा	ग	ग	प	—	प	ध	प	—
पू	५	र	वि	मे	५	ल	हुँ	स	५
×		०		३		३		०	
प	—	धु	प	ग	प	ग	रे	सा	सा
औ	५	डौ	५	वि	न	म	नि	सु	र।
×		०		२		३		०	

अन्तरा.

प	—	प	धु	प	—	सां	सां	—	सां
अं	५	स	ग	हे	५	गं	धा	५	र
×		०		२		३		०	
सां	सां	रें	सां	गं	पं	गं	रें	सां	सां
ग	प	सं	ग	सा	५	ध	न	क	र
×		०		२		३		०	

सा	सा	ग	—	प	रे	ग	प	ध	सां
प्र	ति	मू	ऽ	र	त	वि	भा	ऽ	स
×		०		२		३		०	
रे	सां	ध	प	ग	प	ग	रे	सा	सा
च	तु	र	सु	ज	न	म	न	ह	र।
×		०		२		३		०	

## राग जेताश्री या जेतश्री

जैतश्रीरितिरागश्च सायंकालोचितो मतः ।  
 गांधारांशो निषादेन निजसंवादिनाश्रितः ॥ २७२ ॥  
 षड्जन्यासस्तथारोहे वर्जितर्षभधैवतः ।  
 अवरोहे तु संपूर्णः समाख्यातो मनीषिभिः ॥ २७३ ॥  
 तथा चीडुवसंपूर्णः कोमलौ धैवतर्षभौ ।  
 त्रयो निषादगांधार मध्यमास्तीव्रसंज्ञकाः ॥ २७४ ॥

सङ्गीतसुधाकरे । पृ. ३८

निसौ गपौ मधौ पश्च मगौ धपौ मगौ मगौ ।  
 रिसौ जेताश्रिकाऽऽरोहेऽरिधा सायं गवादिनी ॥

अभिनवरागमंजरीम् ॥ ६६ ॥

गमनी सुर तीखे जहां मृदुरिध चढत न लीन ।  
 गनि वादीसंवादिते जैतसिरी कह दीन ॥

राग चन्द्रिकासार ॥ ६२ ॥

जैतश्रीरिह वर्णिता गमनयस्तीव्रा मृद् धर्षभा—  
 वारोहे रिधवर्जिता पुनरियं पूर्णावरोहे मता ॥  
 गांधारस्य निषादकस्य च सदा संवादसंभूयिता  
 गीतालापविचारचारुमतिभिः सायं मुदा गीयते ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ६१ ॥

जेताश्री राग पूर्वी थाट से उत्पन्न होता है। इसकी जाति 'औडव-सम्पूर्ण' है। इसके आरोह में रिपभ और धैवत वर्ज्य होते हैं। इसका वादी गांधार और संवादी निषाद है। कोई 'पस' का सम्वाद मानते हैं। गायन का समय सायंकाल है। 'मंगम, ग' स्वर संगति जेताश्री में रक्तिदायक होती है। कोई-कोई इसे मारवा थाट का राग मानते हैं, परन्तु हमें प्रचार के अनुसार चलना ही श्रेयस्कर है। 'सङ्गीत पारिजात' और 'रागविबोध' ग्रन्थों में पूर्वी थाट में रिपभ और धैवत दुर्बल स्वर वाला जेताश्री राग बताया है। हृदयकौतुक में भी जेताश्री का वर्णन आता है, परन्तु वह भैरव थाट में बताया गया है।

उठाव.

निंसा, गप, मधुप, मंग, धुप, मंग, मंग रेसा ।

चलन

सा, गपम, ग <sup>प</sup>मंग, रेसा, निंसा, ग, मप, धुप, निधुप,

मंग, मंग, रेसा । प, धुप, सां, सां, रे, सां निसां,

गरेंसां, रेनिधुप । मप, रेसांनिधुप, <sup>म</sup>प, मंग,

<sup>रे</sup>मंग, रेसा ।



मं	मं	धु	प	प	सां	सां	सां	सां
ग	प	रो	ह	न	रि	ध	ह	त
आ	५	०	१		३		०	
सां	सां	रें	सां	सां	नि	धु	प	प
नि	ह	सु	नी	५	को	क	र	त
ग्र		०	२		३		०	
धु	धु	मं	मं	ग	रें	रें	सा	सा
मं	५	दि	प्र	च	लि	त	म	त
वा		०	३		३		०	
×								

सां नि <sup>१</sup>	नि	धु <sup>२</sup> मधु	म	म <sup>३</sup>	ग	म	ग	रे	सा
हऽ ×	र	रंऽ ०	ग	म	न	हु <sup>३</sup>	ल	स	त ।

जेताश्री-त्रिताल ( मध्यलय )

स्थायी.

नि	सा - ग म	प - प -	प धु प प	म ग म ग
मा ऽ न न	की ऽ जे ऽ	अ प ने पि	या ऽ सों ऽ	
३	×	२		
म	प - सां नि	- धु प प	म ग म ग	ग रे सा -
मा ऽ न ली	ऽ जे अ व	रा ऽ धा ऽ	रा ऽ नी ऽ ।	
३	×	२		

अन्तरा.

म	प धु प सां	सा - - सां	रु - सां गं	रुं रुं सां सां
तु म तो म	हा ऽ ऽ प्र	बी ऽ न स	क ल गु न	
३	×	२		
सां सां रुं नि	नि धु प प	प म ग म	ग रे सा -	
य ह बि न	ती ऽ मो री	मा ऽ न स	या ऽ नी ऽ ।	
३	×	२		

जेताश्री-त्रिताल ( मध्यलय )

स्थायी.

नि सा ग ग	प प प प	प प म ग	म ग रे सा
क र च तु	र सु ध र	नि स् का ऽ	म का ऽ म
०	३	×	२

अन्तरा.

प प प सां	- सां रे सां	सां सां रे सां	सां रे नि धु प
पा ऽ क चि	ऽ त वि न	क लु न हिं	सा ऽऽ ध त
०	३	×	२
नि सा ग प	प - धु प	प म ग ग	म ग रे सा
जो ऽ चा ऽ	हे ऽ ह र	रं ऽ ग नि	र वा ऽ न ।
०	३	×	२

जेताश्री-त्रिताल ( मध्यलय ).

स्थायी.

म  
प  
व

म प	प ग म प धु प	ग रे सा -	नि - म म	सा - ग प	- धु प -
हु त दिऽऽ न	वी ऽ ते ऽ	री ऽ ऽ आ	ऽ ऽ ली ऽ		
३	×	२	०		

मं मं				मं		मं
प ग प सां	— नि ध्र प	प ग पध्र प	ग रे सा, प			
अ ज हुँ न	ऽ आ ऽ ये	री ऽ मोऽ रे	ला ऽ ल। व			
३	×	२	०			

## अन्तरा.

मं				नि		ध्र रे
प ग प सां	सां रे सां —	सां सां नि ध्र	नि नि ध्र प			
ज ब ते भ	ब न ते ऽ	ग ब न ऽ	की ऽ नो ऽ			
३	×	२	०			
मं				नि	सा	मं
प पमं ग प	ग रे सा सा	सा — सां —	नि ध्र प, प			
त बऽ ते भ	यो ऽ म न	है ऽ बे ऽ	हा ऽ ल। व			
३	×	२	०			
प ग मपध्र मंग	मं ग रे सा					
हु त दिऽऽ नऽ	बी ऽ ते ऽ					
३	×					

जेतश्री-भूमरा ( विलम्बित ).

स्थायी.

न  
सा  
हा

मं				मं		ध्र	मं	ध्र	
— ग प प	ध्र — प	प — मं ग	मं — ग						
ऽ ल ऽ रि	यां ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	मा ऽ है						
३	×	२	०						



मं धं गममं धं मं ग रे	ग रे सा	रे धं सा रे रे मं मं ग रे	ग रे, सा नि
ह्रस्वः रा ऽ ऽ ऽ ऽ उं	हुः ऽ रा ऽ ऽ ऽ उं। हा		
३	२		

अन्तरा.

धु मे	ग	मे	धुप	सां	सां	सां	-	सां	सां	नि	रें	नि	धु	प
अ	ग	र	चं	द	न	को	५	पल	का	५	ना	५	ऊं	
				×			२							
धु मे	धु मे	ग	मे	ग	मे	ग	मे	-	धु	रें	नि	धु	प	-
ही	रा	मो	ति	५	य	न	ला	५	५	लरि	यां	५	५	
				×			२							
मे		धु मे	ग	धु मे	-	ग	मे	मे	मे	धु	मे	ग	रें	ग
प	-													नि
														ग
														रें, सा
५	५	५	५	मा	५	ई	मु	ल	रा	५	५	५	ऊं	हा
				×			२							

जेतश्री-त्रिताल ( विलम्बित ).

स्थायी.

म  
प  
म्हा

प (मंग म) सा नि | मं ग प मंग म | ग रे सा रे | सा - नि सा नि |  
 ने ऽऽ ऽ अ | के ऽ लीऽ ऽ | डा र् ऽ ग | यो ऽ ऽ म्हें |

म सा ग प ,प	ध्र प - पप	सां नि निरें निध्र प	म ध्र ग म प म मंग ,प
कां ऽ ईं ,क	रां ऽ ऽ कित	हूं ऽ ऽ ङ ऽ न	जां ऽ वां ऽ म्हा
३	×	२	०

## अन्तरा.

ग म ग प ध्रप	प सां - सां -	सां नि सां रें सां	सां नि -सां निध्र प
उ ण बि नऽ	म्हा ऽ नें ऽ	कां ऽ इ न	भा ऽ ऽ वेऽ ऽ
३	×	२	०
ग प (प) मंग गम	म म सा ग प म,गम	म ग रे रे	सा - निसा ,प
ह र रंऽ गऽ	त न ऽ म,नऽ	हा ऽ र ग	यो ऽ ऽ ऽ म्हा
३	×	२	०
( प मंग म ,सा	म ग प मंग गम		
ने ऽ ऽ ,अ	के ऽ ऽ लीऽ		
३	×		

## जेतश्री-त्रिताल ( विलम्बित )

## स्थायी.

प  
ते

प - मंग गमसाग	ग प - - मंग	म ग रे रे	सा - - -
हा ऽ ऽ रेऽऽ	र ऽ ऽ सकि	आ ऽ स ब	ढी ऽ ऽ ऽ
३	×	२	०

नि सा - सा	ग	मं	मं
ला ऽ ऽ गिर	प - - पप	प ध - पध	(प) - - गप,प
ही ऽ ऽ नित	हो ऽ ऽ नंद	ला ऽ ऽ लाते	
३	२	२	०

अन्तरा.

मं ग - पधुप	सां - सां -	नि सां - सांसां	रें नि ध प
त न ऽ मऽन	वा ऽ रुं ऽ	औ ऽ ऽ रवा	रुं ऽ स ब
३	३	२	०
मं - - गग	धु मं प - निरेंनि	नि ध प पप	मं - - गप,प
ना ऽ ऽ मज	पूं ऽ ऽ निश्च	ला ऽ ऽ लंगो	पा ऽ ऽ लऽते
३	३	२	०

जेतश्री-त्रिताल ( विलंबित )

स्थायी.

मं  
प  
म

प मं ग	ग	मं मं	मं ग - रेरे	सा - निसा -
न ऽ ऽ तुऽ	मी ऽ ऽ सऽन	ला ऽ ऽ गर	हो ऽ ऽ ऽ	
३	३	२	०	
नि रे	मं	मं	धु मं ग मंग	मं
सा (सा) नि गग	प - मंप	धु प - प	मं ग मंग	प
हों ऽ ऽ दिग	तें ऽ ऽ अ	न त ऽ न	जा ऽ वोऽ	म
३	३	२	०	







## राग दीपक.

( पूर्वमिलजन्य प्रकार )

अथ दीपकरागः स्यात्पङ्जन्यासग्रहांशकः ।  
 पंचमस्वरसंवादी आरोहे वज्रितर्पमः ॥ २८६ ॥  
 अवरोहे निगदितो निषादस्वरवज्रितः ।  
 गीयते दीपसमये बुधैः पाडवपाडवः ॥ २८७ ॥  
 केचिदेनं तु संपूर्णं निर्दिशंति विचक्षणाः ।  
 केचिन्निषादहीनं च ग्राहुः कन्याणमेलजम् ॥ २८८ ॥  
 तीव्रानिषादगांधारमध्यमा धैवतर्पमौ ।  
 कोमलौ कथितौ पङ्जपंचमावचलौ सदा ॥ २८९ ॥

सङ्गीतसुधाकरे । पृ. ३६

पूर्वमेलसमुत्पन्नो दीपको गुणिसंमतः ।  
 आरोहणे रिवर्ज्यं स्यादवरोहे निवर्जितम् ॥ ६४ ॥  
 पङ्जस्वरो भवेद्वादी कैश्चित्पंचम ईरितः ।  
 गानं सुसंमतं चास्य दिने यामे तुरीयके ॥ ६५ ॥

श्रीमल्लह्यसङ्गीते ( द्वि. पृ. १२७ )

मेले पूर्वा दीपकः पङ्जवादी  
 आरोहे संवर्ज्यतेऽत्रर्पमो हि ।  
 वर्ज्यः प्रोक्तश्चावरोहे निषादः  
 सायंकाले गीयते गानधुर्यैः ॥

रागकल्पद्रुमाङ्कुरे ॥ ६५ ॥

चढत जहां सुर रिखव नहीं उतरत नहीं निखाद ।

गयो पूरबी ठाट में दीपक सपसंवाद ॥

रागचन्द्रिकासार ॥६६॥

यह बहुत प्राचीन राग है । ग्रन्थों के निर्माण काल तक यह लुप्त हो चुका था । और इसके स्वरूप के सम्बन्ध में मतभेद था, ऐसा उल्लेख मिलता है । इस राग के संबंध में अनेक मनोरंजक आख्यायिकायें हैं । आज भी इसके स्वरूप के सम्बन्ध में मतभेद है । इसके दो तीन स्वरूप प्रचार में हैं । परन्तु वे भी अप्रसिद्ध ही हैं ।

इस राग के नाम से जो-जो गीत उपलब्ध हैं उनमें से एक से पूर्वीथाट से उत्पन्न होने वाला स्वरूप बनता है । इसके आरोह में ऋषभ और अवरोह में निषाद वर्ज्य होता है । इसका वादी स्वर पड़ज और संवादी पंचम है । कोई-कोई पंचम वादी और पड़ज को संवादी मानते हैं । यह सायंकाल गाया जाता है । इस राग को सम्पूर्ण-सम्पूर्ण मानने वाले भी कितने ही लोग हैं ।

इसके दूसरे स्वरूप, एक कल्याण थाट से उत्पन्न होने वाला निषाद वर्जित राग, और दूसरा बिलावल थाट से उत्पन्न दोनों निषाद वाला राग, भी कहीं-कहीं पाये जाते हैं । इनमें से बिलावल थाट के स्वरूप की चीख पीछे पृष्ठ २६६ पर दी जा चुकी है ।

चलन.

सां, प, गपगरेसा, सागप, मधुप, गर्मधुपसां, निसारिंसां, प,  
गपगरेसा ।

दीपक—रूपताल ( मध्यलय )

( पूर्वमेलजन्य प्रकार )

स्थायी.

सां	—	प	ग	प	ग	रे	सा	रे	सा
दी	५	प	क	क	थ	न	क	र	त
×		२			०		३		
नि			प						
सा	रे	सा	ग	प	प	प	प	ध	प
रा	५	ग	ल	५	छ	न	ग्र	५	थ
×		२			०		३		
प	—	प	ग	—	म	ध	प	नि	सां
मे	५	ल	का	५	म	व	र	ध	न
×		२			०		३		
सां	सां	प	ग	प	ग	—	रे	रे	सा
दि	न	अ	५	स्त	जा	५	म	ग	त।
×		२			०		३		

अन्तरा.

ग	—	प	ध	प	सां	सां	नि	रे	सां
आ	५	रो	५	ह	त	ज	रि	ख	व
×		२			०		३		
सां	नि	रे	—	सां	गं	मं	गं	रे	सां
अ	व	रो	५	ह	अ	नि	क	ह	त
×		२			०		३		



नि	रे	सा	ग	म	ध	प	सां	रें	सां
बा	ऽ	दि	सु	र	भ	यो	ख	र	ज
×		२			०		३		
सां	सां	प	ग	प	ग	रे	सा	रें	सा
च	तु	रा	ऽ	को	नि	त	सु	म	त।
×		२			०		३		

## संचारी.

रे	सा	प	प	प	प	प	ध	—	प
अ	हो	ब	ल	क	ह	त	मे	ऽ	ल
×		२			०		३		
प	—	ध	प	प	म	—	ग	ग	ग
मा	ऽ	ल	व	म	नी	ऽ	व	र	ज
×		०			०		३		
म	ध	म	—	ग	म	ग	रे	सा	सा
क	ऽ	न्या	ऽ	णि	को	उ	क	ह	त
×		२			०		३		
नि	रे	सा	ग	म	प	म	म	ग	ग
स	ऽ	स	म	सु	र	वि	र	हि	त।
×		२			०		३		

## आभोग.

म	ग	मे	ध	प	सां	—	सां	सां	सां
लो	ऽ	च	न	गु	नी	ऽ	क	ह	त
×		२			०		३		

सां	—	रुँ	सां	—	गं	मे	गं	रुँ	सां
रू	५	प	को	५	मं	५	द	म	त
×		२			•		३		
सा	रुँ	सा	ग	मं	धु	प	सां	रुँ	सां
पं	५	डि	त	स	क	ल	च	तु	र
×		२			•		३		
सां	—	प	ग	प	ग	रुँ	सा	रुँ	सा
शा	५	ख	म	त	अ	नु	स	र	त
×		२			•		३		

## राग हंसनारायणी

---

पूर्वा थाट से उत्पन्न होने वाला यह दक्षिण संगीत पद्धति का पाइय जाति का राग है। इसमें धैवत स्वर वर्ज्य है। कोई-कोई इसे मारवा थाट के अन्तर्गत मानते हैं। इसका स्वरूप सायंगेय रागों जैसा है। रागस्वरूप इस प्रकार है:—

चलन.

निरेगम, पमगरे, गमपम, गरेसा, निरेनिप, मग,  
निरेगम, रेगरेसा ।

---

## हंसनारायणी-त्रिताल ( मध्यलय )

स्थायी.

रुं रुं ग म	प - प -	मं ग गमं पमं	मं ग रुं सा
भ ज म न	ना ऽ रा ऽ	य न हं ऽ ऽ	स ना ऽ म
३	×	२	.
रुं - ग रुं	सा सा प -	मं ग मं ग	मं ग रुं ग प
पू ऽ र त	स व ते ऽ	रे ऽ म न	के का ऽ म ।
३	×	२	.

अन्तरा.

प - सां सां	- सां सां सां	रुं रुं गं रुं	सं - सां सां
ना ऽ म ले	ऽ त वा को	वि प त न	पी ऽ र त
३	×	२	.
सां - सां सां	रुं नि प प	मं ग मं ग	मं ग रुं सा
जा ऽ य स	र न च तु	र तु नि र	भि मा ऽ न ।
३	×	२	.



## राग मनोहर



यह पूर्वी घाट से उत्पन्न होने वाला एक अप्रसिद्ध राग है। इसमें उपलब्ध एक ही गीत यहां दिया जा रहा है। यह आधुनिक राग स्वरूप है, अतः इसके लिये मंत्राधार प्राप्त नहीं होता। इसमें वादी गांधार और सम्वादी धैवत है। आरोह में पंचम वर्ज्य है। अवरोह में साधारणतः “पर्मग” का प्रयोग नहीं किया जाता।

साधारण चलन.

धर्मगरे, गरेसा, मधुरेनिधुप, गर्मगरेसा । म ध सां

रेसां, रे नि ध प.



## मनोहर-त्रिताल ( मध्यलय )

## स्थायी.

सा धु	रे	सा	ग	सा
धु मे ग, गम	ग रे सा सा	रे - रे सा	ममरे ग रे सा	
अ ति हि, मऽ	नो ऽ ह र	नै ऽ न न	लाऽऽ ऽ गो ऽ	
३	×	२		
नि धु	धु रे नि धु प	धु मे धुनि मंग, गम	रे ग रे सा -	
सा प - मंघु				
ए री ऽ तेऽ	हा ऽ रो ऽ	श्याऽऽ मऽ, सऽ	लो ऽ ना ऽ ।	
३	×	२		

## अन्तरा.

धु	रे	रे	सां	सां	सां	नि धु प
मे धु सां सां	रे - सां सां	रे - गं रे सां	रे नि धु प			
जा ऽ न कि	दा ऽ स मि	लेऽऽ ह रि	प्री ऽ त म			
३	×	२				
धु मे धुनि मे ग, गम	ग रे सा -	सां रे नि धु मं, गम	ग रे सा -			
एऽऽ क ऽ, सुऽ	गं ऽ ध ऽ	दू ऽ जोऽऽ, सऽ	सो ऽ ना ऽ ।			
३	×	२				

## स्वर विस्तार.

टिप्पणी—इस पुस्तक में दिए हुए रागों के इन स्वर विस्तारों से विद्यार्थियों के गायन में सुन्दरता आयेगी तथा रागों के चलन उनके ध्यान में भली प्रकार आवेंगे। इन विस्तारों में स्वल्प विराम ( कौमा ) उचित स्थानों पर रुकने की जगह दिखाते हैं, अतः इन विरामों का विशेष महत्व समझना चाहिये। ये स्वर विस्तार अच्छी तरह से सध जाने पर फिर इनकी सहायता से छोटी-बड़ी तानों को रचने की कला विद्यार्थियों को आयेगी तथा नई-नई तानों को तैयार करने की उन्हें स्वयं इच्छा होगी।

इस पुस्तक में आये हुए रागों के स्वर विस्तार.



कल्याण थाट

### ( १ ) चन्द्रकांत—स्वरविस्तार

- ( १ ) गरेसा, निधप, धप, सा, सारेगरेसा, रेरेसा ।
- ( २ ) निरेग, रेग, रेरे, गपरेग, मंग, पमंग, रेगरेसा ।
- ( ३ ) निरेग, रेसा, रेरेसा, रेरेसा, निधनिधप, पधनिरे, गरे, धगपरे, नि, रेगरेसा । प, धप, निधप, निरे गरेग, पमंग, निधपमंग, रेग, प, रे, सा ।
- ( ४ ) साधप, धधप, पधसा, निरेगरेसा, सासागरेग, रेग, नि, निमंग, रेग, प रे, सा ।
- ( ५ ) धर्मगरेग, मंगरे, प, निध, मंगरे, गपगरेसा गगरेगप, धप, सां, निरेगंरेसां, निरेगंपंगरेसां सांरेसांनिध, निधप, ग, रे, गप, निरे, निधमंगरे, गप, गरेसा ।
- ( ६ ) सासा, प, प, मंगरे, धध, निधमंगरे, धपमंगरे, गप, गरे, निरेग, निधपमंगरे, गपगरे, गरेसा ।

### ( २ ) सावनीकल्याण—स्वरविस्तार

- ( १ ) गरेसा, सा (सा)निध, निधप, पसा, सारेसा, सारे गरेसा, मगप, पध, प, गधप, ग, रेसा, निधना, सारे, सा ।
- ( २ ) सारेगरेसा, मगप, ग, रेसा, मगपध, प, गरेसा, निधसा, रेसा ।



- ( ३ ) सा, ग, मगप, प, ध, प, पधनिधप, पध, प, ग, रेग, सारेग, पग, निधप, ग, धप, ग, रेसा, निध, ग, रेसा, निधप, सा, सारे, सा ।
- ( ४ ) गरेसा, पगरेसा, मगप, धप, गरेसा, मगपनिधप, गरेसा ।
- ( ५ ) सारेसा, निधनिधप, ग, रेग, पग, रेग, रेसा, सारेसा ।
- ( ६ ) प, पधप, पधनिधप, धप, मगप, निधसां, सां(सां) निधनिधप, प(प)ग, सामगप, निधप, ग, रेग, रेसा ।
- ( ७ ) पपसां, सारेंसां, सां(सां) निधनिधप, सांगरेंसां, निधप, मगपनिधसां(सां)निधप, पधप, ग, धप, ग, रेसा, निधप, सा, सारेसा ।
- ( ८ ) पनिधसां, सारेंसां, गं, रेंसांनिध, सां, रेंसां, मंगंपं, गरेंसां, निध, सारेंसां, निध, निध, प, पग, धप, ग, रेसा, निध, निधप, सा, रेसा ।
- ( ९ ) सारेगरेसा, सामगपगरेसा, सामगपनिधपगरेसा, सांनिधपगरेसा, गरेंसांनिधपमगरेसा, निध, सा, सारे, सा ।
- ( १० ) सासारेसा, सासागगपपधपगरेसा, सासागगपपधनिधप-गरेसा, सासागगपपनिधसारेंसांनिधपमगपधपगरेसानिध, सा, सासारे, सा ।
- ( ११ ) सागरेसा, सामगपगरेसा, सामगपसांनिधपगरेसा, सामगप-निधसारेंसांनिधपगरेसा, सामगपनिधसां, गं, रेंसां, निध, प, गधप, ग रेसानिधसा, सासा, रे, सा ।
- ( १२ ) सांनिधपपगरेसा, गरेंसांनिधपपगरेसा, सांमंगंपंगरें, सांनिधपपगरेसासामगपनिध, गरेंसांनिध, निधप, मगप, धपगरेसा, निध, सा सासारे, सा ।

## ( ३ ) जैतकल्याण—स्वरविस्तार

( १ ) सा, ग<sup>प</sup>परे, सा, सा, रेसा, सासागग<sup>प</sup>प प, प<sup>ध</sup>ग प,  
ध<sup>ग</sup>परे, सा

( २ ) सासारेसा, प, सा, रेसा, ग<sup>प</sup>प, प, ध<sup>ग</sup>परे, सा ।

( ३ ) सागप, प, गप, प, सां, रेसां, प, सागपसां, प, प<sup>ध</sup>ग  
प, ध<sup>ग</sup>परे, सा

( ४ ) सारे, सा, प<sup>ग</sup>सारे, सा, ग<sup>प</sup>परे, सा, ध<sup>ग</sup>परे, सा, गप<sup>ग</sup>धपरे, सा ।

( ५ ) सागपसां सां, गपसां, गप<sup>ग</sup>धपरे, सा ।

( ६ ) सारेध<sup>ग</sup>सा, गप<sup>ग</sup>धप, रे, सा, प<sup>ग</sup>सा, रेसा, पगप, धप, सां,  
प<sup>ग</sup>धपगपधप, रे, सा ।

( ७ ) गरेसा, रेसा, सागप, गप, सां, प<sup>ग</sup>धप, ध<sup>ग</sup>ध, प, गप<sup>ग</sup>धप  
गरे, सा ।

## ( ४ ) श्मामकल्याण—स्वरविस्तार

( १ ) सा, रे, म<sup>र</sup>रे, रेमरे, नि<sup>र</sup>सा, रे, म<sup>प</sup>प, प, धप, म<sup>प</sup>प, म, रे,  
प<sup>ग</sup>म<sup>र</sup>रे, नि, सा ।

- ( २ ) प॒नि, सा, रे॒नि॒सा, म॒ग॒म॒रे, नि॒सा, म॒प॒ध॒प, म॒प॒म, रे॒प॒  
ग॒म॒रे॒नि॒सा ।
- ( ३ ) म॒म, रे॒नि॒सा, रे॒नि, म, रे॒नि, प॒नि, रे॒नि॒सा, सा॒रे॒म॒प,  
ग॒म॒रे नि॒सा ।
- ( ४ ) प॒प॒नि॒सा, रे॒रे॒नि॒सा, म॒प॒रे॒नि॒सा, रे॒म॒रे, म॒प, नि॒र्म॒प, म॒प,  
ध॒र्म॒प, म॒ग, ग॒म॒प॒ध॒र्म॒प, ग॒म॒प, ग॒म॒रे, नि॒सा, रे, म॒प ।
- ( ५ ) प॒प, सां, सां, रे॒नि॒सां, नि॒सां॒रे, म॒रे, नि॒सां, नि॒ध॒प,  
म॒प॒प, नि॒रे॒नि, म॒प, म॒प॒प, ध॒र्म॒प, म॒ग, ग॒म॒प॒ध॒र्म॒प,  
ग॒म॒प, ग॒म॒रे, नि॒सा ।
- 

### ( ५ ) मालश्री—स्वरविस्तार

- ( १ ) प॒ग॒सा, सा॒सा॒ग॒ग॒प, प, प॒र्म॒ग, प॒ग॒सा । सा॒सा॒प॒नि॒सा,  
ग॒प॒ग, म॒ग, सा, नि॒सा॒ग॒प॒र्म॒ग, प॒ग॒सा ।
- ( २ ) प॒र्म॒ग, प॒र्म॒ग, म॒ग, सा॒ग॒र्म॒ग, म॒ग, सा । प॒प॒सा, सा॒ग,  
सा॒सा, ग॒प॒र्म॒ग॒प॒ग॒सा, नि॒प॒र्म॒ग, ग॒र्म॒प॒र्म॒ग॒ग॒सा ।
- ( ३ ) प॒प॒ग॒सा, ग॒प॒सां, नि॒सां॒गं॒सां, प॒र्म॒गं॒सां, नि॒नि॒प॒र्म॒ग॒प॒सां,  
सां नि॒प॒ग, सा॒ग॒प॒सां, नि॒प॒ग॒ग॒प॒ग, ग॒सा ।
- ( ४ ) सा॒सा॒प॒प॒र्म॒प॒नि॒प, प॒र्म॒ग॒प॒सां॒नि॒प॒प, नि॒प॒ग॒सा ग॒प॒सां,  
गं॒सां, नि॒प, ग॒प॒ग॒सा ।



बलावल थाट

## ( ६ ) हेमकल्याण—स्वरविस्तार

- ( १ ) पपधप, सा, सारेसा, गरेसा, गमप, गमरेसा, सारेसा, धधप, सा, गमप, गमरेसा ।
- ( २ ) सासारेसा, रेरे, सा, प, मगमरे, सा, गमप, गमरे, सा, सासा, मग, प, पधप, पपसा, ररेसा, गमप, गमरे, सा ।
- ( ३ ) सारेसा, गमप, धप, पधप, सां, धप, गमप, गमरे सा । धधप, सा, पगमरे, सा, सारेसा, धप, गमरे सा, ररेसा ।
- ( ४ ) सासा, मग, प, धप, गमप, गमरेसा, सामगप, धप, पगमरे, सा, रेसा ।

## ( ७ ) यमनीबिलावल—स्वरविस्तार

- ( १ ) सा, सारेगरेसा, निसा, पधनिसा, सारेगरेसा, सागमरेग, पमप, गम, रेग, गपमग, मरेसा, रे, सारेगरेसा । सासा, गमरेग, पमप, मगमरे, सा, सारेग, सानिध, निधप, पपधधप, मप, मगमरे, सा ।
- ( २ ) प, धनिध, सां निध, सां सारंगमरेसां, मप, सांधसां, रेंसांनिधप, पधप, मप, मगरेग, पमगमरे, सा ।

## ( ८ ) देवगिरी—स्वरविस्तार

- ( १ ) सा, निध, निधसा, रेग, गमरेग, मरे सा । सारेसानिध निधप, पपग, मग, रेग, पमग, मरेसा ।



- ( २ ) पप, निध, सां, रेंसां, निध, निसां धनिप, गमधध,  
निधनिप, गपधनिप, मग, पगमग, मरे, सा, सानिध,  
सारेग ।
- ( ३ ) सा, धनि, धसा, रेग, गप, गरे, गमगरे, सारेसा ।
- ( ४ ) सारेग, धनिधसा, रेग, पग, मगरे, सारेगमगरे, गप,  
धप, गमगरे, गरेसा ।
- ( ५ ) नि, ध, सारेग, धसारेग, मग, प, धनिप, धप, मगरे,  
सारेगप, गमगरे, गरे, सा ।
- ( ६ ) साग, रेग, पग, मगरे, गप, मगरे, धनिरेग, पमगरे,  
गपधनिप, गमगरे, गरे, सारेसा, निध, सारेग ।
- ( ७ ) गग, प, धनिप, धग, मगरेगमपमगरे, गपनिधनिप-  
मगरे, गरेसा, निध, सारेग ।
- ( ८ ) निनिप, ग, मपमग, रे, सा, गमगरेग, पधनिप,  
गमग, रेग, पनिधनिसां, निनिप, गमगरे, प, गमगरे,  
गरेसा, निध, सारेग ।
- ( ९ ) पपधप, धनिध, निसां, निनिप, सांरेंगंसां, निनिप,  
धनिधप, प, गमगरे, गप, गरेसा, निध, सारेग ।
- ( १० ) सारेगपधनिध, निसां, सांरेंसां, धनि, धसां, रेंगं ।  
मंगरें, सांरेंगं, सां, निध, नि, ग, मगरे, सारेगसा,  
निध, सारेग ।

- ( ११ ) सारेगरेसा, सारेगपमगरे, गरेसा, सारेगपधनिप, मगरे, गरेसा, सारेगपधनिसां, निधनिप, मगरे, गरेसा ।
- ( १२ ) धसारेग, धसारेगमग, धसारेगप, मग, धसारेगपधनिप, मग, गपधनिसांनिधनिप, सांनिधपमगरे, गरेसा निधसारेग ।
- ( १३ ) सारेगपरे, गपधनिप, गपरे, गपधनिसां, निधनिप, गपरे, गपधनिसां, रेंसां, निधनिप, गपरे धसारेगपरे, गमगरे, सा (सा), निध, सारेग ।
- ( १४ ) पपधनिसां, धनिधसां, सारेंगमंगं, गरेंसां, पंमंगरें, गंमंगरें, गरेंसांनिध, निप, पपधनिसां, निधनिप, मग ।  
पमगरे, सारेगसा, <sup>ध</sup>निध, सारेग ।
- ( १५ ) सारेगरेसा, धनिधसारेगपपमगरेसा, सारेगपधनिपप मगरेसा, गपधनि सारेंगरेंसांनिधपमगरेसा ।

### ( ६ ) सरपरदा—स्वरविस्तार

- ( १ ) सा, रेगम, धधप, पमप, मग, गमग, रेसा, गमधप, गमरेसा ।
- ( २ ) गरेसा, सारेगमरेरेसा, धपधमग, मपमग, रेरेसा । सारे सा, निसा, पधनिसा, गरेगमप, गमरे, सारे गमधधप ।
- ( ३ ) गमप, धधप, मप, धनिधप, मग, रेगमग, मपमग, मरे, सा, धप ।
- ( ४ ) निधनिसां, निधप, धप, निधप, मपधनिसांनिधप, मग, गम, धधप, मप, मग, मरे, सा । मप, धनिध, निसां,

सारेंगमंगरेंसां, सांनिधप, गम, धनिध, निध, धनिसां,  
सारेंसां, निधधप, गमरे, सा, सा, रेगम, धधप ।

### ( १० ) लच्छासाख—स्वरविस्तार

- ( १ ) सा, पमग, मप, गम, रेग, मगरेसा, सासारैगमप, धनि  
धप, मपमग, निनिध, रेगम, पमग, रेसा ।
- ( २ ) पपधनिसां, निसां, सांनिधनिसां, सांनिधधप, पधपमग,  
गगमरे, गमप, गमरे, सा, सा, रेगमप, धनिसां, रेंगं  
रेंसां, सारेंसांनिधप, धमग, मरेरेसा, पप, मग, रेगमप,  
मग, रेसा ।

### ( ११ ) शुक्लविलावल—स्वरविस्तार

- ( १ ) सा, ग, गम, गमप, मग, रेग, गम, प, सां, रेंसां,  
धधप, मग, रेग, मप, मग, म, रेसा ।
- ( २ ) सा, गग, म, पमग, रेसा, सा, रेगम, गम, पपमपम,  
ग, पधप, धनिधप, मपमग, रेग, पमग, मरेसा, साग,  
गम ।
- ( ३ ) गमप, धप, निध, प, सां, रेंसांनिध, निधप, म, पमग,  
म, रेरेसा ।
- ( ४ ) मगम, निधप, मपम, मगरेग, सा, गम, मग, मप,  
धनिसां, निसां, रेंसांनिधप, निधप, मगमरेसा, साग,  
गम ।
- ( ५ ) सारैगम, रेगमप, धम, धनिधपम, धमप, गम, रेरेसा,  
रेगम ।



- ( ६ ) पप, धनिध, निसां, सां, सारेंगंमं, रेंरेंसां, रेंसांनिधनिसां  
निधप, ममप, धनिसां, निधपमपम, ग, रेग, म, पमगम,  
रेंरेसा । साग, गम ।

### ( १२ ) कुकुभ-स्वरविस्तार

- ( १ ) पपमगरेग, सा, रे, सा, प, निसा, रेंरे, मप, मगरेगसा ।  
धनिधप, धमग, रेग, सा, रेगमप, मगम, रेसा, सारेसा,  
रेमप, धम, गम, रेसा, सांनिध, निधप, मगमरेसा ।  
( २ ) निसा, निधनिधप, सा, रेपमपधमगरेगसा, मपधपध-  
मग, मरेसा ।  
( ३ ) पप, धनिध, निसां, सां, धनिध, सां, रेंसांधनिप, गम-  
रेगपध, रेंसां, धनिप, धपमगरेगसा, रे, रे, रेगमगरेसा ।

### ( १३ ) नट-स्वरविस्तार

- ( १ ) सा, सा, म, म, गम, मपप, मग, गम, मप, धनिसां,  
निध, निप, रेग, गमप, सारेसा ।  
( २ ) सारेसा, गम, पम, गम, धनिप, मपधनिप, मपमगम,  
मप, सांधनिप, रेगपम, गम, सारेसा ।  
( ३ ) पमगम, पमप, धनिसांनिधनिप, सां, रेंगंमं, रें रेंसां,  
सांधनिप, मपसां, धनिपमप, मग, म, साग, गम, प,  
रेगमप, सारेसा ।  
( ४ ) पपधसां, निसारेंरेंसां, सारेंगंमं, रेंरेंसां, सांनिधनिप,  
मपमगम, सांधनिप, गगमप, सारेसा ।



## ( १४ ) नटनारायण—स्वरविस्तार

- ( १ ) सा, प, गमरेसा, प, धप, सारेगमपगम, सारेसा ।
- ( २ ) गमरेसा, रेसा, धप, सा, सारेगमप, गमधप, गम, सारेसा ।
- ( ३ ) प, गमप, सारेगमप, धप, सांधप, गमप, सा, रेसा, धप, गम रेसा ।
- ( ४ ) मरेसा, पधप, गमरेसा, सारेगमपगम, सारेसा, सारेंसां, पगमप, गमरेसा, सारेगमधप, गमपगमरेसा ।
- ( ५ ) म, सारेसा, प, गमसारेसा, धपगमसारेसा, सांधपगम—सारेसा, रेंसांधपगमसारेसा, सारेंगंमं, गंमंसारेंसांधप, गमपगमसारेसा ।
- ( ६ ) पपसां, रेंसां, ध. सारेंसां, धप, पसारेंसांधपसारेगमपगम, सारेसा ।
- ( ७ ) सासारेंरेसासा, पपधधपपगमरेरेसासा, सांसारेंरेसांसांधप—गमपपगमरेसा, सारेगमपग, मसारेसा ।

## ( १५ ) नटविलावल—स्वरविस्तार

- ( १ ) सासाग, गम, पम, मपप, म, गग, मपपधनिसां, सां निधनिप, मग, मरे, सा ।
- ( २ ) पपधनि, धनिसांसां, सांनिध, निसां, निधधप, मगम, धधनिपप, धनिसां, पपधनिप, मपमग, मरेरेसा, सासा, ग, गम, सा ।

## ( १६ ) नटविहाग-स्वरविस्तार

- ( १ ) सा, ग, निःसा, गम, मप, म, ग, गमपनि, प, गमपध, मग, सा ।
- ( २ ) सा, सा(सा)निःपनिःसा, निःसा, गम, ग, गमपनिःसां पम, गम, सागम, पमग, गसा ।
- ( ३ ) सा, मगप, निःसां, प, गम, गमपनिसरिंसां, पम, ग, ग, गम, पधमग, गरेसा ।
- ( ४ ) सागमपम, पनिसरिंसांनिधपगम, गरेंगंमंगरेंसां, निधप, गम, पनिसरिंसांनिधप, गम, पधमग, पमग, रेसा ।
- ( ५ ) सागमपमगरेसा, सागमपसांनिधपमगरेसा, सारिंसां-निधपगमपनिसांगंमंगरेंसां, पधम ।

## ( १७ ) कामोदनाट-स्वरविस्तार

- ( १ ) सा, गमपगम, रेसा, रे, ग, म(प), मग, मरे, सा, रेसा, धनिःप पपसा रे, प, धप, सां, धप, ग, मप, गमरेसा ।
- ( २ ) सा, गमरेसा, प, धप, गमपगम, रेसा, रे, गम(प)पग, मरे, प, धप, सारिंसां, धनिःप, पग, मरे, गम(प), मग, गमपगमरेसा ।
- ( ३ ) पगमरेसा, रेसा, धनिःप, सा, रेसा, मगप, धप, सां, धप, गम(प), पग, मपगमरेसा, रे, प(प), पग, गमधप गमरे, गमपगमरेसा ।
- ( ४ ) सा, रे, पगमरे, धप, गमरे, रेगमधप, गमरे, प, सांनि धप, गमपगमरे, सारे, गम(प), गमरेसा ।

- ( ५ ) रेसाधप, धनिप, धप, सा, रे, गम(प), पगमरे, प, सां  
रेंसां, धप, गमपगमरेसा ।
- ( ६ ) सा, मगप, सांधसां, प, धप, सारेंसां, धप, गमध, प,  
पग, मधप, मग, मरे, गमपगमरेसा ।
- ( ७ ) पपसां, सां, रेंसां, सांध, सां, रेंसां सांनिधप, गमप, सां,  
धप, गमरे, प, धप, पग, मपगमरे, सासामगप, सां,  
धप, गमपगमरे, सा ।
- ( ८ ) सारेसा, धपपग, गमपगमरेसा, सांसांधप, गमपगमरेसा,  
पसारेंसां, पधप, गमध, प, पग, गमपगमरेसा ।
- ( ९ ) गमरेसारे, पगमरेसारे, गमधपमगमरेसारे, गमधपसां—  
रेंसांनिधनिपगमरेसारे, गमपगमरेसा ।
- ( १० ) सासारेरेसासा, पपगगमरेसासा, रेरेगमधपगमरेसा, रेरेपप—  
धपसारेंसांसांधपगमपगमरेसा ।

### ( १८ ) केदारनाट—स्वरविस्तार

- ( १ ) सा, गम, मप, धप, मग, रेसा, सा, धप, सा, निस्तारे—  
गमपगमरेसा, रे, सा ।
- ( २ ) सा, धनिस्तारेसा, धप, सा, म, प, ध, प, म, गरेसा,  
निस्तारेगमप, गमरेसा, रे, सा ।
- ( ३ ) म, मप, धनिप, धपम, प, सां, धप, म, गरे, निस्ता—  
निस्तारेगमपगमरेसा, धप, म, प, सा, रे, सा ।
- ( ४ ) मगरेसा, निस्तारेगमप, म, रेसा, मपधनिधप, म, गरेसा,  
मपधनिसां, निधप, म, निस्तारेगमप, गमरेसा ।
- ( ५ ) गमप, मगरेसा, धपमगरेसा, सांनिधपमगरेसा, सारेंसां  
निधप, धनिधप, म, गरेसा, निस्तारेगमपमगरेसा ।



- ( ६ ) सा, गम, मपम, गरे, सारेसा, म, प, धनिप, म, गम, मपधनिसां, धनिप, म, धपमगरेसा ।
- ( ७ ) पपसां, सां, रेंसां, सां, गंमरेंसां, निसारेंगंमंपंगंमरेंसां, सारेंसां, धनिप, धपम, गम, सागम, धपम, ग, रे, सारेगमपगमरेसा ।
- ( ८ ) मगरेसा, पपधपमगरेसा, सारेंसांनिधपमगरेसा, निसारेंगंमंपंगंमरेंसां निधपमगरेसा, सासारे, सा ।
- ( ९ ) पपधपमम, मपधनिसांनिधनिपपधपम, पपसांसारेंसांनिधपधपमम, पपसारेंसांसारेंगंमंपंगं, सारेंसांनिधपम, सारेगमपगमरेसा ।

### ( १६ ) बिहागड़ा—स्वरविस्तार

- ( १ ) गमग, सा, नि, <sup>ध</sup>निसा, म, ग, मरेग, मध, निधप, गम, पमग, रेसा ।
- ( २ ) सा, गम, गमपधनिधप, गम, गमपनिसां, निधप, गम, पमग, सा ।
- ( ३ ) सा, मग, म, (प), मग, निधप, गम, प, निसारेंसां, धनिधप, गम, पमग, रेसा,
- ( ४ ) सा, रेसा, गमगरेसा, पमगरेसा, गमध, पधनिधप, गम, गरेसा, गमपनिसांनिधप, सांगरेंमंगरेंसां, निधप, धगम, पमग, रेसा ।
- ( ५ ) सा, प, गमप, निधप, निसां, धनिधप, पनिसारेंसां, धनिधप, गमपनिसांगरेंसां, मंगरेंसां, (नि), धप, गम, गमपगमगरेसा ।



- ( ६ ) प, (प), मग, म, सागम(प), गम, सां, प(प), गमग, पनिसां, रेंसां, (प), गम, गमपधनिधप, गमग, मधपम गरेसा ।
- ( ७ ) पपनि, नि<sup>ध</sup>सां, सांरेंसां, गंरेंमंगरेंसां, धनिसांनिधप, गम, पनिसारेंसांनिधप, निधप, गम, पमग, रेसा ।
- ( ८ ) पपमगरेसा, निधपपगमपमगरेसा, मं, गंरेंसांनिधप, ध, पधनिप, गम, पमगरेसा ।
- ( ९ ) पपनिसारेंसांनिधनिधप, गमपनिसारेंसांनिधनिधप, पनिसांगंरेंमंगरेंसां, धनिधप, गम, सागमपगमधपमगरेसा ।

## ( २० ) पटविहाग—स्वरविस्तार

- ( १ ) गमनिधप, गमरेग, मपमग, सा, सा(सा) नि, निधनिता, सा, रे, रेग, गमप, गमरेग, मनिधप ।
- ( २ ) गमग, सागमपगमग, मनिधप, गमग, गमपनिसां, निप  
गमग, सारे, रेग, गमप, गमग, पमग, रेसा ।
- ( ३ ) ग, सा, सा(सा), निधप, पनिता, रेगमपगमग, सा,  
पनिसारेंसां, निप, गमग, रे, रेग, गमप, गमग,  
मनिधप ।

( ४ ) प, निप, नि(सां)निप, गमनिधप, पनिसारेंसां, निप, रें,  
 रेंगं, गंमंगरें, सां, निप, मग, म, ग, सारे, रेग, गमप,  
 गमग, मनिधप ।

( ५ ) गमग, सा, नि, नि<sup>ध</sup>सा, रे, रेग, गमप, गमग, नि<sup>रे</sup>सा, नि  
 सागमप, गमनिधप, गमग, नि<sup>रे</sup>सा, गमपनिसां, निप,  
 गमग, नि<sup>रे</sup>सा, गमपनिसांगरेंसां, निप, गमग, मनिधप,  
 गमग, सानि, प<sup>रे</sup>नि, सारे, सा ।

( ६ ) प, मग, मनिधप, गमग, सां, निप, गमग, मंगरेंसां,  
 निप, गमग, रे, गमप, गमग, सारे, नि<sup>रे</sup>सा, ग, गम  
 निधप ।

( ७ ) गमपनिसां, सां, रेंसां, गंरेंसां, नि, नि<sup>ध</sup>(सां), निप, गम  
 ग, गमपनि, सांरेंनिसां, निप, गमग, सारे, रेग, गमप,  
 गमग, मनिधप ।

( ८ ) गमग, नि<sup>रे</sup>सा, सारेरेग, गमपगमग, नि<sup>रे</sup>सा, नि<sup>रे</sup>सागमनि  
 धपगमग, नि<sup>रे</sup>सा, गमपनिसां, प, गमग, नि<sup>रे</sup>सा, गमप  
 निसांगं, सां, निप, गमग, मनिधप ।

- ( ६ ) सांनिधपमगरेंसा, गरेंसांनिधपमगरेंसा, गंमंपंगंमंगं, सां  
रेंनिसां, निप, मग, सा, सारे, रेग, गम, निधप ।
- ( १० ) गसारेनिसा, पगमरेगसारेनिसा, सांपधगमरेगसारेनिसा,  
गंसारेंनिसांपधगमरेगसारेनिसा, गंमंरेंगं, सारेंनिसां, पग  
मरेग, मनिधप, गमग, मपमग, निसा ।

### ( २१ ) सावनी—( विभाग अङ्क )—स्वरविस्तार

- ( १ ) ग, सा, निधनिप, निधनिरे, सा, ग, मग, मपसां, प  
मग, सा ।
- ( २ ) सापमग, सा, निधनिरे, सा, ग, मपनिसां, प, मग,  
निरे, सा ।
- ( ३ ) निरेनिसाग, मग, सा, पसा, निरेसा, मग, प, गमग,  
सां, प, मग, पनिसाप, मग, निधनिरे, सा ।
- ( ४ ) सा, ग, मग, प, मग, निधनिरे, सा, प, मग, गमप-  
निसारेंनिसां, मंगं, सां, प, मग, गंनिरेसां, प, गमपसां,  
प, मग, सा, निधनिरेसा ।
- ( ५ ) निधनि, प, गमग, गमपधनिप, गमग, मपसां, प,  
गमग, मपनिरेसां, प, गमग, गमपनिसांगरेंसां, पगम-  
पसां, प, मग, सा ।
- ( ६ ) पप, गमपनिधनिरे, सां, गरेंसां, गंमंगरेंसां, निधनिरेसां,  
पसां, पगमपसां, सागमपसां, प, मग, सा ।
- ( ७ ) पप सांसां, निधनिरे, सां, गं, सां, गंमंगं, निरेसां,



पंमंगं, निरेंसां पनिरेंसां, गमपनिरेंसां, सागमप, निध-  
निरें, निसां, पग, मपसां, प, मग, सा ।

( ८ ) गरेनिरेंसा, पमगरेनिरेंसा, निधनिप, मगरेनिरेंसा, पनि-  
सारे, निसागमप, निरेंसांमंगरेंनिरेंसांनिपमगरेनिरेंसा ।

( ९ ) पपनिसां, गरेंसांनिधनिरेंसां, निप, निसांगं, पंगमंगरें-  
निरेंसां, पगमपगरे, निरेंसा ।

( १० ) पपमगरेसा, सांसांपमगरेसा, निरेंसांपगमगरेनिरेंसा,  
निसांमंगरेंसां, पगमपसां, सागमपनिसांनिपमगरेनिरेंसा ।

### ( २२ ) मलुहाकेदार—स्वरविस्तार

( १ ) सा रेसा, प, म, प, नि, सा, रेरे, सा, निसारेसा, निरे  
सा, पनिसा, रेरेसा, गमप, गमरे, सा । सासागग, मरे,  
गमप, गमरे, निसा रेसा, पमप, नि, सा ।

( २ ) गमरेसा, पगमरेसा, निरेसा, पमप, निसा, गमपगमरे,  
निसा, निसागमप, निप, गमरे, निरेसा, गमरेसा, प,  
निसागमपगमरे, निसा ।

( ३ ) निसा, प, मप, निपमपनिसा, ममरे, निसा, गमपरे,  
निसा ।

( ४ ) गमप, सां, सां, रेंसां, गंमंपंगंमंरेंसां, सांसारेंसां, निप,  
ग, मप, गमरे, निरेनिसा ।

( ५ ) गगपसां, सां, रेंसां पनिसारें, सांनिधप, गमपग, मरे  
निसा, सां, पगमरे, निरेसा, सा, प, मम, पसा, गमप  
गमरे, सा ।



## ( २३ ) जलधर केदार—स्वरविस्तार

- ( १ ) सा, प, धपम, पसां रें, सां, धपम, मरेप, धपम, सारेसा ।
- ( २ ) साम, मप, मरेप, प, धपम, मप, सां, धपम, पम, रेसा, रेप, मपधसां, पधपम, मपम, रेसा ।
- ( ३ ) सा, रेप, धपम, मप, सारेंसां, पम, धपम, मपधसां, पम, धपम, रेसा ।
- ( ४ ) पधप, साधपरेसाधप, मरेंसां रेंसांधप, म, पसां, धपम रेमरेप, धपम, मरेसा ।
- ( ५ ) सा, रेसा, रेप, सारेसा, सारेंसां पधपम, पसां, पम, धपम, रेप, धपम, पम, रेसा ।
- ( ६ ) मपध, पसां, सां, सां, सां, रेंसां, मरेंसां, पंमं, रेंसां, रेंसांधप, पधपम, मप, म, सारेसा ।
- ( ७ ) सा, रेप, धप, म, धप, सां, धपम, पसारेंसांधपम, मरेंसां धपम, पम, सारेसा ।
- ( ८ ) साम, रेप, म, मपधसां, पम, पधपमरेसा, रेंसांधपम, रेसा, मरेसा, धपमरेसा ।
- सां
- ( ९ ) मपध, सांसारेंसां, सां, रेंमरेंसां, ध, पम, मप, सां, धपम, रेसा ।
- ( १० ) पसारेंसां, मंपंमरेंसां, धसां, रेंसां, धपम, मरेप, धसां, धपम, म, रेसा ।
- ( ११ ) सामरेसा, सापमरेसा, सामरेपधपमरेसा, सामरेप,

धसांधपम, रेसा, मपधसारिंसां, धपम, रेसा, मरेंसां—  
धपम, रेसा ।

( १२ ) सारे सा, मपम, पधप, सारिंसां, धपमरेप, सां, धपम,  
रेसा

( १३ ) सासा रेरे सासा, रेरे पप मम रेरे सासा, रेरे पप धप  
मम रेसा, रेरेपपधपमप, सारिंसांसां धप मम रेसा रेरे पप  
धपमप, सारिंसांसां रेंमं रेंसां धप मम रेसा, रेरे पप धप  
मप सारिंसांसां, मंमं रेंसां रेंपं मंमं रेंसां धप मम रेसा ।

## ( २४ ) दुर्गा—स्वरविस्तार

( विलावलमेलजन्य प्रकार )

( १ ) प, मपधम, मरे, प, पधम, रेप, म, <sup>सा</sup> रे, सारेसा, सांध,  
सारिं, पधम, प, मपधम ।

( २ ) मरेसा, सारेसा, पम, <sup>सा</sup> रेसा, धधम, रेप, धम, रेपम,  
सारेसा, साधसा, मपधम, सांध, म, रेपधम, पम, रे, धम,  
पमरेसा, प, मपधम ।

( ३ ) मम, प, सां, सां, सारिंमरें, सां, पध, म, मपसां, रें  
धसां, मपसां, पधधम, पमपध, म, रेम, सारेम, सारेसा ।

( ४ ) सांध, सारिं, सांप, धम, पमपधम, मरेपप, धधम, पपम  
सारेरेसा, सारिंमं, सां, पधम, रेप ।

## ( २५ ) छाया-स्वरविस्तार

- ( १ ) सा, रे, रेग, गप, मग, मरेसा, रेरेसा, धन्निप, पसा, गरेगप, मगमरे, सा ।
- ( २ ) सा, गरेसा, पमग, रे, रेगप, मग, रेसा, सारेगरेसा, धन्निप, पसा, ग, रेगमप, मग, रे, सा ।
- ( ३ ) प, मपमग, रे, रेगम, मग, धन्निप, मपमग, रे, रेगम-गरेसा, सागरेसा, धन्निप, मपसा, रे, सारेगमपमग, रे, सा ।
- ( ४ ) प, धप, धन्निप, सारेग, गप, मप, मग, मरे, रेगपमग, मरे, सा ।
- ( ५ ) मगरेसा, पमगरेसा, धन्निप, रेगपमगरेसा, पपसारेंसां, धन्निप, मग, रे, रेगपमग, मरेसा ।
- ( ६ ) पपसां, सां, रेंसां, सांसारेंगरेसां, सांसारेंगंपमंगं, मरें, सां, सारेंसां, धन्निप, गमरे, रेगपमग, मरे, सा ।
- ( ७ ) सांसां धपगमरेसा, सांसारेंगरेसांनिधपरेगपमगरेसा, सांसारेंगंपमंगरेसांनिधपमगरेसा ।

## ( २६ ) छाया-तिलक-स्वरविस्तार

- ( १ ) सा, रेग, गम(प), म, ग, सारेग, सा, (म), गरेग, सासारेमग सा ।



- ( २ ) सा, मरेसा, रेसा, प, धसा, रेगसा, सां, प, धम,  
गरेगसा, रेग, रे, गमप, म, गरेग, सा, रेग, सा ।
- ( ३ ) म, मप, धमप, सां, धनिप, रेग गमप, म, गरेग, सा,  
सां, प, धम, गरे, रेग, गमप, म, ग, सा ।
- ( ४ ) गरे; प, म, गरे; प, धम, गरे; रे, ग, म, प, सां,  
धनिप, मप, धम, पग, मरे, सा, रेसा, धनिप, पसा,  
रेगसा ।
- ( ५ ) प; रेग, गमप; धप, सां, प; सांरेंसां, प, परेंसां,  
धनिप, रेग; गम, प; पनिसारे, ग, गमप, म,  
गरेग, सा ।
- ( ६ ) मपनि, निसां, रेंगं रेंपं, मं, गंसां, रेंसां, धनिप, मप,  
सां, प, धम, गरेग, सा ।
- ( ७ ) पपसां, रेंसां, रेंपंमं, पंगं, मरेंसां, सांरेंसां, धनिप,  
सांधनिप, धप, मपसां, प, धनिप, म, ग, रेग, सा ।
- ( ८ ) सारेगसा, रेपमगरेगसा, रेगमपधम गरेगसा, रेगमपसां,  
प, धमगरेगसा, पनिसारेंसां, धनिप, रेपमगरेगसा ।
- ( ९ ) पपसांसांपधमगरेसा, पपसारेंसांधनिपमगरेसा, मपनि-  
सारेंगंमंपंमं-रेंसां निधनिपमगरेगसा ।
- ( १० ) सासारेगमपधनिसांधनिप, मगरेगरेसा, रेगमपनिसारें-  
सांनिधनिप, मगरेगरेसा रेगमपनिसारेंगंमंपंमंगरेंसांगरें-  
सांनिधनिपसांनिधपमगरेसा ।



## ( २७ ) गुणकली-स्वरविस्तार

( एक प्रकार )

- ( १ ) पपधनिसारेंसां, सांनिध, निधप, पसांसांधप, धपप, पपधधपप, गमरेरेसा, साधप, सापपमग, सारेसा, सारे-  
गम, रेरेसा ।
- ( २ ) पपप, सांध, सांसां, गंगं, गरेंपंगं, पगप, सांधसां, सांधप, ग, पग, प, सांधसां, सां, रेंगंसां, सांधप, पग, मरेरेसा ।

( दूसरा प्रकार )

- ( १ ) गरेसानिधनिधप, सा, रेसा, गग, परे, सासा, गरेसा, सानिध, निधप, पधसा, गरेसा ।
- ( २ ) पपधनिधसां, सांनिध, निध, सारेंसांनिधप, पपधसां-  
धधप, गप, गरेसा, निध, सानिधप, सा, गरेसा ।

## ( २८ ) पहाड़ी-स्वरविस्तार

- ( १ ) सा, रेग, गरे, सारेगरे, सारेसा, निध, प, धसारेग, गमगरे, सारेगसा, निध, ग, रेसा ।
- ( २ ) गगपप, धधपग, गरेसानिध, पधसा, गपधपग, रेसाध, पधसा, रेसा, सारेग, साध, सांधप, ग रेसाध, पधसा ।
- ( ३ ) गग, गमगरे, रेगरेसानिध, धधपग, गपग, मगरे, सा, निध, पधसा, गगपध, सांध, पधप, गरेसाध, रेसाध, पधसा ।
- ( ४ ) सा, रेग, मगरे, सा, रेगरे, सारेसानिध, पधसा, रेगरेसा ।

## ( २६ ) मांड-स्वरविस्तार

- ( १ ) सा, ग, रेसा, म, पगम, रेग, रेसा, म, प, निधम,  
सा  
पग, रेसा ।
- ( २ ) सागरेम, रेगरेसा, मपधम, प, म, गम, रेग, रेसा, धध,  
सा  
निप, धम, पग, रेसा ।
- ( ३ ) मम, रेग, रेसा, रेम, रेमप, पधप, निधप, सांनिधम,  
सा  
पग, रेसा ।
- ( ४ ) म, प, धनि, प, सां, रेंगं, रेंसां, सांनिध, निप, धम,  
पधसां, गंसां, नि, ध, निप, धम, पग, सांनिधम, प,  
गम, रेग, रेसा ।

## ( ३० ) मेवाडा-स्वरविस्तार

- ( १ ) म, गरेग, सा, रे, ममध, पधमधप, म, धप, म, गरे, सा ।
- ( २ ) सा, सारेग, मगरेसा, म, ममप, मधप, नि, निधनिध,  
म, गमपध, पनिधप, ग, पम, गरेग, सा ।
- ( ३ ) सा, प, म, गमगरेसा, गमध, मधप, गमगरेसा, ध,  
ध, मप, निध, मधप, ग, गमपध, मप, गमगरेसा ।
- ( ४ ) ग, गसा, रेम, मप, पधनिध, सां निध, मधप, गम,  
मपग, म, ध, धपमग, मग, सारेसा ।
- ( ५ ) प, गमगरेसा, ध, मधप, गमगरेसा, धनिधप, ध, मप,  
गम, धपमग, रेग, सा, सारेमपधनिधप, म, गरे, गसा ।

- ( ६ ) म, मप, पधनिप, धसां, निध, मधप, पधनिपधम, गमप, सांनिधप, ध, निधपधमप, गमपध, धपमग, मगरेसा ।
- ( ७ ) म, मप, पधनिपधसां, सारेंनि, सां, निध, निधप, पसां, गमपध, मधप, गमगरेसा ।
- ( ८ ) सा, रेगरेसा, रेमपधमपगमगरेसा, सारेमपधनिपधमप-गमरेसा, गमपधनिसांधनिपधमपगमगरेसा, पधसारेंगं-रेंसांनिध, धनिधप, निधपमगरेसा ।
- ( ९ ) धधपमगरेसा, निधपमगरेसा, सांनिधपमगरेसा, रेमपनि, पधसां, रेंगरेंसांनिधपमगरेसा ।

### ( ३१ ) पटमंजरी—स्वरविस्तार

- ( १ ) सा, गरेगमपमगरे, सा, सा, गरेसा, निधनिप, प, रे, रेगसा, पमगरे, सा ।
- ( २ ) सा, निधनिप, गरेगमगरे, सा, नि, सारे, सा, गरेग-सारेसानि, सा, गमपमगरे, सा ।
- ( ३ ) सारेसा, मगरे, सा, गरेगमपमगरे, सा, निसां, रेंसां, निधनिप, गरेग, मपमग, रे, सा ।
- ( ४ ) प, निधनिप, सां, निधनिप, गमगरे, गमपमगरे, सारेसा, नि, धनि, रेसा, निधनिप, रे, पमगरे, सा ।
- ( ५ ) प, रेसा, गरे, सा, प, मगरे, सा, निप, मगरे, सा, सां, निधनि, सां, रेंसां, निप, गमगरे, गरेगमपमगरे, सा ।
- ( ६ ) पपसां, सां, रेंसां, निधसां, रेंसां, निधनिप, गमगरे, गमप, मग, रे, सा ।



- ( ७ ) सांगरेंसां, रें, गंमंगरें, गंसां, रेंसां, नि, धनिसां, पध-  
निसां, निधनिप, गमगरे, गमपमगरे, सा ।  
( ८ ) प, मगरे, सा, सां, निधनिप, मगरे, सा, रेंसां, निप,  
मगरे, सा, गंरेंसां, निप, मगरे, सा, सांगरेंगंमंपंगरें,  
सां, निनि, सारेंसां, निधनिप, मगरेसा ।

### ( ३२ ) हंसध्वनि—स्वरविस्तार

- ( १ ) गरे, सारेगपगरेसानि, परे, निरे, सारेगरेसा ।  
( २ ) गरेसा, नि, पनिसा, रेग, पग, पनिप, गरे, गपगरेनि,  
पनिरे, परे, निरे, गरेसा ।  
( ३ ) निरेसा, निरेगपगरेसा, निरेगपनिसां, निप, गरे, निरेसा ।  
( ४ ) पनिसा, निरेगरेसा, गपनिसां, निपगरे, गपनिपगरे,  
निरेगरेसा ।  
( ५ ) पगरेसा, निरेगपगरेसा, पनिसां, पनिसां, रेंगंरें, निरेंनि-  
पगरे, गपगरेसा ।  
( ६ ) पगप, पनिप, पनिरेंगंरेंसांनिप, पसां, निरेंनिगंरेंसांनिप,  
पनिसांप, निपगरे, पनिगरे, नि, पनिपसा ।  
( ७ ) पगपगरेसा, निपनिसांनिपगरेसा निरेंगंरेंसांनिपगरेसा,  
निरेंसांगं, निरेंगंपंगंरेंनि, पनिरेंसां, गंरेंसांनिपगरेसा ।  
( ८ ) गगपपनिनिसां, रेंनिसां, रेंगंरेंसां, निप, रेंनिगंरेंनिप,  
पनिसांनिपगरे, निरेसा ।  
( ९ ) सांनिपगरेसा, गंरेंसांनि, पगरेसा, गंपंगं, निरेंसांनिप-  
गरेसा ।



## ( ३३ ) दीपक ( विलावलमेलजन्य )—स्वरविस्तार

- ( १ ) सा, प, मपध, पनि, सा, साग, गरेसा, सा, नि, ध,  
पनिता, गम, मपमग, रेसा ।
- ( २ ) ग, मग, प, धपनिधप, म, पमग, रेसानि, ध, म, पध,  
प, नि, सा, ग, गरेसा ।
- ( ३ ) पमग, रेसा, प, धप, म, पमग, रेसा, सागमप, धपनि-  
धप, ग, मपमग, रेसा, प, मपनि, निता, ग, गरेसा ।
- ( ४ ) सा, मपध, मप, नि, निता, ग, मपधप, निधपमग,  
मपमग, रेसा, नि, ध, मपनि, सा, ग, गरेसा ।
- ( ५ ) सा, मगरेसा, मपनिसारेसा, निध, पधसा, मपनि, रेसा,  
प, मग, गरेसा, पधपनिधपम, पमग, रेसा, ग, गरेसा ।
- ( ६ ) सा, गम, पम, धपनिधपम, ग, मग, रेसा, नि, ध,  
मपधपसा, प, मग, रेसा ।
- ( ७ ) सागरेसा, पनिधपमगरेसा, निधप, निसां, निधपम,  
पमगरेसा, सां, निध, मपधपसां, गरेसां, मपनिसां, नि,  
ध, पधसां, मपधप, निधपमग, गरेसा ।
- ( ८ ) साप, गम, मपमग, रेसा, गरेसानि, ध, मपध, प, नि,  
निता, ग, गरेसा ।
- ( ९ ) पपसां, सां, निसां, गरेसां, नि, ध, पनि, सां, गमंगं,  
रेसां, पं, मंगं, रेसां, पनिधप, म, पमग, रेसा, सापमग-  
रेसा, प, मपध, प, नि, निता ।

- ( १० ) साग, म, पगम, पधपनिधपगम, पनिसां, गंरैसां,  
पनिधप, गम, मपमग, रेसा, नि, ध, मपध, प,  
नि, निसा ।
- ( ११ ) सागगरेसा, सासापपगमपमगरेसा, पपधपनिधपमगरेसा,  
पपधमपनिसां, पपमगरेसा, मपधमपधमपनिसांगंमं,  
गंमंगरैसांनिधपमपमगरेसा ।
- ( १२ ) पपधधपप, धधपपनिनिधप, सांनिधप, सांसांगंरैसां,  
पनिधपमगरेसा, पपसांसांगंमंमंमंमंमंमंरैसां, पनिधप-  
मगपमगरेसा ।

### ( ३४ ) किंभोटी—स्वरविस्तार

- ( १ ) सा, रेमग, सान्निधप, मगप, मग, सा, रेसा, निधप,  
धसा, रेमग, गमगरेसा, सारेगमग ।
- ( २ ) सारेमग, गमप, गमग, धधप, गमग, सारेगमगरे,  
गमगरे, सा, निधप, धसा, रेमग ।
- ( ३ ) धनिधप, पधप, गमग, सारेमग, निनिधप, मग,  
मपमग, ररेपमग, सारेगमगरे, सा, रेसान्निधप, धसा,  
प  
रेमग ।
- ( ४ ) सां, रैसांनिधप, निधप, मधपनिधप, मग, ररेपमग,  
मगरेसा, सारेगमगरेसा, रेसान्निधप, धसा रेमग ।
- ( ५ ) सारेगमप, गमप, गमपधनिधप, सां, निधप, गमपध  
पमग, सारे, मग, मगरेसा, ररेसान्निधप, धसारेमग ।

- ( ६ ) गमप, निनिधप, सांनिधप, गंमंगरेंसां, सारेंसां, निधप, मपधप, मग, सा रेगमग, प, गमग, सारेगमगरेसा, निधप, धसा, रेमग ।

### ( ३५ ) खंवावती—स्वरविस्तार

- ( १ ) सा, रे मप, ध, पधसां, निध, पधम, ग, मसा ।  
 ( २ ) सा, ग, मगमसा, सापमग, मसा निधनिम, गमसा ।  
 ( ३ ) सागम, पधम, सांनिध, पधम, गमसा ।  
 ( ४ ) गम, धम, पधम, निसां, पनिसां, रेंगंसां, सांनिध, निध, पपधम, गग, मसा ।  
 ( ५ ) निनिध, निध, पधम, गग, मसा, पमगम, सा, निसा, गम, रेमप, ध, पधसां, निध, पधम, गग, मसा ।  
 ( ६ ) मम, प, निनसां, निनिसां, सां रें, गंरेंसां, निनिनिध, सांनिध, पधम, गग, म, निसा ।

### ( ३६ ) तिलंग—स्वरविस्तार

- ( १ ) साग, गमप, निप, गमग, पगमग, सा ।  
 ( २ ) निसा, गमप, गमग, निनिप, सांनिप, गमग, सा ।  
 ( ३ ) सासागमप, निनिप, सांनिप, निप, गमग, प, गमग, निसा ।

- ( ४ ) गमपगमग, नि<sup>प</sup>साग, गमप, निनिसां, निनिप, सांनि-  
निप, गमप, निप, गमग, पगमग, सा ।
- ( ५ ) गमग, नि<sup>प</sup>सा, सागमप, निप, सांनिप, गमग, पमग,  
सा ।
- ( ६ ) गमप, निसां, निसां, सांगंसां, मंगंसां, निनिप, निप,  
गमप, निसां, गंमंगं, सां, सांनिनिप, गमग, मगसा ।

### ( ३७ ) दुर्गा—स्वरविस्तार

( खंभाजमेलजन्य प्रकार )

- ( १ ) सा, ग, मग, सान्निध, सा, मग, गमध, निध, मगसा,  
निध, सामग ।
- ( २ ) मगमध, निधमग, धनिसां, निध, मधनिध, मग, सा,  
निधनि<sup>प</sup>सा, मग ।
- ( ३ ) सा, गमध, मग, सांनिधनिधमग, धनिसां, गंसां, निध,  
सांसांनिध, मग, मगसा, धनि<sup>प</sup>सा, मग ।
- ( ४ ) मगमध, निसां, गंगंसां, गं, मंगंसां, सांनिधनिधध,  
मग, धनिसां, निध, मग, मग, सा, निध, नि<sup>प</sup>सा, मग ।

### ( ३८ ) रागेश्वरी—स्वरविस्तार

- ( १ ) सा, रेसान्निध, नि<sup>प</sup>सा, म, मग, मधमग, मगरेसा, गम ।
- ( २ ) गम, धम, धनिधम, गमध, सांनिध, निधम, गरेसा ।



- ( ३ ) मगमध, निसां, निध, रेंसांनिध, म, धम, धनिधम, गरेसा ।
- ( ४ ) सागम, धम, सांनिधम, धनिध, म, ग, रेसा, निध, निता, म, मधनिसां, निसां, रेंसां, रंमंरेंसां, सांनिधम, गसा, निध, निता, गम, सांनिध, निध, मग, रेसा ।

### ( ३६ ) गारा—स्वरविस्तार

- ( १ ) सा, गम, रेगरेसा, निसारेसा, धनिध, ममधनिसा, रेनिसा ।
- ( २ ) निसारेनिसा, गमप, गम, रेगरे, निता, रेगरे, निता, निध, निपम, मनिधनिसा ।
- ( ३ ) निता, धनिध, निता, गमप, गम, गरे, निता, गरे, निता, निधपम, मधनिसा ।
- ( ४ ) गम, गम, रेगरे, पम, रेगरे, निसारेगरे, धनि, पध, मप, गम, रेगरे, निसाधनि, पध, निता ।
- ( ५ ) धनिधपम, निधपम, धपम, मधनिसा, धनिसा, गमपगम, रेगरेसा ।
- ( ६ ) पपध, मपगम, रेगरे, निता, गरे, मपधनिधप, गमपगमरेगरेनिसा, रेगरेसा, निता, पधनिनिसा ।

## ( ४० ) सोरट—स्वरविस्तार

- ( १ ) सा, <sup>म</sup>रें, मप, <sup>म</sup>मरे, रेसा, निरेसा, <sup>म</sup>मरे, सा ।
- ( २ ) नि<sup>म</sup>स रे, <sup>म</sup>मरे, <sup>प</sup>पमरे, मपधमरे, <sup>प</sup>पमरेसा, निरेसा ।
- ( ३ ) नि<sup>म</sup>सारे, सा, रेसा, नि<sup>प</sup>धप, नि<sup>म</sup>सा, <sup>म</sup>मरे, मपधमरे, सा ।
- ( ४ ) <sup>म</sup>रेंमप, <sup>प</sup>निधप, <sup>म</sup>धमरे, <sup>प</sup>पमरे, सा, नि<sup>म</sup>सारें, सा ।
- ( ५ ) <sup>रे</sup>निनिधप, निधप, मपनिसां, निधप, मपधपधमरे सा ।
- ( ६ ) सारेमरे, मपनिसां, रेंसां निधपधम, <sup>म</sup>रे, <sup>प</sup>पमरे, सा ।
- ( ७ ) सारेमप, <sup>म</sup>रेंमप, निसां, <sup>म</sup>रेंसां, रेंसां, निधप, <sup>म</sup>मरेंसां,  
निनिधप, <sup>म</sup>रेंमप, निनिसां, निधमप, सांनिधपधमरे, सा ।
- ( ८ ) ममप, निनि, सां, सां, निसांसां, निसारें, <sup>सां</sup>ममरें, सां,  
निसारेंमरेंरेंनिसां, निसारें सा<sup>नि</sup>निधप, धधप, मपध, धप,  
धमरे, <sup>म</sup>रेंमरेंसां, निसां, मपनिसां, रेंनिधप, <sup>म</sup>धमरे, रेसा ।

## ( ४१ ) नारायणी—स्वरविस्तार

- ( १ ) सां, निध, मप, निधप, मपम, रे, सारे, मरे, धसा ।
- ( २ ) मपधसा, रे, मरे, निधप, मपधप, मरे, मरेसा ।
- ( ३ ) <sup>नि</sup>धधप, मप, <sup>प</sup>धप, धप, सां, धधप, निधप, मपमरे,  
सासारे, मप, धसां निधप, मपनिधप, मरे, रेसा ।
- ( ४ ) मपधसां, सां, रेंसां मरेंसां, सारे, सां सारेंसांनिधप,  
मपधसां, धप, मरे, सारेमरे, सा, <sup>नि</sup>धसा ।

## ( ४२ ) बंगालभैरव—स्वरविस्तार

- ( १ ) <sup>नि</sup>धध, प, गमप, गमरे, सा, <sup>नि</sup>सारेसा, <sup>गग</sup>धसा, <sup>ग</sup>रेरेसा, ग  
<sup>ग</sup>मरेप, <sup>प</sup>गमरे, सा ।
- ( २ ) <sup>म</sup>गमपप, <sup>नि</sup>धध, प, <sup>ग</sup>गमप, <sup>ग</sup>रेगमप, गमरे, सा, सारेसाधु,  
<sup>नि</sup>साधु, मपधु, सा, <sup>ग</sup>सारेगम, <sup>म</sup>रेगम, <sup>म</sup>पमगप, <sup>म</sup>रेपगमरेरेसा ।
- ( ३ ) <sup>म</sup>गमपधप, <sup>नि</sup>धपसांधुप, मप, <sup>ग</sup>रेगमप, <sup>नि</sup>सांधुप, <sup>म</sup>गमपगम  
<sup>ग</sup>रे, सा ।

( ४ ) सारेसा, रेपगमरे, पगमरे, सा, धध, नि, म नि, म नि, प, म ग, गमरेरे, सा ।

( ५ ) मपध, सां, सां, सां, सां, सां, सां, रेसां, मपध, म नि, म ग, म ग, रेसां, गमपगमरे, पगमरे, सा, सारेसा

### ( ४३ ) आनन्दभैरव-स्वरविस्तार

( १ ) सा, रेरेसा, निधप, सा, गरेगमपमगरे, रे, सा ।

( २ ) सारेसा, गरेसा, गमपगमरे, पगमरेसा, निसागमप, म म ग, गमपगमरे, सा ।

( ३ ) पपगमप, धध, प, गमपगमरे, सा, निनिध, प, गमरे, म ग ग, पपगमरे, गरे, सा ।

( ४ ) पपधध, प, सां, सां, गंमं गंरेसां, निसां, धध, प, गम- म नि, गं, नि, म, रे, पगमरे, सा ।

( ५ ) निसागम, रेगमप, पम, धपम, पम, रेग, निसाग, सा, ग, पमगरे, गमपमगरे, रे, सा ।



## ( ४४ ) सौराष्ट्रटंक—स्वरविस्तार

( १ ) सा<sup>म</sup>रेरे, सा, ध्र, सा, सा, रेसा, गमगरे, सा, पगमरे  
सानिसा ।

( २ ) गम, गम, धम, गमध, मधनिसां, रेरेसां, निसां, धम,  
मधनिसां, रेसां, ग, मपगमरे, सा ।

( ३ ) सासागमप, गम रेसा, रेरे, सां गमपगमरे, सा ।

( ४ ) गमगम, पप, गमप, धधप, गमधप, रेगम, पमरे,  
पगम, रेसासारुसा, ध्रसा, गमधधप, गमपगमरे, सा  
रेरेसां, गमपगमरे, सा ।

## ( ४५ ) अहीरभैरव—स्वरविस्तार

( १ ) गग, रेसा, सासारुसा, सारुसा, निसागरे, गगम, गम-  
रेप, गमरेसा ।

( २ ) रेरेसासा, गरेगम, ममपग, मरेरे, सा, सारुसाम, गरे-  
साप, गमपग, मगरेसा ।

( ३ ) ममरेम, पपमप, पमपध, निधपध, मपगम, रेरेगम,  
पगरेसा ।

## ( ४६ ) शिवमतभैरव-स्वरविस्तार

- ( १ ) सा, म, गम, गमप, मधु, प, म, प, गु, गु, म, रे,  
सा, निसा, रेरेसा ।
- ( २ ) सारेसा, म, गम, प, मपधु, प, निधुप, मगम, प,  
गुमरेसा, सारेरेसा ।
- ( ३ ) सा, निसा, धुपनिधुप, धुनिसा, रेसा, गुमरेसा, म,  
गमप, पधु, सां, निसां, धु, प, नि, धुप, गुम, मनि-  
धुप, गु, म, रेसा, निनिसा, रे, सा ।
- ( ४ ) सा, प, गु, मरेसा, माधु, प, गुमरेसा, मपधु, सां,  
निसां, धु, प, मप, धु, प, नि, मप, म, ग, धुप, ग,  
मरेसा, निसागरेसा, धु, निसाम, गुम, गु, मरेसा, निसा,  
रेरेसा ।
- ( ५ ) सा, सागमप, गमप, मप, धु, सां, निसां, धु, पनिधुप,  
गुमधु, सां, धुप, निधुप, मग, मनिधुप, गु, मरेसा,  
निसारेरेसा ।
- ( ६ ) मरेसा, प, ग, मरे, सा, निधुप, गुमरेसा, सां,  
निसांधुप, गुमरेसा, रेसा, निसां, धु, निसां, धुप,  
निधुप, गुमरेसा ।
- ( ७ ) मधु, सां, निसां, धुनिसां, गुंरेसां, निसारें, सां, सां,  
धुप, मगु, मधु, निसां, धुप, निधुपम, रेसा, ग, निनि-  
सारेरेसा ।

- ( ८ ) पध, निसां, धप, रेसां, निषां, धप, मप, गम, ध,  
निसां, धप, धनिसांगं, रेसां, निसांध, प, सांनिधपमग,  
मरेसा ।
- ( ९ ) गगमरेसा, धधनिसां, निधप, निधपमग, मरेसा,  
गमधनिसांरेसांनिसांधप, निधपमग, मरेसानिनिसांगं-  
रेसांनिधप, निधपमग, मरेसा ।
- ( १० ) सागमपगमप, गमपधनिसांनिधप, निधपग, मधनिसां-  
रेसांनिधप, निधपग, पग, मगरेसा ।
- ( ११ ) सांनिधपमग, मरेसा, सांरेसांनिधपमग, मरेसा,  
मंगरेसांनिधप, निधप, ग, मरेसा,  
गंरंपंगंमरेसां, गंरेसांनिधप, निधप, ग, मरेसा ।

### [ ४७ ] प्रभात-स्वरविस्तार

- ( १ ) <sup>म ग</sup> मगरे, <sup>नि</sup> सा, <sup>ध</sup> ध <sup>ध</sup> ध <sup>नि</sup> नि <sup>सा</sup> सा, <sup>रे</sup> रे <sup>सा</sup> सा <sup>ग</sup> गम, <sup>रे</sup> रेगममम-  
गमगरे ।
- ( २ ) सा <sup>रे</sup> रे सा <sup>नि</sup> नि सा <sup>ग</sup> ग म, <sup>रे</sup> रेगम, <sup>ध</sup> धधपम, <sup>म</sup> गम, <sup>रे</sup> रेगमम,  
ग म ग रे सा ।
- ( ३ ) सारेसा <sup>ध</sup> धधनिधप, <sup>ध</sup> धधनिसा, <sup>रे</sup> रेरे, सा, <sup>ग</sup> गमगरे, सा,  
गममगम, <sup>रे</sup> रेगमप, मगरेसा ।
- ( ४ ) निसागमपप, <sup>ध</sup> धधपम, <sup>रे</sup> रेगमम, गमगरे, सा <sup>ध</sup> धनिसा,  
गमपम, ग, मगरेसा ।
- ( ५ ) <sup>प</sup> पपधधनिसां, <sup>सां</sup> धनिसां, <sup>रे</sup> रेरेसां, निधप, म, ममम,  
<sup>म</sup> मरेगम, <sup>ध</sup> धपम, <sup>रे</sup> रेगमम, <sup>ग</sup> गमगरेसा, नि, सा ।



## ( ४८ ) ललितपञ्चम-स्वरविस्तार

- ( १ ) सा, मंगरेसा, निरेगम, मंग, प, मधुनिधुप, म, मंग, रेग, मंगरेसा, निनिरे, सा ।
- ( २ ) सा, निरेसा, म, गप, धुनिधुप, मम, मंग, निधुप, ममग, धुमंगरेसा, निनिरे, सा ।
- ( ३ ) सा, रेसा, धुनिधुप, मधुसा, निरेसा, निरेगम, मंग, मधुनि, ममंगरेगमंगरेसा, निनिरे, सा ।
- ( ४ ) प, मधुनिधुप, मधुरेनिधुप, मधुनि, धुनि धुप, मम, निधुप, मम, पग, पग, रेसा, निनिरे, सा ।
- ( ५ ) साम, मम, निधुपमम, सांनिधुपमम, गुरेसांनि, धुनिधुप, मम, मंग धुमंगरेसा, निनिरे, सा ।
- ( ६ ) मधुधुप, मधुधुनिधुप, मधुनिरेनिधुप, निधुमम, पगपगरेसा, निनिरे, सा ।
- ( ७ ) मधुसां, सां, निरेसां, निरेगुरेसां, ममंगपंगुरेसां, रेसांनिधुनिधुप, मम, सांनिधुनिधुपमम, निधुनिधुपम, धुपमम, पग, पगरेसा, निनिरे, सा ।
- ( ८ ) सांरेसां, मंगरेसां, निरेगुरेसांनिधुनि, धुपमम, गमधुनिसांनि, धुनिधुपमम, निधुमम, प, पग, पगरेसा, निनिरे, सा ।
- ( ९ ) निरेसा, निरेगुरेसा, निरेगमंगरेसा, निरेगमधुनिधुपममपगरेसा, निरेगमधुनिरेगुरेसांनिधुपम, निधुमंगरेसा ।
- ( १० ) साम, गप, मधुपसां, निरे सांगं रेसां निधु पमंगरेसा, मगपमधुपसांनिरेसांगुरेसांनिधुपममगपगरेसा ।



## ( ४६ ) मेघरंजनी—स्वरविस्तार

- ( १ ) नि॒सा, गम, म, ग॒रेगम, ग, रे॒सा, नि॒सा, गम, म॒म,  
रे॒गम, ग॒रेसा ।
- ( २ ) सा॒रेसा॒मग॒रेसा, सा॒रेसा, नि॒रेसा, रे॒सा, गम, म॒रेगम,  
म॒म, रे॒गरे॒सा; नि॒रेसा ।
- ( ३ ) नि॒रेगम॒रे, गम, म॒म, नि॒सागम, रे॒ग, म, नि॒सां, नि॒सांनि,  
म॒ग, रे॒ग, म॒ग, रे॒सा ।
- ( ४ ) म॒म, म॒ग, म॒नि॒सां, सां, नि॒रेसां, नि॒रेगं॒रेसां, गं॒रेसां,  
सां  
सांनि॒मग, सांमं॒गं॒रेसा, नि॒मग, म॒गरे॒सा, नि॒रेसा ।

## ( ५० ) गुणक्री—स्वरविस्तार

- ( १ ) सा, रे॒रे, साध॒सा, रे॒रेसा, म॒रे, सा, साध॒प, प, म॒प,  
ध॒सा, रे॒मरे, सा, सा॒रेसा ।
- ( २ ) सा॒रेसा, म॒पम॒रे, प॒मरे, रे, सा, ध॒धप, म॒पम॒रेसा, साध॒-  
ध॒प, म॒प, ध॒धरे॒सा, रे॒मप॒मरे, ध॒धप॒मप॒मरे, प॒मरे, रे॒सा;  
सा॒रेसा ।
- ( ३ ) म॒पप॒धध॒सां, सा॒रेसां, सा॒धध॒सां, रे॒ रे सा॒धप, म॒पध,  
रे॒सां, ध॒प, म॒प, म॒रे, प॒मरे, रे, सा; सा॒रेसा ।

( ४ ) सा<sup>नि</sup>ध<sup>नि</sup>धप, मप, ध<sup>म</sup>धप, सां<sup>म</sup>धप, मपमरे, मरे<sup>म</sup>पमरे, सा,  
ध<sup>म</sup>धसारेसा ।

( ५ ) रेरेसां, मं<sup>मं</sup>पंमंरेसां, रेसां<sup>सां</sup>ध, सां<sup>नि</sup>धप, मप, रेसां<sup>प</sup>, धप, मप,  
मरे, पम, रे, सा; सारेसा ।

### ( ५१ ) जोगिया—स्वरविस्तार

( १ ) म, रेसा, रेरेमरेसा, रेम, मपप, धमरेसा, सारेसा ।

( २ ) रेरेसा, नि<sup>सा</sup>ध, सा, मपधपधम, रेमरेसा, निधपधम,  
निधम, रेसा; सारेसा ।

( ३ ) सारेमम, पप, ध<sup>नि</sup>धप, धसां<sup>सां</sup>धपधम, सांनिधप, पधनि-  
धप, धमरेसा; सारेसा ।

( ४ ) धध, धधप, धसांनिधप, मपधधम सांनिधपम, धम,  
रेमपधम, निधम, पमरेसा; सारेसा ।

( ५ ) मम, पप, ध, सां, सांरेसां, सारिमंमं, रेरेसां, सारेसां-  
निध, पसांनिधप, ममपप, ध<sup>प</sup>धमप, सारेसांनिधप,  
मपधप, निधपधम, रेरेसा; सारेसा ।

- ( ६ ) सारेसा, सारेमरेसा, धूसारेरेसा, सारेमपधध, ममरेसा,  
निनिध, मपधमनिनिधध, मपधप, ममरेसा, सांनिध,  
रेसांनिधमपधधममरेरेसा; सारेसा ।

### ( ५२ ) देवरंजनी-स्वरविस्तार

- ( १ ) सा, म, मप, ध, प, मप, सां, ध, प, मपम, साम, मप ।

- ( २ ) प, मप, ध, प, सां, धनिधप, मपधसां, म, मपम, सा  
म, मप ।

- ( ३ ) म, पम, धप, म, सां, धनिधप, म, सा, म, मप, ध,  
प, निधप, सां धनिधप, सां, मंसां, धनिधप, म, पम सा ।

- ( ४ ) सा, निसा, ध, प, मपधसा, निसा, प, म, निधपम,  
मपध, सां, पम, म, सा ।

- ( ५ ) प, पध, निध, सां, ध, मं, सांध, मपध, साम, मप,  
ध, निधप, पम, सा ।

- ( ६ ) पपध, सां, सां, निसां, सां, मं, सां, धप, पधनिसां,  
मपधसां, मपम, सा, म, मप, ध, प ।

- ( ७ ) पधसां, निसां, मं, मंमं, सां, निसां, पधपम, मपध-  
सां, म, पधनिधपम, पम, म, सा ।



- ( ८ ) सा, मपम, पधपम, पधसांनिधपम, मपधसां, मपमंसां,  
निधपम, ममपधसांनिधनिधपम, धपम, पम, सा ।  
( ९ ) मसा, पमसा, धपमसा, सांनिधपमसा, मं, मंसां धनि-  
धपमसा, साम, मपधसां मं, सांनिधपमसा ।

### ( ५३ ) विभास-स्वरविस्तार

- ( १ ) <sup>प</sup>धधपप, <sup>प</sup>गपधप, गरेसा, सारेसा, गप, प, ध, प, सारे  
गप, धधप, गपधप, गरेसा, धध, प ।  
( २ ) सारेसा, धधपप, धसा, रेरेसा, गपधपगरेसा; धध, प ।  
( ३ ) सारेसा, गरेसा, गगपपगरे, सा, सारेगप, गप, धधप,  
<sup>प</sup>गपध, <sup>ग</sup>धप, सां, <sup>प</sup>धप, रेग, प, धधप, पगरेसा, धध, प ।  
( ४ ) <sup>सा</sup>रेरेसा, <sup>प</sup>गपधध, सां, धध, प, रेसां, धध, प, गपध,  
सांध, प, रेगप, धधप, गपधपगरेसा, ध, धप ।  
( ५ ) पगप, धध, सां, सां, सारें, सां, सारेंगरेसां, सारेंसां,  
<sup>प</sup>ध, प, गगपपध, सां, धधप, गपध, प, गरेसा; ध, धप ।  
( ६ ) सारेसा, सारेगरेसा, सारेगपगरेसा, गपधपगसांरेसां, ध  
प, गपध, रेसां, ध, प, पधगप, सांसां, धपगपधप-  
ग सा; ध, ध, प ।  
( ७ ) सासा, धध, पधधप, गपध, सांधधप, सागप, रेसांधप,  
<sup>प</sup>गपधप, गरेसा; धध, प ।



## ( ५४ ) भीलफू ( भैरवमेलजन्य प्रकार )—स्वरविस्तार

- ( १ ) सा, म, गमप, पधु, पधुसां, धु, प, मगमधु, प, मपगम, सा, गम, मप ।
- ( २ ) ग, सा, म, गम, प, धु, प, पधुसां, धु, प, म, गम—पधुसां, धु, प, मग, साग, मप ।
- ( ३ ) प, मग, धुप, मग, सां, धुप, मग, मपधुसां, धुप, मग, सागमप, मग, सानिसासा, म, गमप ।
- ( ४ ) धुप, सां, धुप, मप, धु, प, पधुसां, धुप, गम, धु, प, मग, सानिसाग, म धुप ।
- ( ५ ) पपधुसां, सां, निसां, गंमं, गं, सांनिसां, पपमगम, पधुसां, धुपमग, सागमप, पधु प ।
- ( ६ ) ग, गसा, मगसा, पमगसा, धुपमगसा, सांनिधुपमगसा, मंगंसां, सांनिधुपमगसा ।
- ( ७ ) म, मप, पधु, सांनिसां, सांगंसांनिधुप, पधुसां, धुप, मपमग, साग, मप, धु, प ।
- ( ८ ) गसामगपमधुपसांनिसां, गंसांमंगं, सां, धुप, गमपधुसां, धुप, मग, पमगरंसा ।

## ( ५५ ) गौरी ( भैरव थाट )—स्वरविस्तार

- ( १ ) सा, रेरेसा, नि<sup>ग</sup>सा, गरे, रेसा, निरेसा ।
- ( २ ) नि<sup>रे</sup>सा, गरे, सा, नि<sup>ग</sup>धुनि<sup>सा</sup>सा, रेरेगरे मग, रेगरेसा, निरेसा ।

( ३ ) नि<sup>ग</sup>सा, गम, पम, गरेमगरे, रेसा, धप, म, रेग, मग,  
रेरे, सानिसा, रेसा ।

( ४ ) नि<sup>नि</sup>सारेरेसा, ध<sup>ध</sup>ध, नि<sup>ध</sup>ध, नि<sup>नि</sup>सा, ग, म, रेगम, पम,  
रेगरेसा, नि<sup>सा</sup>रेसा ।

( ५ ) मगरेगम, रेगम, पप, ध<sup>प</sup>पम, रेरे, ग, मगरे, सा, ध,  
नि<sup>म</sup>सा, ध<sup>सा</sup>पम, रेगम, ग, रेरे, सा, निरेसा ।

( ६ ) नि<sup>ग</sup>निसारेग, रेगरे, सा, निरेसा, म, रेग, रेसा, धमप-  
पमरेग, रेसा, निसा, धपमप, निसा, रे, रेसा ।

( ७ ) नि<sup>मप</sup>सामम, रेगरे, म, पम, रेग, रेसा, ध<sup>ग</sup>ध<sup>ग</sup>पम, रेग, रेम,  
गरेसा, निरेसा ।

( ८ ) मम, पप, ध<sup>प</sup>ध<sup>म</sup>प, नि<sup>म</sup>ध<sup>म</sup>प, धपम, रेग, सा<sup>ग</sup>नि<sup>ग</sup>धप, म,  
नि<sup>ग</sup>ध<sup>सा</sup>पम, रेग, नि, सा, रेग, रे, पमग, रेगरेसा ।

### ( ५६ ) जंगूला-स्वरविस्तार

( १ ) म, गम, गमपमगरे, सा, सारेगम, मप, म, गमपमरे, सा ।

( २ ) म, गमप, पसां, ध<sup>नि</sup>निप, गमधु, प, मपधनि, (नि),  
प, मग, मरे सा ।

- ( ३ ) सा, प, म, गमरे, सा, सां, ध्रुप, गमप, मरे, सा, रेंसां,  
निध्र, प, मपधनि, प, गमपम, रे, सा ।
- ( ४ ) सा, सारे, निसा, ध्र, प, म, गम, पध, निप, म, सां,  
नि  
ध्र, प, म, गम, गमपम, रे, सा ।
- ( ५ ) मगरेसा, पमगरे सा, ध्रुप, मगमरे, सा, सां, धनिप,  
मगमरेसा रेंसां, निसां, ध्र, प, मपधनिप, गम पम,  
रे, सा ।
- ( ६ ) गम, मप, पध, प, सां, निसां, रें, सां, धनिसां, निसां,  
धनिप, गमपधनिसां, ध्रुप, म, निधनिप, म, गम,  
गमपम, रे, सा ।
- ( ७ ) पपसां, सां, रेंसां, मं, गंमं, रें, सां, निसां, धनिप,  
मपगमध्र, सां, गंमंपंमंरें, सां, रेंसां, निसां, पधनिप, म,  
गम, गमपम रे, सा ।
- ( ८ ) मगरेसा, ध्रुपमगरेसा, सांधनिप, मगरेसा, सारेंसांनि-  
धनिपमगरेसा, सारेंगंमंपंमंरेंसांनिध्रुपम, गमपधनि-  
पम, पमगरे, सा ।
- ( ९ ) पपमम, ध्रुपपमम, सांसारेंसांधधनिपमम, मपधनि-  
सांमंरेंसां, रेंसां, धधनिपमम, गमपमगरे, सा ।
- ( १० ) पपसांसारेंसांमंरेंसां, सांसारेंसां, धधनिपम, मपध-  
निसांनिधनिपमम, गमपमगरे सा ।



## ( ५७ ) गौरी ( पूर्वी थाट )—स्वरविस्तार

- ( १ ) सा, रेनि<sup>१</sup>सा, धनि, रेग, मंगरे<sup>२</sup>सा, रेनि, सा ।
- ( २ ) सा, धनि, रेसा, रेनि<sup>३</sup>सा, धनि, मधनि, रेग, मधमंग, रेसारे<sup>४</sup>नि, सा ।
- ( ३ ) सासापप, म<sup>५</sup>, रेग, सारे<sup>६</sup>नि, धनिंग, मंगरे, सारेनि<sup>७</sup>सा ।
- ( ४ ) मधनिधप, रेग, सारे<sup>८</sup>नि, सारे, पमंगरे, नि<sup>९</sup>सा ।
- ( ५ ) मधनि, सां, रे, सारे<sup>१०</sup>निसां, रेगं, रे, निसां, धप, मपधमप, रेग, रेम, गरे<sup>११</sup>सा, रेनि<sup>१२</sup>सा ।

## ( ५८ ) त्रिवेणी—स्वरविस्तार

- ( १ ) सारे<sup>१</sup>सा, सारेगरे<sup>२</sup>सा, निरेगरे, गपगरे<sup>३</sup>सा ।
- ( २ ) सासारे<sup>४</sup>रेसा, गगरे<sup>५</sup>रेसा, प, पगरे, गपगरे<sup>६</sup>सा, रे रे प, पधप, गरे, गप, निधप, गरेगपगरे<sup>७</sup>सा, सासारे<sup>८</sup>रेसासा, गपगरेगरे<sup>९</sup>सा ।
- ( ३ ) पपधधपप, निरे<sup>१०</sup>निधपप, सांसांनिधप, गरेगरे<sup>११</sup>सा ।
- ( ४ ) रेरेप, प, निधनिधप, सांसांरे<sup>१२</sup>निधप, निनिधधपप, पध-  
पपगरेगपगरे<sup>१३</sup>सा ।
- ( ५ ) पपगरेगपसां, सारे<sup>१४</sup>सां, रेगरे<sup>१५</sup>सां, रेनिधनिधप, पधप, गग, रेनिधनिधप, पपगरेगपगरे<sup>१६</sup>गरेसा ।

## ( ५९ ) टंकी—स्वरविस्तार

- ( १ ) पगरे<sup>१</sup>सा, रे, गरे, गप, पधप, धमंग, रे, गप, गरे<sup>२</sup>सा ।



- ( २ ) सा, गरे, प, गप, धप, गपगरे, धप, मंग, रेग, प,  
निधप, गप, रेनिधप, गप, गरे, मंगरे, सा ।
- ( ३ ) प, गप, धप, निधप, निरेनिधप, धमंग, निधप, गरे,  
पगप, गरे, निरे, सा ।
- ( ४ ) ग, पध, प, सां, निरेसां, सारिगपं, गरे, गरे, सां, निसां,  
रे, निध, प, रेगपध, रेनिधप, मंग, गप, गरे, पगरे,  
रे, सा ।

### ( ६० ) मालवी-स्वरविस्तार

- ( १ ) पग, रे, रे, सा, सारेसा, ग, मंग, रेग, मध, रेसां, सां,  
निप, ग, गमंग, रेसा, सारेसा ।
- ( २ ) <sup>सा</sup>रेरेसा, <sup>सा</sup>रेरेगरेसा, <sup>म</sup>पगरेगमंगरे, सा, सारेग, मंग,  
मधसांऽरेगरेसां, रेसां, सांनिप, मधरेसां, निप, ग,  
<sup>म</sup>पग, <sup>सा</sup>रे, सा, सारेसा ।
- ( ३ ) <sup>नि</sup>सासागरेसा, <sup>सा</sup>रेग, <sup>म</sup>पगनिपग, <sup>ग</sup>रेग, <sup>ग</sup>रेसांनिपग, <sup>प</sup>रेग, मंग,  
मप, मंग, पगरेसा, साग, मध, रेसांनिपमंग,  
<sup>ग</sup>रेगमप, <sup>ग</sup>मंग, <sup>ग</sup>रे, <sup>ग</sup>रे, सा ।
- ( ४ ) <sup>म</sup>गग, <sup>म</sup>मंग, <sup>म</sup>रे, सा, <sup>सा</sup>पमंग, पग, <sup>सा</sup>रे, सा, सारेसा, रेगरे,  
<sup>प</sup>मंगरे <sup>पम</sup>पमंगरे, <sup>सा</sup>रे, सा, साग, <sup>नि</sup>मधसां, सांनिप, <sup>प</sup>मंग,  
<sup>ग</sup>रेग, <sup>म</sup>पग, <sup>म</sup>रे, सा, सारेसा ।

## ( ६१ ) रेवा ( गांधारवादी प्रकार )—स्वरविस्तार

- ( १ ) सारंग, ग, रंग, पग, रंगरेसा, सारंगसा, गपग, रंगप, ध्रुपग, पगरंगप, ध्रुपग, पग, रंग, सारंग, ध्रुप, गपरेग, गरे, रेसा ।
- ( २ ) सा, रेसा, गरेसा, सा, सा, रेपग, ध्रुप, रंग, पग, ग, रेसा, ध्रुवेसा, गरेसा, ध्रुध्रुप, ध्रुसा, सारंग, पगरंगसा ।
- ( ३ ) सारंग, रंग, पग, रेसा, पध्रुप, ग, रंग, सारंग, रेसा ।
- ( ४ ) पग, पध्रुप, सां, सां, रेसां, रंगरेसां, सारंगसां, ध्रुप, पग, पध्रु, रेसां, सां, ध्रुपग, रेसा ।
- 

## ( ६२ ) रेवा ( ऋषभवादी प्रकार )—स्वरविस्तार

- ( १ ) सारंगरेसा, गरे, सा, सा, ध्रुप, पध्रु, रे, रे, सा, पगरु ।
- ( २ ) गरे, ध्रुप, रंग, पध्रुपगरे, रेसा, सा, रेसा ।
- ( ३ ) पगरुप, प, ध्रुप, ग, ध्रुप, ग, रंग, रे, रे, सा ।
- ( ४ ) सारंगसा, सासारंग, गरे, ध्रुप, गरेगपगरे, सा, ध्रुप, सा, रंग, पध्रुपग, सांध्रुपग, रेपध्रुपगरे, सारंगसा ।
- ( ५ ) पध्रुपगरे, प, प, ध्रुध्रुप, सारंगसां, ध्रुप, गपगरे, ध्रुप, रंग, ध्रुपगरे, गरे, सा, रेसा ।
- ( ६ ) सासारंग, पप, ध्रुप, सारंगसां, ध्रुपग, रेपपग, रे, ग, सारंगसा, सा, रेसा ।
- 

## [ ६३ ] जेताश्री—स्वरविस्तार

- ( १ ) प, गरेसा, रेसा, नि, सागप, प, पध्रुमंग, मंग, रेसा, मपनि, सा, ग, मंग, रेसा, पगरंगसा ।

- ( २ ) पमप, नि, सारेरेसा, नि, सां, रेसां, निरेनिधप, मंगप,  
निरेनिधप, मधप, मंग, मंगरेसा ।
- ( ३ ) सा, निरेसा, ग, प, म<sup>म</sup>धमंग, प, मंग, मंग, रेसा;  
सारेसा ।
- ( ४ ) निरेसा, गपप, मंग, रेसा, गमंग, रेसा. प<sup>म</sup>निता, गमंग,  
प, ध<sup>म</sup>धप, ग, म<sup>प</sup>धमंग, मंग, रेसा, निता, ग, रेसा, पमंग,  
मंग, रेसा, प, म<sup>म</sup>धप, म<sup>म</sup>धमंग, निधप, मंग, म<sup>म</sup>धमंग,  
मंग, रेसा ।
- ( ५ ) मपनिता, प<sup>म</sup>निता, रेसा, गरंसा, मंग, प, म<sup>म</sup>धमंग, धप,  
निधप, सांनिधप, मधप, मधमंग, रेसा ।
- ( ६ ) मंगमधप, सां, रेसां, गरंसां, निसां, रेनिधप, मप, निधप,  
मप, मंग, मधमंग, पंगरेसा ।

### ( ६४ ) दीपक—स्वरविस्तार

- ( १ ) धधपमप, नि, सा, धनिता, निरेसा, गरेसा, मपनिता,  
रेरेसा, गमंगरेसा, प, प, मंग, मंग, रेरे, सा, सारेसा ।
- ( २ ) गमप, प, धध, प, मपधमप, मंग, पमंग, मागमधप,  
मंग, प, ग, गरेसा, निरेसा ।
- ( ३ ) पधपमपनि, प<sup>म</sup>नि, रेरेसा, पग, पमंग, रे, सा, निता-  
गमप, गमप, धप, मप, सागमप, मंग, धमंग, मागपग,  
मंग, रेसा रेरेसा ।
- ( ४ ) गग, मधप, सां, सां, निरेसां, मंगरेसां, सारेसां, प,  
मंग, पधप, मंग, मंग, रेसा ।



## हंसनारायणी—स्वरविस्तार

- ( १ ) सा, गरेगमप, मंग, गमपमंगरेसा, प, मंगरेसा, प, मंगपमंगरेसा ।
- ( २ ) निरेग, पमंग, रेगमप, निप, गमपनि, सां, निप, मंग, गमपमंगरेसा ।
- ( ३ ) पमंगरेसा, निरेगमंगरेसा, निनिपमंगप, गरेसा, निरे-  
गमपनिसांनिपमंगमंगरेसा, गमपनिसां, गंरेसां, पसां,  
निप, मंग, रेगम, गमंगरेसा ।
- ( ४ ) सामंगप, मपनिप, गमपनिसांनिप, मपनिप, मंग,  
रेगमपग, मंगरेसा ।
- ( ५ ) सागरेसा, सामंगमंगरेसा, गमपनिपमंगरेसा, गमपनि-  
सांनिपमंगमंगरेसा, गमपनिसांगंरेसां, पसांनिपमंगरेसा ।
- ( ६ ) प, गमप, रेगमप, निप, सांनिप, निसांगंरेसांनिप,  
रेगमपसांनिप, मंग, रेगपमंग, पंगरेसा ।
- ( ७ ) पंगरेसा, गमपमंगरेसा, निसागमपनिपमंगरेसा, निसा-  
गमपनिसांनिपमंगरेसा, निसागमपनिसांगंरेसांनिपमंग-  
रेसा, निसागमपनिसांगंपमंगंरेसांनिपमंगपमंगरेसा ।
- ( ८ ) पमंगमपसां, सां, निरेसां, निरेगंरेसां, रेगंमंगरेसां,  
निरेगंमंगंमंगंमंगंरेसां, गंरेसां, निप, मपनिसां, रेनिप,  
मपसां, निप, मपनिप, पमंग मंगरेसा ।
- ( ९ ) निनिपमंगरेसा, गंरेसांनिपमंगरेसा, पंमंगंमंगंरेसांनिप-  
मंगमंगरेसा, निसागमपनिसारेंसांनिपमंग, गमपनिप-  
मंगरेसा ।



## विभास ( पूर्वमेलजन्य )—स्वरविस्तार

- ( १ ) सा, ध्र, प, मध्र, प, गपगरेसा, सा, रेसा, गप, मध्रप, ध्रसां, ध्रनिध्रप, गपध्रपगरेसा ।
- ( २ ) सा, गरेसा, पगपगरेसा, सारेगप, मध्रनिध्रप, ध्रसां, ध्रप, गपध्रनिध्र, प, ध्रपगरेसा ।
- ( ३ ) सा, प, गप, ध्रप, रेगप, मध्र, रेसां, ध्रनिध्रप, निध्रपग, पमध्रपग, पगरेसा ।
- ( ४ ) सा, ग, पग, ध्र, प, रेग, निध्रप, ध्ररेसां, ध्रप, सांनिध्रप, मध्रप, गप, गरेसा ।
- ( ५ ) सा, ध्र, ध्रप, गपध्रसां, रेनिध्रप, गरेसांमंगं, पंगरेसां, ध्रसारंगरेसां, पध्रसां, ध्रनिध्रप, गपध्र, मध्र, प, रेगध्रप, गपगरेसा ।
- ( ६ ) सा, प, पध्रसां, ध्रप, ध्ररे, रेगरेसां, ध्रप, ध्ररेसां, ध्रप, पध्ररेसां, ध्रप, ध्रसां, ध्रप, निध्रप, रेनिध्रप, मध्रनिध्रप, ध्रपग, पग, रेसा ।
- ( ७ ) पग, प, ध्रसां, सांरेसां, सांसारं, रे, रेगरेसां, गंरे, गंपंगंरे, मंगंरे, गंरेसां, सांरेगंरेसां, ध्रध्ररेसां, ध्रसां, ध्रनिध्रप, रेगमध्रनिध्रप, ध्रप, गरे, गपगरे, गरेसा ।
- ( ८ ) गरेसा, पगरेसा, ध्रप, गपगरेसा, निध्रप, ध्रपगरेसा, रेसां, ध्रपगरेसा, सारेगप, ध्रसारंगंरेसां, रेनिध्रप, निध्रपग, पगरेसा ।
- ( ९ ) सामाररेसासा, पपगरेसासा, पमध्रध्रपपगरेसासा, पमध्रपनिध्रपपगरेसासा, सारेगपमध्रनिध्ररेनिध्रपगरेसासा, गप, ध्रसारंगंरेसांसांध्रपगरेसासा ।

# राग अनुक्रमणिकानुसार चीजों की सूची

( ६७ रागों की २५१ चीजें )



	पृष्ठ		पृष्ठ
<b>कल्याण थाट</b>		बाजे रे ठुमक ठुमक	६२
चन्द्रकान्त		मखदूमसाधिर कलियरी	६५
चन्द्रकान्त सखि अतिमन	६२	मेल कल्याण ओडव राग	८८
प्यारे तोरि छवि मोरे	६२	मैंडि जिंद तू साडे	६३
<b>जैतकल्याण</b>		सब सखियां मिल मङ्गल	८८
अतहि सरस रसमाता	६६	<b>श्यामकल्याण</b>	
उततन देरे नादीमतादानी	७०	आलि री पावस रितु	८४
गामरिया छूवन तोहे कैसे	७१	घटाकारी हुरने चरागे	८०
जय जय भवानिपत	६८	जियो मेरो लाल	८२
जैसो जाको भाव	६८	भूलन आ हिडोरे	७७
फागुन आयो ए रि माई	७२	नीद न आवत पिया बिन	७६
मेरी सुरंग चुनरिया	७०	पार्श्वतीनाथ अनायनाथ	८३
<b>मालव्री</b>		महारा रसिया बालम	८१
अवधुन बकस मेरे	६६	श्यामकल्याण गावत	७६
आवे आराजना	६४	सावन की साँज मोको	७८
उठ रे मुसाफ़ीर	६७	सुनो अहो श्याम	७६
ओडव मालसिरी रागनि	६०	<b>सावनी कल्याण</b>	
करत हो सकल सिंगार	६१	बाहु तन लागे बाहु	६५
कहे कल्पद्रुम ग्रन्थ	८६	सब सखियां मिल मङ्गल	६६
बोषन मदमाति नार	१०४	<b>विलावल थाट</b>	
दान करत समान	१०१	<b>ओडव देवगिरी</b>	
दुरगे दुरित दूर	६६	अनु द्रुत लघु गुरु	१३६
निर्मल मौख चन्दा	१०२	असपनंदन दशभुजा रे	१३४

	पृष्ठ		पृष्ठ
<b>कामोदनाट</b>		<b>जलधर-( चालू )</b>	
सावरी सुरत मोरे मन	२०२	जलधर-केदार गुनि कहत	२२३
हो गाये कामोद नाट	२०१	<b>दीपक</b>	
<b>कुकुभ</b>		लालके त्रिजबालके	२६६
अब कोउ कैसे हो	१८५	<b>देवगिरी</b>	
का को मजन धीन	१७८	आज बधाई माई	१२६
गाओ सहेलियां आज	१७६	आज बिलावल चतुर	१२५
गावो गुनिजन सब	१७५	ए बना व्याहन आयो	१२६
गोविन्द गिरधर हलधर	१८०	कब घर आवे पिया मोरे	१२८
तेरे मिलनदा चावे	१७७	दिन गिन दे रे बमना	१२७
मनहरन चाल नन्दलाल के	१८६	मीलना दोहिला	१३३
माहादेव मोला चक्र	१८२	वे दिना हमरे दोरे	१३०
सिरी शंभू हर महादेवा	१८१	रुसे हो पिया	१३२
हजरत ख्वाजा गरीबन	१८३	<b>दुर्गा</b>	
<b>केदारनाट</b>		अहो जिन बोलो पिया	२२६
दै मारो रे बीठ न तोरा	२०३	छिटक रही चांदनी रंग	२२७
<b>गुणकली</b>		तूं जिन बोल रे प्यारे	२३०
चतुर नाम जपले	२४०	देवी भजो दुरगा भवानी	२२८
बिया काहां पाई	२३६	राग गुनी दुरगा बलाने	२२७
<b>छाया</b>		<b>नट</b>	
सखियां रचो रास	२३३	जुवति जुथ सन फाग	१६०
<b>छाया-तिलक</b>		शुद्ध-स्वर रच मैल	१८६
बाय सुनाओ हरिसौं	२३६	<b>नट-नारायण</b>	
<b>जलधर ( जलधर-केदार )</b>		हाथ डमरू लिये	१६१
अति मनोहर रूप	२२२	<b>नट-बिलावल</b>	
		आज नव नागरी	१६४
		पूरन पुरान परमानन्द	१६७
		मुकुटके रंगन पै	१६५



	पृष्ठ		पृष्ठ
नट-विद्वाग		यमनीविलावल	
साजन नाये नाये री	२००	आन परो री कोने	११७
पट-विद्वाग		धेरो री जलधर	१२०
कैसे-कैसे बोलत	२०८	जब सुधि आवे	११६
पटमंजरी		जुग-जुग जीवो	११८
अनुहत नादसमुद्र	२६०	तू कित करत मान	१२२
चाहत है मन होरी	२५६	पिया बिन कैसे	११५
त्रिशूल लपपर डमरू	२५६	भोर भयो है मेरे लाड़िले	११४
रूप जीवन गुन खेलत	२५७	यमनी विलावली सब	११३
पहाडी		लच्छासाख	
मुरली मधुर धुन	२४५	अज हु समझ रे मन	१५६
साधुजी रे नाही	२४५	प्रथम तारसुर साधे	१५८
विद्वागडा		लच्छासाख सुन्दर	१५१
गावत राग विद्वागडा	२०६	शम्भू श्याम सुन्दर	१५५
मग जइये रो ये बिध	२०७	सहेलियां गावो रिम्झावो	१५२
मलुहा ( मलुहाकेदार )		सोहिलरा गावो रिम्झावो	१५४
कृष्ण मुरारि श्याम	२१४	शुक्लविलावल	
कैसे बिया धरे धीर	२१५	कल ना परत मोहे	१६३
मलुहा-केदार चतुर सुनावत	२१४	तू ही तो पालन द्वारा	१६४
मैंदर मा दिवनी कोडिये	२१७	धरमीनमें ये मरबादमें	१६६
मन्दर बाजो रे अरे बाजो	२१६	मरन जो गई जल बसुना	१७१
मोये रंग डार गयो	२१८	मैं निहारे देखो	१६५
लजो हि आवे	२१६	राजाराम निरंजन	१७०
मांड		शुक्ला विलावल	१६२
मांड मुरत बतलाये	२४६	सुभ घरी सुभ दिन	१६६
मेवाडा		सरपरदा	
कुंजरली दे संदेसो	२५२	दानि तोम्तानो म्ताना	१४७
		नई रे लगन और मीठी	१४५



सरपरदा ( चालू )	पृष्ठ	तखत बैठो दुलहा	पृष्ठ
नबरा रो मेलो दीजो	१४६	प्यारेकि मूरत चित पड	३१४
बिधुबदन युवतिगण	१४०	मेरो रंगीला मन्मदसा	३११
ये तो मन्वा न रहे	१४२	रंग भरी पिचकारी	३१७
रैन मैं तो जागो	१४४	किमोटी	
रंगीला मेरा मोरा	१४५	अखियां जोहती ( त्रिताल )	२७३
लच्छन गुनि सरपरदा	१४१	अखियां जोहति ( चौताल )	२७५
सावनी ( बिहाग-अङ्ग )		आयो फागुन मास	२७६
जाने अकल सब	२१०	आश्रय राग कहत गुनिजन	२७१
हेमकल्याण		इतना कोउ कहो	२७८
अब मैं कासे जाय कहूँ	१०६	चली री सखी ब्रिजमें	२८०
सावन आयो री यह	१०६	जहाँ कलु ताजि मैं नाइंग	२७६
सुन्दर गोल कपोल	११०	मधुर-मधुर पनघटपर	२७१
हंसध्वनि		मेरे मन लाल गोपाल	२७४
गुणिजन हंसध्वनिको	२६४	तिलंग	
खंभाज थाट		गाय सखि राधिका	२६३
खंभावती		बस किनो बाट चलत	२६६
खंभावती गावत	२८५	रिध बरजित रूप तिलंग	२६२
गिनत रही तारे नाये सावन	२८७	सजन तुम काहे न	२६४
चतरा खंभावतिके	२८४	समझ-समझ आलीप्रान	२६७
पिया बिन नैनां नौद न आवे	२८६	हो मेरे तो मन श्याम	२६५
मैं तो जागी सारी रात	२८८	दुर्गा	
गारा		जोबनाके जोर तोर	३०१
ए जाणदा जाणदी	३१३	देवि दुर्गा सदा	३००
कर सिंगार खेलनको	३१६	नारायणी	
कानपरी बब मनक	३११	नारायणको नाम	३३७
गुनि बरनत गारे के मुर	३१०	रागेश्वरी	
जानि आग रे लगा जा	३१२	प्रथम मेल साथे	३०५
		प्रथम मुर साथे	३०६

	पृष्ठ		पृष्ठ
सावन( देस-अङ्ग )		मूरत मनमें लागी रहे	४२०
एरि कारि बादरी	३३८	जोगिया	
सोरट		अखिल गुनन मांडार	३६०
उलहन लागे री पुरहा	३३३	अनि-अनि चरक दानेनुं	३८८
कहुँ अब सोरट देसको भेद	३२१	गुनिजन राग लिखत	३८७
जोवन भाल रह्यो	३२३	रंग अबीर कहाँसे	३६२
तेरोहि ध्यान भरत	३२८	हूँ तो थांने जावन नही	३८६
पायो हो आव लोनो	३२६	होरीको खेल मोहे	३६१
पूजन जात शिव मूरत	३३१	जंगूला	
मारुबी चाँदनि राते	३२६	मंशुमादिल गुदाजं	४२३
लारा लागो ही	३२४	भीलफ	
सोरट रामनि ओडव	३२२	नामहि के बल सहसानन	४१३
हो जी महारी बेग	३२६	मेरी मदद करो	४१२
भैरव थाट		देवरंजनी	
अहीरभैरव		त्रिविधगामनि तिहुँ लोक	३६५
ए टोनवा मोरा जगत	३५६	प्रभातभैरव	
वनरा मोरा रस माता	३५७	काहे न मन तू गुरुपद	३६८
रसिया महारा अमला	३५८	बङ्गालभैरव	
राधिकामरण गिरधरन	३५६	ए बनता बन आया	३४३
आनंदभैरव		मेघरंजनी	
आजे आनंद भयो	३४६	ललित न अहीर न	३७६
मेरे मन सुमरन कर	३४७	ललित-पंचम	
गुणकरि ( गुणक्री )		अलस उनीदे नैन	३७५
डमक हरकर बाजे	३८४	ए अल्ला तेरो सांचो नाम	३७४
रूप अतुपम आज गायो	३८३	कर मन काई बिचार	३७१
गौरी		कहो तुम सांची कहाँ	३७१
फूली सांभ मधुवनमें	४१८	जब आवे मोरे सैयाँ	३७२
मुरली बजावो रिभावो	४१६	बामदेव महादेव पारबतीपते	३७३

विभास	पृष्ठ	जेताश्री	पृष्ठ
आज तुम मोर मोर हि	४०२	अहोबल राग लिखत	४६२
आज बधाओ राजेंद्र	४०४	कर चतुर सुधर	४६४
चिरियां चूह चुहा	४०४	कान्हर जनम भयो	४६६
पिया तुम वहीं जाओ	४०३	तेहारे दरसकी आस बड़ी	४६७
प्यारी प्यारी बतियां	४००	बहुत दीन बीते री आली	४६४
बदन पंच भाल नयन	४०७	मन तुमी मन लाग रखो	४६८
बैरन ननंदिना लागी	४०१	मान न कीजे अपने	४६३
ये नरहर नारायण	४०६	म्हाने अकेली डार गयो	४६६
राग विभास मधुर	३६६	हालरियां माई हलराउं	४६५
श्याम अति मुन्दर	४०६	टंकी ( आंटंक )	
शिवभैरव ( शिवमत-भैरव )		कामधरधनी मुर टंकी	४४६
अहो सो मली जिन्हे कान	३६२	सुमरन कर मनुजा	४४८
गायो मिलके आज बधावरा	३६३	हरि हरि कर मन जगमें	४४७
चाल चलत अलसानि	३६४	त्रिवेणी	
सौराष्ट्र-टंक		अहोबल कहत राग तिरिबन	४४०
कटत विकार नाम आधार	३५२	कालिदि सरसुती अवन बरन	४४१
प्रभु कितार तुम हो अपार	३५१	संसार कारन तू सांचो विधाता	४४२
पूर्वी घाट		दीपक	
गौरी		दीपक कथन करत	४७३
अकबर दौर दौर मुर मुर	४३५	मनोहर	
ए री दैया काके पास रहीलो	४३४	अतिहि मनोहर नैनन लागो	४७६
कहा कलू पग न चलत	४२६	मालवी	
तारेदानि तदनों द्वितोम	४३३	आयो फागुन मास	४५२
भटकत काहे फिरे	४३१	कट नमन करले प्यारे	४५२
मोहे घाट चलत	४३०	रेवा	
लाज रखो मेरी साहेब	४३७	सांभ समै सुखकर	४५८
लंका लई रामबी रावन	४३३	विभास	
		राग विभास चतुर	४५५
		हंसनारायणी	
		भज मन नारायण	४७७



## अकारादि क्रम से चीजों की सूची

अ	पृष्ठ	इ	पृष्ठ
अकबर दौर दौर मुरमुर (गौरी) ४३५		आज बघाई माई (देवगिरी) १२६	
अखियां जोहति अब		आज बघाओ रावेंद्र (विमास) ४०४	
(भिमोटी-चौताल) २७३		आज बिलावल चतुर (देवगिरी) १२५	
अखियां जोहति अब		आजे आनंद भयो (आनंदभैरव) ३४६	
(भिमोटी-चौताल) २७५		आन परो रो कोने (अमनिबिलावल) ११७	
अखिल गुनन भांडार (जोगिया) ३६०		आयो फागुन मास (भिमोटी) २७६	
अजहु समझ रे मन (लच्छासाख) १५६		आयो फागुन मास (मालवी) ४५२	
अतहि सरस रसमाता (जैतकल्याण) ६६		आली रो पावस (श्यामकल्याण) ८४	
अतिहि मनोहर नैनन लागो		आवे आरांजना (मालवी) ६४	
(मनोहर) ४७६		आश्रय राम कहत (भिमोटी) २७१	
अति मनोहर रूप (जलधर) २२२			
अनि अनि चरफ (जोगिया) ३८८		इ	
अनु द्रुत लघु गुरु (ओ० देवगिरी) १३६		इतना कोउ कहो (भिमोटी) २७८	
अनुहव नादसमुद्र (पटमंजरी) २६०			
अब कोउ कैसे हो (कुकुभ) १८५		उ	
अब मैं कासे (हेमकल्याण) १०६		उठ रे सुसाफीर (मालवी) ६७	
अलस उर्नदि नैन (ललित-पंचम) ३७५		उततन देरेना (जैतकल्याण) ७०	
अवगुन बकस मेरे (मालवी) ६६		उलहन लागे री पुरहा (सोरट) ३३३	
अहो जिन बोलो पिया (दुगां) २२६			
अहो सो भली (शिवभैरव) ३६२		ऊ	
अहोबल कहत राम (चिबेगी) ४४०		उठ नमन करले प्यारे (मालवी) ४५२	
अहोबल राम लिखत (जैताभी) ४६२			
आ		ए	
आज तुम भोर भोर ही (विमास) ४०२		ए अल्ला तेरो (ललितपंचम) ३७४	
आज नव नामरी (नट-बिलावल) १६४		ए जाणदा जाणदी मौला (गारा) ३१३	
		ए टोनवा मोरा (अहीर भैरव) ३५६	
		ए बनता बन (बंगाल भैरव) ३४३	



पृष्ठ	पृष्ठ
ए ( चालू )	ख
ए बना ब्याहन आबो (देवगिरी) १२६	खंवावति गावत (खंवावति) २८५
ए री कारी बादरी (सावन) ३३८	ग
ए री दैया काके पास (गौरी) ४३४	गाओ सहेलियां आज (कुकुम) १७६
ओ	गागरिया छुथन (बैत कल्याण) ७१
ओडव मालसिरी (मालश्री) ६०	गाय सखि राधिका (तिलंग) २६३
क	गावत राग बिहागड़ा (बिहागड़ा) २०६
कब घर आवे पिया (देवगिरी) १२८	गावो गुनिजन सब (कुकुम) १७५
कटत चिकार नाम (सौराष्ट्र-टंक) ३५२	गावो मिलके आज (शिवमतमैरव) ३६३
कर चतुर सुधर (जेताश्री) ४६४	गिनत रही तारे (खंवावती) २८७
कर मन काई (ललित-पंचम) ३७१	गुनिजन राग लिखत (जोगिया) ३८७
कर सिंगार खेलन को (गारा) ३१६	गुनिजन हंसध्वनि को (हंसध्वनि) २६४
करत हो सकल सिंगार (मालश्री) ६१	गुनि बरनत गारेके सुर (गारा) ३१०
कल ना परत (शुक्लविलावल) १६३	गोविंद गिरिधारि हलधर (कुकुम) १८०
कसपनंदन दशभुजा (ओ.देवगिरी) १३४	घ
कहा करु पग न चलत (गौरी) ४२६	घटाकारी हूस्ने (श्याम कल्याण) ८०
कहू अब सोरट दैस (सोरट) ३२१	धेरो री जलधर (यमनी-विलावल) १२०
कहे कल्पद्रुम ग्रंथ (मालश्री) ८६	च
कहो तुम गांचि (ललित-पंचम) ३७१	चतरा खंवावति के (खंवावति) २८४
का को भजन बीन (कुकुम) १७८	चतुर नाम जपले (गुणकली) २४०
कान परी जब भनक (गारा) ३११	चलो रि सखि ब्रिजमै (गिभोदी) २८०
कान्हर जनम भयो (जेताश्री) ४६६	चाल चलत अलखानि (शिवमैरव) ३६४
कामबरधनि सुर टंकी (टंकी) ४४६	चाहत है मन होरी (पटभंजरी) २५६
कालिंदी सरसुती अरुण (त्रिवेणी) ४४१	चिरियां चुं हनुहाति (विभाव) ४०४
काहे न मन न गुरुपद (प्रभात) ३६८	चंद्रकांत सखि (चन्द्रकांत) ६२
कुंजरली दे संदेशो (मेवाडा) २५२	छ
कुष्ण मुरारि श्याम (मलुहा) २१४	छिटक रही चांदनी (दुर्गा) २२७
कैसे कैसे बोलत (पटबिहाग) २०८	
कैसे जिया धरे धोर (मलुहा) २१५	

पृष्ठ	पृष्ठ
ज	
जब आवे मोरे (ललित-पंचम) ३७२	तेरोही ध्यान धरत (सोरट) ३२८
जब मुधि आवे (यमनिबिलावल) ११६	तेहारि दरसकी (जैतश्री) ४६७
जय जय भवानि (जैतकल्याण) ६८	त्रिविधगामनि तिहुं (देवरंजनी) ३६५
जलधर-केदार गुनि (जलधर) २२३	विरहल खप्पर डमरु (पटमंजरी) २५६
जहां कछु ताहिमें (भिकोटी) २७६	
जानि आग रे लगा जा (गारा) ३१२	द
जाने अकल सब (सावनी) २१०	दान करत समान (मालश्री) १०१
जाय मुनाओ हरि (छाया तिलक) २३६	दानि तोम् तानोम् (सरपरदा) १४७
जाहू तन लागे (सावनी कल्याण) ६५	दिन गिन देरे बमना (देवगिरी) १२७
जियो मेरो लाल (श्याम कल्याण) ८२	दीपक कथन करत (दीपक-पूर्वा) ४७३
जुग-जुग जीवो (यमनी बिलावल) ११८	दुरगे दुरित दूर (मालश्री) ६६
जुवति जुथ सन फाग (नट) १६०	देवी दुरगा सदा (दुर्गा-खंभाव) ३००
जैसो जाको भाव (जैत कल्याण) ६८	देवी भजो दुरगा (दुर्गा-बिलावल) २२६
जोवन भाल रख्यो ना जा (सोरट) ३२३	दे मारो रे दीट न तोरा (केदारनाद) २०३
जोवन मदमाती नार (मालश्री) १०४	
जोवनाके जोर तोर (दुर्गा) ३०१	ध
	धरमीनमें ये (शुक्रबिलावल) १६६
झ	
भूलन आ हिंडोरे (श्याम कल्याण) ७७	न
ड	नई रे लगन और मीठी (सरपरदा) १४५
डमरु हरकर बाजे (गुणकी) ३८४	नजरां रो मेलो दीजो (सरपरदा) १४६
ड	नाम ही के बल (भीलफ-मैरव) ४१३
त	नारायण को नाम (नारायणी) ३३७
तखत बैठो दुलहा बनायो (गारा) ३१४	निर्मल मौख बंदा (मालश्री) १०२
तारेदानि तद नौ द्वितोम (गौरी) ४३३	नींद न आवत (श्याम कल्याण) ७६
तुक्ति करत मान (यमनी-बिलावल) १२२	
तु बिन बोल रे (दुर्गा) २३०	प
तु हि तो पालन (शुक्रबिलावल) १६४	प्रथम तारसुर सावे (लच्छासाख) १५८
तेरे मिलनदा चावे (कुकुम्भ) १७७	पावो हो आवलोनो (सोरट) ३२६
	पार्वतीनाथ अनाथ (श्यामकल्याण) ८३
	पिया तुम वही जाओ (विभास) ४०३

पृष्ठ

पिया बिन कैसे (यमनीबिलावल) ११५  
 पिया बिन नैना नोद (खंवावती) २८६  
 पूजन जात शिव मूर्त को (सोरठ) ३३१  
 पूरन पुरान परमानंद (नटबिलावल) १६७  
 प्यारी प्यारी बतियां ( विमाम ) ४००  
 प्यारे की मूर्त चित चढी (गारा) ३१५  
 प्यारे तोरी छुवि मोरे (चन्द्रकांत) ६२  
 प्रथम मेल साधे ( रागेश्वरी ) ३०५  
 प्रथम सुर साधे ( रागेश्वरी ) ३०६  
 प्रभु किरतार तुम (सौराष्ट्र-टंक) ३५१

फ

फागुन आये ( जैतकल्याण ) ७२  
 फूली सांज मधुवनमें ( गौरी ) ४१८

ब

बदन पंच भाल नयन (विमाम) ४०७  
 बनरा मोरा रसमाता (अहोरमैरव) ३५७  
 बस किनो बाट चलत (तिलङ्ग) २६६  
 बहुत दिन बांते री ( जेतथी ) ४६४  
 बाजे रे ठुमक ठुमक ( मालथी ) ६२  
 बामदेव महादेव ललितपंचम ) ३७३  
 बिद्या काही पावी (गुणकली) २३६  
 बिधुबदन युवतिगण ( सरपरदा ) १४०  
 बैरन ननंदिना लागी ( विमाम ) ४०१

म

मन्मन नारायण (हंसनारायणी) ४७७  
 मटक काहे फिरे ( गौरी-पूर्वी ) ४३१

पृष्ठ

भरन जो गर्द (शुक्रबिलावल) १७१  
 भोर मयो हे मेरे (यमनीबिलावल) ११४

म

मल्लडूमसाधिर कलियरी (मालथी) ६५  
 मग जइये री ये बिध (बिहागडा) २०७  
 मधुर मधुर पनघट पर (मिम्बोटी) २७१  
 मन तुमी मन लाग रह्यो (जैतथी) ४६८  
 मनहरन चाल नंदराय के (कुकुम) १८६  
 मलुहा केदार चतुर ( मलुहा ) २१४  
 मांड सुरत बतलाये ( मांड ) २४६  
 मान न कीजे अपने ( जेतथी ) ४६३  
 माक जी चांदनि राते ( सोरठ ) ३२६  
 माहादेव मोला चक्र ( कुकुम ) १८२  
 मौलना दोहिला ( देवगिरी ) १३३  
 मुकुट के रंगन पै (नट-बिलावल) १६५  
 मुरली बजावो रिम्भाओ (गौरी) ४१६  
 मुरली मधुर धुन ( पहाडी ) २४५  
 मूरत मन में लागी (गौरी-मैरव) ४२०  
 मैं निहारे देखो (शुक्रबिलावल) १६५  
 मेंडि बिंद तु साहे नाल (मालथी) ६३  
 मेंदर मादियनि कोडिये (मलुहा) २१७  
 मेरी मदद करो ( भीलफ ) ४१२  
 मेरी सुरंग चुनरी (जैतकल्याण) ७०  
 मेरे मन लालगोपाल (मिम्बोटी) २७४  
 मेरे मन सुमरन कर (आनंदमैरव) ३४७  
 मेरो रंगीला मीमदता ( गारा ) ३११  
 मेल कल्याण ओडव (मालथी) ८८  
 मैं तो जागी सारी रात (खंवावती) २८८



	पृष्ठ		पृष्ठ
मोपे रंग डार गयो ( मलुहा )	२१८	लच्छामाख सुन्दर ( लच्छामाख )	१५१
मोहे बाट चलत ( गौरी )	४३०	लजो ही आखें ( मलुहा )	२१६
मन्दर बाजो रे ( मलुहा )	२१६	ललत न अहीर न ( मेघरंजनी )	३७६
मंशुमादिल गुदाबं तोसु ( जंगूला )	४२३	लाज रखो मेरी साहेब ( गौरी )	४३७
म्हाने अकेली डार गयो ( जेतथी )	४६६	लारा लागो हि आवे ( सोरठ )	३२४
म्हारा रसिया बालम ( श्यामकल्याण )	८१	लालके बिज बालके ( दीपक )	२६६
		लंका लई रामजो रावन ( गौरी )	४३३

## य

यमनी बिलावली (यमनीबिलावल)	११३
ये तो मन्वा ना रहे ( सरपरदा )	१४२
ये दिना हम रे दोरे ( देवगिरी )	१३०
ये नरहर नारायण ( विभास )	४०६

## र

रसिया म्हारा ( अहीर मैरव )	३५८
राग गुनि दुरगा बलाने ( दुर्गा )	२२७
राग विभास पतुर ( विभास-पूर्वी )	४५५
राग विभास मधुर ( विभास-मैरव )	३६६
राजाराम निरंजन ( शुक्र-बिलावल )	१७०
राधिकारमण गिरिधर ( अहीरमैरव )	३५६
रिध करजित रूप ( तिलंग )	२६२
रूप अनुपम आज गायो ( गुणक्री )	३८३
रूप जोवन गुन खेलत ( पयमंजरी )	२५७
रुसे हो पिया आब ( देवगिरी )	१३२
रैन मैं तो बागी ( सरपरदा )	१४४
रंग अबीर कहाँ से ( जोगिया )	३६२
रंग भंरी पिचकारी ( गारा )	३१७
रंगीला नेरा मोरा ( सरपरदा )	१४५

## ल

लच्छन गुनि सरपरदा ( सरपरदा )	१४१
------------------------------	-----

## श

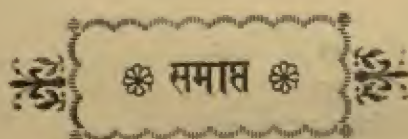
शुक्ला बिलावल ( शुक्रबिलावल )	१६२
शुद्ध स्वर रचो मेल ( नट )	१८६
शंभू श्याम सुन्दर ( लच्छामाख )	१५५
श्याम अत सुंदर ( विभास )	४०६
श्यामकल्याण गावत ( श्यामकल्याण )	७६

## स

सखियां रचो रास ( छाया )	२३३
सजन तुम काहे न ( तिलंग )	२६४
सब सखियां मिल ( सावनीकल्याण )	६६
सब सखियां मिल मङ्गल ( मालथी )	८८
समझ समझ आलि प्राण ( तिलङ्ग )	२६७
सहेलियां गावो रिझावो ( लच्छामाख )	१५२
साजन नाये नाये री ( नटबिहाग )	२००
सांभ ममे सुलकर ( रेवा )	४५८
साधुजी रे नाही ( पहाडी )	२४५
सावन आयो री यह ( हेमकल्याण )	१०६
सावन की सांज ( श्यामकल्याण )	७८
सांवरी सुख मोरे ( कामोदनाट )	२०२
सिरी शंभू हर महादेवा ( कुकुम )	१८१
सुन्दर गोल कपोल ( हेमकल्याण )	११०



	पृष्ठ		पृष्ठ
सुमरन कर मनुजा ( श्रीटंक )	४४८	हारे हरि कर मन जग में (श्रीटंक)	४४७
सूनी अहो श्याम (श्यामकल्याण)	७६	हाथ डमरू लिये ( नट-नारायण )	१६१
सुम घरी सुम ( शुक्रविलावल )	१६६	हालरियां माई ( जेतश्री )	४६५
सोरट रागनि ओडव ( सोरट )	३२२	हू तो थाने जावन ( जोगिया )	३८६
सोहिलरा गावो रिम्बावो (लच्छासाख)	१५४	हो गाये कामोदनाट (कामोदनाट)	२०१
संसार कारन तू सांचो (त्रिवेणी)	४४२	हो जो म्हारी वेग सुघ ( सोरट )	३२६
ह		हो मेरे तो मन श्याम ( तिलङ्ग )	२६५
हजरत खुदाजा गरीबन ( कुतुब )	१८३	होरीको छेल मोहे डूँ डत (जोगिया)	३६१



## संगीत सम्बन्धी प्रकाशन !

- १—संगीत सागर—सङ्गीत का विशाल ग्रन्थ, हर प्रकार के सज्जों को बजाने की विधि तथा ४८४ राग-रागिनियों के आरोहावरोह दिए हैं। मूल्य ६)
- २—फिल्म संगीत—( २४ भागों में ) फ़िल्मी गायनों की पूरी-पूरी स्वरलिपियां दी गई हैं, २१ भाग तक प्रत्येक भाग का मूल्य २) भाग २२, २३, २४ का मूल्य ४) प्रति भाग
- ३—संगीत सोपान—हाईस्कूल की १२ वर्ष की परीक्षाओं के प्रश्नोत्तर मू० ३)
- ४—संगीत पारिजातः—पं० अहोबल कृत प्राचीन संस्कृत ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद। मू० ४)
- ५—तानसेन—सङ्गीत सम्राट तानसेन की जीवनी, स्वरलिपियां और ड्रामा। मू० ४)
- ६—म्यूजिक मास्टर—बिना मास्टर के हारमोनियम, तबला और बांसुरी बजाना सिखाने वाली पुस्तक, जिसके १२ संस्करण हो चुके हैं। मूल्य २)
- ७—स्वरमेलकलानिधि—श्री रामामात्य लिखित संस्कृत ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद। मूल्य १)
- ८—संगीत दर्पण—श्री दामोदर पं० लिखित संस्कृत ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद। मूल्य २)
- ९—ताल अङ्क—घर बैठे तबला बजाना सीखिये। सचित्र, मूल्य ४)
- १०—बाल संगीत शिक्षा—( तीन भागों में ) हाईस्कूल पाठ्यक्रम के अनुसार चौथी से आठवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के लिये। मूल्य २।)
- ११—संगीत किशोर—हाईस्कूल की ९-१० वीं कक्षाओं के लिये। मूल्य १।।)
- १२—संगीत शास्त्र—इन्टरमीडियेट, हाईस्कूल, विदुषी, विद्याविनोदिनी और प्रवेशिका परीक्षाओं के लिये ( सङ्गीत की ध्योरी ) मूल्य १)
- १३—संगीत सीकर—भातखण्डे युनिवर्सिटी तथा माधव संगीत महाविद्यालय की यर्डर्डअर परीक्षाओं ( १६२६ से ५२ ) तक के प्रश्न और उत्तर। मूल्य ५)
- १४—संगीत अर्चना—“भातखण्डे युनिवर्सिटी आफ़ इण्डियन म्यूजिक” की यर्डर्डअर ( इन्टरमीडियेट ) परीक्षा में आने वाले १५ रागों के तान आलाप इत्यादि। मूल्य ५)
- १५—कलावन्तों की गायकी—पक्के ग्रामोफोन रेकार्डों की स्वरलिपियां। मूल्य ३)
- १६—संगीत कादम्बिनी—“भातखण्डे युनिवर्सिटी आफ़ इण्डियन म्यूजिक” की बी. ए. की परीक्षा में आने वाले २० रागों के तान आलाप इत्यादि। मूल्य ५)
- १७—भातखण्डे संगीतशास्त्र ( सङ्गीत की ध्योरी के अपूर्व ग्रन्थ ) भातखण्डे लिखित हिन्दुस्तानी सङ्गीत पद्धति मराठी का हिन्दी अनुवाद। भाग १ मूल्य ५) भाग २ मूल्य ६)
- १८—मारिफुन्नरामात—( दोनों भाग ) राजा नवाबअली लिखित उर्दू पुस्तकों का हिन्दी अनुवाद। ये पुस्तकें इन्टरमीडियेट तथा विशारद के कोर्स में भी हैं। मूल्य प्रति भाग ६)
- १९—सुरसंगीत—प्रत्येक भाग में मनोहर बन्दिरों में सुरदास रचित ६० पदों की स्वरलिपियां उनके भावार्थ सहित दी गई हैं। मूल्य प्रथम भाग १।।) दूसरा भाग १।।)

[ उपरोक्त सब पुस्तकों पर डाक व्यय अलग लगेगा—स्वीपत्र मुफ्त मगायें ]

‘संगीत’ (मासिक पत्र) गत २० वर्षों से बराबर निकल रहा है, वार्षिक मू० ५।।८)

पता—संगीत कार्यालय, हाथरस ( उ० प्र० )







CATALOGUED.

Cal  
172.1.75

Central Archaeological Library,  
NEW DELHI.

Call No. 784.71954/Bha- 28767

Author—<sup>Bhatkhande, Vishnunarayan.</sup>

Title—<sup>Hindustani sangeet paddhati</sup>  
pt. 5.

Borrower No.	Date of Issue	Date of Return
Sh. D. K. Kapoor	4/3/63.	20-8-64
Tek Ram	2/7/60	12.5.79

*"A book that is shut is but a block"*

CENTRAL ARCHAEOLOGICAL LIBRARY  
GOVT. OF INDIA  
Department of Archaeology  
NEW DELHI.

Please help us to keep the book  
clean and moving.



आचार्य भातखण्डे लिखित

## हि० सं० प० क्रमिक पुस्तक मालिका

( प्रथम भाग हिन्दी )

संगीत के प्रारम्भिक विद्यार्थियों के लिये १० धाटों के १० आश्रय रागों की स्वरलिपियां तथा स्वरबोध, प्रत्येक आश्रय दिया गया है। मूल्य केवल १) रुपया

( दूसरा भाग हिन्दी )

१२ रागों की ध्योरी, आलाप सहित ३१६ चीजों की स्वरलिपियां दी गई हैं। मूल्य ८) रुपया। डा० व्यय १३)

( तीसरा भाग हिन्दी )

१४ रागों की ध्योरी, आलाप सहित २१२ चीजों की स्वरलिपियां दी गई हैं। मूल्य ८) रुपया। डा० व्यय १३)

( चौथा भाग हिन्दी )

इसके अतिरिक्त सङ्गीत के विद्यार्थी वर्षों से प्रवीक्षा कर रहे थे। अब यह भाग भी २० रागों की ५३२ चीजों ( स्वरलिपियों ) सहित छप गया है। स्वरलिपियों के अतिरिक्त शास्त्रीय विवरण और आलाप भी दिये गये हैं। मूल्य सजिल्द ८) रुपया। डा० व्यय १॥)

( पांचवां भाग हिन्दी )

७० रागों की २५१ चीजों की स्वरलिपियां तथा सङ्गीत का शास्त्रीय विवरण दिया गया है। मूल्य सजिल्द ८) रुपया। डा० व्यय १॥)

( छठवां भाग हिन्दी )

इसमें भी ६८ रागों की २३७ चीजों की स्वरलिपियां हैं तथा सङ्गीत M.Mus. की ध्योरी भी दी गई है। मूल्य सजिल्द ८) रुपया। सङ्गीत की सब से ऊँची कक्षा की जानकारी प्राप्त करने वालों को पाँचवाँ व छठा दोनों भाग मँगाने चाहिए।

( भातखण्डे संगीत शास्त्र भाग १ व २ )

भातखण्डे लिखित "हिन्दी सङ्गीत पद्धति ध्योरी मराठी" का हिन्दी अनुवाद भाग प्रकाशित हुआ है। इसमें प्रश्नोत्तरों के रूप में सङ्गीत की ध्योरी समझाई गई है। प्रथम भाग मूल्य ४) और दूसरा भाग मूल्य ६) है।

उत्तर भारतीय संगीत का संक्षिप्त इतिहास

श्री भातखण्डे लिखित अंग्रेजी की पुस्तक "श्री. हिस्टोरीकल सर्वे ऑफ दि म्यूजिक ऑफ़ अपर इन्डिया" का हिन्दी अनुवाद "उत्तर भारतीय सङ्गीत का संक्षिप्त इतिहास" नाम से छप गया है। जिसमें आचार्य भातखण्डे द्वारा प्रथम ऑल इन्डिया म्यूजिक कॉन्फ़ेरेन्स बड़ौदा का सन् १९१६ में दिये गए सङ्गीत सम्बन्धी महत्वपूर्ण संयोजन है, जो कि ध्योरी के विद्यार्थियों के लिये अत्यन्त लाभदायक है। मूल्य २) रुपया।

[संगीत शास्त्र का प्रकाश प्रकाशित बनने के लिये उपरोक्त ग्रन्थों का अध्ययन अवश्य करना चाहिये।]

पुस्तकें मिलाने का पता—संगीत कार्यालय, हाथरस ( उ० प्र० )